विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ

प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र

ॐ श्रीमनमहागणधिपतयेनम:

विश्व के
भाग्यवानों की कुण्डलियां

प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र
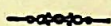
नज़ीर देने योग्य कुण्डलियाँ

तथा

फलित ज्योतिष के सहस्त्रों अचूक आंकड़े

—लेखक—

भगवानदास मीतल

प्रकाशक एवं विक्रेता

भगवानदास मीतल--भृगु प्रकाशन पुस्तकालय

नया बाजार, मथुरा यू० पी०

प्रथम संस्करण

अगस्त १६५७

मूल्य 7/50

पुस्तक परिचय !

फलादेश की इस चमत्कारिक पुस्तक के अन्दर, प्राचीन काल से लेकर अब तक के, समस्त भारत एवं यूरुप के, बड़े २ महान प्रसिद्ध, नजीर देने योग्य चमत्कारिक व्यक्तियों की, कुण्डलियाँ दे २ करके, और उनके जीवन की हरएक रहस्यदायक घटनाओं को उन्हीं के हरएक ग्रहों के द्वारा, ज्योतिष के महान् सरल आँकड़ों से, प्रत्यक्ष सिद्ध कर २ के दिखलाया है, और हरएक व्यक्तियों की कुण्डलियों पर, लागू होने वाले आश्चर्यजनक अनेकों सिद्ध ग्रह योगों का वर्णन बड़े सरल ढङ्ग से किया हैं, अतः साधारण हिंदी का जानकार व्यक्ति भी, इस पुस्तक से ज्योतिष का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

विषय सूची

पेज नं०

सूची जन्म कुण्डलियां

समर्पण

हे जगदाधार, जगदीश्वर, जगत्पिता, सर्वशक्तिवान्, सर्वव्यापक, पतितपावन, भक्तवत्सल, दीनबन्धु, दयासिन्धु, सर्वकर्ता, भंडारभर्ता, लक्ष्मीपते, आपकी महान महिमा, और अनन्त शक्ति को, में बारम्बार हृदय से नमस्कार करता हूँ, और यह पुस्तक पुष्प, सुदामा के तंदुलों की भांति भेट करता हूँ, इसे प्रेम पूर्वक स्वीकार कीजिये, तथा मेरे समस्त अपराधों को क्षमा कीजिये ।

प्रार्थी—भगवानदास मीतल

भगवानदास मीतल

सेवक, श्री वल्लभाचार्य, जन्म सं० १९७० श्रावण शुक्ला ९ रवि० कुम्भलग्न

॥ ओ३म श्रीमनमहाराणाधिपतयेनमः ॥

जन्म कुण्डली के अन्दर कौन-कौन से स्थान से क्या-क्या भाव देखा जाता है
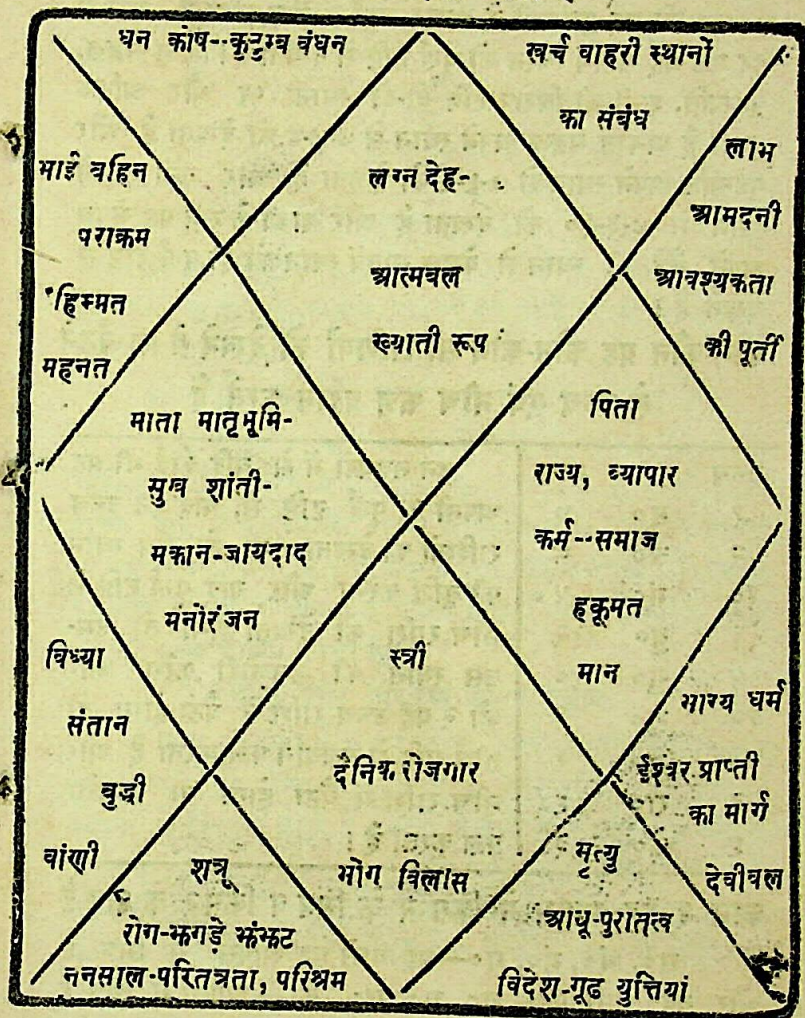
कौन २ ग्रह की कौन २ स्थानों पर दृष्टि पड़ती है

जो ग्रह कुण्डली के अन्दर जहाँ २ बैठा होता है, वहाँ से हर एक ग्रह सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। किन्तु मङ्गल, वृहस्पति, शनी की विशेष दृष्टि दो-दो स्थानों पर और अधिक पड़ती है अर्थात् मङ्गल अपने स्थान से ७-४-८ को देखता है और वृहस्पति अपने स्थान से ७-५-६ को देखता है और शनी अपने स्थान से ७-३-१० को देखता है और बाकी के सब ग्रह केवल अपने बैठे ही स्थान से केवल सातवें स्थान को ही पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

कौन-कौन ग्रह कौन-कौन सी राशियों को देखने से या बैठने से उच्च एवं नीच फल प्रदान करते हैं

उच्च		नीच
१	सू०	७
२	चं०	८
१०	मं०	४
६	बु०	१२
४	गु०	१०
१२	शु०	६
७	श०	१
३	रा०	६
६	के०	३

इन नवग्रहों में से यदि कोई भी ग्रह अपनी २ पूर्ण दृष्टि से, यदि इन उच्च राशियों को देखता होगा तो उस स्थान की वृद्धि करेगा और यदि पूर्ण दृष्टि से नीच राशि को देखता होगा तो उस-उस स्थान की कमजोरी करेगा और जो २ ग्रह उच्च राशि में बैठा होगा तो तीव्र गति से बलवान फल करता है और नीच राशि में बैठा होगा तो कमजोर फल करता है।

कौन २ ग्रह आपस में किस २ के मित्र व किस २ के शत्रु हैं

सू०, चं०, मं०, गु०—यह चारों ग्रह आपस में मित्र हैं और यह चारों ग्रह—शु०, श०, रा०, के०—आपस में मित्र हैं

तथा यह चारों ग्रह उन चारों ग्रहों के आपिस में शत्रु हैं और बु०
सब ग्रहों के मित्र हैं। अतः मित्र के स्थान पर बैठा हुआ ग्रह शुभ
फल देता है और शत्रु के स्थान पर बैठा हुआ ग्रह कुछ अरुचिकर
फल देता है।

क्रूर व नरम ग्रहों की पहिचान

सं०, श०, रा०, के० सू०—यह पाँचों गरम स्वभाव वाले ग्रह
हैं। चं, बु०, शु०, गु०—यह चारों सौम्य ग्रह नरम स्वभाव के हैं।
अतः लग्न से तीसरे, छठे एवं ग्यारहवें—इन तीनों स्थानों में क्रूर
गरम ग्रहों का बैठना लाभप्रद उन्नतिदायक होता है और सौम्य
ग्रहों का लग्न से छठे, आठवें, बारहवें इन तीनों स्थानों को छोड़कर
बाकी के सभी घरों में ठीक होता है।

कौन-कौन ग्रह में क्या-क्या प्राकृतिक गुण हैं

सूर्य में तेज शक्ति, चन्द्रमा में मन की शक्ति, मङ्गल में
अधिकार-शक्ति, बुद्ध में विवेक-शक्ति, गुरू में हृदय की ज्ञान-
शक्ति, शुक्र में कला-शक्ति, शनी में दृढ़ता-शक्ति, राहू में चिन्ता
व गुप्त विवेक-शक्ति, केतू में कष्ट व गुप्त वीरत्व-शक्ति। अर्थात्
इन ग्रहों में से जो २ ग्रह जहाँ बैठता है वहाँ अपने प्राकृतिक गुणों
का भी काम अवश्य करता है।

केन्द्र और त्रिकोण की पहिचान

जन्म कुण्डली के अन्दर पहिले, चौथे, सातवें, दसवें—इन
चारों घरों को केन्द्र स्थान कहते हैं और पाँचवें, नवें, इन दो
स्थानों को त्रिकोण कहते हैं। अतः केन्द्र में बैठा हुआ ग्रह समाज
के अन्दर अपना सफल कार्य शीघ्रता पूर्वक प्रत्यक्ष रूप में करता है
और त्रिकोण में बैठा हुआ ग्रह अपना कार्य सतोगुण व शान्ति
के द्वारा धीरे-धीरे उन्नति पर पहुँचाता है और केन्द्र में चारों घर

ग्रहों से भरे होते हैं तो वह प्राणी बड़ा भाग्यवान ख्यातियुक्त होता है और यदि चारों केन्द्र के स्थान ग्रहों से खाली होते हैं तो प्राणी सामान्य होता है ।

खोटे, कष्टदायक स्थानों की पहिचान

लग्न से छटे व आठवें तथा बारहवें स्थानों पर जो कोई ग्रह बैठता है तो वह कुछ परेशानी के कष्टप्रद मार्ग से अपना मार्ग से अपना कार्य करता है और यदि लग्न से छटे, आठवें, बारहवें स्थानों के अधिपति ग्रह भी जहाँ २ जिस २ स्थान में बैठते हैं, वहाँ २ भी तैसे २ स्थानों में परेशानियां के योगमार्ग द्वारा ही अपना २ कार्य सम्पादन करते हैं । इसके अतिरिक्त, लग्न से दूसरे स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह जहाँ बैठा होगा या किसी भी स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह, यदि लग्न से दूसरे में बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः कुछ बन्धन या घिराव का सा भी फल प्रदान करते हैं ।

ग्रहों का अंश बल और उदय-अस्त बल ज्ञान

हर एक ग्रह के ३० अंश होते हैं, इसलिए जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि २८ अंश से ऊपर और दो अंश से भीतर होता है वह ग्रह बहुत कमजोर होने के कारण बहुत सूक्ष्म फल प्रदान करता है और जो २ कोई ग्रह ५ अंश से ऊपर और २५ अंश के भीतर होता है वह ग्रह बलवान होता है, इसलिए शक्तियुक्त कार्य करता है और २ अंश से ५ अंश तक तथा २५ से २८ अंश तक ग्रह सामान्य फल प्रदान की शक्ति रखता है और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह ग्रह नाम मात्र का फल करता है और १० अंश से २० अंश तक जो ग्रहहोताहै वह बहुत शक्तिवान फल प्रदान करता है ।

कौन २ सी राशियों के कौन २ ग्रह स्वामी होते हैं।

१-८ का स्वामी मंगल २-७ का स्वामी, शुक्र ३-६ का स्वामी, बुद्ध ४-का स्वामी चन्द्रमा-५-का स्वामी, सूर्य ९-१२-का स्वामी, गुरु १०-११-का स्वामी, शनी होता है।

ग्रहों का वक्री मार्गी ज्ञान

जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली में जन्म के समय वक्री होता है तो वह ग्रह अपने बैठे हुए स्थान से पहिले स्थान की वृद्धि का ध्यान रखता है और वह ग्रह कुछ फिकरमंदी के साथ उन्नति प्राप्त करने के लिए अधिक प्रयत्न तथा खोज करवाता है और जो कोई ग्रह जन्म के समय मार्गी होता है, वह शान्तियुक्त अपनी पुरानी परिपाटी के अनुसार सीधी २ लाइन का कार्य करवाता रहता है।

चलित भाव फल, ज्ञान

जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर, जन्म के समय में चलित चक्र भाव में दूसरे घर में चला जाता है वह ग्रह, उस जाने वाले घर में चौथाई फल करता है और अपने स्थान में पौन फल करता है, किन्तु असली फल वहाँ का ही करता है जहाँ पर वह जन्म के समय बैठा होता है।

बलवान ग्रहों की पहिचान

जन्म कुण्डली के अन्दर जो २ कोई भी ग्रह अपने स्वक्षेत्र में बैठा हो या अपने क्षेत्र को पूर्ण द्रष्टी से देखता हो-अर्थात सूर्य सिंह राशि में बैठा हो या सिंह राशि को सप्तम द्रष्टी से देखता हो और चन्द्रमा, कर्क राशि में बैठा हो या कर्क राशि को सातवी पूर्ण द्रष्टी से देखता हो और मंगल, मेष या बृश्चिक राशि में बैठा हो या मेष या बृश्चिक राशि को अपनी चौथी, आठवी, सातवी द्रष्टी से पूर्ण देखता हो और बुद्ध, मिथुन या

कन्या राशि में बैठा होय या मिथुन को पूर्ण सातवी द्रष्टी से देखता होय, और गुरु; धन या मीन राशि में बैठा होय या अपनी पांचवी, नवमी सातवी, द्रष्टी से धन या मीन राशि को पूर्ण देखता होय, और शुक्र, वृपभ या तुला राशि पर बैठा होय या अपनी सातवी द्रष्टी से वृपभ या तुला राशि का पूर्ण देखता होय, और शनी, मकर या कुम्भ राशि में बैठा होय या अपनी तीसरी, दसवो, सातवी तीनों पूर्ण द्रष्टियों में से किसी भी द्रष्टी से अपनी मकर या कुम्भ राशि वाले स्थान को देखता होय, और राहू या केतु कोई भी, कन्या या मीन राशि में कहीं भी बैठा होय तो उपरोक्त लिखे अनुसार यह ग्रह वलवान समझे जाते हैं। और इसी प्रकार तह सभी ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह अपनी २ उच्च राशियों में बैठे होंगे या उच्च राशियों को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे होंगे, तो भी वह ग्रह वलवान समझे जायेंगे अर्थात मेष पर सूर्य, वृषभ पर चन्द्रमा, मकर पर मंगल, कन्या पर वुद्ध, कर्क पर गुरु मीन पर शुक्र, तुला पर शनी, मिथुन पर राहू, धन पर केतु इन २ राशियों पर यह ग्रह बैठे होंगे या इन २ राशियों को देखते होंगे तो, यह ग्रह वहुत ऊंचा उग्रफल प्रदान करते हैं किन्तु साथ ही यह बात वहुत ध्यान देने योग्य है कि, जो कोई भी ग्रह २ अंश से कम के अंशो में होगा या २७ अंश से ज्यादह के अंशों में होगा तो वह ग्रह, वलवान राशी में होते हुये भी विशेष शक्ति शाली फल प्रदान नहीं कर सकता है, या सूर्य से अस्तहोगा तो भी उत्तम फल प्रदान नहीं कर सकता है, किन्तु जो कोई ग्रह १५ अंश से २० अंश तक होगा और सूर्य से अस्त नहीं होगा, तो वह ग्रह, उपरोक्त राशियों के अन्तरगत बैठकर अति उत्तम शक्ति शाली फल प्रदान करता है।

राहू या केतु का शक्ती परिचय

जन्म कुण्डली के अन्दर, लग्न से, छटे, ग्याहरवें, तीसरे स्थान पर राहू. या केतु कोई बैठा होय या धन का केतु या मिथुन का राहू किसी भी स्थान पर बैठा होय, अथवा राहू या केतु के साथ में कोई भी दूसरा वलवान गृह बैठा होय या किसी भी अच्छे वलवान गृह की राहू या केतु पर पूर्ण द्रष्टी पड रही हो किन्तु राहू धनराशि पर नही हो और केतु मिथुन राशि पर नहीं हो तो उपरोक्त स्थिति में राहू या केतु जहां भी बैठे होंगे, उस स्थान में वड़ा शक्ति शाली कार्य करते हैं किन्तु उस स्थान कीउन्नति होने में कुछ दिक्कतें सहन करनी पड़ती हैं परन्तु अंत में राहू या केतु जिस स्थान से भी, उपरोक्त लिखे अनुसार बैठे होंगे, उस स्थान की विशेप उन्नति अवश्य करते हैं अर्थात उसी स्थान की शक्ति के वल से मनुष्य को उन्नति व ख्याती एवं शक्ति प्राप्त होती है। इसका पूरा २ परिचय आगे की प्रसिद्ध २ कुण्डलियां के अन्दर आप देखिये—श्री जवाहरलाल, हिटलर, लोकमान्य तिलक, गौतमबुद्ध औरंगजेव, निजाम हेदरावाद, वीर सावरकर: ईसामसीह, भक्त नामदेव, शिवाजी, पं० चेत्रपाल शर्मा, रानी विक्टोरिया, रामकिशन डालमियां इत्यादि २ अनकी सभी कुण्डलियों में यह स्पष्ट रूप से जानने को मिलेगा।

नीच के ग्रहों का मार्मिक द्रष्टि भेद

जन्म कुण्डली के अन्दर यदि सूर्य तुलाराशि पर बैठा हो या चन्द्रमा वृश्चिक राशी पर बैठा हो या मंगल कर्क राशि पर या वुद्ध मीन राशि पर या गुरु मकर राशि पर या शुक्र कन्या

राशि पर या शनी मेश राशि पर या राहू धन राशि पर या केतु मिथुन राशी पर बैठा होय, अथवा इन उपरोक्त ग्रहों की इन उपरोक्त २ राशियां पर पूर्ण २ द्रष्टी पड़ रही हो तो इन २ स्थानों में यह ग्रह अवश्य हानि प्रद कार्य करते हैं किन्तु जो २ कोई गृह नीच राशी में बैठे होते है, उन गृहों की उस स्थानों से सातवें स्थान पर उच्च द्रष्टी पड़ती है इसलिये नीच का हर एक गृह अपने स्थान से सातवें पर वृद्धी कारक फल प्रदान करते हैं।

ग्रहों के प्राकृतिक रंग

सूर्य का रंग सुनहला, चन्द्रमा का रंग उज्वल चमकीला मंगल का रंग लाल; बुद्ध का रंग हरा, वृहस्पति का रंग पीला, शुक्र का रंग सफेद, शनी का रंग नीला, राहू का रंग काला, केतु का रंग काला।

गुरु, चन्द्र योग, राशिफल

जन्म कुण्डली के अन्दर बृहस्पति, हृदय की ज्ञान गति के स्वामी होते हैं, और चन्द्रमा मनकी कल्पना शक्ति के स्वामी होते हैं अतः कुण्डली के अन्दर जिस किसी भी स्थान में गुरु चन्द्र मिलकर एक स्थान में बैठे हों, या चन्द्र एवं गुरु की आपस में द्रष्टी संवन्ध हो रहा हो, अर्थात चन्द्रमा को गुरु पूर्ण द्रष्टी पांचवी, सातवी, नवमी से देख रहा हो या गुरु को चन्द्रमा सातवी द्रष्टी से देख रहा हो, अथवा चन्द्रमा के घर में वृहस्पति बैठा हो और वृहस्पति के घर को चन्द्रमा बैठा हो, तो ऐसी स्थतियों में, इस गुरु चन्द्र के योग संबन्ध से उस प्राणी के मन

और हृदय की ज्ञान शक्ती का आन्तरिक गहरा संबन्ध हो जाता है इसलिये जिन जिन स्थानों के यह गुरु, चन्द्र स्वामी होकर व जिस जिस स्थान में बैठकर, यह संबन्ध करते हैं, उन २ स्थानों की उन्नति करने की महान सूक्ष्म शक्ति, इस प्राणी के अन्दर पैदा हो जाती है और उस २ स्थानों की उन्नति अवश्य होती है, इसको श्री रवीन्द्रनाथ टेगोर, रामकिशन डालमियां, नाथूराम गौडसे आदि, महान कुण्डियों में देखिये।

सूर्य, बुद्ध, योग फल

जन्म कुण्डली के अन्दर जिस किसी भी स्थान पर सूर्य और बुद्ध मिलकर बैठते हैं, उस स्थान पर, सूर्य के द्वारा, तेज शक्ति, और बुद्ध के द्वारा, विवेक शक्ती, मिलकर कार्य करती है, इसलिये नरम गरम तेज विवेक की दोनों शक्तियां के मिलान होने से बड़ा प्रभाव और सफलता की शक्ति का रूप बन जाता है अतः जिस स्थान में यह, सूर्य बुद्ध का योग बनता है, उस स्थान के संबन्ध में वह प्राणी बड़ी सावधानी के साथ सदैव उस स्थान की रक्षा और वृद्धी का भरपूर ध्यान रखकर कार्य करता है और उक्त विषय पर बड़ा चौकस रहता है, इसे औरंगजेब, रामकिशन डालमियां, नाथूराम गौडसे, महाराणा प्रताप, गुरु नानक, सरदार वल्लभ भाई पटैल, रवीन्द्रनाथ टेगोर, हिटलर, सुभाषचन्द्र बोस, इत्यादि २ कुण्डलियों में देखिये।

ग्रहों का स्थान और द्रष्टी संबन्ध

जन्म कुण्डली के अन्दर, राहू केतु को छोड़कर कोई भी दो ग्रह यदि आपस में संबंध कर रहे होंगे अर्थात दो ग्रह एक साथ

बैठे होंगे या, एक दूसरे को अपनी २ पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हों, अथवा कोई भी दो ग्रह आपस में, एक दूसरे के स्थान में बैठे हों, तो वह दोनों ग्रह जिस २ स्थान के स्वामी होंगे. इन २ स्थानों के कार्य क्रम के योग से वह दोनों गृह आपस में एक दूसरे के स्थान की वृद्धी करते हैं अर्थात जिस २ स्थान पर दो गृहों का संबन्ध होता है, उस २ स्थान की वृद्धी होती है, किन्तु यदि इन दोनों गृहों का स्थान संबन्ध होने से यदि यह दोनों ग्रह नीच राशियों में बैठे होंगें तो फल कमजोर स्थती का ही मिलता रहेगा, और उच्च के बैठे होंगे तो जोरदार फल मिलेगा, और यदि मित्र क्षेत्री बैठेंगें तो कुछ मीठा फल मिलेगा और शत्रू यदि क्षेत्री होकर बैठेंगें तो कुछ कड़वाहट का फल मिलेगा। और यदि इन संबन्ध करने वाले गृहों में से कोई भी गृह यदि लग्न से छटे. आठवें, बारहवे, स्थानों का स्वामी होकर किसी भी दूसरे स्थान से संबन्ध करेगा तो उस दूसरे स्थान को कुछ हानी या परेशानीयां के योग से, टकरा कर उन्नति की शक्ति प्रदान करेगा-और यदि छटे, आठवे, बारहवे घरों को छोड़कर बाकी घरों के स्थान पति,यदि आपस में उपरोक्त रीती अनुसार किसी भी प्रकार से संबन्ध कर रहे होंगे और नीच राशी में बैठे न होंगे और अंश हीन न होंगे, तथा सूर्य से अस्त भी न होंगे तो वह ग्रह, बड़ा उन्नति दायक उत्तम फल प्रदान करते हैं, जैसे कि आपको इस पुस्तक की कुण्डलियों में स्पष्ट रूप से समझने को मिलेगा।

केम द्रुम योग फलम्

जन्म कुण्डली के अन्दर चन्द्रमा यदि किसी भी स्थान में अकेला बैठा हो, और चन्द्रमा के अगले पिछले घरों में भी यदि

कोई ग्रह नहीं बैठा हो और चन्द्रमा के ऊपर किसी भी ग्रह की द्रष्टी भी नहीं हो, तथा चन्द्रमा अपने घर (कर्क) में भी नहीं बैठा होय, तो ऐसे योग वाले मनुष्य को इस केम द्रुम योग, के कारण अपने मन में कुछ सदैव खिन्नता एवं उदासीनता तथा अशांती के कारण प्राप्त होते रहते हैं। और केम द्रुम योग वाले मनुष्य के मन में उदारता की बड़ी कमी सदैव रहती है और यदि चन्द्रमा अपने घर (कर्क) में बैठा हो या दूसरे ग्रहों से द्रष्ट होय तो, चन्द्रमा बिलकुल अकेला रहने पर भी तथा अगला पिछला घर भी ग्रहों से सून्य रहने पर भी, केमद्रुम योग का प्रभाव बुरा प्राप्त नहीं होता है, इसे श्री रामकिशन डालमियां की कुण्डली में देखिये- और यदि चन्द्रमा अकेला भी हो और ग्रहों से द्रष्ट भी नही हो, तथा आस पास के घर भी दोनों ग्रहों से सून्य हो और यदि चन्द्रमा के साथ राहू या केतु कोई भी बैठा हो, अथवा चन्द्रमा अपनी नीच राशि (वृश्चिक) में बैठा हो तो, इस निकृष्ट केमद्रुम योग के प्रताप से उस मनुष्य के मन को सदैव अशांती व परेशानी तथा धन के कारणों से कष्ट का अनुभव होता रहता है।

सुनफा एवं दुरधरा व अनफा योग

जन्म कुण्डली के अन्दर चन्द्रमा के दोनों तरफ ग्रह बैठे हों तो दुरधरा योग होता है और आगे के घर में यदि कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो सुनफा योग होता है, किन्तु चन्द्रमा के साथ में राहू या केतु नहीं होना चाहिये, तो ऐसे ग्रह योगों में मनुष्य का मन बड़ा प्रसन्न और उदार होता है तथा सदैव उसकी द्रष्टी में बरकत दीखलाई देती रहती है। और चन्द्रमा से यदि आगे का घर ग्रह से सून्य हो और पिछले घर में कोई ग्रह बैठा हो और

साथ में भी कोई नहीं हो, तो इसे अनफा योग कहते हैं इस योग वाले मनुष्य को अन्त में बरकत नहीं मिलती है।

धर्मवान, ईश्वर भक्त के ग्रह लक्षण

जन्म कुण्डली के अन्दर नवम स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह नवम स्थान में ही बैठा हो, या लग्न के पहिले स्थान में बैठा हो, या लग्न से पांचवे स्थान में बैठा हो, और लग्न का स्वामी कोई भी ग्रह लग्न में बैठा हो या लग्न से चौथे स्थान में बैठा हो या लग्न का स्वामी, चन्द्रमा को छोड़कर कोई भी ग्रह लग्न से पांचवे स्थान में बैठा हो या लग्न का स्वामी नवम स्थान में बैठा हो, और लग्न से पांचवे स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह लग्न में या पंचम स्थान में या नवम स्थान में कहीं भी बैठा हो, या नवमेश या लग्नेश से किसी भी प्रकार पूर्ण द्रष्टी से देखा जाता हो या साथ बैठने से संबन्धित हो—और लग्न, पंचम, नवम, इन तीनों स्थानों में, कोई भी ग्रह न तो नीच राशि का हो कर कोई बैठा हो, और न कोई राहू या केतु इन तीनों स्थानों में कहीं भी कोई बैठा हो, और लग्नेश, नवमेश, पंचमेश इन तीनों स्थानों के स्वामियों के साथ में भी किसी के साथ कोई राहू या केतु संग में बैठा न हो, तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति, सदैव सतोगुणी कार्य करने वाला ईश्वर भक्त होता है।

ख्याती और नाम पाने वालों का योग लक्षण

जन्म कुण्डली के अन्दर लग्न स्थान का स्वामी अर्थात देहाधिपती, कोई भी ग्रह यदि लग्न में ही बैठा हो, अथवा केन्द्र में बैठकर लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देखता हो अथवा अन्य किसी

भी दूसरे स्थान में बैठकर के भी, यदि लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा हो, और अष्टमेश कोई भी ग्रह यदि अष्टम स्थान पर ही बैठा हो अथवा लग्न में बैठा हो, अथवा अष्टम स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखता हो, अथवा. अष्टमेश का, लग्नेश से, किसी भी प्रकार स्थान संबंध, या द्रष्टी संबंध हो रहा हो, और लग्न में या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह नीच राशि का होकर बेठा न हो, और लग्न को या अष्टम स्थान को, कोई ग्रह नीच राशि से देखता भी न हो, और लग्न पति या अष्टम स्थान पति कोई भी ग्रह किसी भी नीच ग्रह के साथ भी न बैठा हो, अथवा लग्न में राज्येश, भाग्येश कोई ग्रह बैठा हो या राज्येश, भाग्येश, ग्रह के साथमें लग्नेश बैठा हो,या इनको देखता होतो ऐसे योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति जीवन में प्रसिद्धता और यश प्राप्त करने वाला नामवर होता है। इस योग की पहिचान निम्नांकित कुण्डलियों में करिये। श्री जवाहर लाल नेहरू, श्री महात्मा गांधीजी, राष्ट्रपति श्रीराजेन्द्र प्रसाद, सुभाषचन्द्र बोस,मौलाना जिन्ना साहब हिटलर, रवीन्द्रनाथ टेगोर, लोकमान्य तिलक, गुरू नानक देव पृथ्वीराज चौहान, छत्रपपि शिवाजी, वीर सावरकर, योगी श्री अरविन्द घोस, औरंगजेब, नाथूराम गौडसे, पं० क्षेत्रपाल शर्मा

राहू या केतु का स्वभाविक गुण दोष

जन्म कुण्डली के अन्दर राहू या केतु कोई भी जिस २ किसी भी स्थान में बैठते हैं, उस २ स्थानों में कुछ न कुछ कष्ट प्रद चिंता जनक कार्य अवश्य उत्पन्न करते हैं किन्तु फर्क इतना ही है कि लग्न से तीसरे छटे ग्याहरवे, स्थानों में बैठकर यह ग्रह राहू केतु अच्छा फल भी शक्ती प्रदायक करते हैं और अन्य

स्थानोंमें यदि किसी अच्छे गृह के साथ बैठते हैं,तो भी शक्तिप्राप्त करते हैं, और बिलकुल अकेले बैठे हों, अथवा द्रष्टी भी किसी उत्तम ग्रह की इन पर पूर्ण नहीं पड़ रही हो, तो यह उस स्थान में कष्ट या चिंता उत्पन्न अवश्य करते हैं। फिर भी राहू और केतु का यह गुण स्वभाविक हैं कि उत्तम से उत्तम लाभप्रद स्थान में बैठ करके भी उन्नति या लाभ कितना ही प्रवल क्यों न पैदा करदें, किन्तु जिस किसी भी स्थान पर बैठे होंगे, उस स्थान के संबंध में चिंता रहित,शांतप्रद स्थति में नहीं रहने देते हैं। और यदि अकेले चन्द्रमा के साथ राहू या केतु कोई भी जिस स्थान पर बैठे होंगे तो उस स्थान के संबंध में, तथा चन्द्रमा जिस स्थान का स्वामी होगा उस दोनों स्थानों के संबन्ध में मन को अशांत प्रद चिंतित रखते हैं किन्तु राहू या केतु जिस स्थान में बैठकर परेशानी उत्पन्न करते हैं, उसी स्थान के संबंध में अन्त में शक्ती प्रदान करते हैं। यह योग सभी कुण्डलियों पर सही बैठता है।

झूंठ और कपट का ग्रह योग

जन्म कुण्डली के अन्दर लग्न या पंचम या नवम तीनों स्थानों में किसी भी जगह पर कोई ग्रह नीच राशी का बैठा हो, या लग्नेश,पंचमेश,नवमेश इन तीनों मेंसे कोई, कहीं भी नीच का होकर बैठा हो, और लग्न, पंचम, नवम, इन तीन स्थानों में वृहस्पति कहीं वलवान होकर न बैठा हो और इन तीनों स्थान के जो कोई भी ग्रह स्वामी हों, वह तीनों ग्रह भी लग्न, पंचम, नवम स्थानों को छोड़कर कहीं लग्न से छठे, आठवें वारहवे स्थानों में बैठे हों, और लग्न, पंचम, नवम इन तीनों स्थानों में कहीं भी कोई राहू या केतु बैठा हो या इन तीनों स्थानों के स्वामियों के

साथ में राहू या केतु कोई बैठा हो, और चन्द्रमा के साथ में राहू या केतु कोई भी बैठा हो, तो ऐसे गृह योगां में जन्म लेने वाला व्यक्ति झूंठ और कपट से कार्य करने वाला, धर्म विमुख होता है अतः इन उपरोक्त योगों में से जितनी अधिक मात्रा में जिसकी कुण्डली में यह योग होगा उतनी ही अधिक मात्रा में वह जीव अधर्मी होगा और यदि कुछ योग अच्छे होंगे और कुछ बुरे होंगे तो वह जीव दोनों प्रकार की स्थितियों में जीवन व्यतीत करने वाला सामान्य धर्मी होगा।

बहादुर, विजयता के योग लक्षण

जन्म कुण्डली के अन्दर जिन २ पुरुषों के, लग्न से तीसरे या छटे स्थान पर, धन राशी का केतु बैठा हो और लग्न से तीसरे व छटे और दसवे, स्थानों के अधिपती ग्रह या तो अपने २ स्थानों में स्वक्षेत्री बैठे हों अथवा अपने २ स्थानों को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हों अथवा यह तीनों स्थानों के स्वामी ग्रह इन्हीं तीनों स्थानों में कहीं भी बैठे हों और लग्न का स्वामी कोई भी गृह हों, वह, या तो लग्न में ही बैठा हो या लग्न से तीसरे या छटे या दसवे या ग्यारहवे स्थानों में कहीं भी बैठा हो, और लग्न से, तीसरे, छटे, दसवे, स्थानों में सूर्य, मंगल, शनी, राहू, केतु, यह पाँचो गृह कहीं न कहीं इन्हीं स्थानों में कहीं भी बैठे हों, और लाभ में या लग्न से तीसरे या छटे या दसवे स्थानों में कोई भी गृह नीच का होकर न बैठा हो, तो ऐसे गृह योगो में जन्म लेने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से बड़ा बहादुर विजयता प्रसिद्ध होता है। इस योग को श्री जवाहरलाल

हिटलर, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, वीर सावरकर, हैदरअली, गौतम बुद्ध, इत्यादि विजयताओं की कुण्डलियों में देखिये।

भाग्यवानों का, राजयोग लक्षण

जन्म कुण्डली के अन्दर जिस व्यक्ति का कोई भी ग्रह दसम स्थान का स्वामी होकर दसम स्थान में ही बैठा हो या लग्न में बैठा हो या लग्न से चौथे स्थान पर बैठा हो अथवा दसम स्थान का स्वामी यदि मंगल हो, और लग्न से तीसरे या चौथे या सातवे या दसवे स्थान पर कहीं भी बैठा हो, अथवा दसम स्थान का स्वामी नवम स्थान में बैठा हो, नवम स्थान का स्वामी दसम स्थान में बैठा हो। या नवम, दसम स्थान के दोनों स्वामी मिलकर के केन्द्र में या त्रिकोण में या धन स्थान में कहीं भी बैठे हो, अथवा दसम स्थान का स्वामी लग्न में बैठा हो और लग्न का स्वामी दशम स्थान में बैठा हो अथवा नवम, दसम स्थान के स्वामियों में से दोनों में कोई एक दूसरे को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा हो और दसम स्थान में कोई भी गृह नीच का होकर बैठा न हो और लग्न से आठवे या बारहवे स्थानों के स्वामियों मेंसे कोई भी गृह दसम स्थान में बैठा न हो और दसम स्थान का स्वामी कोई भी गृह लग्न से आठवे या वारहवे स्थान पर बैठा न हो, और धनेश, पंचमेश, गृह भी, राज्येश, भाग्येश, से द्रष्टी संबंध या स्थान संबंध, कर रहे हों, और धनेश, लाभेश, पंचमेश लग्न से, आठवे या वारहवे या नीच राशि में कहीं भी बैठे न हों। तो इन उपरोक्त रीतियों के अनुसार गृह योगों में राजयोग की शक्ती प्राप्त होती रहती है, किन्तु जिस व्यक्ति का जितनी

अधिक या कम अवस्था में यह गृह योग कुण्डली में बैठा होगा उसी अवस्था के अनुसार राजयोग का फल प्राप्त होता है। इसे मौलाना जिन्ना की कुण्डली में, बादशाह नीरो की कुण्डली में या चीन के राष्ट्रपति की कुण्डली में अथवा गौर से देखने से सभी महान कुण्डलियां में राजयोग मिलेगा।

कुछ परतंत्रता या नौकरी या परेशानी का योग

जन्म कुण्डली के अन्दर लग्न का स्वामी लग्न से छटे स्थान पर बैठा हो, या लग्न से आठवे स्थान पर बैठा हो, या लग्न से बारहवे स्थान पर बैठा हो, अथवा लग्न से छटे या आठवे या बारहवे स्थानों के स्वामियों में से कोई गृह लग्न में बैठा हो और किसी भी स्थान का स्वामी कोई गृह नीच राशि का होकर लग्न में बैठा हो, और दसम स्थान पति, लाभ स्थान पति, व्यय स्थान पति, धन स्थान पति, कोई भी गृह, लग्न से छटे, आठवे, बारहवे, स्थानों में कहीं भी बैठे हों, और अष्टम स्थान पति कोई गृह किसी भी स्थान में नीच का होकर बैठा हो या किसी भी स्थान का स्वामी, कोई गृह नीच राशि का होकर दसम स्थान में या लाभ स्थान में या नवम स्थान में या अष्टम या सप्तम स्थान में या धन स्थान में बैठा हो, या राहू और केतु कोई भी अपनी उच्च राशी को छोड़कर, लग्न में या धन स्थान में या अष्टम स्थान में या चौथे और दसवें स्थान में, कहीं भी कोई बैठे हों अथवा जिसकी कुण्डली के अन्दर केन्द्र के चारों स्थान गृहों से बिलकुल खाली हों तो ऐसे उपरोक्त लिखित गृह योगों में जो कोई व्यक्ति जन्म लेगा तो उसे किसी न किसी प्रकार कुछ परतंत्रता या बंधन या नौकरी या अवनति या [illegible]

नियाँ सहन करनी पड़ती हैं। इसे अमेरिका के राष्ट्रपति की कुण्डली में, गुरु, शनी, और सूर्य के योग द्वारा देखिये, तथा टीपू सुल्तान की कुण्डली में देखिये अथवा मानसिंह डाकू की कुण्डली में मंगल, सूर्य, शुक्र, इन तीनों गृहों के योगफल से देखिये।

दूसरे स्थानों पर सफलता पाने का योग

जन्म कुण्डली के अन्दर जिन व्यक्तियों का व्यऐस अर्थात बारहवे स्थान का स्वामी, कुण्डली में कहीं भी बैठकर बारहवे स्थान को पूर्ण देख रहा हो, किन्तु लग्न से छटे, आठवे स्थान पर न बैठा हो, और या लग्न से नवम या दसम स्थान का स्वामी या ग्यारहवे, दूसरे, पहिले, स्थानों का स्वामी कोई भी गृह यदि लग्न से बारहवे स्थान में बैठा हो, अथवा किसी भी स्थान का स्वामी कोई गृह, उच्च का होकर लग्न से बारहवे स्थान में बैठा हो, अथया कुण्डली के अन्दर तुला का सूर्य या वृश्चिक का चन्द्रमा लग्न से छटे स्थान पर बैठा हो, अथवा मंगल कर्क का छठे बैठा हो या तुला का नवम बैठा हो या मिथुन का पंचम में बैठा हो, अथवा, वृहस्पति वृश्चिक का होकर चौथे स्थान पर, या मकर का होकर छटे स्थान पर, या मीन का होकर आठवे स्थान पर बैठा हो, अथवा शुक्र कन्या का होकर छठे स्थान पर बैठा हो, अथवा शनी, मकर का होकर तीसरे स्थान पर बैठा हो, या मेप का होकर छटे स्थान पर बैठा हो, या सिंह का होकर दसम स्थान पर बैठा हो, तो इन गृहों की बारहवे स्थान पर उच्च द्रष्टी पड़ने के हेतु यह सभी गृह, उच्चवत ही बारहवे स्थान पर बैठने का कार्य करेगें और लग्न से आठवे स्थान पर कोई गृह यदि उच्च का होकर बैठा हो,

या किसी भी अच्छे स्थानों का स्वामी कोई गृह लग्न से आठवे स्थान पर बैठा हो तो, इस प्रकार के उपरोक्त गृहों के फल स्वरूप, उस व्यक्ति को दूसरे स्थानों में सफलता मिलने का योग बनता है किन्तु पहिले कुछ दिक्कतें अवश्य सहन करनी पड़ती हैं।

नीच के ग्रहों से उन्नति पाने का योग

जन्म कुण्डली के अन्दर—जिस व्यक्ति का तुला का सूर्य लग्न से तीसरे या चौथे, या पाँचवे, या आठवें, स्थानों पर कहीं भी बैठा हो, अथवा बृश्चिक का चन्द्रमा, लग्न से तीसरे या चौथे या पाँचवे या आठवें, स्थानों पर कहीं भी बैठा हो, अथवा कन्या का बुद्ध लग्न से तीसरे या चौथे या पाँचवे या आठवें स्थानों पर कहीं भी बैठा हो, अथवा मकर का बृहस्पति, लग्न से तीसरे या चौथे या पाँचवे या आठवें, स्थानों में से कहीं भी बैठा हो अथवा कन्या का शुक्र लग्न से तीसरे या चौथे या पाँचवें या आठवें स्थानों पर कहीं भी बैठा हो, अथवा मेष का शनी, लग्न से तीसरे या चौथे या पाँचवे या आठवें स्थानों पर कहीं भी बैठा हो, तो इस प्रकार के नीच ग्रहों के योग से कुछ समय के बाद अच्छी उन्नति मिलती है, क्योंकि यह ग्रह नीच राशियों में बैठकर के भी अपने से सातवें स्थानों को उच्च दृष्टियों से देखेंगे, अतः तीसरे स्थान पर से, भाग्य को उच्च दृष्टि से देखते हैं और चौथे स्थान पर से, दसम स्थान को उच्च दृष्टि से देखते हैं। अतः नीच राशी में बैठा हुआ ग्रह यद्यपि प्रथम कुछ दिक्कतें, अवश्य पैदा करता है किन्तु अन्त में उत्तम स्थानों को, उच्च दृष्टि से देखने के कारण उन स्थानों पर वह शक्ति उत्पन्न करता है और उन्नति प्राप्त होती है, इसी प्रकार यदि कोई भी ग्रह, किसी भी स्थान पर बैठ कर के भी यदि जिस किसी

भी स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता होगा तो, उस स्थान की वृद्धि अवश्य करता है। अरविन्द घोष, शिवाजी, सरदार पटेल, आदि की कुण्डलियों में देखिये।

उच्च के ग्रहों से अवनति पाने का योग

जन्म कुण्डली के अन्दर जिस व्यक्ति का मेष का सूर्य, लग्न से चौथे स्थान पर या आठवे स्थान पर या बारहवे स्थान पर बैठा हो, अथवा चन्द्रमा, वृषभ राशि का होकर, लग्न से, तीसरे स्थान पर या चौथे स्थान पर या पांचवे स्थान पर या छटे स्थान पर या आठवे स्थान पर बैठा हो, अथवा मकर का मंगल, लग्न से आठवे स्थान पर या बारहवे स्थान पर बैठा हो, अथवा कन्या का बुद्ध, लग्न से, तीसरे स्थान पर या चौथे स्थान पर या पांचवे स्थान पर या आठवे स्थान पर बैठा हो अथवा कर्क का बृहस्पति लग्न से तीसरे स्थान पर या चौथे स्थान पर या पांचवे स्थान पर या आठवे या बारहवे स्थान पर बैठा हो, अथवा मीन का शुक्र लग्न से तीसरे स्थान पर या पांचवे या आठवे या बारहवे स्थान पर या लग्न में बैठा हो, अथवा तुला का शनी, लग्न में या लग्न से चौथे स्थान पर या पांचवे स्थान पर या आठवे स्थान पर या बारहवें स्थान पर बैठा हो, तो इन उच्च के ग्रहों से जो हानियाँ उत्पन्न होती हैं, वह इस प्रकार है कि, लग्न में उच्च का बैठा हुआ ग्रह, स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान को नीच द्रष्टी से देखता है, और तीसरे स्थान पर बैठा हुआ ग्रह, भाग्य स्थान को नीच द्रष्टी से देखता है, और चौथे स्थान पर बैठा हुआ ग्रह, राजस्थान को नीच द्रष्टी से देखता है, और पांचवे स्थान पर बैठा हुआ ग्रह, लाभ स्थान को नीच द्रष्टी से

देखता है, और आठवें स्थान पर बैठा हुआ ग्रह, धन स्थान को नीच दृष्टि से देखता है, और बारहवें स्थान पर बैठा हुआ ग्रह, प्रभाव के घटे स्थान को नीच दृष्टि से देखता है, और धन को अधिक खर्च करता है। इसी प्रकार कोई भी ग्रह किसी भी स्थान पर बैठकर, यदि किसी भी स्थान को नीच दृष्टि से पूर्ण देखता है तो, उस स्थान पर कमी या कमजोरी अवश्य लाता है। इसलिये उच्च का ग्रह जहाँ भी बैठा होगा, वहां के लिये उच्च-तम कार्य अवश्य करता है, किन्तु अपने से सातवें स्थान को नीच दृष्टि से देखने के कारण, वहाँ के लिये कुछ कमजोरी करता है।

अधिक भोग विलासी होने का योग

जब कुण्डली के अन्दर—लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी, कोई भी ग्रह, स्वक्षेत्री बैठा हो, अर्थात् सप्तम स्थान का स्वामी सप्तम स्थान में ही बैठा हो और या सप्तम स्थान का स्वामी किसी भी स्थान में बैठकर, सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो, अथवा कन्या लग्न को छोड़ कर, किसी भी लग्न का स्वामी सप्तम स्थान में बैठा हो, अथवा, लग्न से, छठे, आठवें, बारहवें स्थान के स्वामियों को छोड़कर किसी भी स्थानों के स्वामी, लग्न से सप्तम स्थान में बैठे हों, किन्तु सप्तम स्थान में कोई ग्रह नीच राशी का न बैठा हो, और लग्न से सातवें स्थान पर, किसी भी ग्रह की नीच दृष्टि न हो, बल्कि, सप्तम स्थान पर किसी भी ग्रह की उच्च दृष्टि पड़ रही हो, और यदि लग्न से सातवें स्थान पर किसी भी चौथे स्थान के स्वामियों की मित्र दृष्टि पड़ रही हो अथवा, उपरोक्त लिखे अनुसार अच्छे २ स्थानों के स्वामी दो, या तीन या चार, ग्रह, मित्र राशी के होकर बैठे हों, किन्तु

उनमें कोई भी ग्रह नीच राशी का होकर न बैठा हो, तो ऐसे ग्रह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति बड़ा विलासी, सुन्दर स्त्री वाला तथा दैनिक रोजगार की लाइन में, बड़ी दिलचस्पी के साथ कार्य करने वाला व उन्नति करने वाला—रसिक स्वभाव होता है। क्योंकि लग्न से सातवां घर, स्त्रीं भोगादिक, व दैनिक रोजगार का होता है।

विशेष बुद्धिवान या मूर्ख का योग

जन्म कुण्डली के अन्दर लग्न से पंचम स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह, पंचम स्थान से ही बैठा हो या, केन्द्र या त्रिकोण में बैठकर अपने, पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो अथवा लग्न से नवम या दसम स्थान का स्वामी या लग्न का स्वामी, पंचम स्थान में बैठा हो अथवा धन स्थान का या लाभ स्थान का स्वामी-लग्न से पाचवें स्थान पर बैठा हो अथवा, इन स्थानों के स्वामियों की, पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि पड़ रही हो, अथवा, लग्न के स्वामी, का, पंचम स्थान के स्वामी, के साथ, दृष्टि संबंध हो रहा हो, या स्थान सम्बन्ध, हो रहा हो, और पंचम स्थान पर कोई भी ग्रह, नीच राशी का होकर बैठा हो और पंचम स्थान पर किसी भी ग्रह की नीच दृष्टि भी न पड़ रही हो, और पंचम स्थान पर, राहू या केतु कोई भी बैठा न हो, तो ऐसे ग्रह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति, बड़ा बुद्धिमान, विचारवान, होता है, किन्तु इसके विपरीत यदि, कोई भी ग्रह नीच राशी का होकरपंचम स्थान में बैठा हो या पंचम स्थान को नीच दृष्टि से पूर्ण देखता हो, या पंचम स्थान में, राहू या केतु कोई बैठा हो और पंचम स्थान का स्वामी नीच राशी कहीं बैठा हो, या स्वामी भी कहीं लग्न से छठे या आठवें या बारहवें स्थान में कहीं बैठा हो और पंचम स्थान में कोई भी

उत्तम स्थान का स्वामी ग्रह न तो बैठा हो और न पूर्ण दृष्टि से, पंचम स्थान को देखता हो हो, तो ऐसे ग्रह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति मूर्ख, या चालाक होता है।

उत्तम आयु पाने वालों का ग्रह योग

जन्म कुण्डली के अन्दर जिस व्यक्ति का, लग्न से आठवें स्थान का स्वामी, कोई भी ग्रह हो और वह या तो आठवें स्थान पर ही बैठा हो, या नवम स्थान पर, या एकादश स्थान पर, या धन स्थान में, या तीसरे स्थान पर, या चौथे स्थान पर, या पाचवें स्थान पर या सातवें स्थान पर, कहीं भी बैठा हो, किन्तु नीच राशी में कहीं भी नहीं होना चाहिये—अथवा, कोई भी ग्रह, लग्न से आठवें स्थान पर नीच राशी का नहीं होना चाहिये, अथवा, कर्क राशी पर, राहू या केतु कोई भी लग्न से आठवें स्थान पर नहीं होना चाहिये,-और अष्टम स्थान पति जो कोई भी ग्रह हो वह सूर्य से अस्त नहीं होना चाहिये तथा २८ अंश से ऊपर या दो अंश से भीतर नहीं होना चाहिये, और अष्टम स्थान पर किसी भी ग्रह की नीच दृष्टि पूर्ण नहीं पड़ रही हो, और अष्टम स्थान का स्वामी किसी भी स्थान में बैठकर, अपने स्थान अष्टम को देख रहा हो, या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह उच्च राशी का बैठा हो—अथवा नीच राशी को छोड़ कर, अष्टम स्थान में गुरू और चन्द्र, या सूर्य और बुद्ध, या शुक्र और शनी, या चन्द्र और मंगल या मंगल, और गुरू, या, सूर्य और बृहस्पति, या केतु और शनी, यह इस प्रकार के ग्रहों में से कोई भी ग्रह, दो २ मिल-कर बैठें हों तो इस उपरोक्त लिखित ग्रह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति, अच्छी उत्तम आयु पाने वाला होता है।

धनवान् कंजूस के लक्षण

जन्म कुण्डली के अन्दर—जिस व्यक्ति का—धन स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह, धन स्थान में ही बैठा हो या तन स्थान में बैठा हो या तीसरे स्थान पर बैठा हो अथवा धन स्थान में लग्न का स्वामी, या चौथे स्थान का स्वामी या लाभ स्थान का स्वामी या पंचम स्थान का स्वामी, या लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह इनमें से नीच राशी को छोड़कर, धन स्थान में बैठा हो, और लग्न से बारहवें स्थान का स्वामी, लग्न से छठे या आठवें, या बारहवें स्थान पर कहीं भी बैठा हो या बारहवे स्थान पर कोई भी ग्रह नीच राशी का होकर बैठा हो, अथवा कोई भी ग्रह नीच दृष्टि से, बारहवें स्थान को पूर्ण देख रहा हो और नवम स्थान का स्वामी, कोई भी ग्रह लग्न से छठे या आठवें या बारहवे स्थान पर बैठा हो या नवम स्थान का स्वामी ग्रह नीच राशी का होकर कहीं बैठा हो या नवम स्थान को कोई ग्रह नीच दृष्टि से देख रहा हो, अथवा राहू या केतु कोई भी नवम स्थान में बैठा हो, और कोई भी उत्तम ग्रह नवम स्थान पर बलवान होकर न बैठा हो, और नवम स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह लग्न में, या पंचम, स्थान में, न बैठा हो और पंचम स्थान का या लग्न का स्वामी कोई ग्रह, नवम स्थान में न बैठा हो—और दसम स्थान का या सप्तम स्थान का स्वामी, कोई ग्रह धन स्थान में बैठा हो—और अष्टम स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह, नीच राशी का होकर व धन स्थान को छोड़कर अन्य किसी भी दूसरे स्थान में बैठा हो, और अष्टम स्थान में भी कोई ग्रह बलवान कहीं बैठा हो, तो ऐसे उपरोक्त ग्रह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति कंजूस एवं धनवान होता है।

गोचर ग्रहों का प्रत्यक्ष फल

जन्म कुण्डलियों के द्वारा प्रत्येक मनुष्यों के भाग्य की जानकारी करने के लिये एवं अच्छे से अच्छे, और बुरे से बुरे समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये, समस्त भारत के ज्योतषी पंडित, केवल विशोत्तरी दशा व अन्तर दशाओं के ही आधार पर फलादेश निर्माण किया करते हैं, किन्तु यह तरीका प्राय: गलत ही बैठता है, और अकसर अच्छी दशाओं में, बुरा कार्य होता देखा गया है, और बुरी दशाओं में, अच्छा कार्य होता देखा गया है। इसलिये यह विशोत्तरी दशाओं की पुरानी परिपाटी पूर्ण उपयुक्त सिद्ध नहीं हो सकती है। अस्तु हमारा नया सिद्ध अनुभव, समय के फलादेश की जानकारी करने के संबंध में यह है, कि पंचाङ्ग ग्रह गोचर प्रणाली से, जन्म लग्न के ऊपर जब २ यह नवग्रह, अच्छे और बुरे स्थान एवं राशियों पर, घूमते रहने के कारणों से, अच्छे और बुरे फल प्रदान करने के कारण बन जाते हैं, और इनके द्वारा उत्पन्न किया हुआ असर तत्काल प्रत्यक्ष असर दिखलाता है, जो कि सैकड़ों हजारों कुण्ड-लियों पर अनुभव से सत्य साबित होता रहा है अत: इस प्रकर्ण में ध्यान देने योग्य बात यह है कि, सू० चं० मं० बु० शु० यह पांचों ग्रहों की चाल थोड़ी २ होने के कारण से, प्रत्येक मनुष्यों की जन्म कुण्डलियों पर तो इन पांचों ग्रहों का लाभप्रद योग, तो अवसर प्राप्त होता रहता है,क्योंकि चन्द्रमा एक माह के अन्दर बारह घरों में चक्कर लगा जाते हैं और बुद्ध एवं शुक्र तथा सूर्य यह तीनों ग्रह करीबन एक वर्ष में बारहों घरों में चक्कर लगा जाते हैं, और मंगल करीबन १॥ वर्ष में बारहों घरों में चक्कर लगा जाते हैं। किन्तु बृहस्पति, का करीबन १२ वर्ष में, बारह

घरों का एक चक्कर पूरा हो पाता है, और राहू या केतु का करीबन १८ वर्ष में एक चक्कर बारहों घरों में पूरा लग पाता है, और शनी का करीबन ३० वर्ष में एक चक्कर पूरा बारहों घरों में लगपाता है। अतः जन्म कुण्डलियों के ऊपर जब तक इन चारों गृहों का लाभप्रद योग उत्तम रूप में नहीं आता है तबतक, मनुष्य के भाग्य की जागृति नहीं हो पाती है और इन चारों गृहों में भी शनी की प्रधानता सबसे अधिक है, क्यों कि इसी गृह का उत्तम स्थान पर आने में, सबसे अधिक विलम्ब और समय लग जाता है। इसलिये, शनी की चाल का देखना सबसे अधिक आवश्यक है, यही कारण है कि जनता को, विंशोत्तरी दशाओं के आधार पर बताया हुआ फलादेश प्रायः गलत बैठा रहता है। इसलिये इस गोचर गृहों के प्रभाव से, किसर लग्न पर, किस किस समयों में,क्या२ फल प्राप्त होते हैं,इस प्रणाली की पूरी जानकारी किये बिना फलादेश सही नहीं बैठ सकता है अतः जन्म कुण्डलियों पर फलादेश सोचना तो सभी गृहोंका परम आवश्कीय है,किन्तु शनी की प्रधानता इसलिये सबसे अधिक है कि जब कभी भी शनी किसी भी अच्छे घर में २॥ वर्ष के लिये, या दो घरों में पांच वर्ष के लिये,या तीन घरों में ७॥ वर्ष के लिये, अच्छे आजाते हैं, तो उस दौरान में बाकी के सभी गृहों का सुन्दर लाभप्रद योग, अनुकूल रूप में, कभी न कभी अवश्य ही मिलता रहता है इसलिए इस विषय की जानकारी, भिन्न २ गृहों की अवस्था, स्थान रहती, और राशी भेद, तथा द्रष्टी भेद के कारणों से कौन२ गृह,किस किस लग्न वालों को,कब २ लाभ प्रद होगा,इसको हमारी पुस्तक अखंड भाग्योदय दर्पण में सरल हिन्दी के अन्दर सबके समझने योग्य बड़े चमत्कार रूप में देखिये।

नव ग्रहों का प्राकृतिक स्वभाव गुण

१ सू०—प्रभाव और तेज की योग शक्ती से कार्य करते हैं।
२ चं०—मनोवल की शांत शक्ती से कार्य करते हैं।
३ मं०—अधिकार शक्ति गर्मी और हकूमत की शक्ती से कार्य करते हैं।
४ बु०—विवेक की गम्भीर शक्ती से कार्य करते हैं।
५ गु०—हृदय वल और बुजुर्गी को शक्ती से कार्य करते हैं।
६ शु०—कला और चतुराई की शक्ती से कार्य करते हैं।
७ श०—स्थिर मार्ग के द्वारा द्रढ़ता की शक्ती से कार्य करते हैं
८ रा०—कठिन चिंता और पौलसी गुप्त, शक्ती से कार्य करते हैं।
९ के०—कठिन परिश्रम चिंता और गुप्त धैर्य की शक्ती से कार्य करत हं।

इसके अतिरिक्त बात यह है कि इन नवग्रहों का उपरोक्त स्वभाव तो प्राकृतिक है किन्तु जन्म कुण्डलियों में जिस २ स्थान का जो गृह स्वामी होता है और जिस२ स्थान पर वैठता है,उस२ स्थान का कार्य वह गृह, उसी स्थानों की शक्ति लेकर और अपने प्राकृतिक स्वभाव के योग से ही करता रहता है, अतः इस प्रकर्ण में, वारहों लग्नों के अन्दर, तथा प्रत्येक लग्न की वारह राशियों के अन्दर, तथा वारह घरों के अन्दर कौन २ गृह, किस २ स्थान पर वैठकर क्या २ फल देता है, इस विषय का पूरा पूरा खुलासा सरल विवरण सहित फलादेश, हमारी भृगुसहिता पद्धति के अन्दर पढिये।

हंसने हंसाने वाले, विनोदी पुरुषों का लक्षण

जिन व्यक्तियों का, लग्न का स्वामी देहाधीश गृह, लग्न मे चौथे स्थान पर बैठा हो, और चौथे स्थान का स्वामी गृह, लग्न में बैठा हो, अथवा चौथे स्थान का स्वामी और लग्न का स्वामी, दोनों गृह मिलकर लग्न में या चौथे स्थान में या सातवे में या नवे में या दसवे में या ग्यारहवे स्थान में कहीं भी बैठे हों, और चन्द्रमा वृश्चिक राशि को छोड़कर, केन्द्र में या त्रिकोण में कहीं भी बैठा हो, परन्तु चन्द्रमा, राहू या केतु के साथ नहीं होना चाहिये तथा लग्न से छटे, आठवे, बारहवे, दूसरे, इन चार स्थानों में भी चन्द्रमा नहीं होना चाहिये, और चन्द्रमा के आस पास वाले दोनों स्थानों में भी, राहू या केतु नहीं होने चाहिये, बल्कि शुभगृह हों तो और भी ठीक है, इसके अतिरिक्त लग्न का स्वामी तथा चौथे स्थान का स्वामी, दोनों में से कोई गृह नीच राशि का नहीं होना चाहिये और लग्न में या चौथे स्थान में भी कोई गृह नीच राशि का बैठा नहीं होना चाहिये तथा राहू या केतु इन दोनों में से भी कोई गृह लग्न में या चौथे स्थान पर नहीं होना चाहिये और इन दोनों गृहों के साथ में कोई गृह नीच राशि का बैठा भी नहीं होना चाहिये, तथा वृहस्पति, मकर राशि को छोड़कर किसी भी राशि में बैठा होना चाहिये और वृहस्पति भी लग्न से, छटे, आठवे, बारहवे, इन तीन स्थानों में कहीं भी बैठा नहीं होना चाहिये। इस प्रकार के गृह योगों में जन्म लेने वाला व्यक्ति जीवन में सदैव प्रसन्न मन रहकर, हंसने हंसाने वाला विनोद स्वभाव वाला निश्चय ही होगा, इसका उदाहरण अकबर बादशाह की कुण्डली से देखिये, जो कि आज तक भारत वर्ष में अकबर बीरबल का विनोद और हंसी मजाक प्रसिद्ध है। इन उपरोक्त योगों में से यदि कुछ योग भी जिन व्यक्तियों की जन्म कुण्डली में होंगे, तो वह व्यक्ति भी हंसी मजाक के स्वभाव वाले ही होंगे।

फलित ज्योतिष का तत्व ज्ञान

प्रत्येक जन्म कुण्डलियों के अन्दर बारह घर होते हैं और इन बारह घरों के, सात ग्रह, सू०, चं०, मं०, बु०, गु०, शु०, श०, स्वामी होते हैं. अतः जिस किसी स्थान का जोग्रह स्वामी होताहै और वह जहां कहीं जिस किसी स्थान पर बैठा होता है तो, वह ग्रह दोनों तरफ के स्थानों का समिश्रित फल प्रदान करता है। उदाहरण के लिये समझिये, जैसे किसी पुरुष की कुण्डली में धन स्थान का स्वामी ग्रह यदि बुद्धी स्थान पर बैठा हो, तो बुद्धी द्वारा धन की वृद्धी के साधन बनते हैं, और धनका स्वामी लग्न से सातवें स्थान पर बैठा हो तो दैनिक रोजगार और स्त्री के भाग्य से धन की वृद्धी होती है, और यदि नवम स्थान पर बैठा हो, तो भाग्य से धन की बृद्धी का योग बनता है और यदि दसम स्थान पर बैठा हो, तो व्यापार कर्म अथवा राजस्थान के संबंध से धन की वृद्धी का योग बनता है और यदि ग्यारहवे स्थान में बैठा हो तो, बार २ लाभप्राप्ती के मार्गों से धन प्राप्त होता रहता है, और यदि पहले स्थान में या लग्न से तीसरे स्थान में धनेश बैठा हो तो, देह के परिश्रम और प्रभाव से धन प्राप्त होता रहता है, और यदि लग्न से छटे या आठवे स्थान पर धनेश बैठा होगा तो, दिक्कतों और परेशानियों से धन की प्राप्ति होती रहती है, और यदि धनेश लग्न से बारहवे स्थान पर बैठा हो तो, बाहरी स्थानों के योग से या खर्च की शक्ती से धन की प्राप्ति होती रहती है, और यदि धनेश धन स्थान में हीं बैठा हो तो, धन की संग्रह शक्ती से ही धन की बृद्धी होती रहती है किन्तु एक २ ग्रह दो २ घरों तक का स्वामी भी होता है और तीन २ जगह त० उसकी द्रष्टियाँ भी पड़ती रहती हैं, और उच्च, नीच, मित्र क्षेत्री, शत्रु क्षेत्री, सामान्य क्षेत्री सभी प्रकार

से बैठे होते हैं इसलिये इन ग्रहों के फलादेशों को सभी प्रकार से सामूहिक रूप में समझना परम आवश्यक है, अब इस विषय को अति सरल रूप में समझने के हेतु तथा इन सब भेदों को अलग२ रूपसे स्पष्ट करने के लिये ही इस पुस्तक के अन्दर, हजारों वर्ष पहिले से लेकर अबतक के बड़े २ महान पुरुषों की एवं बहादुर, धर्मज्ञ उन्नतिवान, भाग्यवान योगी, नामवर, भक्तवर, कलाकार, त्यागी बुद्धिवान, स्वाभिमानी, जितेन्द्रीय, परोपकारी, दयालु, कामी, क्रोधी, एवं अनेकों प्रकार के उन्नतिवान तथा उतार चढ़ाव के महान पुरुषों की कुण्डलियाँ दे २ करके उनके एक २ ग्रह का भिन्न भिन्न फलादेश बड़े ही सुन्दर और सरल रूप से, महान अनुभूत योगों के द्वारा लिख २ करके आइने की भाँति स्पष्टी करण किया गया है, इसके अतरिक्त समस्त संसार के प्राणियों की हरएक कुण्डलियों के अन्दर हरएक ग्रहों का फलादेश, हरएक अवस्थाओं में अलग २ लिखित रूप में समझने के लिये भृगुसहिंता पद्धति, हिन्दी एवं अंग्रेजी, सेभी सरल रूप से मालूम कर सकते हैं।

भूत भविष्य वर्तमान, का फलित ज्ञान

हर एक समय का फलित ज्ञान प्राप्त करने के लिये, केवल विंशोत्तरी दशायें एवं अन्तर प्रत्यंतर दशाओं से ही, फलादेश ठीक तौर से कदापि भी प्राप्त नहीं हो सकता है, बल्कि आकाश मार्गी ग्रह गोचरों से ही हमेशा सच्चा फलादेश तीनों काल का प्राप्त हो सकता है इसलिये जिस २ समय का प्रत्यक्ष फलादेश मालुम करना होतो उस २ समय के पचाङ्गों के अन्दर कौन २ ग्रह किस २ राशी में चल रहे हैं यह मालुम करो और फिर वह सब ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर कौन २ से स्थानों पर चल

रहे हैं और उस २ स्थानों पर उनका क्या २ फल होता रहता है।
=मानलो कि मेष लग्न वालों का फलादेश मालुम करना है तो यह देखना चाहिये कि, धनेष सप्तमेष शुक्र, और राज्येश लाभेश शनी, तथा भाग्येश व्ययेश गुरू आदि २ सभी ग्रह किन २ स्थानों पर चल रहे हैं, यदि जिस २ वर्षों में शनी, वृषभ राशी पर, तुला राशी पर, धन राशी पर मकर राशी पर, कुम्भ राशी पर, कर्क राशी पर, सिंह राशि पर, जब २ कभी आवेंगे तब २ धन लाभ की वृद्धि और मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी क्योंकि शनी जब वृषभ राशी पर होंगे तो, धन स्थान में बैठकर लाभ स्थान को पूर्ण दसवीं दृष्टि से देखेंगे और तुला राशी पर जब होंगे तो वह दैनिक रोजगार के स्थान में उच्च के हो जायेंगे और जब धन राशी पर होंगे तो अपने लाभ स्थान को तीसरी दृष्टि से पूर्ण देखेंगे और जब मकर राशी में या कुम्भ राशी में होंगे तो अपने स्थान में ही बलवान होंगे और सिंह में होंगे तो लाभ स्थान को देखेंगे और शुक्र, जिन मासों में, मेष राशी या वृषभ राशी, या कर्क राशी, या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ धन लाभ होता रहेगा और वृहस्पति जब कभी मेष राशी पर या सिंह राशि पर या धन राशि पर जब जब आवेंगे तब २ भाग्य की उन्नति होती रहेगी। इसी प्रकार हर एक लग्न में हर एक नवग्रहों का फलादेश पंचाँगों के आधार विचार करना परम आवश्यक है। इसी प्रकार सदैव ही हानिकारक या चिन्ताकारक फलादेश मालुम करना होवे तो पहिले यह देख लो पंचागों के अन्दर जो २ ग्रह जिन २ राशियों पर चल रहे हैं उन ग्रहों में से, जो २ ग्रह नीच राशियों में चल रहे होंगे या जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होंगे अथवा जो २ कोई ग्रह जन्म लग्न से

छटे, आठवें, बारहवें स्थानों में चल रहे हों तो, वह सभी ग्रह प्रायः बुरा ही फल प्रदान करते हैं। किन्तु यह ध्यान और रखना आवश्यक होगा कि जिस २ स्थान पर जो २ ग्रह चल रहा है वह वहाँ से अपनी पूर्ण दृष्टियां के द्वारा किन २ स्थानों को देख रहा है और जिन २ स्थानों पर उनकी दृष्टियाँ पड़ रही हैं उन २ स्थानों में उन २ ग्रहों की कोई नीच राशि या उच्च राशि या स्वराशी तो नहीं है। यदि किसी भी ग्रह की अपनी नीच राशी पर दृष्टि पड़ रही होगी तो, वह ग्रह उस स्थान को कष्टप्रद फल प्रदान करता है. जैसे शनी कहीं भी बैठकर यदि अपनी पूर्ण तीसरी, सातवीं, दसवीं दृष्टि से, मेष राशी को देख रहा हो तो उस स्थान को बुरा फल करेगा और तुला, मकर, कुम्भ—इनमें से किसी भी राशी को पूर्ण देख रहा होगा तो उन स्थानों को उत्तम फल प्रदान करेगा। इसी प्रकार से हर एक ग्रह जो गोचर पंचांग में चल रहे हैं वह सभी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर कौन कौन से अच्छे बुरे स्थानों में चल रहे हैं, और कौन-कौन से स्थानों के वह स्वामी हैं. और कौन २ से स्थानों पर उनकी अच्छी बुरी दृष्टियाँ पड़ रही हैं और कितने २ समय तक वह ग्रह उन स्थानों में ठहरेंगे। इन सभी बातों का ठीक २ विचार करके समय का फलादेश भूत, भविष्य, वर्तमान का मालुम करना चाहिये। इस प्रकरण का पूरा २ ज्ञान कि कौन २ ग्रह किस २ लग्न वालों को, कौन-कौन सी राशियों में आकर क्या २ फल अच्छा या बुरा प्रदान करता है इसको हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण के द्वारा बड़े सरल रूप से तीनों काल का फलादेश मालुम करिये।

———

भारत स्वतंत्रता दिवस की कुण्डली

सम्वत
२००४ वि०
श्रावण
कृष्णा १३
गुरुवार इष्टम
४६/२२ स०
३/२६ ल०
१/१२
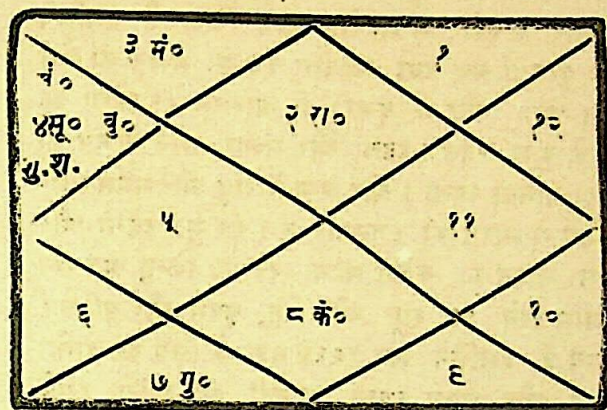
भारत स्वतंत्र जिस दिन जिस वक्त हुआ था उस वक्त वृषभ लग्न थी, लग्न के अन्दर राहू बैठा है, इसलिये भारत की देह के टुकड़े हो गये और पाकिस्तान के नाम से एक टुकड़ा भारत के अंग से अलग हो गया और इसके बाद भी कुछ न कुछ संघर्ष बराबर चलता ही रहना है किन्तु लग्न से तीसरे पुरुषार्थ के स्थान पर पाँच ग्रह सू०, चं०, बु०, शु०, श०, बलवान बैठे हैं इसलिये भारत का पुरुषार्थ, सदैव जाग्रत रहेगा और कभी भी हार नहीं मानेगा, बल्कि अपने बाहुबल की शक्ती के संबंध में भारत सदैव उन्नति पर रहेगा, इसके अतिरिक्त शत्रु स्थान पर गुरू बृहस्पति बैठे हैं, इसलिये संसार के अन्दर शत्रु पक्ष में भारत का मान और गौरव तथा बड़प्पन रहेगा, किन्तु लाभेश गुरू के छटे स्थान

पर बैठने से तथा अष्टमेश मंगल के धन भवन में बैठने, से भारत के कोष में धन का अभाव रहेगा तथा धन अधिक खर्च होता रहेगा यद्यपि धन स्थान का स्वामी बुद्ध, पंचमेश होकर पुपार्थ के स्थान पर बैठा है और ४ ग्रहों से सहयोग प्राप्त किया है इसलिये बुद्धीवल और पुरषार्थ बल तथा सहयोग बल से, भारत का कोई काम रुका न रहेगा और न दूसरों के आसरत ही रहेगा यह अपनी शक्ती के ऊपर स्वतंत्र रहेगा और संसार इसके पौरुष की शक्ती का लोहा मानता रहेगा। और लग्न में राहू और सप्तम स्थान में केतु के बैठने से भारत की (जनता) कुछ कष्ट युक्त रहेगी और इसी वजह से भारत का क्लेश सहना पड़ेगा, किन्तु अब सन १९५९ के समाप्त होने पर, राहू और केतु, बृषभ और बृश्चिक पर से हट गये हैं, इसलिये सन १९६४ तक के लिये यह दोनों ग्रह अब लग्न और सप्तम स्थान पर नहीं आ सकेंगे, इसके अतिरिक्त अब भविष्य में सन १९६१ तक के लिये, भारत का राज्येश और भाग्येश शनी धन राशी तक रह पायगा अर्थात लग्न से अष्टम रहेगा, और १९६१ में बृहस्पति भी नीच राशी का भाग्यस्थान पर रहेगा अतः वहां तक भारत का भाग्य कमजोर रहेगा और सन् १९६२ के प्रारम्भ से लेकर १९६७ तक के अन्दर भारत की बराबर भाग्योन्नति होती रहेगी और बाद में केवल १९७० तक कुछ कमजोरी रहेगी इसके बाद पुनः भारत के भाग्य की उन्नति एवं जागृती होती चली जायगी, लम्बे समय तक के लिये। इस ग्रह गोचर प्रणाली की संपूर्ण लेखन शक्ती, अखंड भाग्योदय दर्पण के अन्दर देखकर प्रत्येक स्त्री पुरुषों के सच्चे फलादेश का ज्ञान प्राप्त करिये, यह समय का चमत्कारिक फलादेश अद्वित्तीय और अनुभूत रूप से लिखा गया है।

महानवीर महाराणा प्रताप
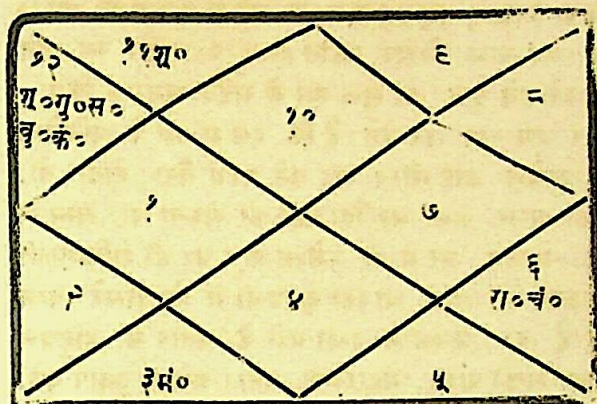
नोट— इसकुण्डली में शुक्र उच्चाभिलाषी तो है ही किन्तु मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपके जन्म के समय तक पंचाग मतभेद के हिसाब से किसी भी पंचांग की गणना से यह चलित में शुक्र मीन राशिपर आगये होंगें इसलिए मैंने इनके शुक्र का दोनो स्थानो के सम्बन्ध का फल वर्णन किया है. दूसरे यह भी है कि उच्चाभिलाषी ग्रह भी उच्च का सा फल करता है।

आपकी जन्म कुण्डली में अगर सबसे जबरदस्त कमी है तो यही है कि आपकी कुण्डली के चारों केन्द्र स्थान ग्रहों से खाली पड़े हैं, और इसी कारण से आप, अपने समस्त जीवन में भी राज्य की स्थिर शक्ती प्राप्त नहीं कर सके थे और जंगलों में जीवन व्यतीत करना पड़ा था, दूसरी तरफ आपकी कुण्डली में जो सबसे अधिक महानता का योग है वह यह है कि, वाहुवल के स्थान पर पांच ग्रह बलवान पड़े हैं और शत्रु स्थान पर मंगल,

लाभेश एवं सुखेश होकर बैठे हैं, इस मंगल का असर यह है कि छटे घर में बैठने से, तो वास्तविक सुख और लाभ का हमेशा ही घाटा पैदा किया है किन्तु शत्रु पक्ष से टक्कर लेने में हमेशा ही आपका अपना सुख एवं लाभ विशेष प्रतीत होता रहा और उस प्रतिद्वन्दता के बरजे हुये दुख को सुख रूप में सदैव अनुभव किया। यहाँ यह बात हम स्पष्ट कर देते हैं कि इस मंगल के अतिरिक्त लाभेश या सुखेश कोई सौम्य ग्रह छटे घर में बैठा होता तो, इस प्रकार का असर कभी भी पैदा नहीं कर सकता था, लग्न से तीसरे, छटे, गारहवें, घर में तो हमेशा क्रूर ग्रह ही शक्तिशाली कार्य किया करते हैं। अतः आपकी कुण्डली में जो तीसरे स्थान पर पांच ग्रह हैं, दर असल में इन्ही ग्रहों के प्रताप से, बाहुबल की बहादुराना शक्ती पाकर, महाराँणा प्रताप प्रतापी प्रताप बने, क्यूँ कि इन ग्रहों की विशेषता यह है कि प्रथम तो, केतु का तीसरे या छटे स्थान पर ही बैठना ही महान शक्ती दायक और शत्रु नाशक होता है, इस पर भी कहीं केतु दूसरे बलवान ग्रहों के साथ में बैठा हो तो फिर उनकी शक्ती का दायरा और भी महान हो जाता है, किन्तु इतने पर भी यह विशेषता है कि, शनी, देहाधीश आत्मबल के स्वामी होकर तीसरे बाहुबल के स्थान पर बैठे हैं जो कि स्वभाव से ही बड़े गरम और हठीलें हैं फिर पराक्रम के स्थान पर बैठने से तो उन्होंने और भी हिम्मत और आत्मबल की शक्ती का प्रयोग बाहुबल के अन्दर पैदा कर दिया, और शुक्र बुद्धि एवं राज्यस्थान के स्वामी होकर पराक्रम के स्थान की तरफ उच्चाभिलाषी होकर बैठे हैं, इसलिये आपने शाही सल्तनत के मुकाबले में एवं राजनैतिक क्षेत्र में, अपनी बुद्धि और बाहुबल की शक्ती के द्वारा हमेशा अपना उन्नत मस्तक रखा, और किसी भी शर्त पर सन्धि तक भी करने को तय्यार नहीं हुये। इसके अलावा

बृहस्पति भी हृदय बल की शक्ति को लिये हुये पराक्रम के स्थान पर स्वक्षेत्री होकर बैठे हैं जो कि व्ययेश भी हैं इसलिये बारहवें स्थान का स्वामी बाहरी स्थानों की शक्ती प्रदान करने वाला होता है. अस्तु आपको अपने बाहुबल व हृदय बल की मजबूत शक्ती के कारण ही हमेशा दूसरे स्थानों में सहायक शक्ती प्राप्त होती रही, अर्थात् बगैर धन दौलत के, जंगलों में भी भीलों ने बड़ी २ सैन्य सहायतायें प्रदान की और आपकी इसी बहादुरी पर मुग्ध होकर भामा शाह ने पचास लाख मुहरें चरणों पर लाकर डालदी तथा इसके अलावा, हजारों लाखों प्रजावासियों ने बगैर किसी लोभ लालच के,महाराणा के साथ अपनी जानें झोंकदी और आपके बचपन में भी केवल आपकी इस हृदय बल की शक्ती के कारण ही मंत्री गणों ने, आपके बिलासी चचा साहब का ताज जबर-दस्ती उतार कर आपको अनुपम विनय के साथ जबरदस्ती रूप से पहिनाया, जो कि एक राज का ताज नहीं था, बल्कि काँटों का ताज था जिसे आपने पहिनने के बाद, सारे जीवन के सुखों पर हमेशा के लिये पानी फेरना मंजूर करलिया किन्तु एक बहादुर होने के नाते ताज की लाज को नहीं जाने दिया। इसी प्रकार आपका सूर्य भी तीसरे स्थान पर बैठा है जो कि अकेला सूर्य ही तीसरे या छठे स्थान पर बैठकर प्रत्येक मनुष्य को बहादुर बना देता है किन्तु सूर्य नीच राशी का नहीं होना चाहिये अतः प्रतापी प्रताप की सूरता को सूर्य ने अपनी तरह सदैव के लिये संसार में रोशन करदीया जो आजतक अजर अमर है अब आपके नीच राशी गत बुद्ध, का विवेचन इस प्रकार है कि आपका बुद्ध छटे व नवम स्थान का स्वामी होकर लग्न से तीसरे स्थान पर नीच का होकर बैठा है इसलिये क्यूँ कि यह वैश्य स्वभाव का गृह है और इस पर भी नीच का होकर बैठा है और शत्रु पक्ष का व

भाग्य पक्ष का स्वामी है, इस वजह से बुद्ध ने सारे जीवन के अन्दर सिर्फ एक बार एक क्षण के लिये अपना पूरा असर महाराणा के ऊपर बहुत जोर से करदिया जिसके फल स्वरूप, आपकी अत्यंत गरीवी और आर्थिक संकट की अवस्था में—जिस वक्त आप की दुर्बलता पराकाष्टा पर पहुंच चुकी थी और आपके एक छोटे से बच्चे के हाथ से, एक जंगली नेवला: घास की रोटी को भी छीन कर ले गया और बच्चा भूख से व्याकुल होकर रोने लगा, उस वक्त एक क्षण के लिये महाराँणा का धैर्य पूर्ण रूप से टूट गया और वह अपनी इस वेकसी के ऊपर रोपड़े और इस भाग्य की महान् दुर्बलता ने, अपने शत्रु मुगल सम्राट को सन्धि पत्र लिखने के लिये राँणा को विवश कर दिया—क्यूंकि, बुद्ध भाग्य और शत्रु पक्ष का स्वामी नीचका है, इसलिये भाग्य की दुर्बलता के कारण शत्रु से सन्धि करने की जो दब्बू नीती थी महाराँणा जैसे महान वहादुर बीर पुरुष से अख्त्यार कर वाली और भाग्य की दुर्बलता का दूसरा कारण यह भी है कि आपके स्त्री व गृहस्थ स्थान के स्वामी चन्द्रमा, मनके, अधिकारी होकर भाग्य स्थान पर राहू के साथ वैठे हैं अतः भाग्य स्थान पर यह चन्द्र ग्रहण योग, गृहस्थ होने से, मन की कमजोरी द्वारा उत्पन्न हुआ और बच्चों की भूख को जब आप घास की रोटी से भी तृप्त न कर सके तो इस गृहस्थ झंझट ने मन को महान अशाँत कर दिया, और उधर भाग्य स्थान पति बुद्ध के नीच होने से एवं बुद्ध की वैश्य प्रकृति तथा विवेक के अधिकारी होने से, आपकी विवेक शक्ति शत्रु पक्ष की तरफ से कमजोर हुई इसलिये इन दोनों कमजोरियों ने एक बार एक साथ उग्र रूप धारण कर लिया, और राणाँ को विवश होकर सन्धि पत्र अपने शत्रु मुगल सम्राट

को लिखना पड़ा किन्तु वही बुद्ध भाग्य को उच्च दृष्टि से देख रहा है, इसलिये, भाग्य की शक्ती से, स्वतः ही राँणा की कमजोरी दबी रह गई क्योंकि जिस समय मुगल सम्राट के भेजे हुये पत्र में राजा पृथ्वी राज के लिखे हुये इस सोरठे को राँणा ने पढ़ा (हिन्दू पति प्रताप, पति राखी हिन्दू वासरो, सहे विपत संताप सत्य साथ कर आपणी) पढ़ते ही महाराँणा के अन्दर, जो कि वास्तविक, महान वीर होने का महत्व दायक प्रमुख ग्रह योग था, वह एक दम उग्र रूप से जाग्रत हो उठा और उनकी मन और विवेक की जो कमजोरी थी वह काफूर हो गई और वीर राँणा के हृदय की गति पत्थर की चट्टान की तरह पुनः मजबूत होगई जिसके फल स्वरूप फिर उन को अपनी गरीबी का लेश मात्र भी ध्यान नहीं रहा और उन्होंने पुनः मुगल सम्राट को लड़ाई के लिये बड़ी जोरों से ललकारा और फिर दुबारा अन्त समय तक, उनके जीवन में कभी ऐसी कमजोरी पुनः नहीं आई अब हम आपके राज्येश शुक्र की व्याख्या दो रूपों से और करते हैं, एक तो यह है कि बाहुबल की तरफ उच्चाभिलाषी होने से, राजकीय सम्बन्धों को बाहुबल की शक्ति से ही आपने हमेशा निवटारा किया और दूसरी ओर राज्येश शुक्र का धन स्थान में बैठने से यह फल हुआ कि आपको प्रथम तो आपके चचा का राज ताज-जबरदस्ती खुशामदन तरीके से आपको मिला दूसरे. भामा शाह की ५० लाख मुहरें भी विनय पूर्वक जबरदस्ती खुशा-मदन तरीके से ही प्राप्तहुई आगे और भी ब स्तनव बस्तन आपको धन की सहायतायें प्राप्त होती रही इसलिये आपका शुक्र लग्न से दूसरे तथा तीसरे, दोनों स्थानों का सा ही कार्य कर रहा है इससे यहभी सिद्ध होता है कि चलित भाव में शुक्र लग्न से तीसरे स्थान पर आगये होंगे यदि लग्न से दूसरे स्थान पर ही पूर्ण रहते तथा धन का इतना भारी कष्ट आपको कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता जितना कि कभी २ कई बार आपको प्राप्त हो चुका था ।

श्री छत्रपति शिवाजी

ता० १९ फरवरी सन् १६३०,
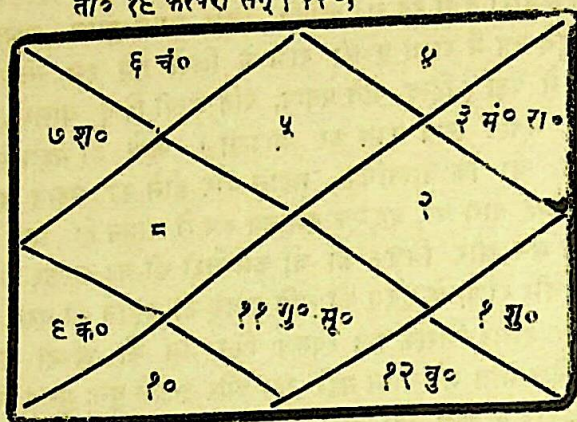
आपकी जन्म कुण्डली में, शत्रू पक्ष का विषय, बहुत ही विचित्र है, देखिये, एक तो शत्रू स्थान का स्वामी शनीश्चर, उच्च का होकर लग्न से तीसरे, बाहुबल के स्थान पर बैठा है इस हेतु शत्रु पक्ष पर बाहुबल के द्वारा विजय पाने की शक्ति एवं हिम्मत आपके अन्दर महान् रूप में मौजूद थी, और शत्रु स्थान के स्वामी शनीकी पूर्ण दृष्टि, बुद्धि स्थान में पड़रही है, और बुद्धि स्थान पर उच्च के केतु बैठे हैं,तथा बुद्धि स्थान के स्वामी गुरू की पूर्ण नवम दृष्टी शनी पर पड़रही है,इसलिये बुद्धीका शत्रू पक्ष से संबंध के कारण ही आप, अपने जीवन में, बुद्धी की पेचीदा कला से भी शत्रु को परास्त करने में बड़े समर्थ सिद्ध हुये थे, इसके अतिरिक्त और दूसरी खास बात यह है कि आपके भाग्येश मंगल की पूर्ण आठवीं द्रष्टी, उच्चभाव से शत्रु स्थान पर पड़ रही है, अतः भाग्य का स्वामी जो भी ग्रह होता है वही ग्रह ईश्वरीय शक्ती का भी स्वामी होता है, इसलिये आपका मंगल ईश्वरीय

वल की शक्ती का महान प्रयोग, शत्रु स्थान पर कर रहा है, अतः यही कारण था कि आपको अपने जीवन में, निज की छोटी सी सैन्य एवं राज्य शक्तीके होतेहुये भी एक मुगल सम्राटकी शक्ती से लोहा लेने में सदैव विचित्र २ सहायतायें प्राप्त होती रहीं, जिसके फलस्वरूप ही आप हमेशा कठिन से कठिन शत्रुपक्ष की वेढब समस्याओं को भी सुलझाते रहकर शत्रु का सामना करते रहे, यदि इनके पास यह तीन प्रकार की महान शक्तियाँ न होतीं, यानी एक तो वाहुवल की शक्ती, दूसरे बुद्धीवल की शक्ती, तीसरे ईश्वरीय वल की शक्ती, तो तुलनात्मक दृष्टी से यह मुगल सम्राट के सन्मुख टक्कर लेने के लायक आपकी कदापि गणना होही नहीं सकती थी। इसके अलावा एक वही योग जो कि हम पुस्तक के प्रारम्भ में ही लिख आये हैं कि किसी भी प्रकार से लौकिक उन्नति करने वाले व्यक्तियों की कुण्डलियां में, लग्न से तीसरे, छटे, ग्यारहवे, घरों में क्रूर, यानी गरम स्वभाव के ग्रहों का होना बड़ा उत्तम सफलताका सूचक होता है, अतः यही योग आपकी कुण्डली में इस प्रकार से हैं, कि तीसरे घर में उच्च का शनी बैठा है और छटे घर में, मङ्गल की पूर्ण दृष्टी उच्च रूप से पड़ रही है, और ग्यारहवे घर में, मङ्गल व राहू स्वंय ही बैठे हैं। इसलिये यह योग भी लौकिक उन्नति करने वालों को सोने में सुगन्ध का कार्य करता है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में, आठवे घर में नीच का बुद्ध होने से जीवन में अशांती का योग बनता रहा है, और सुख के संबंधों में कमी होतीरही,इसके अलावा आपका राजस्थान का स्वामी एवं पराक्रम स्थान का स्वामी शुक्र लग्न से नवम भाग्य स्थान में बैठा है, और पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टी से देख रहा हैं, इसलिये आपके पराक्रम की वृद्धी करने में तीन ग्रहों का सहयोग विशेष रूप से

प्राप्त है, एक तो शनी उच्च के होकर पराक्रम स्थान में बैठे हैं दूसरे पराक्रम के स्वामी शुक्र, पराक्रम स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, और तीसरे बृहस्पति की पूर्ण द्रष्टी पराक्रम के स्थान में पड़ रही है, अतः आपका पराक्रम महान सराहनीय रहा था और आपकी गणना महान वीरों मे ही प्राप्त रही थी, और आपका देहाधीश लग्नपति सूर्य सप्तम स्थान में गुरू के साथ बैठकर गु०, सू०, दोनों ही ग्रह, लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, अतः लग्नेश का लग्न में बैठना या लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देखना, यह भी एक प्रसिद्धता पाने काखास योग है, और लग्नपति सूर्यके लग्न पर द्रष्टी होने से आप तेजस्वी भी महान रूप में ही रहे, इसके अलावा राज्यस्थान का स्वामी शुक्र, भाग्यस्थान पर बैठने से, राज्य संबंधी मामलों पर भाग्य की सहयोग शक्ती से भी सफलता पाने का सुन्दर योग करते हैं, और ग्यारहवे स्थान पर मङ्गल व राहू के साथ बैठने से लाभ के स्थान में महान सफलता पाने का योग बनता है, अतः आपकी कुण्डली में केवल, चन्द्रमा और बुद्ध को छोड़कर प्रायः सभी ग्रह शक्ती प्रदान करने वाले हैं, और धन स्थान पर बुद्ध की उच्च द्रष्टी का होना और मङ्गल की पूर्ण द्रष्टी का धनपर होना, कोष को वढ़ाने का सूचक है, लेकिन चन्द्रमा क्यू कि बारहवे स्थान का स्वामी होकर धन स्थान में बैठा है, इसलिये यह कोष को हानि पहुँचाने का कार्य करते हैं। इसके अलावा बाहुबल के स्थान पर बैठे हुये शनीश्चर की, भाग्य स्थान पर नीच द्रष्टी पड़ रही है, इसका मंतव्य यह हैं कि जब बाहुबल के स्थान पर उच्च का क्रूर ग्रह बैठकर भाग्य को नीच द्रष्टी से देखताहैतो इसी हेतु आपका सिद्धांतभी यही था किआप पुरुषार्थ वादी थे. भाग्यवादी नहीं थे, बल्कि भाग्य स्थान पर बैठे हुये शुक्र की भी पूर्ण द्रष्टी जो कि अपने पुरुषार्थ स्थान पर पड़ रही

है, इसलिये शुक्र ने भी आपको भाग्यवादी न बनाकर पुरुषार्थ वादी ही बनाया और भाग्य के स्वामी मङ्गल की भी भाग्य स्थान पर द्रष्टी न होकर पूर्ण उच्च द्रष्टी शत्रु स्थान पर पढ़ रही है, इसलिये यह भी भाग्यवादी न बनाकर संघर्ष वादी बनाते हैं, अत: यह सभी कारण ऐसे हैं, जिनसे आपको वीरत्व का मार्ग ही प्रधान रूप से प्राप्त हुआ, यह एक सिद्धांति बात है कि वीर पुरुषों की बाहुबल शक्ती, एवं धैर्य शक्ती, तथा शत्रु दमन की शक्तीं, बलवान होती है, और सुख शांती प्राप्त करने का शक्ती कमजोर होती है, तभी ऐसे महापुरुष सुख शांती की परवाह न करके अपने अन्तिम कर्तव्य और लोभ हर्षण युद्ध की ही पसंद किया करते हैं, यही सब योग आपकी कुण्डली में प्रधान रूप से बने हुये हैं, इसलिये आपका नाम आजतक संसार में अजर अमर रूप में हैं। और पंचम स्थान पर उच्च का केतु बैठा है और केतु पर शनी की तीसरी बलवान द्रष्टी पूर्ण पड रही है, इसलिये आपकी बुद्धी की शक्ती ने जरूरत से ज्यादा काम किया और मुगल सम्राट को बार २ नीचा देखना पड़ा। और वीर शिवाजी पर विजय प्राप्त नहीं कर सका।

राष्ट्र पिता पूज्य मा० गांधी

जन्म २ अक्टूबर १८६६ सुबह ७=४५ सं० १६३६ आश्विन कृष्णा १३
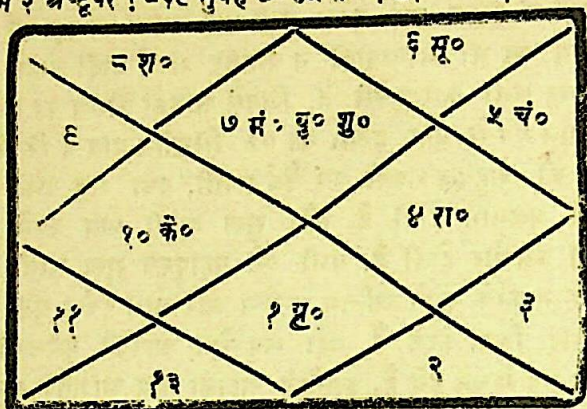
आपकी कुण्डली में शुक्र स्वक्षेत्री होकर लग्न में बैठा है और शुक्र अष्ट मेष भी है इसलिये आत्मबल की महान् शक्ति आपको प्राप्त थी, लेकिन जहाँ पर आपको अपनी बात कमजोरी में आती दिखलाई देती थी अथांत् जब कोई ऐसी कठिन समस्या सामने आती थी कि जिस वक्त राज या समाज वाले इनकी बात मानने में अवहेलना करते थे। उस वक्त यही शुक्र जो अष्टम पति, यानी आयु पति और देह पति है, जीवन मरण की बाजीलगाकर आपको अनशनद्वारा सफलबनातेथेक्यूकिअष्टमस्थान ही जीवन मरण का स्थान है और उसी स्थान का स्वामी जब सबसेबड़े स्थान,यानी लग्नमें देहाधीश होकर स्वक्षेत्र स्थान में बैठ गया और देवी सफलताओं के स्वामी भाग्येश बुद्ध का साथ कर लिया औरपराक्रमेष गुरूका उसपर परस्पर दृष्टिसम्बन्ध होगयाहै। इसलिये आमरण अनशन कीशक्तीमें आप सदैव सफल हुये किन्तु व्ययेष,बुद्ध का देह में बैठना और रोगेश गुरूकी देहपर दृष्टि होना

तथा सप्तमेष तृतीयेश मंगल का देह में बैठना, यह सभी कारण आपकी देह के दुर्बलता के सूचक हैं और यही सब कारण योग अपना पूरा असर दिखाने के लिये, आमरण अनशन का योग बनाकर देह की दुर्बलता को पराकाष्ठा तक पहुँचा २ कर प्राणान्त कष्ट की संभावना बना देते थे, किन्तु आयू कारक शुक्र के, स्वक्षेत्र लग्न में बैठने से, तथा हृदय बल और बाहुबल के स्वामी गुरू से दृष्टि सम्बन्ध कर लेने से व गुरू का अपने पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने से तथा ईश्वरी बल के स्वामी धर्मेष बुद्ध का संग होने से ही, आप इस आमरण अनशन के कार्यों में सदैव ही सफल होते रहें, और इन्हीं ग्रहों के प्रभावसे आपको महानख्याती बल एवं मानप्रतिष्ठा का बल प्राप्त था। इसके अलावा शनीदेव आपके लग्न से दूसरे स्थान में चतुर्थेश और पंचमेश होकर बैठे हैं इनकी विशेषता यहहै कि एक तो अपने भूमिस्थान को पूर्ण तीसरी दृष्टी से देख रहे हैं और इस पर भी वहाँ इनके मित्र केतू डटे हुये हैं, इसलिये चौथे स्थान पर शनी की दृष्टी से युक्त, शनी के घर में बैठे हुये केतू भूमि की महान शक्ती प्राप्ती के लिये, मुद्दतों तक लड़ते झगड़ते रहे और अन्त में विजयी हुए, और चौथे घर का स्वामी अर्थात् (शांती सुख का स्वामी) शनी बुद्धी घर का मालिक होकर अपने चौथे स्थान को पूर्ण दृष्टी से देख रहेहैं इसलिये इन्होंने हमेशा शांती की आवाज को ही ऊँचा उठा २ कर अहिंसात्मक युद्ध की नीती को ही अपनाया था। किन्तु चौथे स्थान पर केतू के बैठने का यह असर और है कि भूमि के अधिकार प्राप्ती के समय भी पाकिस्तान के नाम से भारत का १ टुकड़ा निकल गया, और जिस प्रकार की यह शांती अपने जीवन में देखना चाहते थे उसमें कमी पैदा हो गई। हम अपनी पुस्तक के प्रथम नोट में ही यह लिख चुके हैं कि केतू या राहू, यदि अपने स्थान पति से पूर्ण द्रष्ट हों, या संग बैठे

हों तो उस स्थान में महान कार्य अवश्य करते हैं, यही योग जवाहर लाल नेहरू की कुण्डली में शत्रू स्थान पर केतू और गुरु के द्वारा बना हुआ है, जिसके प्रभाव से जवाहर लाल ने इतनी बड़ी ब्रटिश सल्तनत से बराबर दुश्मनी करके टक्कर लेते रहे और हार नहीं मानी और अन्त में विजयी होकर ही रहे और इसी योग के प्रताप से जवाहरलाल जी को बचपन से ही गाँधी जी ने अपने हाथ की कलछी बनाया था, इसी प्रकार गाँधीजी की कुण्डली में शनी केतू का योग है भूमि की प्राप्ती के लिये। इसके अतिरिक्त आपके शनीदेव पूर्ण द्रष्टी से राज्येश चन्द्रमा को देख रहे हैं अर्थात् बुद्धी घर का स्वामी शनी और मन की शक्ती का मालिक चन्द्रमा जो राज्येश है इनसे सम्बन्ध कर लेने से ही आपका बुद्धीबल व मनोबल, राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र में बड़ा ऊँचा काम करता था, इसके अलावा आपकी कुण्डली में गुरु आदि ६ ग्रह केन्द्र के अन्दर हैं और चारों केन्द्र के स्थान, ग्रहों से युक्त हैं यानी (पहिला. चौथा, सातवाँ, दसवाँ) सभी घरों में ग्रह मौजूद हैं यह योग भी केन्द्रीय शक्ती का ज्ञान और अधिकार प्राप्त करने का महान सूचक है। इसके अलावा दशम स्थान में बैठे हुए राहू का असर यह है कि ब्रटिश शासन के समय में, राज्य से कई २ बार यातनायें सहनी पड़ी थीं और जेल यात्रायें भी बहुत बार करनी पड़ी थीं, मान अपमान भी सहना पड़ा था तथा मार भी पड़ चुकी थी, इसके अलावा इस राहू ग्रह का यह भी प्रभाव था कि आपके शरीर पर वस्त्राभूषणों के स्थान पर केवल १ लँगोटी और सोटी को ही प्रमुख स्थान था आप राजसी पोशाक में सुसज्जित नहीं रह सकते थे। आपकी कुण्डली में राज्येश चन्द्र, पूर्ण द्रष्टी से, बुद्धी स्थान को देख रहे हैं और बुद्धी स्थान का स्वामी शनी, पूर्ण द्रष्टी से, राज्येश चन्द्र को देख रहे हैं

अतः मन की शक्ती के मालिक चन्द्र ने राज्येश होकर बुद्धी स्थान से एवं बुद्धी स्थान के स्वामी शनी से जब अपना सम्बन्ध पैदा कर लिया, इसीलिये आपके बुद्धीयोग व मनोयोग के द्वारा निकले हुए शब्दों की पूजा, मान्यता, सारे संसार ने की थी और इसीलिये आपकी मृत्यु पर सारे संसार ने आँसू बहाये थे। मगर यह ध्यान रखने योग्य बात है कि चन्द्रमा जन्म लग्न में जिस स्थान का स्वामी होता है, उसी स्थान के मूल मंतव्य को लेकर ही हर मनुष्य अपने मन का द्रष्टीकोण कायम किया करता है अतः गाँधी जी की कुण्डली में चन्द्रमा ने राज और समाज का अधिकार पाया था, इसलिये आपके अन्दर राजनैतिक व सामाजिक ज्ञान की महान प्रधानता थी, इसके अतिरिक्त, धर्मपती बुद्ध ने, लग्न में, मित्र रूप से बैठकर देह से व देहाधीश शुक्र से, दोनों से ही सम्बन्ध कर लिया और हृदय के स्वामी गुरू से भी परस्पर सम्बन्ध पैदा कर लिया, इसलिये धार्मिक तत्व ज्ञान की भी प्रधानता आप में महान रूप से थी। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में, सूर्य लाभेश होकर लग्न से बारहवें स्थान में बैठे हैं अर्थात् खर्च के स्थान में बैठे हैं और किसी भी ग्रह से सूर्य ने द्रष्टी सम्बन्ध नहीं किया है और न किसी भी ग्रह के साथ ही बैठा हैं, इसलिये आपको जो कुछ भी, धन या वस्त्र व कीमती वस्तुयें भेंट रूप में प्राप्त होती थी, उन सबको तुरन्त ही दूसरों को प्रदान कर देते थे अपने स्तेमाल के लिये नहीं रखते थे, क्यूँ कि लाभेश बिलकुल अकेले होकर खर्च के स्थानमें बैठ गये,इसके अतरिक्त खर्च के स्थान से ही, बाहरी दूसरे स्थानों का संबन्ध प्रकरण भी देखा जाता है अतः सूर्य बारहवें स्थान में बैठे हैं और बारहवें स्थान के स्वामी बुद्ध. देह के स्थान में बैठे हैं इसलिये, सूर्य बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से प्रकाश देते हैं और बुद्धदेव के द्वारा, बाहरी स्थानों

के सम्बन्ध में अपनी विवेक शक्ती का विशेष ज्ञान प्राप्त करवाते थे क्यूँकि, देह में, देहाधीश के साथ केन्द्रस्थ है, और धर्मेश होने से भी बुद्ध ग्रह में ईश्वरीय ज्ञान शक्ती भी साथ में प्राप्त है अतः बाहरी स्थानों का ज्ञान भी बड़ा ऊँचा गाँधीजी में मौजूद था और एक तो भारत भूमि की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में, चौथे स्थान का स्वामी शनी कोष में बैठकर अपनी पूर्ण द्रष्टी से चौथे स्थान को देख रहा है और उसका मित्र केतू भी शनी का पूर्ण सहायक है क्योंकि शनी के घर में बैठा है और शनी की पूर्ण द्रष्टी भी केतू पर पड़ रही है इसलिये मानो यह भी शनी का ही पूर्ण स्वरूप बन गया है दूसरे, कोष का स्वामी मंगल अपनी पूर्ण द्रष्टी की,शक्ती के द्वारा, चौथे स्थान को उच्च द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये इन तीन ग्रहों की ताकत, भूमि की शक्ती प्राप्त करने में विशेष रूप से काम कर रही हैं, यह जरूर है कि, राहू केतू जहाँ भी बैठते हैं, वहाँ पहिले परेशानियों के कारण, जरूर पैदा करते हैं, और अंत में बहुत सी दिक्कतों के बाद उस स्थान में सफलता पैदा करते हैं,जैसा कि हम इस पुस्तक के प्रथम नोट में राहू केतू के प्राकृतिक स्वभाव का वर्णन कर चुके हैं, इसके अलावा जिस आदमी का अष्टमेश व लग्नेश अच्छा बैठता है और अष्टम में कोई दोषी या क्रूर ग्रह नहीं होते, वह आदमी मृत्यु के समय बहुत दिनों तक बीमार नहीं रहा करता है अतः यही योग गाँधी जी की कुण्डली में भी पड़ा हुआ है अतः आपने बगैर बीमार रहे ही शरीर छोड़ा था किंतु आपकी गोली खाकर मृत्यु होने का कारण, ग्रह योग से केवल मङ्गल के कारण बनता है क्यूँकि लग्न से सातवें और दूसरे स्थान का स्वामी ग्रह मारक समझा जाता है और क्यूँकि वह मङ्गल क्षत्री ग्रह है इसलिये उसने इनकी मृत्यु वीरों की भाँति गोली के द्वारा हुई। जिस दिन स्वराज्य मिला है उस दिन गाँधीजी की कुण्डली में पचाँग ग्रह गोचर

प्रणाली से राजस्थान कर्क में ५ ग्रह सू० चं० बु० शु० श० वलवान थे और लग्न में बृहस्पति थे तथा भाग्य स्थान पर धनेश मङ्गल थे। यह राजयोग कारक समय था। इसका पूरा २ विवरण अखंड भाग्योदय दर्पण के अन्दर देखिये।

श्री पं० जवाहर लाल नेहरू

१४ नवम्बर १८८९
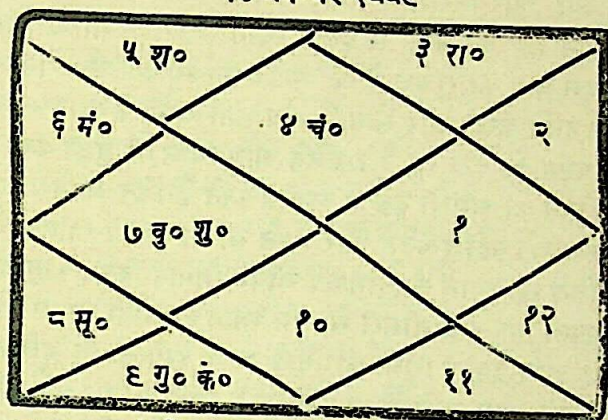
इस कुण्डली में चन्द्रमा स्वक्षेत्री होकर लग्न में वैठा है अतः चन्द्रमा मन की शक्ती का प्राकृतिक स्वामी है और तन का स्वामी भीहोने से,आत्मबल और मनोवल दोनों का अधिकारी है,इसलिये ही, नेहरूजी का मनोबल इतना दृढ़ संकल्पी है कि वह अपने सिद्धाँत पर सदैव से ही अटल रहते चले आरहे हैं। यद्यपि इस कुण्डली में चन्द्रमा के दोनों तरफ,क्रूर ग्रह,राहू एवं शनीदेव लगे हुये हैं, जो इस कुण्डली में इस वात के सूचक हैं कि इनका जीवन सदैव से वड़े २ जवरदस्त संघर्षों में घिरा रहा है और मुद्दतों तक आप अपने जीवन में जेल यात्रा भी करते रहे हैं। यद्यपि गनीमत यह है कि चन्द्रमा स्वक्षेत्री हैं इसलिये वतौर नजर कैद के ही सजा मिलती रही है और यहाँ तक है कि वर्तमान में, जव से नेहरूजी ने शासन सत्ता सँभाली है, तव से भी अव तक सुख

शान्ती आपको प्राप्त नहीं हुई है,और न भविष्य में आपको मन की सुखशान्ती प्राप्त होने की आशा ही है क्यूँकि यह सौम्यचन्द्र दोनों तरफ से रा० श० के द्वारा घिरा हुआ है, किन्तु चन्द्रमा स्वक्षेत्री होने के कारण इतना प्रवल है, कि आपके जीवन में, बड़ी २ कठिनाइयाँ और निराशायें आईं, लेकिन इनका धैर्य नहीं टूटा, और शनीदेव का लग्न से दूसरे स्थान पर शत्रूराशी का होकर बैठना इस बात का सूचक है,कि आपके पूर्व संचित धन और जन की पूर्ण हानि करदी,और साथही साथ शनी अष्टम के स्थान स्वामी होकर अष्टम को देख रहे हैं,इसलिये आयु स्थान की वृद्धी करते हैं और जीवन को अमीरी ढङ्ग से व्यतीत करते हैं किंतु सप्तमेश शनी सप्तम स्थानको नहीं देखतेहैं और अपने भावसे आठवें स्थानपर बैठे हैं, इसलिये स्त्री स्थान का,दामपत्य जीवन विगाड़ दिया,किन्तु यही शनी अपनी पूर्ण द्रष्टी तीसरी से,भूमि स्थान को,यानी लग्नसे चौथे स्थानको उच्च द्रष्टीसे (तुला को) देख रहे हैं इसलिते तो भूमि की महान शक्ती प्राप्त करने में आपने बड़ी शक्ती लगाई और जो शुक्र,भूमिस्थान पर लाभेश होकर,स्वक्षेत्री बैठे है इसलिये प्रथम तो यही भूमि की बड़ी वृद्धी चाहते हैं। दूसरे शुक्र और शनी दोनों बड़े भारी मित्र हैं, फिर दोनों का एक ही लक्ष्य और एक ही स्वभाव होने से भूमि की महान शक्ती प्राप्त करने में बड़े सफल सिद्ध हुए, लेकिन क्यूँकि व्यऐस बुद्ध, तृत्तीऐस होकर जो साथ में चौथे स्थान पर बैठें हैं, उनके ही कारण यह बात पैदा हुई कि हिन्दुस्तान की समस्त भूमि के अन्दर से एक हिस्सा पाकिस्तान के के नामसे आपको छोड़ना पड़ा क्यूँकि बुद्ध बनियाँ स्वभाव का ग्रह है इसलिये भी बनियाँ वाला न्याय कराकर कुछ हिस्सा भूमि का इन्होंने निकलवा दिया अस्तु शुक्र और शनी की प्राबल्यता के कारण भूमि की शक्ती और सुख के महान साधन आपको प्राप्त हुये

इसके अतिरिक्त, शुक्र, लाभेश होकर सुख में बैठा है और लाभ स्थान पर शनी की दसवीं पूर्ण द्रष्टी भी है,इसलिये लाभ की स्थिति सदैव से ही बलवान रही है, इसके अलावा इस कुण्डली में सबसे प्रबल, मङ्गल की शक्ती है। जो कि, राज्येश और पंचमेश होकर तीसरे स्थान पर बैठा है और अपनी पूर्ण आठवीं द्रष्टीसे राज्य स्थान को देख रहे हैं, इसलिये अव्वल तो मङ्गल का तीसरे दसवें स्थान पर अधिकारी होना स्वतह ही शक्तीवान योग होता है,जिसमें भी,तीसरे घर में बैठना और अपने दसवें राज्यस्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखना,यह बहुत विशेषता है और अपने बाहुबलकी कर्मशक्तीकी सफलता का महान सूचक है, फिर भी त्रिकोण का स्वामी और हो गया है,यानी बुद्धी घरका मालिक भी है इसलिये,द्रष्टीबल,बुद्धीबल और कर्मबल,तीनों की शक्तीका अधिकारी मङ्गल,राजनैतिक क्षेत्रमें बहुत ही उपयोगी और सफलता का सूचक है और यह मित्र क्षेत्री बैठा है साथ ही शत्रू स्थान पर भी, इसकी पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये इस अकेले मङ्गल की शक्ती बड़ी गम्भीर होगई है और भाग्येश गुरू को भी मङ्गल देख रहे हैं, अतः इस मङ्गल की शक्ती के द्वारा पूर्ण भाग्यवानी पाने का योग, व शासन सत्ता सँभालने का योग, और अपने बाहुबल के भरोसे बुद्धी योग द्वारा किये गये कार्यों में संलग्नता व तत्परता से लगे रहने का योग, व महान, मान सनमान एवं प्रभाव शक्ती पाने का योग, तथा पिता स्थान की बाल्याकाल में महान शक्ती पाने का योग, यह सभी बातें अकेले मङ्गल के द्वारा ही प्राप्त हुई हैं, लेकिन फिर भी राज्य स्थान पर केवल राज्येश मङ्गल की ही द्रष्टी नहीं है बल्कि मङ्गल, गुरू, शुक्र, बुद्ध, चारों ग्रहों की पूर्ण द्रष्टी बलवान पड़ रही है जिसमें, बुद्ध की द्रष्टी तो बाहरी राजनैतिक क्षेत्र में उत्तम है और स्थानीय राज्यक्षेत्र में कमजोर है, और मङ्गल, गुरू, शुक्र तीनों

की राजनैतिक क्षेत्र में स्थानीय और बाहरी सभी में उत्तम है इसके अतिरिक्त इनका सूर्य दुत्तीयेश होकर पंचम में पड़ा है यह सूर्य संतान पक्ष में यद्यपि बाधक है, किन्तु दूसरी ओर बुद्धी की सूक्ष्म और दिमाग की ताकत में, महान प्रकाश शक्ती और गहन दूर दर्शता पैदा करते हैं और इसी प्रकार मङ्गल दिमाग की ताकत में, राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र में, सोने में सुगन्ध का काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त भाग्येश गुरू, छटे स्थान में, स्वक्षेत्री बैठे हैं और साथ में उच्च के केतू भी हैं, इस गुरू और केतू का योग इस बात का सूचक है कि संसार में बड़े से बड़े शत्रु की भी, कभी परवाह न करके, सदैव सामना करने की शक्ती रखते हैं, किन्तु गुरू धर्मेश हैं, इसलिये शत्रु स्थान में, न्याय, शान्ती और बड़प्पन से ही काम करने का योग प्रदान करते हैं, इसके अलावा जब कि ब्रिटिश राज्य शासन था तब भी इन दोनों ग्रहों के प्रताप से, इनके सोचने के लिये यह बात पैदा न हुई कि, हमारे पास कौन सी ऐसी महान शक्ती है कि जिसके बल पर हम हिन्दुस्तान जैसे महान मुल्क का राज्य ले ही लेंगे,किन्तु यह सोचने की बात है कि एक तो उच्च का केतू छटे स्थान पर होने से, बड़े से बड़े शत्रु की परवाह नहीं होने देता, दूसरे गुरु शर्मेश होकर छटे घर में स्वक्षेत्री है इसलिये शत्रु स्थान पर विजय पाने के लिये, दैवी गुण व दैवी सहायतायें बराबर प्राप्त होती हैं। यहाँ हम यह स्पष्ट करे देते हैं, कि जिस स्थान पर धन राशि के केतू गुरु से युक्त हों, तब तो कहने की ही क्या बात है, किन्तु यदि धन का केतू गुरु से पूर्ण द्रष्ट भी हो, तो भी उस स्थान पर कोई न कोई महान कार्य करे बगैर नहीं मान सकते हैं अब इनके विपरीत फल को भी हम स्पष्ट करे देते हैं क्यूँकि एक तो धर्मेश गुरु का छटे पढ़ना ही धर्म के विरुद्ध होता है इसमें भी शष्ठेश

हो कर छूटे पड़ना, और फिर केतू का साथ होना। इन, दोनों बातों से यह सिद्ध है कि, आप जीवन में,सनातन धर्म की वास्तविकता को, वास्तविक रूप से, नहीं पकड़ सकते हैं, यह बात इनके लिये कठिन ही नही बल्कि असंभव है,क्यूँ कि धर्मेश गुरु केवल दोषी ही नही हुये हैं बल्कि, अपने धर्म स्थान पर इनकी पूर्ण द्रष्टी भी नहीं है, लेकिन, धर्मेश गुरु पर कर्मेश मंगल की पूर्ण द्रष्टी है. और धर्म स्थान पर भी मंगल की पूर्ण द्रष्टी है, इसलिये इनका कर्मयोग ही महान धर्म योग है, अब इनके राहू जो बारहवें स्थान पर उच्च के बैठे हैं इनका फल यह है कि बाहरी दूसरे देशों के संबंध में आपकी सूझ व पौलसी, इतनी गहन और मार्मिक बनती है कि साधारण तथा दूसरे ग्रहों के योग से ऐसी नही बन सकती है, साथ ही साथ राहू का यहाँ यह भी फल है कि खर्चा बहुत ज्यादे करवाते हैं, इसलिये यह योग तो इनके बाल जीवन से ही चल आरहा है अब तो खैर बात दूसरी है। इनकी कुण्डली में, मंगल गुरू, केतू, चन्द्रमा, इन चार ग्रहों ने तो इनकी, मनोबल शक्ती हृदयबल शक्ती, देहबल शक्ती, कर्मबल शक्ती, गूढ़ बाहुबल की शक्ती, वैत्रिक शक्ती, धैर्य शक्ती, प्रदान की है,जो कि इस देश की स्वतंत्रता जैसी महान दुलर्भ वस्तु को प्राप्त कराने में मुख्य सहायक रही है,तथा भूमि की प्राप्ती में. शुक्र की प्रधानता है;इत्यादि योगों के अलावा इनकी कुण्डली में एक जबरदस्त एकावलीग्रह योग इस प्रकार का बना है जो कि दुनियाँ में शायद ही किसी की कुण्डली में ऐसा योग देखने को मिलसके क्यूँ कि, राहू से लेकर केतू तक कोई भी बाँई तरफ का घर ग्रहों से खाली नही है, वरना कोई न कोई एक दो घर बहुधा खाली अवश्य निकल आता है औरों की कुण्डलीयों में इस प्रकार लगातार ग्रह बराबर देखने में नहीं आये हैं। इस प्रसंग के अलावा दूसरा प्रसंग यह है कि इस कुण्डली में सबसे ज्यादे भाग्य का एक राजयोग करने वाला ग्रह मंगल है

और इसी की महादशा लगते ही आपको, भारत के सौभाग्य सूर्य बनने का अवसर प्राप्त हुआ, किन्तु वैसे इनके सभी ग्रह प्रायः बलवान हैं इसीलिये,इनकी बाल्यकाल से लेकर अब तक बड़ी ही ऊँची मान्यता होती रही हैं और बचपन में भी आपने एक बहुत ऊँचे दर्जे की अमीरी भोगी थी। जन्म के ग्रहों के अनुसार मनुष्य जीवन का ढङ्ग व ढाँचा और कर्मयोग बनते चलेजाते हैं अब हम भाग्योदय कारक ग्रहों का वर्णन करते हैं कि विंशोत्तरी दशाओं में तो मुख्यतया मंगल ही कारक है दूसरे नम्बर पर, शुक्र गुरू, केतू, चन्द्र, सूर्य इत्यादि ग्रह हैं इनमें से यदि मंगल की दशा हो तब तो बहुत ही उत्तम है किन्तु यदि इन पाँच ग्रहों में से किसी की दशा हो और मंगल का अन्तर अवश्य होना चाहिये इसके प्रत्यक्षफल दिखाने वाले ग्रह गोचर परहमदृष्टी डालकर कहते हैं कि एक तो बृहस्पति, मीन, मेष, कर्क, सिंह, बृश्चिक, इन्हीं स्थानों में कहीं होने चाहिये, दूसरे शनी, कन्या, धन, बृषभ कर्क पर ही कहीं होने चाहिये, और राहू मिथुन पर और केतू धन पर होना चाहिये और मंगल, कन्या-तुला, मकर, मेष, बृष, सिंह इन्हीं राशियों पर कहीं होना होना चाहिये जैसा कि हम अपनी पुस्तक अखण्ड-भाग्योदय दर्पण में वर्णन कर चुके हैं स्वराज्य के दिन ५ बलवान ग्रह आपकी लग्न मेंथे (सू० चं० बु० शु०) श० और भाग्येश गुरू लग्न से चौथे भूमि स्थान पर थे, और लाभ के स्थान में राहू थे. केवल मगल लग्न, सेबारहवे था इसलिये संपूर्ण भारत नहीं मिला कुछ हिस्सा पाकिस्तान में चला गया आपकी कुण्डली में वह योग भी नहीं बैठता है जो कि हमने पुस्तक के प्रारम्भ में ही लिख दिया है कि, लग्न से तीसरे छटे, ग्यारहवें घर में क्रूर ग्रह शुभफल प्रदान करते हैं अतः आपके तीसरे घर में मंगल है और छटे में उच्च के केतू बैठे हैं और ग्यारहवें घर में, शनी व सूर्य की पूर्ण दृष्टी पड़ रही है।

सुभाषचन्द्र बोस

२३ जनवरी सन १८९७
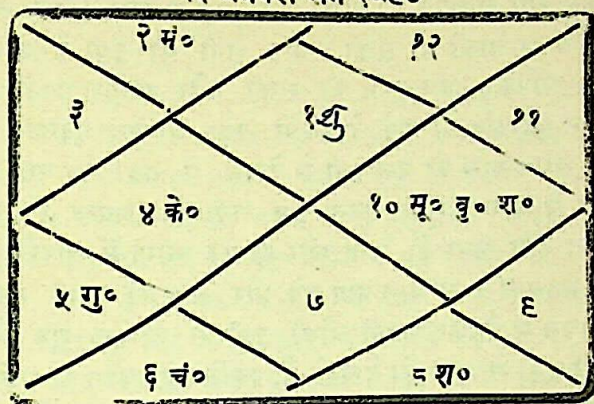
आपकी कुण्डली में- धनस्थान का स्वामी शुक्र, सप्तमेश होकर लाभ स्थान में मित्र राशी पर बैठा है इसलिये, भारत से बाहर जाकर भी आपको खूब धनशक्ती स्त्री व पुरुषों से प्राप्त हुई थी; इसके अतिरिक्त राज्य स्थान के अन्दर-सू० बु० श० तीन ग्रह हैं जिसमें तीसरे छटे स्थान का स्वामी बुद्ध, बाहुबल की और शत्रु पक्ष की शक्ती का स्वामी होकर राज्यभवन में मित्र के साथ बैठा है और बुद्धी स्थान का स्वामी सूर्य भी राज्य स्थान में, मित्र बुद्ध के साथ बैठा है, और राज्य स्थान के स्वामी शनी भी अपनी तीसरी पूर्ण द्रष्टी से, राज्य स्थान को, व इन तीनों ग्रहों को देख रहे हैं। इसलिये यह राज्य शक्ती को प्राप्त करने के द्योतक हैं, किन्तु दसमेश शनी के, लग्न से आठवें स्थान पर बैठने से, राजयोग पूर्ण नहीं होने पाया, और राजयोग को पूर्ण करने के लिये, बाहरी दूसरे स्थानों में जाकर महान कठिन प्रत्य किया-क्यूँकि आठवाँ स्थान मृत्यु का होता है इसलिये मृत्यु तुल्य कष्ट सहन कर २ के भी, अपनी शासन शक्ती को ऊँचा उठाने का महान कार्य किया, इस कुण्डली के अन्दर हर एक ग्रह का कार्य प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई दे रहा है—सूर्य के द्वारा बुद्धीबल

की शक्ती, और वुद्ध के द्वारा, शत्रु पक्ष पर विजय पाने के लिये पराक्रम और बाहुबल की शक्ती, और राहू के द्वारा (टैक्ट) यानी गुप्त पेचीदा चालों की शक्ती, और शनी की द्रष्टी के कारण, अपना अधिकार प्राप्त करने की शक्ती. और राज्येश शनी का-भाग्येश बृहस्पति को पूर्ण देखने से तथा भाग्येश बृहस्पति का अपने भाग्यस्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखने, से. तथा देह पर द्रष्टी डालने से आपका सुयश इतना फैल गया कि समस्त विश्व में आपका नाम अमर हो, गया और हर एक स्थानों में आपको बड़ी भारी मान्यता व सम्मान प्राप्त हुये और लग्न का स्वामी मङ्गल, धन भवन में बैठकर-अपनी चौथी द्रष्टी से भाग्येश गुरू को व सातवी द्रष्टी से शनी को देखरहे हैं, इसलिये देहाधीश का राज्येश, भाग्येश गुरू शनी को पूर्ण देखना और राज्येश,शनी का देहाधीश मङ्गल को, तथा भाग्येश गुरू को पूर्ण द्रष्टी से देखना, यह योग बड़ो भारी भाग्यवानी का सूचक है, और राजनैतिक क्षेत्र में विशेष ज्ञान तथा विशेप शक्ती का कारण है एक तो हम प्रथम ये ही लिख चुके हैं कि सू०, बु०, रा०, का राजस्थान में बैठना और राज्येश की इन पर पूर्ण द्रष्टी का होना किन्तु इसके अलावा यह योग और है कि, राज्येश, शनी, अपनी पूर्ण द्रष्टी से अपने राजस्थान को हीनहीं देख रहे हैं बल्किदेहके स्वामी मङ्गल को देख हैं तथा भाग्य के स्वामी गुरू को देख रहे हैं तथा वुद्धी के स्वामी सूर्य को देख रहे हैं तथा बाहुबल और शत्रु पक्ष के स्वामी वुद्ध को देख रहे हैं और टैक्ट के स्वामी राहू को देख रहे हैं अत: जिस स्थान का स्वामी ग्रह, सबसे ज्यादे स्थानों से व सबसे ज्यादे ग्रहों से संबंध पैदा करता हैवह ग्रह सबसे ज्यादे उन्नति और शक्ती दायक होता है। इसके अतिरिक्त इनको हिन्दुस्तान से बाहर मजबूरन क्यों भागना पड़ा, इसका मुख्य कारण यह है कि एक तो भूमि स्थान में कर्क का केतू बैठा है, दूसरे भूमि स्थान का स्वामी

चन्द्रमा छटे स्थान, यानी शत्रु स्थान में बैठा है. यह दोनों ग्रहयोग. भूमि स्थान पर व जन्म भूमि पर व मातृ स्थान पर जबरदस्त संकट पैदा कर देते हैं

इसके अलावा राजस्थान के स्वामी शनी का लग्न से अष्टम बैठना भी यही बतलाता है कि उन्नति पाने के लिये दूसरे स्थानों में अवश्य जाना पड़ेगा। इसके अलावा, दसम स्थान का स्वामी यदि लग्न से आठवे स्थान में बैठा हो, और दसम स्थान में राहू या केतु बैठा हो, तो पिता स्थान में भी विछोह पैदा करने का योग बनाते हैं। इसके अलावा चन्द्रमा का छटे स्थान पर बैठने से, शत्रुपत्त और झगड़े झंझटों के कारणों से, मन को बड़ी अशांती और कष्ट पैदा करते हैं। और बुद्धी के अन्दर राजनैतिक ज्ञान की प्रधानता का योग खास तौर से इसलिये बना कि बुद्धी स्थान का स्वामी सूर्य तो राजस्थान में बैठा है. और राजस्थान का स्वामी शनी, बुद्धी स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, अतः राजनैतिक ज्ञान का मूल कारण तो यही हुआ, और राजनैतिक शक्ती क्योंकर बनी यह हम पहिले ही सू०, बु०, रा०, श०, के कारणों से लिख चुके हैं। यदि आपकी कुण्डली में, राजस्थान का स्वामी शनी, लग्न से अष्टम स्थान में बैठा न होता और अच्छे स्थान परबैठकर, दसमस्थानसे द्रष्टीसंबंधकरताहोता या दसम स्थान में ही बैठा होता, तो इनका राज योग नष्ट नहीं हो सकता था। और इनको स्थाई सफलता मिल जाती। किन्तु फिर भी भाग्येश बृहस्पति के त्रिकोंण में बैठने से तथा भाग्य स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखने से तथा राज्येश शनी का बृहस्पति को देखने से, और लग्नेश मंगल का बृहस्पति को देखने से, तथा बृहस्पति का लग्न को देखने से, इन सब कारणों से ऐसा योग बन गया कि आपका यश, संसार में चिर स्थाई बन गया और संसार के प्रांणियों के हृदयों में एक अपूर्व श्रद्धा प्राप्त हो गई।

श्री लोकमान्य तिलक

जन्म ता० २३ जौलाई सन १८५६ सुबह
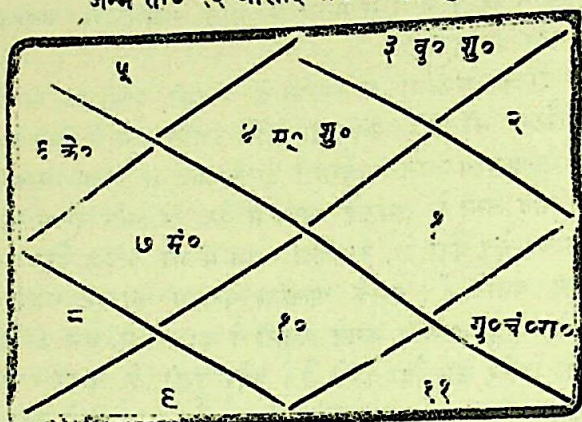
आपकी जन्म कुण्डली में, लग्न का स्वामी चन्द्रमा देहाधीश होकर भाग्य स्थान में, भाग्येश बृहस्पति के साथ बैठा है, और भाग्येश बृहस्पति की, लग्न व देह स्थान पर पांचवी पूर्ण उच्च द्रष्टी पड़ रही है। तथा लग्न में धनस्थान सूर्य, मित्रक्षेत्री होकर बैठे हैं। और साथ में सुखेश भूमिस्थान पति, शुक्र भी लग्न में लाभेश होकर बैठे हैं, और सूर्य, तथा शुक्र को, भाग्येश बृहस्पति पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं। अतः लग्नेश चन्द्र का गुरू के साथ भाग्य स्थान पर बैठना और इस प्रकार भाग्येश गुरू का लग्न से व, धनेश, से व भूमि पति शुक्र से, द्रष्टी संबंध करना, बड़ी भारी ख्याति और यश प्राप्त करने का योग है और मन का स्वामी चन्द्र तथा हृदय का स्वामी गुरू के मिलने से, व लग्न को देखने से, मनोबल व हृदयबल की शक्ती में, दूर दर्शता की शक्तीप्राप्त होने का योग बना और अपने व्यक्तित्व व स्वाभिमान को बहुत ऊँचा उठाने की तीव्र भावना पैदा हुई, जिसके कारण पाया और इसी वजह से आप अपना नाम इस संसार में सदा के स्वराज्य शक्ती पाने के लिये आपने अपनी संपूर्ण शक्ती का पूर्ण

प्रयोग किया, और राज्याधि पति मङ्गल का, भूमि स्थान पर बैठने से, व मङ्गल का अपनी मानवी दृष्टी से अपने राज्यस्थान को देखनेसेभी यह योग बना कि अपनी भूमि पर अपनाही अधिकार होना चाहिये और राजस्थान के स्थानपति मङ्गल का, बुद्धी स्थान का,स्वामीहोकरचौथेस्थान परबैठकर,दसम स्थानको देखनेके कारण आपकी बुद्धी के द्वारा किये गये महानकार्यों से,समाज का आपकी ओर बड़ा भारी झुकाव पैदा हुआ और जनता के हृदय में आप की बुद्धी का व आपके कार्यों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा और समस्त भारतीय जनता के सनुमुख आपकी धार्मिक और परोप-कारी भावनायें स्पष्ट रूप से सिद्ध हो गई, इसलिये इनके नवम दसम स्थान की शक्ती के कारण आपकी मान्यता बहुत ऊँची उठी, और आपकी प्रत्येक आवाज के साथ जनताने भरपूर साथ दिया, जिसके कारण ब्रूटिश गवर्मेन्ट घवड़ा उठीथी, इसके अति-रिक्त आपकी कुण्डली में, तीसरे स्थान पर कन्या का केतु बड़ा जबरदस्त बैठा है, इसकी वजह से आपकी हिन्मत शक्ती व कार्य शक्ती को बड़ा भारी प्रोत्साहन मिला, और बेधड़क व निडर होकर आपने इतनी बड़ी राज्य शक्ती का मुकाबला बड़े भारी आँदोलन की शकल में किया, अतः जिस किसी भी व्यक्ति की कुण्डली में कन्या का या धन का केतु लग्न से तीसरे या छठे स्थान पर बैठा होता है, वह मनुष्य किसी न किसी रूप में बहादुर अवश्य सिद्ध होता है, किन्तु धन राशि का केतु अधिक महत्त्व दायक होता है। आपकी जन्म कुण्डली में गुरु, चन्द्र, सूर्य, शुक्र, मङ्गल, केतु, यह छेः ग्रह बहुत ही बलवान पड़े हैं जिसकी वजह से आपकी, योग्यता, विवेकता, द्रढ़ता, दूर दर्शता, पौरुषता, धर्मज्ञता, सभी चीजों ने आपके अन्दर अच्छा स्थान पाया और इसी वजह से आप अपना नाम इस संसार में सदा के

लिये अमर कर गये। किन्तु आपकी कुण्डली में कुछ ग्रह योग कमजोर भी हैं जिसके कारण आप अपने अभीष्ट को अपने समय में सफल नहीं कर सके. उनमें एक तो, चन्द्रमा के साथ राहू का. भाग्य स्थान में बैठना, भाग्य पर कमजोरी लाने का सूचक है,यह चन्द्र ग्रहण योग कहलाता है। दूसरी बात यह है, कि लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी बुद्ध लग्न से बारहवें स्थान पर स्वक्षेत्री, बैठा है इसलिये यह पराक्रम शक्ती को असफल करने का कार्य करता है, क्योंकि किसी भी घर का स्वामी कोई ग्रह, यदि लग्न से छटे,या आठवे, या बारहवे, स्थान में बैठा होगा तो वह ग्रह उन स्थानों को हानि पहुँचायेगा,जिन जिन स्थानों का वह स्वामी है,इसलिये आपका बुद्ध पराक्रम का स्वामी होकर बारहवे स्थान में बैठा है,इसलिये आपके पराक्रम को पूर्ण सफल नही होने दिया,और इनके समय में इनको, स्वराज्य शक्ती प्राप्त नहीं हुई। और इसी प्रकार आपकी कुण्डली में सप्तम, अष्ठम स्थान पति शनी,लग्न से बारहवे स्थान पर बैठा है, इसलिये गृहस्थ और आपू की विशेष वृद्धी नहीं हुई और जीवन की दिन चर्या में अशाँती प्राप्त रही, और अशांती का दूसरा कारण देहाधीश चन्द्र के साथ राहू का बैठना भी है,और अष्ठमेश शनी की दसवीं पूर्ण दृष्टी,चन्द्रमा और वृहस्पति परपड़ रही है यह भी योग अशांती पैदा करने वाला होता है और इन्हीं दोनों योगों से देह को वन्धन योग पैदा होता है, और देश की सेवा के लिये जो २ भी कुर्वानी या बलिदान या दिक्कतें उनके सामने आई उन्होंने सभी को सहर्ष स्वीकार किया,और उनकी एक मजबूत आवाज और मजबूत धारणा यही थी कि भारत को स्वतंत्र करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है,इसके अतिरिक्त बारहवे स्थान का स्वामी बुद्ध स्वक्षेत्री होकर बारहवे स्थान में ही मिथुन राशी का बैठा है, और सप्तम, अष्ठम का स्वामी शनी भी, अपने मित्र बुद्ध के

साथ बैठा है इसलिये, दूसरे स्थानों में दूर २ तक आपकी मान्यता एवं ख्याती, वड़ी मजबूती के साथ चारों ओर फैल गई क्योंकि आठवे तथा वारहवे स्थानों से, वाहरी दूसरे स्थानों का व दूसरे देशों का संबंध भी खास तौर से देखा जाता है, इसलिये इनकी कुण्डली में एक तो आठवे वारहवे स्थानां के स्वामी दोनों ग्रह, एक साथ मिलकर मित्र भाव में बैठे हैं, दूसरे वारहवे स्थान का स्वामी वुद्ध, अपने घर में बैठा है अतः ऐसे योग में मनुष्य अधिक खर्चीला होता है और दूसरे स्थानों में वड़ी शक्ती एवं मान्यता प्राप्त होती है। और तीसरे स्थान पर केतु के होने से तथा तीसरे स्थान के स्वामी वुद्ध के वारहवे स्थान पर होने, वहन भाइयों का सुख नहीं वनता है। किन्तु आपकी कुण्डली में, राज्येश पंचमेश मङ्गल और भाग्येश वृहस्पति, तथा लग्नेश चन्द्रमा, इन तीनों ग्रहों को स्थान वल, व द्रष्टी यल, बड़ा उत्तम प्राप्त हुआ, और तीनां घर जिस मनुष्य के वलवान होते हैं अर्थात नवम, दसम, व पहिला घर वलवान हो, और पंचमेश या पंचम स्थान भी सुधरा हुआ हो तो, वह मनुष्य वड़ा भाग्यवान एवं प्रतापी, तथा प्रसिद्ध और धर्म परायण यशस्वी होता है।

राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद

जन्म ता० ३ दिसम्बर १८८४
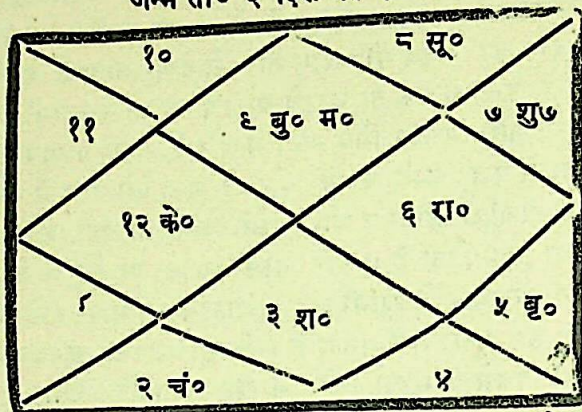
आपकी जन्म कुण्डलली में—सवसे उत्तम ग्रह योग यह है कि, राज्य स्थान पति बुध, सप्तपेश होकर लग्न में वैठा है और लग्नेश वृहस्पति, भूमि स्थान पति होकर भाग्य स्थान में वैठा है तथा लग्नको पूर्ण देख रहा है और राज्येश वुद्ध को भी पूर्ण पंचम, मित्र द्रष्टी से देख रहा है अतः चारों केन्द्र के अधिपति. बुद्ध और वृहस्पति हैं और दोनों ही त्रिकोण व केन्द्र स्थान में वैठे हैं तथा केन्द्र के चारों स्थान ग्रहों से भरे पड़े हैं और देहाधीश, भूमिपति, गुरू की, वुद्ध पर पूर्ण द्रष्टी के द्वारा, संबंध भी हो गया है और वुद्धी स्थान के स्वामी, मङ्गल, ने, लग्न में वैठकर राज्येश वुद्ध का साथ कर लिया है तथा लग्नेश गुरू की द्रष्टी से मंगल पूर्ण द्रष्ट भी है, और धनेश, पराक्रमेश, शनी, सप्तम केन्द्र स्थान पें वैठकर अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से, लग्नेश भूमिपति, वृहस्पति को देख रहा है और सातवीं द्रष्टी से राज्येश वुद्ध, एवं पंचमेश मङ्गल को भी देख रहा है और दसवीं द्रष्टी से केतू को देख रहा है, अतः इन सब योगों से, भूमि पर अधिकार व राजयोग बना-

इस योग के अन्दर, वृहस्पति और वुद्ध का संवंध तो इस वात का सूचक है कि भाग्य शक्ती और कर्मवल की ताक़त से, राजयोग बनना चाहिये और लग्न में राज्येश का वैठना, तथा लग्न पर लग्नेश की पूर्ण द्रष्टी का होना, यह आपकी प्रसिद्धता और सफलता का, और आत्मवल प्राप्त करने का, मुख्य सूचक है और लग्नेश का धर्म स्थान में मित्र क्षेत्री वैठने से, धर्म परायणता तथा सुयश प्राप्ती का मुख्य सूचक है, और वृहस्पति का भूमिपति चतुर्थेश होने के कारण व राज्येश से संवंध करने के कारण, भूमि पर महान अधिकार प्राप्त हुआ, किन्तु साथ ही वात यह है कि चौथे स्थान पर वैठे हुये केतू के कारण, और दसम राज्य स्थान पर वैठे हुये राहू के कारण, यह योग वना हैकि भूत कालीन जीवन में, भूमि पर स्वराज्य पाने के लिये, विरटिश राज्य से वड़ी २ टक्करें और संघर्ष एवं अशांती व जेल यात्रायें सहन करनी पड़ी थी और इन सव अशांतीयों का दूसरा कारण यह भी है कि व्ययेश मंगल का, लग्न में पहले स्थान में वैठना, और राज्येश वुद्ध व लग्नेश वृहस्पति से भी संवंध करना और भूमि स्थान पर, चौथी द्रष्टी से केतू को देखना, इत्यादि सभीकारण भी अशांती के सूचक है। इसके अतरिक्त चौथे स्थान पर केतू के वैठने से व मंगल और शनी की, चौथे स्थान पर पूर्ण द्रष्टी होने से, माता के सुख में महान कमी पैदा होती है और सुख प्राप्ती के साधनों में वड़ी २ अशांतीयें प्राप्त होती है किन्तु दूसरी ओर यह वात है कि यदि केतू जिस स्थान पर वैठा होगा, और उस केतू पर एक दो ग्रहों की पूर्ण द्रष्टी पड़रही होगी, या कोई ग्रह साथ वैठे हों उस केतू के वैठने के स्थान में, पहिले वड़ी २ अशांतीयां से टकराना पड़ता है और वाद में उस स्थान में उन्नति अवश्य होती है। अतः इसी योग के कारण आपने अपने पहिले जीवन में वहुत २ प्रकार की अशांती

और बहुत २ प्रकार से, सुख के साधनों में कमी प्राप्त की थी, इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, लाभ के स्थान में स्वक्षेत्री तुला का शुक्र वैठा है, जिसके फलस्वरूप लाभ प्राप्ती के अच्छे साधन हमेशा ही प्राप्त होटे रहने का योग है, किन्तु लाभेश छटे स्थान का स्वामी है, इसलिये कुछ परिश्रम व कुछ दिक्कतें भी सहन करनी पड़ती हैं, इसके अलावा शत्रू स्थान का स्वामी शुक्र, लाभ स्थान में स्वक्षेत्री वैठा है और शत्रू स्थान पर भाग्येश सूर्य की पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, इन सब योगो से ही यह कारण बना कि आपने आंदोलन के जमाने में इतनी बड़ी सल्तनत से टकराते रहने में डर या हिचकिचाहटनही मानी और अन्तमें शत्रू स्थान का संघर्ष बड़ा लाभ प्रद और जीवन दाता सिद्ध हुआ और छटे स्थान से प्रभाव की जाग्रती चमक उठी और पिछले समय में असफलताओं से टकराने का एक मुख्य कारण यह भी कि आपका भाग्येश सूर्य लग्न से बारहवे स्थान पर वैठा है, इसलिये यह मानी हुई बात है कि यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में; राज्येशु, या भाग्येश, लग्न से छटे, आठवे या बारहवे, कही भी बैठ जायगा तो, उस मनुष्यको जीवन में कभी न कभी बड़ी भारी असफलताओं से टकराना पड़ता है और मुख्य उन्नति पर पहुंचने में, बड़े झंझट सहन करने पड़ते हैं; यही योग श्री नेहरूजी की कुण्डली में भी है कि उनका भाग्येश गुरू छटे स्थान पर वैठा हुआ है। और आपको जितना अधिक सुयश और सराहना प्राप्त हुई है इसका मुख्य कारण वृहस्पति का भाग्य स्थान में वैठकर, लग्न को व राज्येश बुद्ध को, पूर्ण द्रष्टी से देखना, तथा वुद्धी स्थान पर भी, बृहस्पति की पूर्ण द्रष्टि का होना है

———

श्री माननीय पं० मदनमोहन मालवीय

जन्म सम्वत् १६१८ पौषकृष्ण ७ बुद्धवार
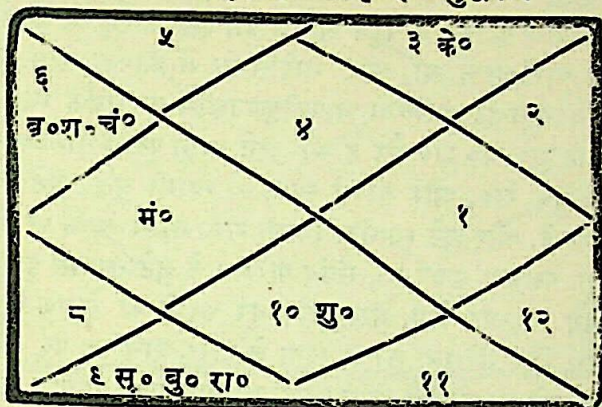
आपकी कुण्डली के अन्दर; भाग्येश बृहस्पति लग्न से तीसरे पुरुषार्थ स्थान पर, लग्नेश चन्द्रमा के साथ बैठा है. और अपनी सातवीं द्रष्टी से भाग्य स्थान को पूर्ण देख रहा है, अतः इस गुरू चन्द्र योग। के कारण ही, आपको महान् यश प्राप्त हुआ; और बड़े धार्मिक कार्य, आपके द्वारा बड़ी मुस्तैदी के साथ सफल, समपन्न हुये और मन का तन का स्वामी चन्द्रमा है तथा हृदय और धर्म भाग्य का स्वामी बृहस्पति है, इसलिये इन दोनों के मिलजाने से आपने तन व मन से व हृदय से, पुरुषार्थ के द्वारा देश सेवा और समाज सेवा के बड़े २ कार्य हुये, तथा काशी के अन्दर हिन्दू विश्व विद्यालय जैसी महान संस्था की स्थापना कर वादी, इसके अतरिक्त राज्येश मङ्गल, बुद्धी स्थान का स्वामी होकर लग्न से चौथे स्थान पर बैठा है, और अपनी सातवीं द्रष्टी से, राज्य स्थान को, एवं आठवीं द्रष्टी से लाभ स्थान को पूर्ण देखरहे हैं, इसलिये राज समाज के अन्दर, तथा बड़े २ राजा और रहीसों के अन्दर,

आपकी वड़ी भारी मान्यता थी, आपके कहनेसे लाखों रुपयों का दान, लोग करदेतेथे आपके अन्दर सेवा और परोपकार की मात्रा-जन कल्याण के हित में वहुत अधिक थी, इसी कारण से आपका प्रभाव चारों तरफ था, और सारे संसार में आपका नाम और कीर्तीविख्यात होगईथीतथा आपकीकुण्डलीमें पुरुपार्थके स्थानपर तीन ग्रह गु० चं० श० बैठे हैं और छटे स्थान परभी तीन ग्रह बैठे हैं स० बु० रा०, और तीसरे स्थान का स्वामी वुद्ध, छटे स्थान पर बैठा है, और छटे स्थानका स्वामी गुरू, तीसरे स्थान पर बैठा है अतः पराक्रम भवन का, संबंध परिश्रम के छटे स्थानसे हुआ है इसलिये यह ग्रह योग, महान दौड़ धूप कराने का सूचक है एवं पुरुपार्थ और परिश्रम की महानता के द्वारा, शत्रू पक्ष पर, महान विजय पाने का योग है अर्थात महान प्रभावशाली ग्रहयोग वनता है, इसीलिये संसार के प्राणियों को उनके समक्ष झुकना पड़ता है और तीसरे छटे स्थान पर, गरम ग्रहों का बैठना भी मनुष्य को, प्रभाव शाली वनाता है अतः आपके छटे स्थान पर सू० रा० गरम हैं और तीसरे स्थान पर श० गरम हैं तथा तीसरे स्थान पर गुरू चन्द्र योग भी व है। इसके अतरिक्त दसम स्थान का स्वामी मङ्गल दसम भवन को देखता है और अपनी चौथी द्रष्टी से, सप्तम स्थान को पूर्ण उच्च रूप से देखता है, इसलिये दैनिक कार्य-क्रम को वड़े भारी शानदार तरीके से पूर्ती कराता है और ऐसा मङ्गल चौथे स्थान पर बैठने से, शांती युक्त रहकर भी, वड़ा भारी कर्मठ वनाता है, इसके अतरिक्त, वारहवें स्थान के स्वामी वुद्ध की बारहवें स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़रही है तथा सूर्य की भी वारहवें स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, इसलिये खूब खर्चा करने का योग तथा वाहरी, दूसरे स्थानों की शक्ती प्राप्त करने का उत्तम योग हैं, आपके सभी ग्रह प्रायः प्रभाव शाली होकर बैठे हैं।

परम विद्वान कवि, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर

जन्म ता० ७ मई सन् १८६१,
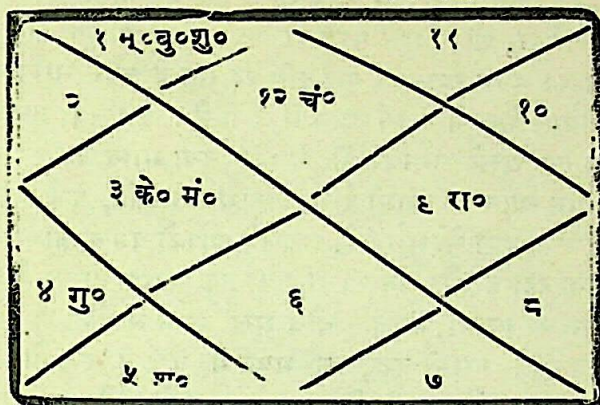
आपकी कुण्डली में बुद्धिवान होने का महान अनुपम ग्रह योग, बृहस्पति और चन्द्रमा के द्वारा बना है। क्यों कि देह का स्वामी बृहस्पति उच्च का होकर बुद्धि स्थान पर बैठा है और बुद्धि स्थान का स्वामी, चन्द्रमा, देह के स्थान पर बैठा है, और इतने पर भी बृहस्पति की, चन्द्रमा पर पूर्ण द्रष्टि पड़ रही है और इसके अतरिक्त, चन्द्रमा मन की शक्ती का स्वामी होता है, और बृहस्पति हृदय की शक्ती के स्वामी होते हैं, अतः तन और बुद्धी का पूर्ण संबंध, हुआ और मन एवं हृदय का पूर्ण संबंधहुआ, और दोनों ही ग्रह मित्र हैं, इसलिये यह योग, विद्या और बुद्धी के स्थान में, मन और हृदय की शक्ती के सम्मिश्रण होने से, तथा चन्द्रमा और गुरु के आपस में स्थान संबंध व दृष्टि संबंध करने से दूरदर्शी कवि, और अलौकिक महान बुद्धीशाली, कहलाने का योग प्राप्त हुआ। तथा लग्नेश गुरु के, पूर्ण द्रष्टी से अपने लग्न भाव को देखने से, ख्याती और प्रसिद्धता पाने का, योग बन गया, और पंच मेश चन्द्रमा लग्न में बैठा है इसलिये आप बुद्धी

योग के द्वारा ही संसार में चमक उठे, और वास्तव में विद्या वृद्धी की जितनी गहराई पर आप पहुंच गये थे, उतनी आसाधारण गहराई पर, कोई विरले पुरुष ही पहुंच पाते हैं, तथा लग्नेश वृहस्पति की भाग्य स्थान पर पूर्ण द्रष्टि पड़ रही है और भाग्य का स्वामी मंगल केन्द्र में चतुर्थ स्थान में बैठा है। इसलिये आपकी मान्यता एक अच्छे भाग्यवानों में रही तथा भाग्य का स्वामी मंगल, धन स्थान का स्वामी होकर, लाभ स्थान को, पूर्ण रूपेण आपनी उच्च द्रष्टी सेदेख रहाहै, इसलिये आपको धन कालाभ भी खूब होता रहा है और धन की वृद्धि का एक कारण तो यह है कि धन स्थान का स्वामी मंगल, चौथे सुख भवन में बैठा है और सुख भवन का स्वामी बुद्ध, धन भवन में बैठा है, इस योग से धन का सुख, और मकानादि का सुख, प्राप्त होता है, धन स्थान में छटे परका स्वामीउच्च का सूर्य बैठा है, तथा तीसरे आठवें का स्वामी शुक्र भी बैठा है, इसलिये, परिश्रम की महानता से भी धन की खूबप्राप्ती होनी चाहिये और अष्टम के स्वामी, व, छटे के स्वामी, व बारहवें स्थान के स्वामी, ग्रहजहीं भी बैठते है वहाँ कुछ खराबीं अवश्य करते हैं, इसलिये, अधिक धनवान भी नहीं होने दिया, और स्त्री स्थान का स्वामी, बुद्धलग्न से दूसरे मार्क स्थान में बैठा है, और दूसरे स्थान का स्वामी मङ्गल, स्त्री स्थान में बैठा है, उसलिये, स्त्री की मृत्यु होगई और चौथे स्थान पर नीच का केतू होने से, व चौथे स्थाम के स्वामी बुद्ध का, दुत्तीयेश मङ्गल से स्थान संबंध करने से, माता की मृत्यु होगई, और पिता स्थान में नीच का राहु होने से, पिता की मृत्यु भी होगई, किन्तु पंचम स्थान, जो कि सन्तान का घर है, उसमें, गुरू चन्द्रमा का स्थान संबंध होने से संतान सुख आपको प्राप्त हुआ, और लाभेश शनी के छटे पड़ने से, व लाभ स्थान में, मङ्गल की उच्च द्रष्टी होने से आपको (नोबिल प्राईस) भी मिला' जिससे इनके प्रभाव की

अधिक वृद्धी हुई। और अष्टम स्थान पर अष्टमेश शुक्र की पूर्ण द्रष्टी होने से तथा अष्टम स्थान पर शनी की उच्च द्रष्टी पूर्ण होने से आपको आयुका सुख और जीवन की दिन-चर्या में गौरव तथा पुरातत्व का ज्ञान, व लाभ, आपको अच्छा प्राप्त हुआ और तीसरे स्थान पर शनी की पूर्ण दसवीं द्रष्टी होने से तथा तीसरे स्थान का स्वामी शुक्र का लग्न से दूसरे मार्क स्थान बैठने से आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हुआ, आपकी कुण्डली में, आनंद, मनोबल की गहरी शक्ती, यश. और ख्याती, विवेक की दूरदर्शता, इत्यादि योगों की प्राप्ती केवल गुरू और चन्द्रमा की कृपा का फल है।

श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल

आपकी कुण्डली में चौथे स्थान पर यह चार ग्रहों का सामूहिक योग, एवं सप्तम भवन में दैनिक महान कर्म-योग राज्येश मङ्गल व स्वक्षेत्री शनी के द्वारा जो बना है, जिसके कारण आपने राजा लोगों को, एकसाथ सामूहिक व्यवस्था में लेकर, तथा भारत की शासन प्रणाली की नीम मज [नींव] बनाकर सुचारू रूप से, कार्य रूप में पराणीत करने की जो सौभाग्य शक्ती प्राप्त की थी, उसका

प्रधान कारण यह है कि, राज्य स्थान पति मङ्गल, सप्तम भवन में बैठकर, जब अपनी चौथी पूर्ण द्रष्टी से राज्य स्थान को देख रहे हैं, और स्वक्षेत्री सप्तमेश शनी का ही साथ मङ्गल ने किया है अतः सप्तम स्थान, दैनिक रोजगार व दैनिक कार्य-क्रम का स्थान है इसलिये राजाओं की राज्य शक्ती को, एक दैनिक कार्य, रोजगार की शकल में अपनाया, और राज पद्यति को रोजगार पद्यति की शकल में बदल कर उन राजा लोगों से एक घरेलू संबंध स्थापित कर लिया जिसके फलस्वरूप वगैर लड़ाई झगड़ा किये ही यह तय होगया कि शासन संचालन शक्ती एवं व्यवस्था शक्ती की मालिक गवरमेन्ट रहेगी और उन राज्यों की आमदनी में से एक उचित आमदनी का हिस्सा राजा लोगों को वगैर परिश्रम किये ही दे दिया जायगा, अव आपके इस ग्रह योगों के अन्दर एक समझने की खास चीज यह है कि, इनके ग्रहों में, शासन शक्ती, एवं व्यवहारिक शक्ती, दोनों शक्तियों कासमान समावेश कुण्डली के अन्दर वना हुआ है, क्यों कि राज्य स्थान पर, सू० बु० गु० शु० इन चारों ग्रहों की पूर्ण द्रष्टी है और राज्येश मङ्गल की भी पूर्ण द्रष्टी हैं, इसके कारण तो आपकी शासन शक्ती का भय था और दूसरे आपका राज्येश मंगल, सप्तम स्त्री स्थान में एवं दैनिक रोजगार के स्थान में बैठकर तथा सप्तमेश शनी का साथ करके, राज्य स्थान को देख रहे हैं अतः आपके अन्दर राजा लोगों से, व्यवहारिक रूप में राज्य शक्ती का आदानप्रदान करने की क्षमता प्राप्त थी, इसलिये ही इनकी यह नरम गरम शक्ती ही इनके यश और कीर्ती की सूचक वनी, जिसके कारण यह आश्चर्य जनक कार्य, जो हजारों वर्ष से आजतक, कभी भारत में नही होसका था, कि भारत के सव राजाओं की शक्ती, एक सामूहिक रूप में पराणितहोजाय अतः आपने यह कठिनकार्य कर दिखाया, आपकी कुण्डली के अन्दर, जो कि लग्न से तीसरे स्थान पर मित्रक्षेत्री

केतू वैठे हैं, यह इस वात के सूचक हैं, कि दुनियाँ का कोई भी कार्य, चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो, किन्तु वड़ी भारी हिम्मत और गुप्त पुरुपार्थ की कठिन शक्ती से, महान धैर्य के साथ, सफलता प्राप्त करने के मार्ग में, निरंतर उत्साह युक्तरख कर, अग्रगामी वनाते हैं, इसके अतरिक्त एक विशेपता यह है, कि आपका लग्नेश चन्द्र उच्च का होकर लाभ स्थान में वैठा है, इसलिये यह योग भी, इस वात का सूचक है, कि, देह और मन का स्वामी, चन्द्र जव उच्च का होकर लाभ में वैठगया, तो आपका मन और हृदय अपने अभीष्ट लाभ को, प्राप्त कर लैने के समय तक, सदैव उत्साह युक्त रहकर, तत्परता के साथ काम करता रहता है, अर्थात आपका मन कभी निराश, और मलीन नही हो पाता, है यह भी एक महान कीमती चीज है, इसके अलावा आपकी कुण्डली में, दैनिक रोजगार, व ग्रहस्थ के स्वामी शनीश्चर ने, स्वक्षेत्री में वैठकर केवल राज्येश मङ्गल काही साथ संवंध नही किया है, वरन आपने अपनी पूर्ण दसवीं द्रष्टी से उच्च रूप से, एवं चारों ग्रहों से भी संवंध कर लिया है जो चौथे स्थान पर वैठे हैं, जिसके फलस्वरूप, आपके केन्द्र में जितने भी ग्रह हैं उन सवों में ही, व्यवहारिक ज्ञान का समावेश विशेप रूपसे वनगया है। आपकेअन्दरइन राजा लोगों को मिलाने की नीती युक्ती के अन्दर, इस व्यवहारिक ज्ञान की ही प्रधानता का असर है। अव आपकी कुण्डली के अन्दर हमें यह और वतलाना है, कि आपके जीवन में जेलय त्रायें हुई हैं, या अन्य और दूसरे किस्म की देहिक चितायें हुई हैं, उनका कौन २ सा ग्रह योग है, अतः देखिये कि एक तो मुख्य तया राज्येश मङ्गल की नीच द्रष्टी देह केस्थानपर पड़रही है, यही कारण, राज्य से परेशानीयों का सूचक हैं, दूसरे, सप्तमेश एवं अष्टमेश, शनी की पूर्ण द्रष्टी भी देह के स्थान पर पड़रही है, अतः हम यह पहिले ही लिख आये है कि छटे आठवें वारहवें स्थानों के स्वामी ग्रह, जहाँ भी

देखेंगे,वहां परेशानी अवश्य करेंगे, और जो २ ग्रह, छटे, आठवे, वारहवें घर में वैठता है, वह भी परेशान करता है अतः आपके अष्टम पति शनी की द्रष्टी देह पर पड़रही है, इसके अतरिक्त तीसरी बात यह है कि देह का स्वामी चन्द्रमा केम-द्रुम योग में वैठा है अर्थात चन्द्रमा के आगे या साथ में कोई भी दूसरा एक भी ग्रह और नहीं है, अतः यही तीनों कारण आपकी देहिक परेशानियों के सूचक हैं, अब आपके राहू का विचार और करना है कि धर्म स्थान भाग्य पर वैठकर इन्होंने क्या किया, इनका असर यह हुआ कि भाग्य स्थान पर एक बहुत लम्बे समय तक, जब तक कि स्वराज्य प्राप्त नही हुआ था हमेशां चिंताओं का ही कारण बनाया कि न मालुम भाग्य में जाग्रती होगी या नही इसके अलावा आपके अष्टमेश शनी की भी तीसरी पूर्ण द्रष्टी, भाग्य पर पड़रही है इन दोनां कारणों से ही भाग्य स्थान पर चिंताओं के कारण वने थे और इन्ही दोनों कारणों की वजह से सनातन धर्म को सनातन धर्म के रूप में न पालन कर सके किन्तु सामूहिक द्रष्टी से आपकी कुण्डली में प्रायः सभी ग्रह वलवान पड़े हैं क्यों कि छै ग्रह केन्द्र में हैं और चन्द्रमा उच्च का लाभ स्थान में है, और केतू का तो तीसरे स्थान पर वैठना प्रायः अच्छा होता ही है, केवल राहू कुछ समय तक भाग्य पर दुर्वलता का योग पैदा करते है, इसके अतरिक्त तो इन सभी वलवान ग्रहों के प्रताप से ही आप भारत में एक बहुत बड़े महान कार्य की पूर्ती करके गौरव के भागी बने, हम पहिले ही लिख आये हैं, कि जिस किसी भी व्यक्ति की कुण्डली में, केन्द्र के अन्दर, जितने अधिक ग्रह वैठे होंगे, उतना ही वह मनुष्य प्रतापी होता है, किन्तु ग्रहों की स्थति, और द्रष्टी वल का भी विचार मुख्य माननीय है, इसके अतरिक्त, लग्न गोचर पर जब शनी, कन्या के होकर, लग्न से तीसरे स्थान पर आये, तव से ही आपके प्रभाव की, वृद्धी खासतौर से प्रारम्भ हुई,

योगी राजा अरविन्द घोस

जन्म ता० १५ अगस्त १८७२
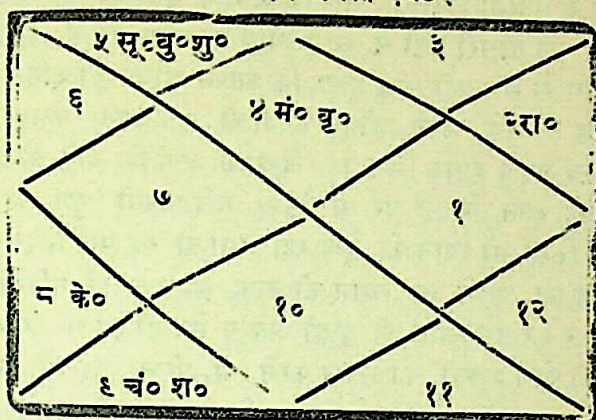
आपकी कुण्डली में, राज्येश मंगल, बुद्धी स्थान का स्वामी होंकर, लग्न में नीच राशी का बैठा है, और भाग्येश बृहस्पति, छटे परिश्रम स्थान का स्वामी होंकर, लग्न में उच्च का बैठाहै, अत: राज्येश, भाग्येश मं०गु०का देहस्थान में मित्रक्षेत्री उच्च एवं नीच राशी में मिलकर बैठना, और धर्मेश बृहस्पति का अपनी नवम द्रष्टी से धर्म स्थान को पूर्ण देखना, यह सिद्ध करता है कि ईश्वरीय वल की शक्ती इनको देह द्वारा प्राप्त होनी चाहिये, और मंगल के नीच योग से, देह के कठिन प्रयास व कठिन साधनाओं के द्वारा, राजयोग अर्थात्, योग शक्ती प्राप्त होनी चाहिये,किन्तु योग शक्ती को सफल करने का कारण दूसरा यह और है कि, देह का स्वामी चन्द्रमा लग्न से छटे स्थान पर है,और छटे स्थान का स्वामी बृहस्पति, देह स्थान में हैं, तथा यही दोनो ग्रह मन और हृदय के स्वामी हैं इसलिये यह ग्रह योग, वडा भारी महान तपयोग का मूल कारण है क्यों कि इन्होंने,तन से, मन से हृदय से. धर्म से, कर्म से, बुद्धी से,महान परिश्रम किया, अर्थात् तप किया

जिसके फल स्वरूप आपको योग शक्तियाँ प्राप्त हुई, और अष्ठम स्थान के सवामी शनी का, जो कि लग्न से छटे घर में बैठकर अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से, आयू स्थान को देख रहे हैं, इसलिये इसयोग से भी, यही सिद्ध हुआ, कि आपने जीवन की कठिनाइयां को सह २ करके, अपने जीवन की शक्ती को, बहुत बलवान व द्रढ़, एवं महत्व दायक सिद्ध कर दिखाया, क्यों कि यदि कोई भी क्रूर ग्रह, लग्न से छटे घर में बैठकर यदि, अपनी पूर्ण द्रष्टी से अपने किसी भी स्थान को देख रहा होगा, तो यह पूर्ण निश्चय है कि वह ग्रह अपने उस स्थान की तरफ से, कुछ परेशानियों से टकरा २ कर उस स्थान की वृद्धी अवश्य मेव ही करता है अतः आपकी योग शक्ती को सफल करने में, मंगल, बृहस्पति, शनी चन्द्र, यह चारों ग्रह ही पूर्ण सहायक सिद्ध हुये हैं और लग्नेश व अष्टमेश आपस में सँबंध करते हों और इनमें से कोई भी ग्रह अपने क्षेत्रमें बैठा हो, या अपने क्षेत्र को पूर्ण द्रष्टी से देखता होय तो, वह प्राणी अवश्य हीप्रसिद्धता प्राप्त करता है अतः आपका लग्नेश चन्द्र अष्टमेश शनी के साथ है और अष्टमेश शनी अपने स्थान को पूर्ण देख रहा है, यह योग प्रसिद्धता प्राप्त करने का है और वृहस्पति के व मंगल के, राज्येश भाग्येश होकर लग्नमें बैठने से आपके दर्शनों को दुनियां दौडती थी, और धर्मेश गुरु का उच्च होकर भी, अपने धर्म स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखना. यह देवी शक्ती की सहायता पाने का खास योग, तथा यश प्राप्त करने का मुख्य कारण है और लाभ स्थान में राहू का बैठना, तथा धन स्थान में धनेश सूर्य का स्वक्षेत्री बैठना, तथा लाभेश शुक्र का भी, सुखेश होकर धन भवन में बैठना यह इस बात के सूचक है कि आपकी आवश्यकतायें पूर्ण होने के लिये, अथवा किसी भी कार्य में धन लगाने के लिये, यदि जरूरत पडती है तो आपके लिये सैकड़ो प्राणी दौलत का ढेर, आपके इशारे पर करने के लिये तय्यार रहते थे, इसके

अतरिक्त किसी भी प्रांणी की कुण्डली में यदि लग्न का स्वामी कोई भी ग्रह लग्न से छटे स्थान पर बैठ जाय और लग्न से छटे स्थान का स्वामी कोई भी ग्रह लग्न में बैठ जाय, तो वह व्यक्ति किसी न किसी चक्कर में या परिश्रम में सदैव ही फंसा रहेगा और जनता के समक्ष सदैव उपस्थित नही रह सकता है किन्तु इसमें इतना सोचना अवश्य है कि यह इस प्रकार का योग यदि नीच ग्रहों से बनेगा तो उसे नोकरी में या पराधोनता में हरवख्त फंसा रहना पड़ेगा, और श्रेष्ठ ग्रहों में या उच्च के ग्रहों में योग बनेगा तो किसी आदर्श कार्य में बराबर फंसा रहना पड़ेगा अतः आपका तो उच्च का बृहस्पति, धर्मेश होकर चन्द्रमा से संबंध किया है इसलिये आप दैवी शक्ती को साथ लेकर मन और हृदय की शक्ती के यौगिग कार्यों में बराबर संलग्न रहे और साल भर में एक दिन दर्शन देने को आप निकलते थे। आपके इन कठिन ग्रह योगो ने, आपसे महांन तप करा करा कर आपको एक महान योगीराज सिद्ध कर दिया और सुनते हैं कि जमीन से तीन २ फुट ऊंचे उठकर भी अधर आसन लगाये रहते थे। अतः आप का जीवन परमार्थी था और आप अपना यश ससार के सनमुख अमर रूप में छोड गये, ऐसे प्रांणी भारत के लिए गौरव रूप थे। क्यों कि आप जेसे मनुष्य, इस संसार में अपने सुख भौगों की इच्छाओं को, कतई नष्ट कर देते हैं; और अपनी समोत जीवन परमार्थ, और ईश्वर प्राप्ती के मार्ग में ही व्यतीत करके रहते हैं। और संसार के प्रांणियां को अनेकों प्रकार के सुन्दर मार्ग अपने कठित तपश्चर्या और अकाट्य अनुभवों के योगों द्वारा प्रदर्शित करते रहते थे।

श्री पृथ्वीराज चौहान
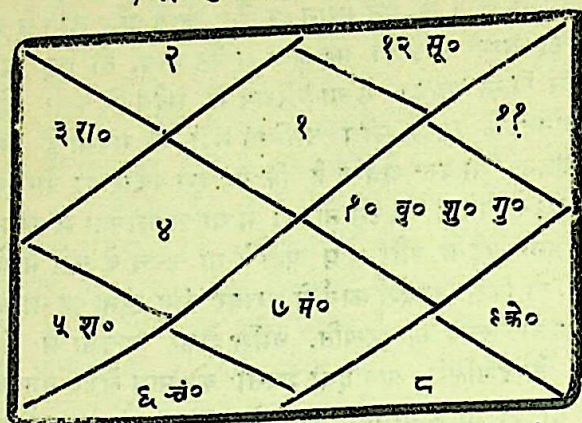
आपकी जन्म कुण्डली में, एक महान प्रतापी, वीर राजा होने का योग, मुखतया तो यह हैं, कि देहाधीश, उग्रग्र ह मङ्गल, सप्तम भवन में बैठकर, एकतो अपने तन भवन को देखरहे हैं, दूसरे खास बात यह है कि, राज्य स्थान के ऊपर, लग्नेश मङ्गल की पूर्ण उच्च द्रष्टी पड़रही है, और राज्य स्थान के स्वामी शनी की, लग्नेश, मङ्गल के ऊपर, पूर्ण उच्च द्रष्टी पड़रही है, क्यूँ कि तुलाराशी पर मङ्गल बैठे हैं, और तुलाराशी, शनी का उच्च स्थान है, जिस पर शनी की तीसरी पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, और उसी प्रकार राज्य स्थान में, मकर राशी है; जो कि मङ्गल का उच्च स्थान है, जिसे मङ्गल अपनी चौथी पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, अतः राज्य शक्ती का केवल देहाधोशसे महान संबंध हुआ, इसलिये आपके शासन काल में आपके देहवल की ही महान प्रधानता थी, और दूसरे शव्द वेधी वांण में तो आपका पौरुष, एक अदुत्तीय रूप था, क्यूँ कि एक तरफ तो देह का संवंध, उपरोक्त रीति से महान होही गया, है दूसरे वाहुवल के स्थान पर उच्च के राहू बैठे हैं, यह

और भी बाहुबल की शक्ती को उच्चतम शिखर पर पहुँचाने वाले हैं, क्यूँ कि लग्न से तीसरे या छटे स्थान पर किसी भी क्रूर ग्रह का उच्च होकर बैठना, शत्रूपक्ष का नाश करने वाला होता है, अतः इसी उपरोक्त कथनानुसार, राहू, मङ्गल, शनी, इन तीन ग्रहों के प्रताप से, आपने अनेकों वार संग्रामों में विजय प्राप्त की थी, और तीसरे छटे घर का स्वामी बुद्ध जो राज्य स्थान में मित्र क्षेत्री बैठा है, वह विवेक शक्ती का अधिकारी है, और शत्रू एवं पराक्रम का स्वामी तो हैही, और आत्मा के स्वामी मङ्गल की इन पर पूर्ण उच्च द्रष्टी पड़रही है. अतः शत्रूपक्ष को विजय करने की विवेक शक्ती, देहाधीश मङ्गल को उच्च भाव में आत्मा के अन्दर हर वक्त प्राप्त होती रहती थी, अतः यह शत्रुपक्ष में एक योगियों की सी क्रिया बनगई और इसी योग के परिणाम स्वरूप आप शब्द वेधी वांण का ठीक अनुसंधान करलेते थे और फिर अपने बाहुबल की महान शक्ती से वांण का संचालन करते थे, जिसके कारण आपका वांण बज्र के समान कार्य करने में सफल होता था और इसी के फलस्वरूप आपने, मुहम्मद गौरी के दरबार में अपनी अंधी अवस्था में भी, लोहे के सात तवों को, एक सांकेतिक शब्द के आधार पर, सिर्फ एक वांण में वेधन करने के अवसर पर मुहम्मद गौरी की आवाज पर, मुहम्मद गौरी का सिर काट डाला, अतः यह तो आपके बाहुबल, देहबल, और अनुसंधानबल की बात रही, अब हम यह खास बात, और बताना चाहते हैं, कि आपने अपने मुगल शत्रू, मुहम्मद गौरी को, संग्राम के अन्दर बार २ हराकर भी उसे बार २ क्यों छोड़ दिया, इसका मुख्य कारण यह है कि आपका चन्द्रमा लग्न से चौथे स्थान, शांती का स्वामी है, और शांत ही स्वभाव है, अतः शांती की विशेष शक्ती लेकर शत्रु स्थान पर बैठा है अतः मनकीशक्ती का अधिकारी चन्द्रमा जब महान शांती का स्वामी होकर शत्रु के स्थान में बैठा है और

धर्म के स्वामी गुरू की भी शत्रु स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, तो जब २ भी कोई शत्रु आपसे रण संग्राम में हारकर. अपने प्राणों की भिक्षा मांगता था, तो यही मन रूपी चन्द्रमा शत्रु पक्ष में आपको शांति एवं हृदय रूपी धर्म के सिद्धांतसे क्षमां का सबक सिखाने को तय्यार बैठा रहता था, जिसके कारण ही आपको उस समय शांती और क्षमा करना अनिवार्य हो जाता था, और इसी वजह से मुहम्मद गौरी जैसे धोकेबाज को १७ बार लड़ाई के अन्दर प्रांण दान दे २ कर छोड़ दिया। इसके अतिरिक्त आपके राजकाज में लापरवाही का कारण, आपकी हृदय शक्ती के अधिकारी गुरु का नीच होकर राज्य स्थान से बैठने में और सुख शांती के चौथे स्थान को उच्च द्रष्टी के देखने से हैं, क्यूँकि लग्न से चौथे स्थान पर कर्क राशी है, जो कि गुरु का उच्च स्थान है, जिसे गुरु आपनी सांतवीं द्रष्टी से पूर्ण देख रहे हैं, इसलिये आपका हृदय सुख के मुकाबले में राजकाज के अन्दर बड़ी लापरवाही इसलिये करता रहा है कि,राजस्थान पर नींच हैं. और सुख स्थानपर उच्च द्रष्टी है, इसलिये आपके हृदय में सुख प्राप्री की ही प्रधानता रही इसके अतिरिक्तवृहस्पति,वारहवें स्थान के स्वामी भी हैं. और नीच भी हैं इसलिये पूर्ण हानि कारक है. अतः आपके राज्य नष्ट होने के कारणों में, वृहस्पति की ही प्रधानता है गुरु भाग्येश भी है तो जब भाग्य का स्वामी भी नीच होकर राजस्थान में बैठ गया तो ईश्वरी बल भी राज्य संचालन शक्ती में सहायक नहीं रहा किन्तु भाग्य स्थान पर उच्च के केतु बैठे हैं और क्यूँकि यह केतु खड्ग धारी वीर गरम ग्रह है; इसलिये आपके भाग्य की महत्ता बहादुरों की गणना के अन्दर बहुत ऊँचे दरजे की रही और आज तक भी इसी नाते आपका नाम अमर है, इसके अतिरिक्त आपका देहाधीश मङ्गल लग्न से सातवें स्त्री स्थान पर बैठा है; जो कि स्त्री भोगादिक

शक्ती का मुख्य सूचक है, किन्तु साथ ही विशेषता यह और है, कि, स्त्री स्थान का स्वामी शुक्र आपका राज्यस्थान में मित्रक्षेत्री बैठा है, और शुक्र के ऊपर देहाधीश मङ्गल की चौथी उच्च द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये यह ग्रह योग स्त्री की महत्ता को आत्मा के अन्दर बहुत ऊँचे रूप में स्वीकार करवाता और मनवाता है, अतः यही कारण था कि आप एक तरफ तो शत्रु पक्ष में महान योद्धा थे, और दूसरी तरफ आप प्रेम के बंधन में अपनी स्त्री संयुक्ता के सामने इतने दबते थे कि कठपुतली की तरह रहकर उसकी इच्छा पूर्ती करने में ही अपने को धन्य मानते थे, और यही शुक्र, धन स्थान का स्वामी भी है, और उसी प्रकार जब कि देहाधीश मङ्गल की धनपति शुक्र पर उच्च द्रष्टी पड़ रही है, और धन स्थान पर भी पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये आपके पास धन धान्य की कोई भी कमी नहीं थी, खूब परिपूर्ण था, किन्तु हम एक बात पुस्तक के प्रारम्भ में ही लिख चुके हैं, कि यदि किसी भी स्थान में, लग्न से, छटे, आठवे, बारहवे, स्थानों का संबंध किसी भी प्रकार होगा तो उस स्थान को अवश्य हानि पहुंचेगी अतः आपकी कुण्डली में, राज्यस्थान पर, छटे घर के स्वामी, बुद्ध बैठे हैं, और आठवे घर के स्वामीं मङ्गल की भी पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, तथा बारहवे घर के स्वामी बृहस्पति भी नीच के होकर बैठे हैं, अतः इन्हीं तीन कारणों के द्वारा आपकी राज शक्ती की हानि हुई, इसके अतिरिक्त नेत्र कष्ट प्राप्त करने का योग इस प्रकार है कि आपकी कुण्डली में जन्म लग्न से तथा लग्नेश मङ्गल से दोनों से ही; (प्रकाश दाता) सू० चं० छटे और बारहवे घरों में बैठे हैं, इसलिये आपको अन्तिम समय में नेत्र कष्ट प्राप्त हुआ था। और राज्येश शनी की देहाधीश मंगल पर भी पूर्ण शत्रु द्रष्टी पड़ रही है, यह कारण भी राज्य संबंध से देह कष्ट प्राप्त करने का योग पैदा करता है, ।

नाथूराम गोड से विनायक

ता० १६ मई सन १६१०
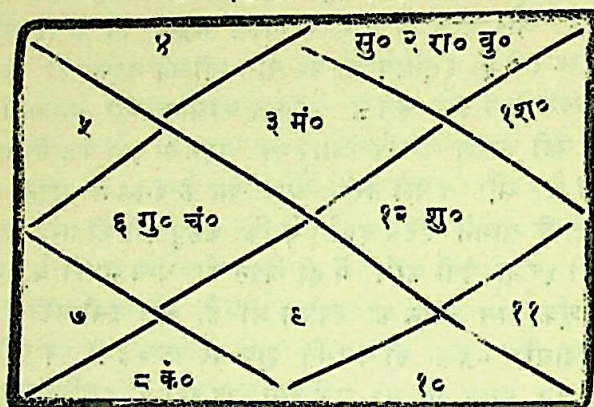
आपकी जन्म कुण्डली में—जिस कारण से आपको ख्याती मिली है, वह एक अपयश द्वारा कार्य बना है, कि पूज्य बापू श्रीगांधी जी पर, आपने गोली चलाकर, उन्हें भारत भूमि से विदा कर दिया, अतः इस योग की उतपत्ती का मूल कारण यही है. कि अष्टमेश व धर्मेश होकर शनी ग्यारहवे स्थान में नीच राशी का होकर बैठा है, क्यों कि धर्मेश का नीच होना, व धर्मेश का अष्टमेश होना. यह दोनों ही कारण अधर्म कराने वाले हैं, किन्तु अष्टमेश शनी, अष्टम स्थान को, अपनी दसवीं द्रष्टी से पूर्ण देख रहा है. इसलिये जीवन में ख्याती होने का योग भी बन गया क्यो कि अष्टमेष, या लग्नेश. कोई भी अपने २ स्थानों मे बैठे हों या अपने २ स्थानों को देख रहे हों, तो वह मनुष्य ख्याती अवश्य पाता है, किन्तु जैसे २ स्थान, और जैसी २ राशियों पर बैठकर, जो २ ग्रह अपना कार्य करता है. तो उसके अनुसार ही तो फल करता है अतः आपकी कुण्डली में धर्मेश शनी दोषी हो गया है, और अपने स्थान को भी पूर्ण देख रहा है. इसलिये आपके

द्वारा गांधी जी की मृत्यु होना अधर्म हुआ, किन्तु इसी अधर्म के कारण आपको संसार में ख्याती मिली, इसके अतिरिक्त छोटे मोटे अधर्म के कार्य तो प्रायः बहुतों से बन जाते हैं, किन्तु इतने बड़े महान व्यक्ति पर गोली चलाना कोई साधारण पुरुष का काम नहीं हो सकता है. अतः आपकी कुण्डली में, इतनी बड़ी हिम्मत शक्ती का प्रादुर्भाव, केतू और मगल की कृपा का फल है, क्यों कि लग्न से छटे शत्रु स्थान पर केतू का बैठना और छटे स्थान के स्वामी मंगल का लग्न में बैठना. और मंगल के ऊपर शनी की पूर्ण द्रष्टी का होना अर्थात शत्रू स्थान में क्रूर ग्रह की राशी पर क्रूर ग्रह केतु का बैठना और शत्रु स्थान पति क्रूर ग्रह मंगल पर क्रूर ग्रह शनी की पूर्ण द्रष्टी का होना, यह तीनों ही कारण इस बात के सूचक है, कि ऐसा व्यक्ति, शत्रु पक्ष के स्थान में, कठिन से कठिन भयंकर कार्य कर सकता है, और कड़े से कड़े कार्य को पूरा करने के लिये अपने अन्दर स्वतह हिम्मत शक्ती प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा आपका गुरु चन्द्र का, लग्न से चौथे स्थान पर बैठना यह सिद्ध करता है कि यह व्यक्ति सुख शांती एवं भूमि की उन्नति के लिये मन और हृदय से बड़ा भारी प्रयत्न करने वाला होना चाहिये, और पंचमेश शुक्र का व्ययेश होकर राजस्थान में उच्च का बैठना यह बतलाता है कि बुद्धी के अन्दर कुछ कमजोरी के होते हुये भी अहंकार रहना चाहिये, अतः मन और हृदय तो भूमि पर अधिकार अपने अनकूल चाहता हो, और बुद्धी में कमजोरी हो, और विपरीत वातावरण को नष्ट करने के लिये बड़ी भारी हिम्मत शक्ती प्राप्त हो, और धर्म अधर्म का कोई भय न हो, तो ऐसी सभी सूरतों में नाथूराम गोडसे ने, भारत भूमि को नुकसान पहुँचाने के सम्बध में, अपनी अहंकारात्मक बुद्धी के न्याय से, गांधीजी को अपराधी ठहराया और अपने अन्दर की कठोर शक्ती का दुरुपयोग करने में निर्भयता पूर्वक सफल हो गया, और शनी की कृपा से, ख्याती

पाने का अधिकारी होकर संसार से विदा हो गया। आपके फाँसी प्राप्त करने का कारण यह है कि लग्न में क्रूर ग्रह मंगल है और लग्नेश बुद्ध, दो क्रूर ग्रहों से घिरा हुआ है अर्थात बुद्ध के एक तरफ सूर्य और दूसरी तरफ राहू है अतः तन भाग में गरम ग्रह शष्ठेश होकर बैठा है, और तन भाव के स्वामी के दोनों तरफ भी गरम ग्रह सूर्य और राहू हैं, और तन भाव पर शनी की भी पर्ण द्रष्टी है, इसलिये देह व देहाधीश चार क्रूर ग्रहों के घिराव में आ जाने से फांसी पाने का योग बन गया।

अकबर बादशाह

ता० २४ नवम्बर १५४२
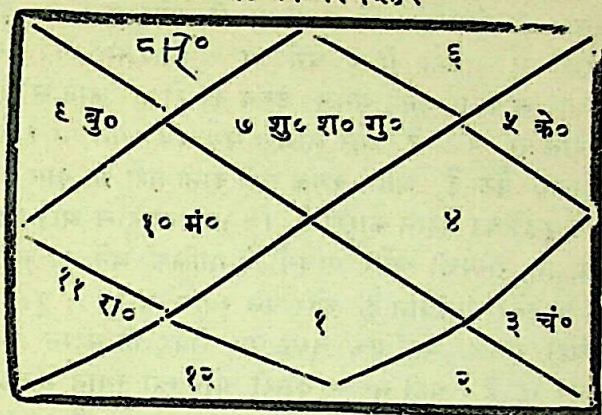
आपकी जन्म कुण्डली में, जन्म लग्न का स्वामी, शुक्र अष्टम स्थान का भी स्वामी होकर तन स्थान में स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये आप देश देशान्तरों में विख्यात हो गये और आपका गौरव भारत में बहुत शानदार रहा। किन्तु विशेषता यह और है कि लग्न में लग्नेश शुक्र के साथ २ शनी भी उच्च का होकर बैठा है, और साथ में बृहस्पति भी बैठे हैं, यह तीनों ग्रहों का इस प्रकार बलवान होकर लग्न में बैठने से ही खास तौर मे विशेषता यह और हो गई कि आपकी मान प्रतिष्ठा और ख्याती किसी छोटे रूप में न होकर एक सम्राट के रूप में हुई। इसके अतरिक्त आपका राज्यस्थान पति चन्द्रमा भाग्य स्थान पर बैठा है, और भाग्य स्थान पति बुद्ध पराक्रम स्थान पर बैठा है, और दोनों ग्रह आपस में एक दूसरे को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, और भाग्येश बुद्ध की भाग्य स्थान पर भी पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है अतः इन दोनों ग्रहों की उत्तम स्थान स्थती और उत्तम द्रष्टी संबंध, आपकी महान चमकती हुई भाग्यवानी की महान सूचक हैं, और

यही दोनों चन्द्र और बुद्ध की स्थान स्थती और द्रष्टी के कारणों से ही आपके अन्दर धार्मिक भावनायें और धार्मिक कार्य करने की शक्ती थी और स्वभाव में नम्रता थी, और इसी ग्रह योग के कारणों से आपको हिन्दू धर्म पर आस्तिकता थी। इसके अतरिक्त आपका धनेष मंगल उच्च का होकर लग्न से चोथे सुख स्थान पर बैठा है और लाभेश सूर्य धन स्थान पर है मित्र क्षेत्री होकर बैठा है, अतः केवल यही दोनों ग्रहों का योग, धन की कोष बृद्धी का महान कारण है। जिसकी वजह से आप इतनीं बड़ी महान सम्पत्ती और एश्वर्य के मालिक बने थे, क्योकि लाभेश व धनेश वलवान हैं. और धन स्थान लाभेस से युक्त है, किन्तु यही मंगल, जहाँ एक तरफ धन संग्रह की महान शक्ती प्रदान कर रहे हैं। वही मंगल दूसरी ओर स्त्री स्थान के स्वामी होकर अपनी चौथी द्रष्टी से पूर्ण रूपेण, अपने स्त्री भाव को देख रहे हैं, इसलिये आपके यहाँ स्त्रीयाँ वहुत थी, और भोग विलासता की आपको महान शक्ती प्राप्त थी, इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, राज्यस्थान का स्वामी चन्द्रमा भाग्य स्थान पर बैठा है और शत्रु स्थान पति एवं पराक्रम स्थान पति वृहस्पति की, चन्द्रमा पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है तथा वृहस्पति लग्न में, लग्नेश शुक्र के साथ वैठे हैं, और भूमि स्थान पति शनी उच्च का होकर लग्न मेंवैठा है भूमि स्थान पर मङ्गल उच्च के होकर वैटे हैं, अतः शत्रुओं से लड़ाइयाँ लड़ २ कर विजय प्राप्त कराने का मुख्य कारण वृहस्पति का है, क्योंकि वड़े २ महान ग्रहों से संबंधित होकर महान स्थान पर ही वैठे हैं। और राज्य स्थानों की वृद्धी तथा भारत को अधिकांश भूमि पर अधिकार प्राप्त रखने करने की शक्ती के प्रमुख कारण, शनी और मङ्गल हैं, क्योंकि दोनों ग्रहों का चतुर्थ स्थान से संबंध है और दोनों ही ग्रह उच्च के होकर बैठे हैं। इसके अतिरिक्त लग्न से ग्यारहवें स्थान पर

क्रूर ग्रह केतु बैठे हैं, और धनेश मंगल की आठवीं पूर्ण द्रष्टी मंगल के ऊपर पड़ रही,हैजिसकी वजह से आमदनी के रास्ते दिन पर दिन वृद्धी को प्राप्त होते ही चले गये, क्योंकि ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रहों के बैठने से. तथा क्रूर ग्रहों की द्रष्टियों से, लाभ के स्थान में बहुत वृद्धा होती रहती है। इसके अतिरिक्त चौथे सुख स्थान पर बलवान ग्रह के होने से और चौथे सुख स्थान का स्वामी ग्रह बलवान होकर देह के स्थान में देहाधीश के साथ से बहुत सुख औरभूमिप्राप्त करने का योग बनता है. अतः इसीलिये, इन्हीं मंगल और शनी के योग से आप महान विनोदी थे, क्योंकि आपके दरबार में नौ रत्न थे, जिनमें बीरबल की प्रधानता थी, और बीरबल के नित्य प्रति के हास्य विनोद के महान कारणों से आप महान सुखी रहते थे और हर समय की हंसी दिल्लगी में ही अपने मनको बहलाते रहकर आप एक बड़े भारी आनन्द का अनुभव किया करते थे। इसके अतरिक्त आपका आयू स्थान पति शुक्र लग्न में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इसलिये आयु भी आपको ठीक ही प्राप्त हो गई। इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में प्रायः सभी ग्रह अच्छी और बलवान स्थती में बैठे हैं, परन्तु एक भी ग्रह न तो कोई नीच राशी में बैठा है, और न कोई लग्न से छटे, आठवे, बारहवे स्थानों में बैठा है, बल्कि उच्च के ग्रह हैं, स्वक्षेत्री भी हैं, मित्रक्षेत्री भी हैं, अतः यही सब कारणों से ऐसा व्यक्ति बादशाह बनने का अधिकारी हो जाता है, अन्यथा निर्बल ग्रहों के होने से, बादशाह को भी, बादशाहत से हाथ धो बैठना पड़ता है।

————

हैदरअली

ता० दिसम्बर १७२२
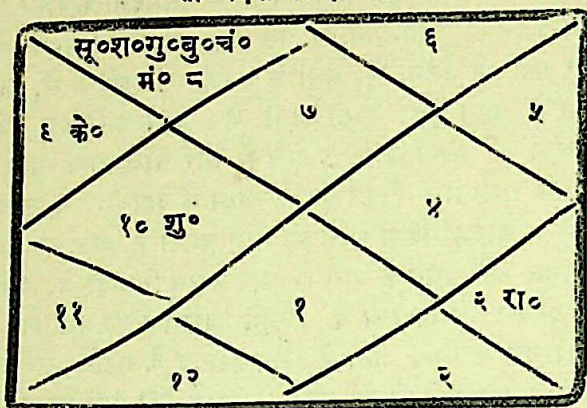
हैदरअली पहिले बहुत गरीव था और गायें चराया करता था। और एक बगीचे में माली का काम करता था, इन सब बातों का कारण आपकी कुण्डली में केवल एक यही है कि. राज स्थान पति चन्द्रमा नीच राशी का होकर धन भवन में बैठा है. इसलिये पोजीशन और इज्जत आबरू को छोटी बनाने का योग चन्द्रमा के नीच होने से पैदा हुआ, अन्यथा और सभी ग्रह वलवान बैठे हैं, इसके अतिरिक्त यह हैदरअली एक बहुत बड़ी विशाल सम्पत्ती का स्वामी कैसे बना, इसका कारण यह है कि भाग्येश बुद्ध, राज्येश चन्द्रमा तथा सूर्य, तथा चतुर्थेश पंचमेश शनी, पराक्रमेश, शत्रुऐश बृहस्पति, तथा सप्तमेश, धनेश, मंगल यह सभी ग्रह धन स्थान में वलवान होकर बैठे हैं, और भूमि पति, शनी अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से, भूमि स्थान को देख रहे हैं, इसलिये भूमि का विशेष लाभ और अधिकार प्राप्त हुआ, और शत्रु स्थान पति बृहस्पति अपनी पांचवी द्रष्टी से पूर्ण रूपेण शत्रु स्थान को देख रहे हैं, इसलिये शत्रुओं से विजय प्राप्त कर २ के धन की वृद्धी होती चली गई।

इसके अतरिक्त, लाभेश सूर्य के, धन-स्थान में बैठने से आमदनी का धन भी, कोष में संग्रह होता चलागया और व्ययेश भाग्येश, बुद्ध के धन स्थान में बैठने से, खर्च की ताकत से (पल्टन की शक्ती बनी) और भाग्य की ताकत से कुदरती सफलतायें भी प्राप्त होती रहीं, इसके अतरिक्त, सप्तमेश धनेप, मङ्गल के धन स्थान में बैठने से, ही धन की सग्रह शक्ती स्थिर रहते हुये वृद्धी को प्राप्त होती रही इस प्रकार इन सभी बलवान ग्रहों की ताकत से धन की वृद्धी होती रही, किन्तु चन्द्रमा का धन स्थान में नीच राशी का बैठने से, पहिले गरीबी का जीवन प्राप्त हुआ, तथा आगे भी बीच २ में बड़ी कठिनाइयां व परेशानियां भोगनी पड़ी थी, हैदर मैंसूर की फौज में पहिले सिपाई बना था फिर सेनापति बना, और बहुत जल्दी २ उन्नति करता चला गया, इसके सेनापति राज्य शासन काल में, इसकी तुलना शिवाजी के साथ में की जाती थी, यह विशेपतायें बृहस्पति और केतू के प्रभाव से आपको प्राप्त हुई थीं, क्यों कि लग्न से तीसरे स्थान पर उच्च का केतू, महान शक्ती प्रदाम करने वाला बैठा है, और बृहस्पति अपने शत्रू स्थान को पूर्ण देख रहे हैं अतः लग्न से तीसरा और छटा दोनों स्थान बलवान हैं यह दोनों स्थान बलवान होने से ऐसा व्यक्ति अवश्य ही बड़ा बहादुरहोता है, इस योग के अत रिक्त लग्न का स्वामी शुक्र, चौथे सुख स्थान पर मित्र के घर में बैठा है, और चौथे स्थान पति शनी की द्रष्टी भी शुक्र पर पूर्ण पड़रही है इसलिये सुख प्राप्ती के महान साधन और भूमि का महान अधिकार, इन दोनों ग्रहों के योग से प्राप्त हुआ किन्तु लग्नेश देहाधीश शुक्र का अष्टमेश होने से और चतुर्थेश शनी का धन भवन में बैठने से, सुख के साधनों मेंकुछ कंटक पैदा होते रहने का योग है इसीलिये, लड़ाइयों में लगे रहने सुख शांती में कमी प्राप्त होती रहती थी। इसकेअतरिक्त संतानपत्त का स्वामी शनी, धन स्थान

में बैठा है, और धन स्थान पति मङ्गल की संतान स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, इसलिये यह माख्य स्थान संबंध संतान स्थान पर होने से आपको अपनी संतान से कष्ट सहन करना पड़ता था क्यों कि इनके पुत्र टीपू की बुद्धी अच्छी नहीं थी, इसके अनरिक्त यह संतान पक्षपर जो उपरोक्त जो शनी मङ्गल का योग बतलाया है यही योग संतान को धन देने वाला था, इसलिये हैदर जब मरा था तो ३० करोड़ रुपया नगद और कई करोड़ की जवाहरात टीपू को प्राप्त हुई थी और इसी शनी, मङ्गल के ग्रह योग से, बुद्धी का संबंध धन स्थान से पूर्ण बना हुआ है, क्यों कि बुद्धी स्थान का स्वामी शनी धन स्थान में बैठा है, और धन स्थान का स्वामी मङ्गल बुद्धी स्थान को पूर्ण चौथी द्रष्टी से देख रहा है, तथा दोनों एक साथ बैठे हैं. अतः इस योग के द्वारा हैदर की बुद्धी हमेशां धन कीवृद्धी करने में लगी रहती थी। इसके अतरिक्त भाग्य स्थान पर उच्च का राहू बैठा है, इसलिये हैदर भाग्यवान तो बहुत था परन्तु राहू फिर भी अपने स्थान में परेशानीयां व उपद्रव स्वभाविक रूप से ही करते हैं, इसीलिये इसको शान्ती कम मिलती थी क्योंकि शत्रुओं के झगड़े झंझर हमेशा ही चलते रहते थे, और आपकी उन्नति का दूसरा कारण यह और है कि वृहस्पति, नवम पूर्ण उच्च द्रष्टी से राज्य स्थान को देख रहे हैं, क्योंकि कर्क राशी वृहस्पयि की उच्च राशी है, इसीलिये राज्य स्थान पर वृहस्पति की द्रष्टी बहुत ही सहाक एवं शक्ती प्रदायक रही थी।

———

श्री रामानुजाचार्य
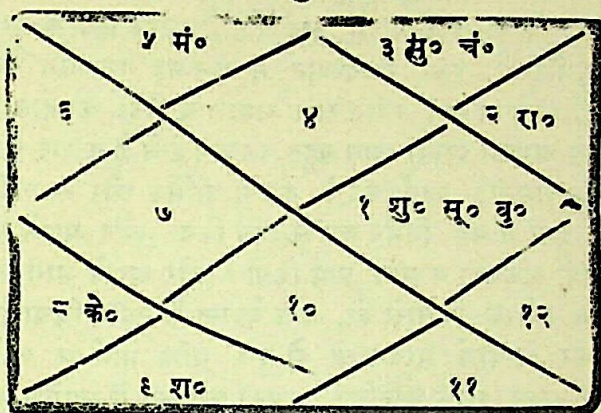
आपकी जन्म कुण्डली में, धर्म स्थान पति, बृहस्पति, लग्न से बारहवें स्थान पर, देहाधीश चन्द्रमा के साथ मित्र रूप में बैठे हैं, इसलिये यह आत्मा के स्थान का स्वामी चन्द्रमा, जो कि मनका भी स्वतह ही मालिक होता है, इसने धर्म स्थान पति बृहस्पति से संबंध किया है, और बृहस्पति, हृदय का भी स्वतह ही स्वामी होता है और धर्म स्थान का स्वामी होने वाला ग्रह, ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने का भी स्वतह ही अधिकारी होता है, अतः गुरु और चन्द्रमा के एक साथ बैठने से, आपके अन्दर तन में, मन में, हृदय में, ईश्वर के गहन गुणों का ज्ञान तथा ईश्वर में पूर्ण आशक्ती और भरोषा प्राप्त हुआ, इसलिये आपको धार्मिक क्षेत्र में महानता प्राप्त हुई और आप दर्शन शास्त्र के महान पंडित थे तथा आपका जीवन चरित्र क्रियात्मक घटनाओं से भरा हुआ था, और आपको आध्यात्मिक एवं आत्मिक ज्ञान ईश्वर कीकृपा से खूब प्राप्त था। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में दसवे राज्यस्थान पर धन स्थान पति उच्च के सूर्य तथा लाभेश शुक्र तथा व्ययेश पराक्रमेश बुद्ध, तीन ग्रह एक साथ बैठे हैं, और

राज्यस्थान का एवं बुद्धी स्थान का स्वामी मङ्गल, धन स्थान में बैठा है, इसलिये एक तो सूर्य और मंगल का स्थान संबंध हो गया है, कि मंगल के घर में, सूर्य बैठे हैं, और सूर्य के घर में, मङ्गल बैठे हैं, दूसरे राज्यस्थान में तीन ग्रह एक साथ उज्वल बैठे हैं, अतः दसवां स्थान राज समाज व पिता का होता है, इसलिये आपका दसवां स्थान बहुत बलवान होने के कारण आपने एक विश्वासनीय कार्यकर्त्ता के रूप में धार्मिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में बड़े निर्भय रूप से कार्य किया और आपने बहुत यश एवं सफलता व मान प्राप्त किया। और आपने भागवत के प्राचीन धार्मिक विचारों को, तथा बेदान्त के नवीन विचारों को मिलाकर निस्वार्थ भावनाओं से युक्त भक्ति मार्ग पर अधिक प्रकाश डाला इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में सप्तमेश अष्ट-मेश शनी, लग्न से छटे स्थान पर बैठकर अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से अपने आठवे स्थान को देख रहे हैं, इसलिये आपके जीवन में प्रभाव और आयु में वृद्धी प्राप्त हुई और क्योंकि लग्न सेछटे स्थान पर क्रूर ग्रहों का बैठना शुभ होता है,इसलिये आपने इस धार्मिक क्षेत्र में अपने विपक्षियों पर बराबर विजय प्राप्त की इसके अतिरिक्त आपकी लग्न के पंचम स्थान पर मङ्गल के घर में केतु बैठे हैं, और केतु के ऊपर मङ्गल की चौथी द्रष्टी पूर्ण पड़ रही है, इसलिये आपके अन्दर जो कुछ भी विद्या बुद्धी थी वह बहुत ही स्थिर एवं मजबूत विचारों में परणित थी, इसलिये आप पक्के सिद्धांत वादी थे, और आप अपने विचारों को बड़ी मुस्तैदी के साथ अपनी वांणी से प्रकट किया करते थे।

———

रोम का बादशाह नीरो
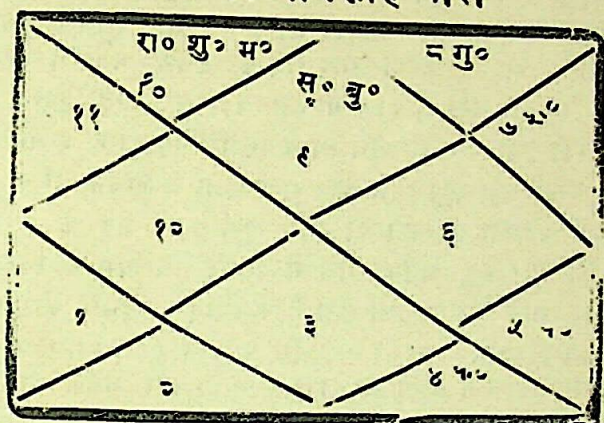
आपकी कुण्डली में सबसे प्रथम ग्रह राज योग करने वाले सू० बु० हैं, सूर्य भाग्य स्थान का स्वामी है और बुद्धी राज्य स्थान का एवं सातवें स्थान का स्वामी है, अतः राज्येश, भाग्येश का एक साथ मिलकर तनस्थान में, मित्र होकर बैठना, प्रथम तो यही बड़ी भारी भाग्यवानी का योग है, दूसरे, सप्तमेश बुद्ध की सप्तम स्थान पर पूर्ण द्रष्ट पड़रही है, और वही सप्तमेश राज्येश भी है और भाग्येश के साथ में सप्तमेश बैठा है, तथा भाग्येश सूर्य की भी सप्तम स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़रही है अतः सप्तमेश राज्येश भाग्येश की पूर्ण द्रष्टी सप्तम स्थान में होने से, तथा सप्तमेश के लग्न में बैठने से, बड़े भारी भोग विलासता की शक्ती का देने वाला ग्रह योग है, अतः यही कारण था, कि आप इतने ऊंचे दर्जे के भोग विलासी थे, कि जिस वक्त रोम के अन्दर महान क्रान्ती छाई हुई थी, और क्लेश व अशांती और उपद्रवों की आग सुलग रही थी, उसवक्त भी नीरो साहब के चैन की वंशी बजरही थी, और भोग विलासता के आनन्द में

गोने लगा रहे थे। और चौथे स्थान के बतन स्थानके स्वामी बृहस्पति, लग्न से बारहवे स्थान में बैठ हैं, इसलिये इनको माता कोश निकाला हुआ और आपको भी अपनी मातृ भूमि छोड़नी पड़ी क्योंकि आप दूसरे को गोद गये थे, इसके अतिरिक्त एक वार आपको भी गद्दी छोड़कर भागना पड़ा था किन्तु बृहस्पति की, पांचवी द्रष्टी लग्न से चौथे स्थान पर पूर्ण पड़रही है. इसलिये माता की सहायता खूब रही, और सुख प्राप्ति के साधन भी खूब रहे, इसके अतरिक्त बृहस्पति की नवम पूर्ण द्रष्टी, केतू के ऊपर पड़रही है, और केतू अष्टम स्थान में बैठा है तथा धर्म के स्थान पर अष्टम स्थान पति चन्द्रमा बैठा है, इसलिये इन तमाम कारणों से आपकी हिंसात्मक प्रवृत्ती थी, और आपका पंचम स्थान पति मङ्गल, धन स्थान में उच्च का होकर बैठा है. और मंगल चौथी पूर्ण द्रष्टी से अपने पंचम स्थान को देख रहाहै, इस के हेतु आपके गाने और कंठ प्रशंसा यूनान और इटली में महान रूपसे थी और अष्टम स्थान में कर्कराशी पर केतू के बैठने से, प्रथम तो आपकी आयू कम प्राप्त हुई, इसके अतरिक्त आपकी मृत्यु भी बुरे तरीके से हुई थी, किन्तु अष्टम स्थान पति चन्द्रमा के नवम बैठने से आपकी जीवन की दिनचर्या बड़े भाग्यवानी के तौर पर चली इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, लाभ के स्थान में शनी उच्च राशी पर बैठे हैं और धन के स्थान में मङ्गल उच्च राशी पर बैठे हैं तथा लाभ स्थान पति शुक्र धन स्थान में मित्र क्षेत्री होकर बैठे हैं और धन स्थान पति शनी, उच्च के होकर लाभ स्थान में बैठे हैं और अपनी तीसरी द्रष्टी से राज्येश भाग्येश (सू० बु०) को पूर्ण देख रहे हैं अतः तन स्थान पर राज्येश भाग्येश का बैठना और धनेश का इन पर द्रष्टी सबंध करना तथा धन स्थान और लाभ स्थान में, उच्च बलवान तीन ग्रहों का बैठना, यह चारों बातें निसंदेह विशेष धनवान होने के सूचक हैं इसलिये इन समस्त

महयोगों के द्वारा बहुत बड़े धनवान और भाग्यवान बनने की शक्ती आपको प्राप्त हुई, इसीलिये आप इतने बड़े धनाढ्य बादशाह बने, और लग्नमें, सू० बु० जोकि भाग्येश राज्येश होकर मित्र क्षेत्री बैठे हैं, इसलिये आप देह में बहुत सुन्दर एवं स्वस्थ्य थे और यूनान के रहने वाले व्यक्ति इनकी पूजा करते थे किन्तु आपके जीवन में जब २ कभी ऐसी परेशानियाँ आई कि आपको राज्य छोड़कर भागना पड़ा, और संकट सहने पड़े थे, उनका एक मात्र कारण यह है कि, एकतो, केतू कर्क राशी का चन्द्रमा के घर में अष्टम स्थान पर बैठा है दूसरे बृहस्पति, लग्नेश होकर बारहवें स्थान में बैठा है, इन तीन कारण तो जीवन में परेशानी का योग उत्पन्न करने वाले हैं, किन्तु ही यह बात अच्छी होगई कि बृहस्पति की नवम पूर्ण द्रष्टी लग्न से आठवे स्थान पर उच्च की पड़ रही है इसलिये केतू के ऊपर बलवान गुरु की द्रष्टी होने से केतू का खराब असर दब गया है और केतू के ऊपर शुक्र की भी पूर्ण द्रष्टी अच्छी पड़रही है और अष्टम स्थान पति चन्द्रमा तो भाग्य स्थान पर बैठे ही हैं अतः इन कारणों से अष्टम पर बैठे हुये केतू का असर और मङ्गल की नीच द्रष्टी का असर दब गया है तभी जीवन मे आनन्द अनुभव हुआ, अन्यथा आप एक बहुत बड़े धनाढ्य राजा होकर के भी चैन प्राप्त नहीं कर सकते थे।

———

भूतपूर्व प्रधान—पाकिस्तान अधिकारी

मौलाना—श्री जिन्ना साहब
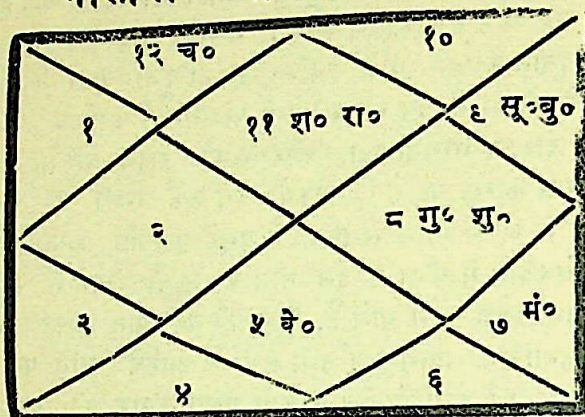
आपकी कुण्डली में प्रायः सभी ग्रह बलवान बैठे हुये हैं, इसलिये आपका समस्त जीवन बराबर उन्नति शील प्रगति पर ही चलता रहा। आपका राज्यस्थान पति मङ्गल, पराक्रम का स्वामी होता हुआ भाग्य स्थान पर बैठा है, और अपने पराक्रम भवन को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, और भाग्य स्थान पति शुक्र, भूमि स्थान का स्वामी होता हुआ राज्यस्थान में बैठा है, और अपने भूमि स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है। अतः मङ्गल और शुक्र का स्थान संबंध यह एक बड़े भारी भाग्यवान का लक्षण है. और फिर शुक्र की सातवीं द्रष्टी से भूमि स्थान की वृद्धी का योग बन गया, और मङ्गल की सातवीं द्रष्टी से पराक्रम की वृद्धी का योग बन गया, तथा राज्यस्थान पति मङ्गल का भाग्य स्थान में बैठना और भाग्य स्थान पति शुक्र का राज्यस्थान में बैठना यह योग भाग्य और राज की दोनों शक्तियां के द्वारा महान उन्नति का सूचक है, पहिले आप एक बहुत ऊँचे बेरिस्टर थे, इसका

कारण यह है कि बुद्धी स्थान पति बुद्ध तो, लाभ स्थान में बैठ कर अपनी सातवीं द्रष्टी से अपने बुद्धी भवन को देख रहा है और साथ में सूर्य भी दैनिक रोजगार के स्वामी होकर लाभ स्थान में बुद्ध के साथ बैठे हैं, इसलिये बुद्धी द्वारा धन कमाने की शक्ती इनमें महान थी, इसके अतरिक्त धन स्थान पति एवं लाभ स्थान पति बृहस्पति राज्यस्थान में बैठकर अपनी पांचवी पूर्ण द्रष्टी से, धन स्थान को देख रहे हैं, इसलिये आपने प्रारम्भ में बेरिस्टरी के कारण राज से धन खूब कमाया फिर आगे चल कर बृटिश सरकार से मिलकर अनेकों प्रकार से धन कमाया और अन्त में बृटिश सरकार की मिलन सारी के योग से आपको हिन्दुस्तान का आधा हिस्सा पाकिस्तान की शकल में प्राप्त हो गया। और आप वहाँ के सर्वे सर्वा अधिकारी बन गये। यह राज शाशन शक्ती प्राप्त करने का मुख्य योग मङ्गल, शुक्र, बृहस्पति, इन तीन ग्रहों के योग से प्राप्त हुआ, इसके अतरिक्त देहाधीश शनी, अपने देह के स्थान में ही स्वक्षेत्री बैठा, इस योग से आपको महान ख्याती और प्रसिद्धता प्राप्त हुई, इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में शत्रु स्थान पति चन्द्रमा धन स्थान में बैठा है, और धनेश बृहस्पति की उस पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये आपने हिन्दू मुसलमानों की लड़ाई और झगड़े करा करा कर हमेशा खूब धन का फायदा उठाया तथा देहाधीश शनी के साथ राहू का बैठना बड़ी भारी पेचीदा तरकीवां से बराबर उन्नति प्राप्त करने का योग है, तथा चन्द्रमा और गुरु के कारण मनोबल और हृदयबल की शक्ती से धन की वृद्धी का योग बनता है, तथा सूर्य और बुद्ध के लाभ स्थान में बैठने से बुद्धी विवेक तथा दैनिक कर्म और तेज के कारण भी खूब धन पैदा करने का योग बना है, तथा बृहस्पति की नवम द्रष्टी शत्रु स्थान पर पूर्ण रूपेण उच्च की पड़ रही है, इसलिये भी शत्रु स्थान संबंधों से धन की वृद्धी होने का

योग बना है, अर्थात मुकदमे बाजी या झगड़े बाजियों से फायदा उठाने का खास योग है, और मङ्गल अपनी चौथी द्रष्टी से खर्च स्थानको उच्च भावसे पूर्ण देख रहे हैं, इसलिये आपके बड़े शाही खर्चे रहे, और दूसरे स्थानोंमें खूब मान्यता रही। इसके अतरिक्त आपका देहाधीश शनी, लग्नमें बैठकर दसवी द्रष्टी से, गुरु शुक्र को पूर्ण देख रहे हैं, इसलिये भाग्येश, सुखेश, धनेश, लाभेश, इनचारों स्थानोंके स्वामियोंका आपसमें संबंधकर लेनेसेहीयह चारां शक्तियाँ और भी विशेष रूप से प्राप्त हुई थी, तथा जिन वर्षों में राहू मीन राशि पर, और केतु कन्या राशि पर आया था जो कि आपकी लग्न से अष्टम मृत्यु स्थान में आया, और लग्नेश शनी भी जब कन्या राशि में आया, जो कि केतु के साथ मृत्यु स्थान में शामिल हुआ तभी सम्वत् २००७ में जिन्ना साहिब की मृत्यु हुई। इस लग्न की ग्रह गोचर प्रणाली से समय के फलादेश की प्रत्यक्ष जानकारी, हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण से समस्त जीवन भर में एक-एक दिन तक की, सरल हिन्दी में मालूम करिये।

रानी विक्टौरिया

ता० २३ मई सन १८१६
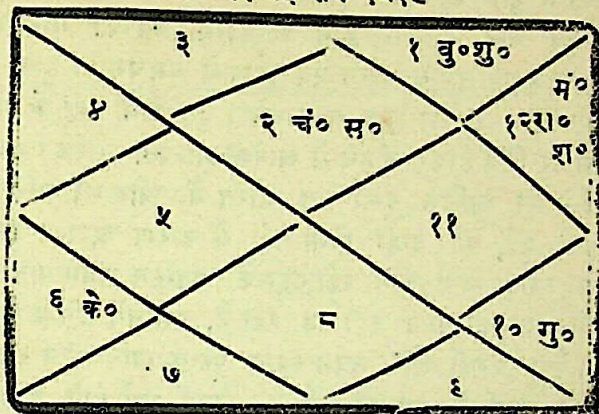
आपकी जन्म कुण्डली में सबसे प्रबल ग्रह योग, राहू, मङ्गल, शनी के ग्यारहवे स्थान पर एक साथ बैठने से बना है, क्यूँकि इन तीन प्रबल क्रूर ग्रहों का एक साथ मिलकर ग्याहरवे स्थान पर बैठना ही इस बात का सूचक है कि ऐसा प्राणी किसी महान लाभ के पाने का अधिकारी और किसी जबरदस्त आमदनी को पाने वाला होना चाहिये किन्तु आपकी कुण्डली में क्यों कि शनी राज्येश और भाग्येश होकर लाभ स्थान में व्ययेश सप्तसेश मङ्गल के साथ एवं राहू के साथ हैं,इसलिये शनी से राज्यकी ताकत एवं भाग्य की ताकत तथा मङ्गल से बाहरी स्थानों की ताकत और राहू से, टेक्ट यानी युक्तियों की ताकत तथा गुप्त सूक्षां की ताकत आपको प्राप्त हुई, यह तीनों ग्रह मिलकर लग्न से तीसरे या छटे या ग्यारहवे स्थान पर बैठने से बहुत बलवान हो जाते हैं, इसलिये आपकी कुण्डली में, लग्न के अन्दर उच्च का चन्द्रमा, पराक्रम का स्वामी होकर, सुखेश भूमिपती सूर्य, के साथ बैठा है, और राज्येश भाग्येश शनी की इन दोनों ग्रहों पर पूर्ण द्रष्टी

है, इसलिये सूर्य चन्द्र के कारण आपका देह बड़ा स्थूल तथा प्रसिद्धता युक्त रहा और भूमि पर बड़ा अधिकार रहा तथा लग्न में सूर्य चन्द्र बलवान होने के कारण आपकी मान्यता व आपका प्रताप समस्त भारत एवं यूरोप में चमचमाता हुआ सिद्ध हुआ, और लग्नेश शुक्र तथा धनेश बुद्ध दोनों ग्रहों के बारहवें स्थान पर मित्र होकर बैठने से आपकी मान्यता आपके विलायती देशों से भी अधिक दूसरे देश भारत में, और भी अधिक रूप में प्राप्त हुई, और इन्हीं दोनों ग्रहों के कारण आपका धन भी बहुत ज्यादा खर्च होता रहा, इसके अतरिक्त सप्तम पति स्थान पर चन्द्रमा की नीच द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये पति के सुख में कमी पैदा करदी और नवम स्थान पर बृहस्पति नीच राशी में बैठे हैं, इसलिये आपका धर्म एक ईसाई धर्म होने के कारण स्वयं ही इतना निर्बल होता है कि जो हमारे भारतीय सनातन धर्म के मुकाबले में ठहर ही नहीं सकता है, इसलिये वह धर्म नीच धर्म होना ही सिद्ध होता है, किन्तु भाग्य का स्वामी शनी लाभ स्थान में बैठा है, और लाभ स्थान का स्वामी गुरु स्थान में बैठा है, इसलिये यह एक बड़े भाग्यवानी का योग है तथा भाग्य की शक्ती से लाभ स्थान से उन्नति करने का कारण पैदा करता है। और पराक्रम के स्थान पर यानी लग्न से तीसरे स्थान पर बृहस्पति की उच्च द्रष्टी पड़ रही है, और पराक्रम स्थान का स्वामी चन्द्रमा, उच्च का होकर लग्न में बैठा है, इसलिये आपका देह बहुत अधिक स्थूल मोटा ताजा बना था, और पराक्रम प्रबल होने से ही आपकी हिम्मत महान थी, अन्यथा इतने बड़े राज्य शासन का संचालन करना एक स्त्री के लिये बड़े भारी मुश्किल का कार्य था, किन्तु पुरुषों की अपेक्षा आपको स्त्री होते हुये भी अधिक ख्याति, उन्नति, मान्यता, द्रढ़ता, सौम्यता तथा सुप्रबन्धकर्त्ता की पदवी प्राप्त हुई।

हिटलर

२० अप्रैल सन १८८६
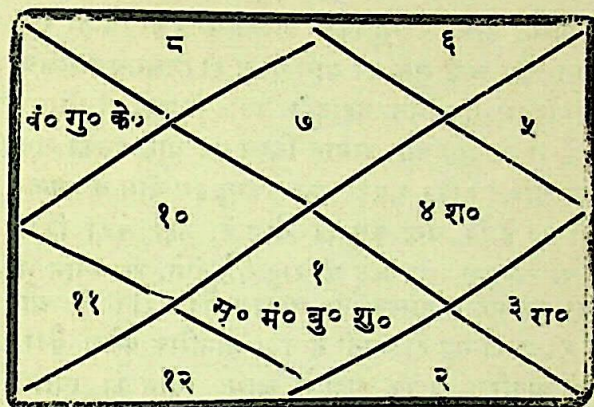
आपकी जन्म कुण्डली के अन्दर, सबसे प्रबल ग्रह योग, चं० गु० के० तीन ग्रहों का है, जिसके कारण, इनको पुरुषार्थ और इनकी हिम्मत की प्रशंसा समस्त संसार में एक बार शिखर पर पहुंच गई, क्योंकि वृहस्पति, शत्रू स्थान का स्वामी होकर पराक्रम के स्थान पर स्वक्षेत्री बैठा है और वृहस्पति के साथ उच्च राशी का केतू बैठा है, तथा राज्य स्थान का स्वामी चन्द्रमा भी पराक्रम स्थान पर बैठा है अतः गुरू चन्द्र योग की शक्ती, मनोबल, हृदय बल, कर्मबल, बाहुबल, परिश्रम बल, राज्यज्ञान बल, इन सबको ऊँचा उठाता है और लग्न से तीसरे स्थान पर उच्च का केतू बैठने से महान शक्ती प्रदान करने का द्योतक तो वह स्वयं होता है किन्तु जहां कहीं लग्न से तीसरे या छटे, स्थान पर यदि धन राशी के केत और बृहस्पति दोनो एक साथ बैठे होंगे तो अत्यंत महान शक्ती का परिचय अवश्य देते हैं पं० जवाहरलाल

नेहरू की कुण्डली में भी, धनराशी के केतू और गुरू लग्न से छटे स्थान पर बैठे हैं, अतः किसी की भी जन्म कुण्डली में, धन के केतू के साथ गुरू, लग्न से छटे या तीसरे बैठे होंगे तो वह मनुष्य असाधारण कार्य करने वाला प्रसिद्ध होकर रहेगा किन्तु इनकी कुण्डली पे तो गुरू केतू का योग और चन्द्र गुरू का योग दोनों ही मिलगये इसलिये इनके प्रभाव परिश्रम, हिमम्मत, वहादुरी, आदि विषयों का गौरव एकदम वहुत ऊँचा उठगया और समस्त विश्व एक वार इनकी शक्ती को देखकर चकित होकर घवड़ा उठा- किन्तु इस योग के अन्दर एक खरावी यह है कि चन्द्र केतू का योग है, जहां कहीं किसी भी स्थान पर चन्द्रमा साथ केतू या राहू बैठे होंगे, उस स्थान में कभी न कभी एक महान असफलता अवश्य पैदा होती है और उस स्थान की शक्ती नष्ट हो जाती है तथा मानसिक क्लेश पैदा होता है इसके अतरिक्त आपके ग्रहों में लाभ, स्थान का स्वामी सूर्य उच्च का होकर सप्तम स्थान में वैठा है और धन स्थान का स्वामी मंगल, सप्तम स्थान में स्वक्षेत्री वैठकर अपने धन स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये खूब लाभ और धन की वृद्धी होती ही चली गई और लग्न कास्वामी शुक्र भी सप्तम स्थान में वेठकर अपने लग्न स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं इसलिये, आपको ख्याती भी खूव प्राप्त हुइ और भाग्य का स्वामी वुद्ध इन ग्रहों के साथ में बैठा है इसलिये भाग्य ने भी खूव साथ दिया था शत्रू स्थान का स्वामी बृहस्पति इन चारों ग्रहों को पूर्ण द्रष्टीसे देखरहे हैं और दोग्रहों केसाथ हैं तथा उच्च के राहू को भी खूव सफलता तभी तो बृहस्पति ने अपनी शत्रू दमन की नीति को उत्तरोत्तर खूव बढ़ाया और खूव सफलता पाई और चौथे व पाँचवे स्थानके स्वामी शनीका राज्य स्थान में वैठकर इन चारों ग्रहों को अपनी दसवी नीच द्रष्टी से देखना तथा मङ्गल का अपनी चौथी

नीच द्रष्टी से शनी को देखना, यह दोनों ही कारण राजयोग को नष्ट करने वाले हैं, और अन्त में इसी योग के कारण इनकी प्रतिभा, और यश समाप्त होगया। हां यह ध्यान देने की बात है कि आपके तीन ग्रह उच्च के हैं और दो ग्रह स्वक्षेत्री हैं तथा तीन ग्रह अपने अपने घरों को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, और नववां ग्रह बुद्ध, इन सबकी द्रष्टी और सङ्ग लेकर केन्द्र में बैठा है। इसलिये प्रायः सभी ग्रह बलशाली होने के कारण आपका जीवन एकबार संसार की शिखर पर चमक उठा।

किन्तु राहू और केतू जिस किसी भी मनुष्य के, जिन २ स्थानों पर उच्च के होकर बैठते हैं, उन २ स्थानों की यद्यपि बहुत वृद्धी करते हैं, किन्तु उन स्थानों में, पहिले बड़ा भारी संघर्ष उत्पन्न अवश्य करते हैं; अतः हिटलर महोदय की कुण्डली में, राहू भाग्य स्थान पर उच्च का बैठा है, और केतु पराक्रम स्थान पर उच्च का बैठा है, इस लिये आपके भाग्य की उन्नति तो बहुत हुई, और पराक्रम भी बहुत ही चमका, किन्तु आपकी इस उन्नति के अन्दर कितना महान संघर्ष हुआ है, और कितने लाख आदमियों की जानें समाप्त हुई हैं यह भी असाधारण कार्य हुआ है। इसी प्रकार जवाहरलाल नेहरू की कुण्डली में शत्रू स्थान पर उच्च का केतू बैठा है, इसलिये नेहरू जी को भी, अपने जीवन में, आधे से ज्यादह जीवन के समय का बलिदान, शत्रु पक्ष के संघर्ष में, वृटिश सरकार के सनमुख करना पड़ा था। अतः राहू और केतू का यह स्वभाविक गुण है, कि, किसी भी स्थान में अच्छे बैठें या बुरे, किन्तु उस स्थान में—बड़ी कठिनाइयां और संघर्ष अवश्य पैदा करते हैं, और राहू केतू अपने बैठने वाले स्थान में, जीवन के अन्दर कोई न कोई खूबी भी अवश्य पैदा करते हैं। यही योग हिटलर महोदय के लिये लागू हुआ है।

———

निजाम हैदराबाद नवाब

जन्म ता० ६ अप्रेल १८८६
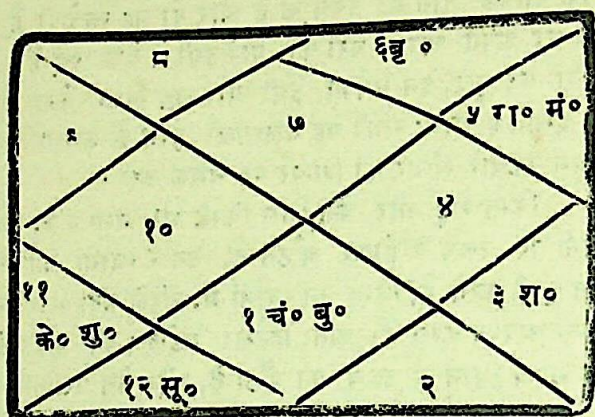
आपकी जन्म कुण्डली में— राज्येश चन्द्रमा, लग्न से सातवें स्थान बैठा है, और भाग्येश व्ययेश बुद्ध भी सतावें स्थान पर, चन्द्रमा के साथ बैठा है और इन दोनों चन्द्र बुद्ध (राज्येश, भाग्येश) ग्रहों की पूर्ण बलवान द्रष्टी लग्न पर पड़रही है। इसलिये राज्येश, भाग्येश का केन्द्र में मिलान होना. और लग्न को पूर्ण देखना, यहबड़ी भाग्ययानीका महान सूचकहै इसके अतिरिक्त,सप्तम स्थानमें, इनदोनों शुभ ग्रहों का,राज्येश भाग्येश होकर मिलानहोना यहबड़े भारी, स्त्री भौग कराने का सूचक हैऔर इतने पर भी स्त्री स्थान का स्वामी मङ्गल, लाभ स्थान में बैठकर, देहाधिपती शुक्र से, परिस्पर द्रष्टी संबंध कर रहा है, इसलिये, चन्द्र बुद्ध के स्त्री स्थान में बैठने से तथा स्त्री स्थान पति मगल के, देहाधिपती शुक्र से पूर्ण द्रष्टी संबंध करने से, भोग विलासता की महानता का योग बनगया, अतः यहीं कारण है कि, निजाम साहब की यह

बात खूब प्रसिद्ध है कि आपके यहां सैंकड़ों रानियां रहती थी, और आप बड़े भोग विलासी थे, जैसा कि अक्सर हर एक नवाबों की प्रगति चली आरही है इसके अलावा लाभ स्थान में मङ्गल राहू के बैठने से, तथा मङ्गल का धनेश होकर धनस्थान पर पूर्ण द्रष्टी डालने से, धन प्राप्ती के, व आमदनी के महान साधन आपको स्वतः प्राप्त औरमौजूद थे और चतुर्थेश पंचमेश शनीभाग्य स्थानपर मित्र क्षेत्री बैठाहै और लाभ स्थानको व राहू तथा मङ्गल को, अपनी तीसरी द्रष्टी से पूर्ण रूपेण देख रहे हैं इसलिये भूमि पति का लाभ स्थान को पूर्ण देखना व लाभेश को पूर्ण देखना व धनेश को पूर्ण देखना व टैक्स के स्वामी राहू को पूर्ण देखना यह ग्रहोंके आपसी संबंधित योग से धनकी अधिक वृद्धी का ग्रह योग बन गया और भूमि पति ही सुख स्थान का स्वामी होता है इसलिये सुखके भी महान साधन प्राप्तरहे और सुखेश भूमिपति शनी नवम भाग्य स्थान पर बैठा है इसलिये भूमि और सुख की शक्ती स्वयं ही भाग्य की ताकत से प्राप्त थी और लग्न से छटे स्थान पर सूर्य का बैठना बड़ा भारी प्रभाव शाली फलदाता होता है अतः आपका लाभेश सूर्य छटे स्थान पर बैठा है इसलिये, बड़े भारी प्रभाव के साथ में लाभ प्राप्ती होती थी, और प्रभाव भी खूब रहता था, और इसके अतरिक्त मङ्गल अपनी आटवी पूर्ण द्रष्टी से छटे शत्रु स्थान को देख रहे हैं और शनी अपनी दसवी पूर्ण द्रष्टी से शत्रु स्थान को देख रहे हैं अतः छटे स्थान पर शनी मङ्गल की पूर्ण द्रष्टी और सूर्य का बैठना, यह तीन गरम ग्रहों के योगसे शत्रु स्थान में बड़ा भारी प्रभाव रहता है अतः आपकी राज्य शक्ती कोई मामूली नहीं थी, भारत की रियासतों में आपकी गिनती बहुत चढ़ी हुई थी, किन्तु पराक्रम और शत्रु स्थान के स्वामी बृहस्पति का लग्न से बारहवे स्थान में बैठने से और भूमि स्थान को अपनी पांचवी पूर्ण नीच द्रष्टी के देखने से यह योग बना, कि

भारत स्वतंत्र होने के बाद, आपकी शासन शक्ती समाप्त होगई तथा भूमि पर अधिकार की कमी बनगई, और भारत सरकारकी पुलिस कार्वाई करने की वजहसे जो सेना इनकी रियासत में गई लड़ने को उसके सामने आपको झुकना पड़ा, और आत्म समर्पण करना पड़ा यह सब योग केवल बृहस्पति के लग्न से बारहवे बैठने के फल स्वरूप हुआ, क्योंकि हम पहिले ही लिख चुके है कि, छटे आठवे बारहवे, घरों में पड़कर के वह ग्रह, उन घरों को नुकसान पहुचाते हैंकि जिन २ घरों के वह ग्रह स्वामी होते हैं अतः निजाम साहब का यह शत्रु स्थान पति, व पराक्रम स्थान पती बृहस्पति, लग्न से बारहवे घर में बैठा है, इसीके कारण ऐसी कम-, जोरी आपको अपने जीवन में देखनी पड़ी, और यही बृहस्पति बहन भाइयों के स्थान का भी स्वामी है, इसलिये आपको इनका भी सुख नही होना चाहिये और राज्येश चन्द्र के साथ भाग्येश बुद्ध का, व्येऐश होकर सङ्ग बैठना भी यह बतलाता है, कि राज्य शक्ती में कुछ कमी आजाय, और भोग विलासके कार्योंमें अधिक खर्च होना चाहिये,और चन्द्रमा क्यूंकि मनका भी स्वामी होताहै इसलिये मनको भी भोग विलासता बहुत पसंद होनी चाहिये । और लग्नेश शुक्र का धनेश व सप्तमेश मङ्गल से पूर्ण द्रष्टी संबंध होने के कारणोंसे आपके शरीरको धन और स्त्री सुख हमेशा प्राप्त होती रहनी चाहिये क्यूंकि यह ग्रहयोग पक्का परिस्पर का द्रष्टी संबंध योग है।

श्री गौतम बुद्ध

अब से ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व का जन्म है, अर्थात विक्रम सम्वत् के प्रारम्भिक समय से करीबन ५०० पाँच सौ वर्ष पूर्व का आपका जन्म है।
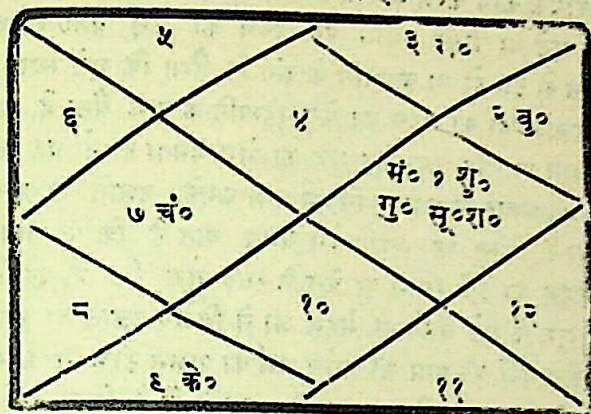
आपकी जन्म कुण्डली में, धर्म स्थान का स्वामी बृहस्पति, कर्म स्थान में, बैठा है, और कर्म स्थान पति मङ्गल अपने ही क्षेत्र में, मेषराशी पर बैठा है, और अपने दूसरे क्षेत्र बुद्धी स्थान को पूर्ण आठवीं द्रष्टी से देख रहा है, अर्थात यह मानी हुई बात है कि जिस पुरुष का भाग्येश राज्येश मिलकर केन्द्र में, बैठा हो, और बुद्धी स्थान का स्वामी भी उनसे संबंध कर रहा हो या अपने क्षेत्र में स्वयं बैठा हो या अपने क्षेत्र को देख रहा हो, और बुद्धी स्थान पर कोई बलवान, ग्रह बैठा हो तो वह मनुष्य बड़ा भारी प्रतापी भाग्यवान होता है, अतः आपकी कुण्डली में भाग्येश राज्येश, मङ्गल, गुरु, एक साथ बैठे हैं, और वही मङ्गल बुद्धी स्थान का स्वामी भी है, और बुद्धी स्थान पर पूर्ण द्रष्टी भी है, और लाभेश, सुखेश शुक्र भी इनके साथ है, और धनेश सूर्य भी

इनके साथ है, तथा छटे स्थान पर उच्च का केतू बैठा है, और छटे स्थान के स्वामी वृहस्पति की छटे स्थान पर व केतू पर पूर्ण नवम द्रष्टी पड़रही है, अतः यह सभी योग एक महान प्रतापी पुरुष के होते है, ऐसा प्राणी संसार में, सबसे अधिक चमत्कारिक महत्वदायक कार्य करने में समर्थ होता है, हम पहिले भी लिखचुके हैं, कि छटे या तीसरे स्थान पर उच्च का केतू बैठा हो और वृहस्पति से द्रष्ट हो या वृहस्पति के संग हो जैसा कि छटे स्थान पर जवाहरलाल जी का उच्च का केतू वृहस्पति के साथ बैठा है, अतः छटे स्थान पर यदि ऐसा केतू गुरु का योग बनता है. तो वह प्राणी किसी भी प्रकार से महान विजय प्राप्त करके, उन्नति पर अवश्य पहुंचता है, किन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि पं० जवाहर लाल नेहरू का छटे स्थान पर केतू के साथ गुरु बैठा है, इसलिये, धर्मेश गुरु के छटे बैठने से, नेहरू जी ने विजय उन्नति तो अवश्य बहुत ऊँचे दर्जे की प्राप्त की परन्तु धर्म का पालन ठीक न करसके, और यही योग, श्री गौतम बुद्ध की कुण्डली में है, किन्तु फर्क यह है कि आपका धर्मेश, गुरु राज्य स्थान (कर्म स्थान) में, बैठा है और वहां से केतू को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये आपने, धर्मोन्नति करने में और अहिंसा को संसार में, सबसे ऊँचा उठाने में, विजय और उन्नति की, क्यूँ कि आपके समय में अधिकांश संसार के प्राणी, पशु बलिदान, करने को ही बड़ा भारी धर्म माने हुये थे ऐसी हालतमें, आपने अपने अकेलेही सारे संसारमें भ्रमण कर २ के लोगों को पशुहिंसा के मार्ग से, जबरदस्ती प्रभाव शाली, वक्तव्य दे २ कर हटाया, आपकी कुण्डली में, प्रभावशाली वक्तव्य देनेकी महान शक्ती, केवल मङ्गल के कारण थी, क्यूँ कि वह पंचमेश होकर अपने स्थान को पूर्ण देख रहे हैं, और लोगों को प्रभाव शक्ती. में, फसा लेना यह केतू और गुरु का फल है, और संसार में, मान और यश प्राप्त करना यह गुरु, मंगल, सूर्य,

शुक्र, का राज्य में बैठने का फल है और लग्नेश चन्द्रमा का चौथे स्थान पर बैठने से, व चतुर्थेश शुक्र से द्रष्टी संबंध करने से यह योग बनगया, कि आप शांती के अनन्य उपासक थे, और सप्तमेश, अष्टमेश, शनी नीच राशी का होकर दसम में बैठने से, आपको बहुत भ्रमणाकर २ के बड़ी २ कठिनाइयों से, जीवनमें, टकराना पड़ा था ।

औरंगजेब

३ नवम्बर सन १६१८
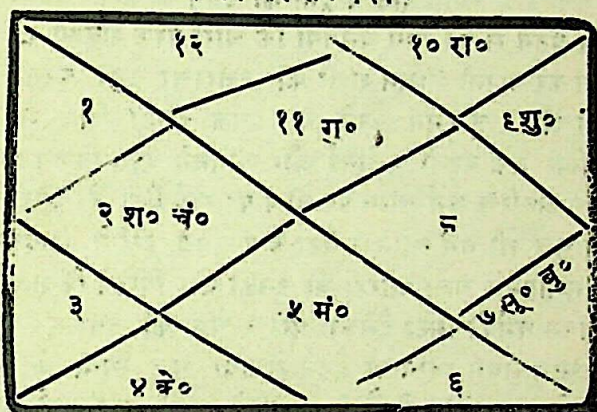
इस कुण्डली के अन्दर विशेषता यह है; कि देहाधीश-लग्न का स्वामी शनी, जोकि लग्न से चौथे स्थान पर बैठा है, वह अपनी पूर्ण द्रष्टीसे, लग्नको देख रहाहै इसलिये आपको आत्मवल और बहुत ख्याती प्राप्त हुई और लग्न में धनेश, लाभेश गुरू के बैठने से तथा राज्येश मङ्गल की लग्न पर द्रष्टी होने से और राज्येश मङ्गल की राज्य स्थान पर भी पूर्ण द्रष्टी होने से, अधिक धन लाभ तथा उन्नति, गौरव, वैभव, प्रताप, सफलता आदि की वृद्धी हुई, और लग्नेश शनी की पूर्ण द्रष्टी. धनेश गुरू पर होने से

और धर्मेश गुरू का, शनी के लग्न स्थान में बैठने से, यह योग बना कि धन का स्वामी बृहस्पति, देहाधीश के पूर्ण कब्जे में हो गया, इसलिये विशेष धनराशी आपको प्राप्त होती रही और बादशाह बने और मङ्गल राज्य का स्वामी होकर राज्य स्थान को पूर्ण चौथी द्रष्टी से देख रहा है, और मङ्गल लग्न को व गुरू को भी देख रहा है इसलिये हकूमत व राज्य शासनकी अच्छी शक्ती प्राप्त रही और लग्न से छटे शत्रू स्थान पर केतू के बैठने से तथा देहाधीश क्रूर ग्रह शनी की केतू पर व छटे शत्रू स्थान पर पूर्ण द्रष्टी होने से तथा शत्रू स्थान पति चन्द्रमा का उच्च का होकर देहाधीश के साथ बैठने से यह योग बनगया कि चारो तरफ शत्रुओं को जीत जीत कर अपनी शासन शक्ती की उत्तरोत्तर वृद्धी करता चला गया और शत्रु दमन करने की प्रबल इच्छा शिरू से लेकर आखिर तक बढ़ती चलीगई और जीवनमें बहुत विजय प्राप्त की इसके अतरिक्त धर्म स्थान पर नीच का सूर्य बैठा है और अष्टम पति बुद्ध भी धर्म स्थानपर बैठा है इसलिये, इन्होंने, हिन्दूधर्म जो कि सनातनसे चला आरहा था उसका घोर विरोध किया औरइस सनातन धर्मको मिटा देनेकी पूरी २ चेष्टा की तथा सू० बु० के एक साथ नवम स्थान पर बैठने से तथा धर्म स्थान के स्वामी शुक्र के लाभ स्थान में बैठने से आपने अपने क्षुद्र धर्म को ही बहुत बड़ा मानकर उसी की वृद्धी का बराबर प्रयत्न किया इसके अतरिक्त पिता स्थान पर शत्रू स्थान के स्वामी चन्द्रमा की नीच द्रष्टी पूर्ण पड़रही है इसलिये आपने अपने प्रभुत्वको ऊंचा करने के लिये पिता को भी कैद में कर लिया था और अष्टमेश बुद्ध की द्रष्टी भाइयों के स्थान पर होने से भाइयों को भी आपने मरवा डाला था अतः इस कुण्डली के अन्दर आपके कार्योंको देखने से साफ स्पष्ट होजाता है, कि यह सब अनुचित और अमानुसिक शक्ती का प्रयोग, केतू के छटे स्थान पर बैठने से, व शनी की केतू

पर पूर्ण तीसरी द्रष्टी पड़ने से यह कार्य होते थे' और चन्द्रमाके शत्रू स्थानधिपती होकर देहाधीश शनी के साथ, उच्च का होकर बैठने से, इनके मनमें और तनमें समस्त संसार को जीतने की आग भड़कती रहती थी क्योंकि चन्द्रमा मनका स्वामी है और शनी तनका स्वामी है। अर्थात यह तन मन में जो शत्रू दमन करने की महान् इच्छा आपके बनी थी उस इच्छा को पूरी करने की महानशक्ती, केतू केछटे स्थान बैठने से तथाशनी की केतू पर पूर्ण द्रष्टी होने से इतनी भारी सफलता हिम्मत और विजय प्राप्त हुईथी किन्तु देहाधीश शनी के साथ झगड़े खोर शत्रू स्थान का स्वामी चन्द्रमा होने से, उसका जीवन आखीर तक महान अशांत प्रद और दुखदाई साबित हुआ और संतान शक्ती प्राप्त तो हुई किन्तु संतान के कारण कष्ट भी सहन करना पड़ा और संतान के द्वारा पीड़ित होना पड़ा और धर्म एवं भाग्य स्थान पर सूर्य बुद्ध के दोषी होकर बैठने से जहां एक ओर अधर्म के बहुत से कार्य किये,वहां दूसरी ओर इसी योग से भाग्य की अशांती का अनुभव भी आपने खूब किया तथा अष्टम पति यानी आयूपति बुद्ध के नवम स्थान बैठने से, आयू तो ठीक अच्छी प्राप्त हुई और जीवन की दिनचर्या भाग्यवानी से ही व्यतीत हुई और लग्न से बारहवे स्थान पर राहू होने से आपका खर्चा अधिकांश झगड़े और लड़ाइयों में ही प्राय: चलता रहा।

अत: यह मानी हुई सिद्ध बात है, कि यदि किसी भी व्यक्ति का, धर्म स्थान किसी भी प्रकार के ग्रह योगों द्वारा कुछ बिगड़ जाता है तो वह प्राणी अपने जीवन में लौकिक उन्नति चाहे कितनी ही अधिक क्यों न करले। किन्तु उसके द्वारा किसी न किसी प्रकार से धर्म की हानी अवश्य होती है और वास्तविक सच्ची शांती उस व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो पाती है यही बात आपके ऊपर भी लागू होती है।

श्री भक्त नामदेव
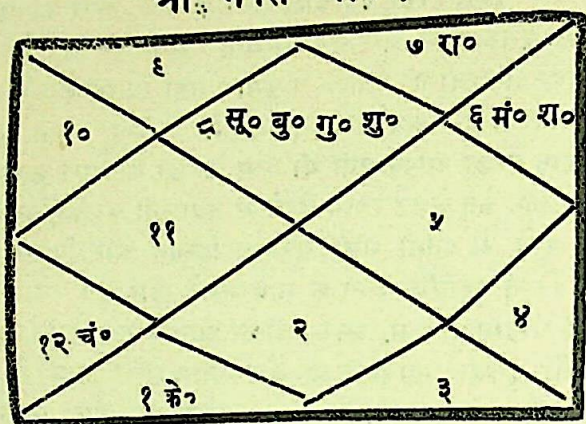
आप एक महान भक्त प्राणी थे–आपकी कुण्डली में सबसे अधिक प्रधानता चन्द्रमा और बृहस्पति की है, इसका कारण यह है कि, ईश्वर प्राप्ती वाले नवम स्थान का स्वामी चन्द्रमा, बुद्धी स्थान पर बैठा है, और प्रत्येक मनुष्य का चन्द्रमा, मनकी शक्ती, का तो स्वमेश अधिकारी होना ही है, इसलिये आपका मन ईश्वर स्थान का अधिकारी होकर बुद्धी स्थानपर मित्र क्षेत्री होकर बैठा है, और चन्द्रमा, अकेला है, अतः मन और बुद्धी के अन्दर केवल ईश्वरीय गुणों की महानता का स्रोत, प्रारम्भिक अवस्था से लेकर अन्त अवस्था तक बहना, अवश्यंमभावी होगया, इस पर भी विशेषता यह है कि बुद्धी स्थान के स्वामी बृहस्पति, तन स्थान में, बैठकर. बुद्धी स्थान पर पूर्ण दृष्टी डाल रहे हैं, और चन्द्रमा. पर भी डाल रहे हैं, और जब कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय के अधिकारी गुरू ही होते हैं, तो हृदय और बुद्धी में भी, भक्ति भावना की मजबूती, और भी अटल रूप से हो गई, इसके अतिरिक्त आपके हृदय और बुद्धी के स्वामी गुरू, ईश्वर भक्ति वाले नवम स्थान पर उच्च दृष्टी पूर्ण रूप से डाल रहे हैं, इसलिए ईश्वर की महानता

को, आपकी बुद्धी ने महान रूप से समझा, आपका मन, आपकी बुद्धी, आपका हृदय, इन तीनों चीजों का योग; गुरु चंद्र के द्वारा, ईश्वर भक्ति में ओतप्रोत हो गया, और साथ ही आपका देहाधीश मंगल जो आत्मा और देह का स्वामी है, उसने भी, ईश्वर स्थान पति चन्द्रमा से परस्पर द्रष्टी संबंध कर लिया, अतः आपके, तन, मन, धन, हृदय, बुद्धी, आत्मा, जब सभी का मेल, परमात्मा से हो गया. इसीलिए आपके जीवन की सबसे प्रमुख प्रधानता यही थी कि आपने, केवल मनुष्य मात्र में ही नहीं, वरन् प्राणी मात्र में भी, तथा भूत प्रेत भयानक योनियों तक के जीवों में, एवं समस्त विश्व में, अर्थात् जीव मात्र में केवल उसी परमात्मा को पाया, और आप जब कुत्ते के पीछे दाल लेकर दौड़े, कि प्रभो आप केवल अकेली रोटियां लिये जा रहे हो दाल भी लो, तब वहाँ भगवान् को ही साक्षात्कार में दर्शन देना पड़ा, और जब एक बावड़ी पर प्रेत सामने आ गया तो वहां भी आपने प्रभू का ही एक अनौखा रूप समझ कर; उनका जब गुणानुवाद गाया, तो वहां भी भगवान को प्रकट होना पड़ा, और प्रेत अपनी योनि से मुक्त हो गया, यह सब घटनायें आपकी सार्वभौम सर्वत्र, एक मात्र अकाट्य ईश्वर निष्ठा के विश्वास का प्रमाण हैं, दूसरे यह कि आप किसी भी अवस्था में रहकर दुखी और व्याकुल नहीं होते थे, वरन् महान धैर्य, जो आत्मा के अन्दर आप धारण किये रहते थे; उसका एक दूसरा कारण यह भी है, कि आपका देहाधीश मंगल, छटे घर का स्वामी होकर छटे स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा हैं, और छटे स्थान पर केतू बैठे हैं, तो आपने अपने भव सागर से पार होने वाले जीवन संग्राम में, जो सबसे प्रबल पंच शत्रू थे, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, इन सबको तो जीत ही लिया, इसके अतरिक्त देह के संबंधित समस्त कठिनाइयों को सहन करने की भी पूर्ण शक्ति प्राप्तथी

और कोई भी विघ्न बाधा आपके सामने ठहर नहीं सकती थी, आपकी कुण्डली में दो क्रूर ग्रह, मङ्गल तथा शनी, ग्यारहवें लाभ स्थान में बैठे हैं, इनका मुख्य प्रभाव यह है कि आप कहीं भी किसी भी अवस्था में क्यों न हों, किन्तु आपका कोई भी कार्य रुका नहीं रहता था, अर्थात हर एक आवश्यकताओं की पूर्ती हो जाती थी, इसलिए आपके हर एक कार्यों की पूर्ति भी, ईश्वर निष्ठा में महान सहायक कारण था क्योंकि इन दोनों (मं० श०) को भी भाग्य स्थान पति चन्द्रमा पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, इसके अलावा आपकी जन्म लग्न में जो चार ग्रह बैठे हुए हैं, सू० बु० गु० शु० इन बलवान आचार्य ग्रहों के प्रभाव से आपकी मान प्रतिष्ठा केवल उसी जमाने से नहीं रही थी, बल्कि आज तक आपकी मान्यता संसार में मौजूद है और आपकी भगवद भक्ति की सराहना तो अदुत्तीय है ही, किन्तु आपकी कवितायें भी बहुत ही मार्मिक एवं सुन्दर वर्तमान संसारमें मौजूद हैं जो कि आपकी आन्तरिक भावनाओं का दिग्दर्शन सदैव कराती रहेंगी। कविता करने का भी प्रधान कारण चन्द्रमा है और दूसरा कारण बृहस्पति है तथा तीसरा कारण मङ्गल है क्यूंकि नवमेप चन्द्र मन का अधिकारी होकर बुद्धी स्थान पर बैठा है और बुद्धी स्थान का स्वामी बृहस्पति, हृदय का अधिकारी होकर एवं तन स्थान में बैठकर बुद्धी स्थान को पूर्ण एवं मनाधिकारी चन्द्रमा को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, और देहाधीश मङ्गल आत्मा का अधिकारी होकर भी बुद्धी एवं चन्द्रमा को पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं अतः इसी प्रकार के ग्रह योगों द्वारा ही विरले पुरुष इस संसार में—तप, त्याग, ईश्वर भक्ति, समदर्शता, धर्मज्ञता, कविता, ज्योतिष, संगीत आदि गंभीर ज्ञान की शक्ती प्राप्त करते हैं, और अपना महान संयमी जीवन व्यतीत किया करते हैं, क्योंकि वह अपनी अन्तरात्मा के द्वारा एवं समस्त जीवन के अनुभवों से जो कि उपरोक्त

ग्रहों की शक्तियों से उन्हें अनेक प्रकार के साधनों द्वारा प्राप्त होते रहते हैं, जिसके कारण वह इस संसार में, इस क्षण भंगुर शरीर के संबंधित समस्त कार्यों को, एक मिथ्या प्रपंच एवम् स्वप्नवत् जान लेते हैं, और उस जगत्पिता की वास्तविक पूर्ण शक्ती और स्वरूप को, क्षण-क्षण के, अन्दर जगत के प्रत्येक कार्यों में देखा करते हैं। और अन्तरात्मा में आनन्द, अनुभव करते रहते हैं।

महात्मा ईसा मसीह
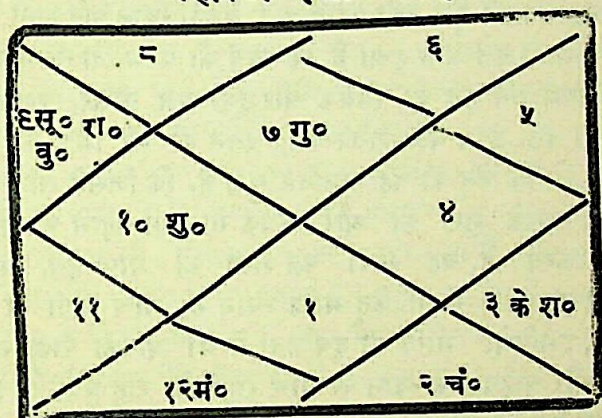
आपकी कुण्डली में, सर्व प्रधान सुन्दर योग यह है, कि चतुर्थेश पंचमेश शनी, बुद्धी स्थान का एवं शांती स्थान का स्वामी होकर, ईश्वर संबंधी, नवम स्थान में, बैठा है। और, नवम स्थान का स्वामी, बुद्ध, लग्न से तीसरे स्थान पर बैठकर अपनी पूर्ण द्रष्टी से, अपने नवम ईश्वरीय स्थान को देख रहा है, इसलिये एक तो बुद्धी का संबंध, धर्म से व ईश्वर से, पूर्ण रूपेण होगया। क्यूँ कि शनी ने नवम स्थान में, बैठकर, नवम स्थान पति, बुद्ध

से परस्पर द्रष्टी संबंध कर लिया है। दूसरे विवेक शक्तीके प्राकिर-तिक अधिकारी भी बुद्ध ही है, इसलिये, बुद्धी में, न्याय और धर्म की शक्ती को पालन करने के लिये,विवेक शक्ती का भी सहारा मिल गया। इसके अतरिक्त, तीसरे छटे स्थान के स्वामी बृहस्पति भी लग्न में देह के स्थान पर बैठे हैं, इसलिये एकतो देव गुरु, बृहस्पति का लग्न में बैठना ही पूजनीय योग बनाता है, दूसरे यह बृहस्पति, परिश्रम व पुरुषार्थ शक्ती के स्वामी हैं और देह में, बैठनेसे, महान पुरषार्थी बनाते हैं, इतने पर भी बृहस्पति, जो कि प्राकिरतिक रूप से, हृदय शक्ती के अधिकारीं भी हैं, और नवम स्थान कों अपनी पूर्ण नवम द्रष्टी से देख रहे हैं, इसलिये शनी पर भी, बृहस्पति की पूर्ण द्रष्टी पड़ीहै अत: बुद्धी, स्थान पति शनी, को कितना भारी बल प्राप्त हुआ है कि स्वयं को प्रथम तो स्थान बल, दूसरे नवम पति बुद्ध का विवेक और द्रष्टी बल, तीसरे, बृहस्पति, का द्रष्टी बल, हृदय बल, शक्ती बल, इतने पर भी, मित्र केतू का साथ है,जो कि केतू का यह प्राकृतिक गुण है, कि जिसके साथ बैठ जातेहैं, उसके गुण को और अधिक मात्रा में बढ़ाने की शक्ती प्रदान करते हैं, यह सभी बल शनी को प्राप्त हुये, किन्तु आपकी कुण्डली में तो, केतू भाग्य स्थान में, नीच राशी पर ही बैठे हैं, इसलिये, भाग्य की दुर्बलता ने भी आपका पीछा नहीं छोड़ा और बाहुबल के स्थान पर नीच राशी में, राहू बैठे हैं, इस लिये अन्तिम समय में, बाहुबल की शक्ती, बंधंन युक्त होगई, किन्तु जिस पुरुष के लग्न से तीसरे व छटे स्थान पर क्रूर ग्रह बैठे होते हैं. वह बड़ा बहादुर होता है, अत: आपकी कुण्डली में, तीसरे स्थान पर राहू और सूर्य हैं, और छटे स्थान में, मङ्गल है, तथा छटे स्थान पर शनी की पूर्ण द्रष्टी भी पड़रही है, और तीसरे छटे स्थान के स्वामी गुरु लग्न में बैठे हैं, इसलिये आपकी मृत्यु भी एक महान वीर गति की द्योतक है, क्यूँ कि आपने अपने प्राण

देदिये, मगर धर्म को नहीं जाने दिया, यह आपकी महान बहादुरी है. रहा यह कि, आपके पराक्रम में. धर्म स्थान पति बुद्ध बड़े कोमल बैठे हैं, इसलिये आपने रण संग्राम में बहादुरी न पाकर एक महात्मा वृत्ती में. बहादुरी प्राप्त की और इसी बहादुरी के फल-स्वरूप कि धर्म के हेतू प्राण देदिये, आजतक दुनियाँ में आपका नाम और कीर्ती अमर है, इसके अतरिक्त आपका देहाधीश शुक्र, लग्न से, चौथे शाँती के स्थान पर बैठा है, और चौथे स्थान का स्वामी शनी, बुद्धी का मालिक होकर नवम स्थान पर बैठा है, अतः आपकी आत्मा में शांती, और बुद्धी में भी शांती पाने का योग है, क्यूँ कि शांती प्राप्त करने के अधिकारी, महात्मा लोग ही हुआ करते हैं, और राज्याधिकारी आपका चन्द्रमा जो उच्च का होकर अष्टम स्थान में बैठा है. इसलिये आपका राज्याधिकार तो कोई अच्छा नही था. किन्तु अष्टम जो मृत्यु का स्थान है, उस स्थान में, चन्द्र द्वारा राजयोग होने से यह सिद्ध होता है, कि आपकी मृत्यु होने पर स्वर्ग का सुख प्राप्त होना चाहिये। आपकी कुण्डली में विशेषता यह है, कि लग्न से तीसरे स्थान पर सू० बु० बलवान है, और राहू भी तीसरे स्थान पर बलवान ही हैं, तथा लग्न से छटे स्थान पर, मङ्गल भी बलवान है, और तीसरे छटे स्थान का स्वामी बृहस्पति भी बलवान है, अतः ऐसे व्यक्ति में महान हिम्मत शक्ती तथा महान धैर्य होता है, और भय मानने के लिए गुंजाइश नही होती है, इसलिये ऐसे व्यक्ति के अन्य और सभी ग्रह जिस मार्ग पर उसे लेजाना चाहते हैं। उस मार्ग पर वह व्यक्ति बड़ी मुस्तैदी के साथ आगे बढ़ता चला जाता है। और अपने सिद्धान्तों पर ही सदैव अटल रहता है। चाहें दुनियां के लोग उसे बुरा कहें या भला। अतः यही योग के कारण आपके अन्दर इतनी द्रढ़ता थी, कि एक मामूली चीज की तरह प्राण देदिये, किन्तु अपने सिद्धान्त को नहीं जाने दिया।

प्रसिद्ध उपन्यास कर्त्ता बा० देवकी नन्दन खत्री

सम्वत् १६२४ पौषकृष्ण १३ चन्द्रवार
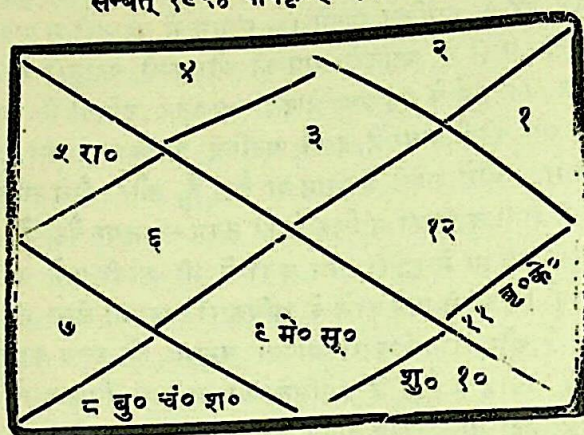
आपकी कुण्डली में—सबसे अधिक महत्वदायक ग्रह योग यह है, कि पंचमेश शुक्र बुद्धी स्थान का स्वामी होकर अष्टम स्थान में मित्र की राशी पर बैठा है और अष्टम स्थान पति शनी, की पूर्ण तीसरी दृष्टी शुक्र के ऊपर पड़ रही है, अतः अष्टम स्थान की पुरातत्व शक्ती का विशेष बल, बुद्धी स्थान के स्वामी शुक्र को प्राप्त हुआ, इसीलिये आपकी बुद्धी में पुरातत्व की गहरी चालों का गहन समावेश हो गया, जिसके फलस्वरूप आपने जासूसी, अय्यारी और तिलिस्म के अनेक गम्भीर व हृदग्राही उपन्यास लिखे और इस विषय के आप भारत में विशेषज्ञ सिद्ध हुये और आपने खूब प्रसिद्धता प्राप्त की-अब हम यह और स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस विषय पर सफलता मिलने का आपका मुख्य कारण यह है कि अष्टमेश शनी-भाग्य का भी स्वामी है, और अष्टम स्थान को पूर्ण देख रहा है तथा बुद्धी स्थान पति शुक्र को देख रहा है और स्वयं छटे स्थान पर बैठा है, अतः एक तो छटे

स्थान से पेचीदा बातों का संबंध होता ही है और दोयम छटे स्थान पर क्रूर ग्रह का बैठना भी शुभ होता है, तीसरे अष्टमेश की अष्टम स्थान पर पूर्ण द्रष्टी का होना भी पुरातत्व शक्ती को, व आयू की सफलता का सूचक है, चौथे भाग्य का स्वामी जिन स्थान पर भी बैठना है, उसी स्थान से, भाग्य की वृद्धी करता है पांचवे, बुद्धी स्थान पति का जिन २ ग्रहों से संबंध होता है, उन ग्रहों के कार्यों में, बुद्धी योग का समावेश अवश्य रहता है। अतः इन सभी कारणां से आप, जासूसी अय्यारी उपन्यासों के प्रसिद्ध लेखक बने और इसी लाइन से आपकी भाग्योन्नति हुई, और इस विषय में आपकी लेखन शैली तथा बुद्धी की सूझ बड़ी चमत्कारिक एवं अद्वितीय सिद्ध हुई, इसके अतरिक्त लग्नेश देहाधीश बुद्ध भी शनी के साथ छटे घर में मित्र होकर बैठा है अतः प्राण की शक्ती और विवेककी शक्ती, दोनोंका स्वामी भी जब साथ है तो इसीलिये आपकी इस लाइन में, धारणां शक्ती एवं आत्मिक शक्ती बहुत द्रढ़थी, तभी आपने अपनी गहरी लगन के साथ अनेको हृदयग्राही उपन्यास लिख डाले, और महान सफलता प्राप्त की, आपकी कुण्डली में. सप्तमेश राज्येश बृहस्पति, दैनिक रोजगार का तथा व्यापार मान प्रतिष्ठा आदि का स्वामी होकर भाग्य स्थान पर बैठा है, और अपनी नवम पूर्ण द्रष्टी से बुद्धी स्थान को देख रहा है अतः इस से भी बुद्धी के कार्य में और शक्ती प्रदान हुई, जिसके कारण आप अधिक कर्मठ बने और राज्येश गुरू का भाग्य स्थान पर बैठनें से तथा लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देखने से. भाग्यवानी और प्रसिद्धता प्राप्त हुई, और तीसरे स्थान पर राहू के बैठने से, बाहुबल की कलम शक्ती को चालाकी हिम्मत और सफलता प्राप्त हुई और धनेश मन का स्वामी चन्द्रमाभी शनी बुद्धके साथहैं इसलिये मनोयोग शक्तीके कठिन परिश्रम से धनकी प्राप्ती हुई, इसके अत्तरिक्त लग्नसे सातवे

स्थान पर पराक्रम भवन का स्वामी सूर्य, और लाभ ऐवं छटे परिश्रम झंझट स्थानका स्वामी मंगल, दौनोंमित्र होकर साथ बैठे हैं इसलिये वाहुवल की शक्ती तथा परिश्रमकी झंझटमयी शक्ती के, द्वारा दैनिक रोजगार की सफलता और आमदनी को प्राप्त किया तथा, लग्न से तीसरे छटे स्थानों में क्रूर गरम ग्रहों का बैठना, बड़ी २ कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कराने वाला और सफलता देने वाला होता है, अतः तीसरे स्थान पर राहू बैठे हैं और छटे स्थान पर शनी बैठे हैं तथा तीसरे स्थान पर शनी की पूर्ण द्रष्टी भी पड़ रही है अतः आपने अपनी कलम से एक बहुत लम्बे चौड़े महान तिलिस्म और अय्यारी का वर्णन अनेकों वर्षों के कठिन परिश्रम और कठिन अनुभवों से किया, किन्तु उत्साह हीनता अथवा असफलता का भय नहीं आने दिया, अन्यथा इतनी कपोल कल्पित गढ़त करने का आपको साहस प्राप्त नहीं हो सकता था, इसके अतरिक्त यह सिद्ध बात है, कि दुनियाँमें जितनी बातें और कार्य, चालाकी, अय्यारी झूँठ, कपट, और झगड़े, झंझटों के होते हैं, उन सबों का संवंध, राहू से तथा लग्न के छटे आठवें घरों से ही प्रायः होता है, अर्थात् छटे, आठवें स्थानों के स्वामियों से, और छटे आठवें स्थानों में, दूसरे ग्रहों के बैठने से, तथा राहू से, इन सभी योगों से चालाकी का मुख्य संवं है। और इन्हीं घरों में शुक्र, वुद्ध आदि का संबंध हो जाने से, यह और भी विशेप हो जाती है, कि चालाकी के विपय पर बड़ी भारी सुन्दर पौलिस और हो जाती है, जिससे कि समस्त जनता को, झूँठ वस्तु भी प्रिय लगने लगे, यह सभी ग्रह योगों के कारण वा० देवकीनन्दनजी की कुण्डली पर लागू होते हैं।

———

वीर सावरकर

ता० २८ मई सन १८८३
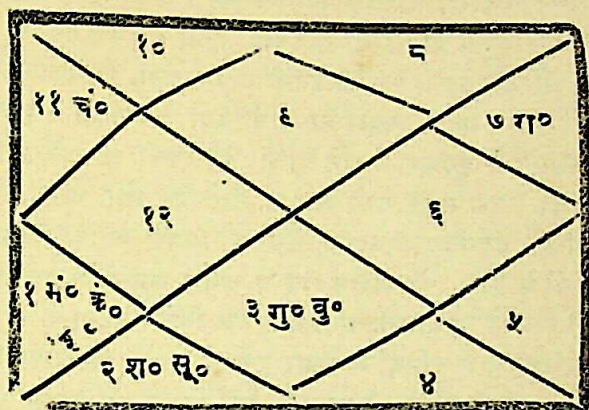
आपकी कुण्डली में, नाम से पहिले वीर शब्द की प्राप्ती ही आपके जीवन की प्रधानता है, अतः आपके इसी गुण का स्पष्टी करण करना मुख्य धैय है, अब आप देखिये, प्रथम तो, तीसरे स्थान परक्रम का स्वामी, शनीश्चर जो कि महान उग्र ग्रह है वह लग्न से, छटे शत्रु स्थान पर बैठा है, और फिर विशेषता यह है, कि अपनी पूर्ण दसवीं द्रष्टी से अपने तीसरे स्थान को देख रहा है, अर्थात दोनों स्थानों पर शनी ने काबू कर लिया है, और दूसरे, भाग्य के स्वामी सूर्य भी, छटे शत्रु स्थान पर बैठे हैं, जो कि नवग्रहों में सबसे अधिक, महान शक्ती शाली, पूजनीय हैं, इसलिये शत्रूपच्छ में, विजय प्राप्त करने का दैवयोगिक बल भी, नवमेश होने के नाते,सूर्य ने प्रदान किया, और पुरपार्थिक बल, शनी ने प्रदान किया, और लग्न से तीसरे स्थान पर लग्नाधीश,

गुरू की पूर्ण द्रष्टी होने से, आत्मिक वल व देहवल व हृदय वल. का सहारा, गुरू ने प्रदान किया और मन की शक्ती के अधिकारी अष्ठमेश चन्द्रमा भी, तीसरे स्थान पर बैठे हैं, जिसके कारण मन की शक्ती के द्वारा, वाहुवल की संचालन शक्ती में, बराबर उत्ते-जना और स्फूर्ती प्राप्त होती रही अतः इतने २ प्रवल ग्रह योगों से हृदय औरवाहुवल की शक्ती इतनी महान बनी, जिसके फलस्वरूप आपने इतना महान साहस का कार्य किया, कि चलते जहाज में, से समुन्द्र में कूदकर अपने प्राणों की वाजी लगादी, और कई दिनों तक उस नमक वाले जल में, तैरते रहे और अन्त में अपने वाहुवल, हृदयवल, मनोबल, धैर्यवल दैववल आदि की समस्त शक्तियों के द्वारा, एक महान शत्रू व अथाह समुन्द्र से वचकर, एक किसी किनारे परजालगे, अतः इसी एक विशेष घटना के कारण से ही आपका नाम दुनियाँ में अमर हुआ है, और इसके अतरिक्त, आपका बुद्धी स्थान भी प्रवल है, क्यूँ कि, एकतो मङ्गल पंचम स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, और दूसरे व्ययेश मङ्गल व्यभाव को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, अतः वारहवे स्थान से, दूसरे वाहरी स्थानों का संवंध भी देखा जाता है, इसलिये आपकी बुद्धी में, मङ्गल के द्वारा, वाहरी दूसरे स्थानों के संवंध में, बहुत मजबूत ज्ञान शक्ती, प्राप्त थी, इसलिये यह भी एक सहायक शक्ती थी, इसके अतरिक्त बुद्धी स्थान पर शष्ठेश लाभेश शुक्र भी, शत्रू और वौद्धिक विषय में महान चतुराई और विवेक शक्ती के दाता है और इन ग्रहों के साथ में, केतू का होना यह वतलाता है, कि आपकी बुद्धी के अन्दर, (मं० के० शु०) इन ग्रहों के द्वारा जो कुछ भी भाव पैदा हों, उन भावों को,कार्य रूप में परिणित करा करके ही माने, क्यों कि यह हम पहिले ही लिख चुके हैं, कि यदि केतू किसी भी बलवान ग्रहों के साथ हों, या केतू पर किसी भी वलवान, ग्रह की द्रष्टी पूर्ण पड़रही हो, तो उस स्थान में कुछ

चिन्ता युक्त रखकर विशेष शक्ती उत्पन्न कर देते हैं, इसलिये आपकी बुद्धी में, जो कुछ भी लौकिक, सामाजिक, शत्रु पक्ष का ज्ञान आता था, वह द्रढ़ भावनाओं में, परिणित हो जाने से ही, कार्य रूप में, सफल हो जाया करता था, अतः प्रथम आपके, जहाँ बाहुबल, देहबल, हृदयबल, दैवबल, मनोबल, आदि की शक्तियां का वर्णन किया था, वहाँ बुद्धीबल की सहायक शक्ती का परिचय करना भी बहुत ही आवश्यक था, अर्थात आप वीर होने के साथ साथ बुद्धवान भी थे, और ग्यारहवें स्थान का राहू इस बात का सूचक है, कि आवश्यक पदार्थों की पूर्ती करने मे, अनेक प्रकार की युक्तियों से सफलता प्राप्त कराते थे, इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, चारों केन्द्रों के अधिपति बुद्ध और शुक्र हैं, जोकि सातवें स्थान पर बैठकर लग्न का पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं, अतः लग्नेश गुरु का, राज्येश बुद्ध के साथ, केन्द्र में बैठकर, लग्न को देखना, दो बातों का सूचक है, एक तो राजनैतिक व लौकिक ज्ञान का विशेष प्रादुर्भाव होना, तथा उन्नति की ओर अग्रसर होने में, उत्साह शक्ति का सदैव साथ देना, और दूसरे कर्म की महानता के कारण ख्याती प्राप्त करना, अर्थात संसार की जानकारी में, आजाना, इसके अतरिक्त ग्यारहवें स्थान पर राहू का बैठना तथा लाभेश शुक्र की द्रष्टी से,व लग्नेश सुखेश गुरु की द्रष्टी से राहू, का द्रष्ट होना, लाभ, के संबंध में व प्रत्येक अवस्थाओं में, एवं आवश्यकताओं, की पूर्ती करने के संबंध, में चालाकी और आत्मबल दोनों सेही कार्य सिद्ध करने में.एक अद्वित्तीय सुन्दर योग है अतः आपकी कुण्डली में लग्न से तीसरे और छटे, दोनों स्थानों के बलवान होने से ही, आपने इतना भारी साहस का कार्य किया, अन्यथा साधारणतया दूसरा कोई व्यक्ति चाहें जितनी बड़ी सजा भोग लेता, परन्तु समुन्द्र में कूदने की हिम्मत कदापि भी नही कर सकता था। आपकी कुण्डली में यही है।

पं० श्रीराम शर्माआचार्य—अध्यक्ष श्रीगायत्री तपोभूमि मथुरा
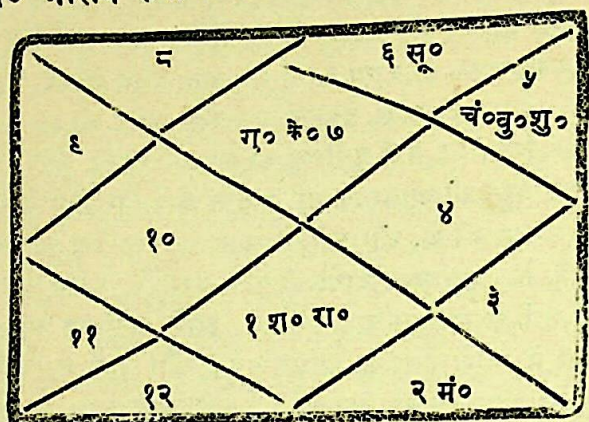
आपकी कुण्डली में, सबसे प्रमुख योग यहहै कि, धर्म का स्वामी बुद्ध, और कर्म का स्वामी चन्द्र, तथा देह का स्वामी शुक्र, तीनों ही एक साथ लाभ स्थानमें बैठ गये हैं, और तीनोंग्रहों की ही, बुद्धी स्थान प्रर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, तथा चन्द्रमा, मन की शक्ती भी लिये हुए हैं, और बुद्ध विवेक की शक्ती लिये हुये हैं, और शुक्र आत्म शक्ती लिये हुए हैं, इसलिए आपका. तन, मन, विवेक, बुद्धी, सभी का सम्बन्ध, धर्म कर्म से पक्का बंधा हुआ है, इस हेतु आपका कार्य महान सराहनीय सावित हुआ है, क्यूंकि आपके यहां गायत्री तपोभूमि पर रोजाना यज्ञ होते रहते हैं, और उस यज्ञ में हर स्थान के हरएक स्त्री-पुरुषों को, वगैर किसी लोभ लालच के, यज्ञ में शामिल होने का सदैव अवसर प्राप्त रहता है, और दूसरे आपका धार्मिक मासिक पत्र भी, सदैव दूर २ तक हजारों लोगों को धर्मका उपदेश करता रहता है, इसके अतिरिक्त आपका धार्मिक प्रवचन भी रोजाना गायत्री मन्दिर पर होता रहता है, इसलिये इन सभी कारणों से आपके सम्पर्क

में दूर दूर तक की जनता आकर, अपने धर्म, कर्म का लाभ उठा पाती हैं, क्योंकि आपका धर्मेश, वुद्ध व्ययेश हैं इस लिए धर्म का सम्बन्ध बाहरी लोगों से अवश्य होना चाहिए, दूसरे लाभ स्थान का स्वामी, सूर्य, बारहवें स्थान में है, और बारहवे स्थान का स्वामी बुद्ध, लाभ स्थान में है इसलिए, लाभ प्राप्ती का पूर्ण स्थान संबंध, सूर्य और बुद्ध के कारणों से, प्रायः बाहरी आदमियों से ही है और आपकी बहुत सी छोटी छोटी धार्मिक एवम् कर्म कांड की पुस्तकें तथा मासिक पत्रिका, यह सभी चीजें प्रायः दूर २ तक समस्त भारत में जाया करती हैं, यह सब सूर्य और बुद्ध के प्रभाव से ही है, इसके अतरिक्त आपका, स्त्री स्थान का स्वामी मङ्गल तो मृत्यु अष्टम स्थान में बैठा है, और नीच का शनी तथा राहू, स्त्री स्थान में बैठा है इसलिए आपकी पहिली स्त्री की मृत्यु हो गई और दूसरी स्त्री मौजूद हैं, इसके अलावा पराक्रम स्थान पति व शत्रू स्थान पति, तीसरे व छटे स्थान के स्वामी गुरु, केतू के साथ होकर देह के स्थान में बैठे हैं, अतः एक तरफ तो आपको भरपूर महनत व दौड़ धूप करनी पडती है, और देहमें भी दुर्बलता प्राप्त हैं और दूसरी ओर देवगुरू बृहस्पति, यदि कहीं भी केतू के साथ बैठता है, तो उस स्थान का प्रभाव बहुत ऊँचा कर देता है; इसलिए आपके देह की मान्यता एक गुरू रूप में, बड़ी दूर २ तक लोगों ने स्वीकार कर रखी हैं, और हजारों ही ग्राहक आपकी मासिक पत्रिका के बने हुए हैं, इसके अलावा, लाभ स्थान में, तीन-तीन ग्रह बलवान (चं० बु० शु०) बैठे है, तो लाभ खूब होता है, किंतु धन स्थान का स्वामी मङ्गल, अष्टम मृत्यु स्थान में बैठा है इसलिए आपके पास धन संग्रह नहीं रह पाता है. किन्तु खर्च हजारों रूपयों का कर लेते हैं, अब आपके, सुत्र स्थान के व बुद्धी वाणी संतान स्थान के स्वामी शनी, नीच के होकर दैनिक रोजगार के सप्तम

स्थान में राहू के साथ बैठे हैं इसलिये, आपको अपने समस्त कार्य संचालन की वजह से सुख शांती भी कम मिल पाती है. संतान भी न्यून ही है, इसके अलावा आपकी वांणी स्थान के स्वामी शनी है, इसलिये शनीकी नीचता के कारण आपको अक्सर अपने प्रवचन करते समय पर, वार्तां के समय कुछ कभी २, हकला कर बोलना पड़ता है, और पंचमेश शनी की लग्न पर उच्च द्रष्टि पड़ रही है इसलिये, बुद्धी तथा देह का कद लम्बा है, शास्त्रोक्त पद्धती के अनुसार आप का ब्राह्मण जैसा कार्य सदैव संचालित रहता है, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लैना, विद्या पढ़ना विद्या पढ़ाना, आदि २ कार्य, आपके दैनिक रूप में सर्वदा चलते रहने के कारण, आपका आजकल के युग के द्रष्टी कोण से वहुत ही प्रशंसनीय है, आपके द्वारा वह हजारों सैकड़ों आदमी गायत्री का जप करने लग गये, जो गायत्री मन्त्र तक को नहीं जानते थे, इसलिये आप बड़े धन्यवाद के पात्र हैं। इसके अतरिक्त आपने सन् १६५६ के अन्दर एक महा विशाल गायत्री यज्ञ, किया था, जिसके अन्दर समस्त भारत के अन्दर से, बड़ी दूर २ तक के नर नारी आपके उस गायत्री महा यज्ञ में तपोभूमि पर सम्मिलित हुये थे, और श्रीराम आचार्यजी की ओर से बड़ा भारी प्रवन्ध बाहर के आगान्तुकों के लिये, खाने-पीने और ठहरने का हुआ, तथा करोड़ों मन्त्रों की आहूती व जाप का विधान पूरा हुआ था यह आपका यज्ञ बहुत समय में समाप्त हुआ था, और इस यज्ञ में वेहद रुपया खर्च हुआ था, और सुना था कि लाखों रुपया ही बाहर के गायत्री भक्त लोगों के द्वारा, यज्ञ के चढ़ावे में भेंट स्वरूप आया था। ऐसा महा यज्ञ हज्जारों वर्ष में भी कहीं नहीं हुआ था, वह सब आपके उपरोक्त ग्रहों के परिणाम स्वरूप ही है,

———

श्री रामकिशन डालमियाँ

ता० ७ अप्रेल सन् १८६३
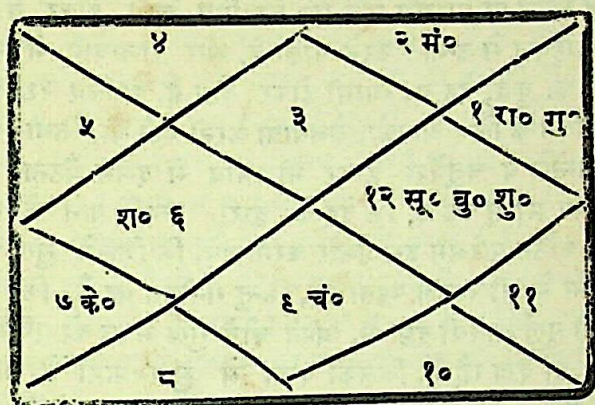
आपकी जन्म कुण्डली में–लाभ के स्थान में राहू बैठा है; और बृहस्पति राज्येश-सप्तमेश होकर, राहू के साथ बैठा है, और लग्न से सातवाँ व दसवां, दौनो घर, रोजगार व्यापार का भी होता है, इसलिए इन दोनों घरों के स्वामी बृहस्पति का, लाभ स्थान में राहू के साथ बैठना–लाभ स्थान में बड़ी तरक्की करने का सूचक है, और सातवे स्थान पर मित्र होकर,धनेश चन्द्रमा का बैठना, और उस पर, सातवें दसवै घर के स्वामी बृहस्पति की पूर्ण नवम् द्रष्टी मित्रभाव से होना–यह दैनिक रोजगार की महान तरक्की दैने वाला योग है, और इसके अतरिक्त विशेपता यह है कि चन्द्रमा मन का स्वामी है और वृहस्पति हृदय का स्वामी है, अतः मन और हृदय का संबंध होने से, यह योग बन गया,कि रोजगार की बृद्धी करने के लिये, डालमियां साहब का मन और हृदय, बराबर सदैव संलग्नता

पूर्वक कार्य करता रहना है, इसी कारण आपकी व्यापारिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी गणना है, और उत्तरोत्तर उन्नति व सफलता पाने के आप अधिकारी बन गये हैं। इसके अतिरिक्त दसम स्थान पर, पराक्रम पति सूर्य का मित्र क्षेत्री होकर बैठना भी वाहुबल से उन्नति करने वाला है, और राजस्थान में नीच राशी का बुद्ध, देह का स्वामी होकर बैठा है, इसलिए १९५६ में चार दिन के लिए आपको, जेलयात्रा करनी पड़ी थी, तथा बुद्ध का लग्नेश व चतुर्थेश होकर नीचभाव में दसम बैठना, इस बात का भी सूचक है, कि देह के द्वारा, उन्नति पाने के लिए बहुत कठिन परिश्रम इस प्रकार करना पड़े, कि जिससे सुख और आराम में भी खलल पड़ता रहे, किन्तु गनीमत यह है कि बुद्ध अपनी पूर्ण सातवीं द्रष्टी से, अपने चौथे सुख भवन को एवं भूमि स्थान को देख रहे हैं, जिसकी वजह से सुख प्राप्ती के साधन और मकान जायदाद वगैरह की अच्छी शक्ती प्राप्त होती रहे, इसके अतरिक्त दसवें स्थान पर उच्च का शुक्र, पंचमेश, व्ययेश होकर बैठा है; जिसके कारण बुद्धी योग द्वारा अधिक खर्च करके अर्थात् सैकड़ों हजारों आदमियों का व मशीनों का खर्चा रख कर, व्यापार उन्नति का साधन प्राप्त होता रहता है, इसके अलावा दूसरा यह योग है कि बारहवें स्थान का स्वामी शुक्र दसम उच्च का बैठा है, और लाभेश शष्ठेश मंगल भी, बारहवें स्थान में बैठा है, यह भी खर्चे की अधिक शक्ती के कारण लाभ उन्नति करते हैं, दूसरी बात यह है कि बारहवें स्थान से बाहरी स्थानों का संबंध देखा जाता है, अतः आपके लाभेश मंगल का बारहवें स्थान में बैठना, और बारहवें स्थान के स्वामी शुक्र का दशम स्थान में उच्च होकर बैठना, इस बात का भी सूचक है, कि आपका व्यापार एवम् लाभ का संबंध, दूसरे स्थानों में बहुत उत्तम रहेगा, इसके अतरिक्त लाभेश मङ्गल

भी अपनी आठवीं पूर्ण द्रष्टी से धनेश चन्द्रमा को, मित्र द्रष्टी से देख रहे हैं, अतः लाभेश, धनेश का संबंध भीधन, की वृद्धी का कारण होता है,इसके अलावा,अष्टमेश भाग्येश शनी,लग्न से चौथे, मित्र के स्थान पर केन्द्र में बैठे हैं, इसलिये आयू तथा जीवन की दिनचर्या तथा भाग्य, इन तीनों की तरफ से सुख प्राप्त होना चाहिये और लग्न से छटे स्थान पर शनी की तीसरी पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, और छटे स्थान के स्वामी मङ्गल की भी पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये शत्रुओं पर प्रभाव रखने का यह योग अच्छा है, अर्थात छटे स्थान पर क्रूर ग्रहों की द्रष्टी होने से क्रूर ग्रहों के बैठने से, मनुष्य प्रभाव शाली बनता है, इसके अतरिक्त, पंचम स्थान पर केतू के बैठने से तथा पंचमेश शुक्र के, राज्य स्थान में, उच्च के बैठने से, दो बातों का योग बनता है. एकतो बुद्धी में, कड़ाई रहती है, दूसरे सन्तान पक्ष में, कुछ दिक्कतें व जिद्दी संतान प्राप्त होती है, मगर क्यूँ कि पंचम स्थान पर बृहस्पति की सातवीं द्रष्टी पड़रही है, इसलिए इन दोनों दोषों में, कमी पैदा करदी है. इसके अलावा सप्तम में, चन्द्रमा होने से व सप्तमेश बृहस्पति लाभ कास्थान में बैठकर, सप्तम स्थान पर पूर्ण द्रष्टी के देखने से, सुन्दर स्त्री प्राप्त होने का पक्का योग है। किन्तु साथ में, छटे स्थानपति मङ्गल की द्रष्टी सप्तम में, होने से, स्त्री स्थान में, कुछ बाधा व क्लेश पैदा करने का योग है और लग्न से तीसरे, छटे, ग्यारहवें स्थान, पर क्रूर ग्रहों का बैठना या द्रष्टी डालना सदैव अच्छा होता है, अतः आपकी कुण्डली में, तीसरे स्थान पर मङ्गल की द्रष्टी पूर्ण चौथी है, और छटे स्थान पर शनी मङ्गल की पूर्ण द्रष्टी है, और ग्यारहवें स्थान पर राहू बैठा है। इसलिये यह योग भी प्रभाव और लाभ के लिये उत्तम है, और सबसे उत्तम लाभ का योग गुरु व राहू का संग एवं धनेश चन्द्र पर गुरु की पूर्ण द्रष्टी होना ही है,किन्तु दसवें स्थान पर नीचराशी काबुद्ध राज्य काभय है

एक घर जमाई की कुण्डली

सं० १९६० श्रावण वदी ८ ला० निरोत्तम प्रसाद मथुरा।
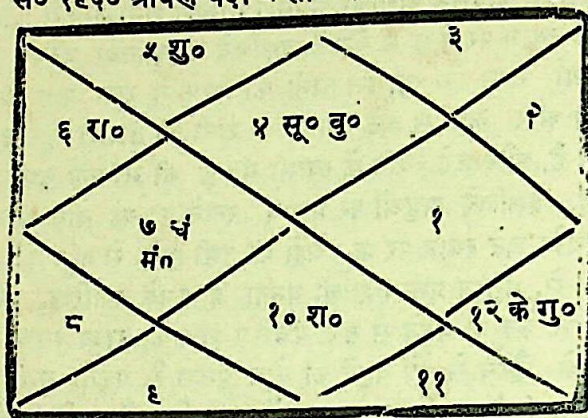
आपकी जन्म कुण्डली में, घर जमाई रहने का प्रधान योग यह है कि, आपके पिता स्थान का स्वामी जो मङ्गल है, वह अपनी पूर्ण चौथी उच्च द्रष्टी से, आपके स्त्री स्थान को (ससुराल स्थान को) तथा स्त्री स्थान पति, शनी को, पूर्ण द्रष्टी से देख रहा हैं, और स्त्री स्थान पति शनी भी, अपनी पूर्ण दसवो उच्च द्रष्टी से, मङ्गल को देख रहा है, इसलिये ससुराल पक्ष के स्वामी शनी, (ससुर) की हैसियत से, और राज्य स्थान के स्वामी, मङ्गल (पिता) की हैसियत से, केन्द्र में बैठकर, दोनों ने एक दूसरे से, उच्च द्रष्टी संबंध पूर्ण बनालिया है और-देहाधीश चन्द्रमा भी इनके साथ हैं यही एक प्रधान कारण है, कि आपके ससुर ने, एक पिता रूप होकर, आपको घर जमाई रखा हुआ है, क्योंकि उनके भी कोइ पुत्र नहीं था, इसलिये दोनों सुसर जमाईयों का आपस में बहुत ही घनिष्ट संबंध है, और दोनों ही एक दूसरे की, अन्दरूनी खूब मान्यता करते हैं, कैवल स्वभाव का थोड़ा सा मत

भेद इसलिये रहता है, कि शनी और मङ्गल दोनों ग्रहों का आपस में मित्र स्वभाव नहीं है, इसके अतरिक्त, भाग्य स्थान पर, भाग्य के ही स्वामी वृहस्पति बैठे हैं, और केतू भी साथ में बैठे हैं, इस लिये, गुरू के साथ केतू के होने से, एक तरफ तो भाग्य इतना मजबूत है, कि आपको कमाई करके, धनोपार्जन करने की जरूरत ही नहीं रही, बल्कि ससुर की ब्याज भाड़े की आमदनी से ही सब खर्च चलता है और आपको पैसा कमाने की कतई फिकर नहीं है, किन्तु दूसरी ओर, भाग्य का स्वामी छटे स्थान का भी स्वामी है, और केतू साथ में हैं, इसलिये इन दोनों कारणों से, आप अपने भाग्य स्थान में कुछ खरखसा भी महसूस करते हैं, कि यदि धन की वजह से हमको अपना स्थान न छोड़ना पड़ता तो और भी गौरव की बात होती, किन्तु यह इनका एक थोड़ा सा आन्तरिक दुख: है, जिसे गैर आदमी नहीं समझ सकते हैं-इसके अलावा आपके देहाधीश चन्द्रमा, ने राज्येश मङ्गल का साथ करके सुख स्थान में, निवास कररक्खा है, इसलिये आपका मन और तन, दोनों ही सुख युक्त और मान युक्त रहते हैं, और लग्न में, सूर्य बुद्ध के बैठने से आपका शरीर भी तंदुरुस्त और भरा हुआ है, तथा प्रभाव युक्त है, और आप हमेशां अपने प्रभाव और मान से ही रहकर जीवन व्यतीत करते चले आरहे हैं, इसके अतरिक्त आपका, स्त्री स्थान का स्वामी शनी जो आठवें घर का भी स्वामी है इसलिये आपकी पहिली स्त्री तो थोड़े ही दिन में समाप्त होगई, थी किन्तु क्यूँ कि शनी सप्तम स्थान में, स्वक्षेत्री बैठे हैं, इसलिये तुरन्त ही दूसरी शादी होगई। जिसकी वजह से ही आप अपनी ससुराल में अबतक बेफिकरी से छान रहे हैं, किन्तु यहाँ भी शनी का अष्टमेश होना, दो बातों का सूचक है, कि एक तरफ तो स्त्री सुन्दर नहीं है, दूसरी तरफ, अष्टम से, जीवन निर्वाह की शक्ती देखी जाती है, इसलिये अष्टमपति, सप्तम में, स्वक्षेत्री है, इस

कारण जीवन निर्वाह की शक्ती, स्त्री स्थान से, यानी ससुराल स्थान से वनी है, किन्तु इसका प्रधान कारण तो वही है, जो हम प्रथम में, ही लिख आये हैं। अब आपकी कुण्डली में, तीसरे स्थान पर जो राहू वैठे हैं, इसकी वजह से आपके सगे भाई से महान झगड़ा होकर सदैव के लिए बोलचाल वंद होगईऔर इसी निमित्तकारण की वजह से आप अपने घरको छोड़कर उसीसमय अपनी सुसराल में चले आये और फिर वापस जाही नही सकें, आपके स्त्री स्थान पति शनी को विशेष शक्ती, इस वजह से है, कि एक तो केन्द्र में स्वक्षेत्री वैठे है, दूसरे, राज्येश व लग्नेश चन्द्रमङ्गल; को देख रहे हैं, तथा तीसरे; भाग्येश गुरु और केतू को देख रहे हैं; चौथे, धनेश सूर्य, और पराक्रमेश, व्ययेश वुद्ध को भी देख रहे हैं, इसीलिए आपके सुसराल पक्ष की शक्ती का,महान सहयोग आपको प्राप्त हुआ, वल्कि दूसरा और आपका सगा साढू है, उसे एक पैसे भर भी सहयोग सुसराल पक्ष से प्राप्त नहीं हो सका था, इसके अलावा आपका लाभेश, सुखेश शुक्र, जो धन स्थान में, बैठा है, इसकी वजह से आपकी मान्यता हमेशां ही धनी मानी व्यक्तियों मेंरही है, और अपने ससुर के धन का भी इन्तजाम आप के ही हातों में, रहता रहा है, और अपनेपिता के यहाँ भी खूब धन समपत्ती का आनन्द देखा था आपके सभी ग्रह प्रायः कुछ अच्छे ढंग के ही हैं, इसलिये आपकी गिनती धनवान आदमियों में ही रही है। आपकी कुण्डली में, राज्येश मंगल, राज्य स्थान को पूर्ण देख रहा है, और देहाधीश चन्द्रमा के साथ बैठा है तथा लग्न में सूर्य वुद्ध मित्र राशी पर बैठे हैं, और लग्न से तीसरे स्थान पर राहू बैठा है, और भाग्येश गुरु भाग्य स्थान पर ही बैठा है, तथा सप्तम स्थान पति शनी, सप्तम स्थान में ही बैठा है और धन भवन में शुक्र बैठा है,तथा शनी और मङ्गल काआपस में,परस्पर द्रष्टी संवंध हो रहा है,यह सभी कारण भाग्यवानी के हैं

ड्वाइट आइजन होवर
राष्ट्रपति अमेरिका ([illegible])
ता० १४ अक्टूबर सन १८९०
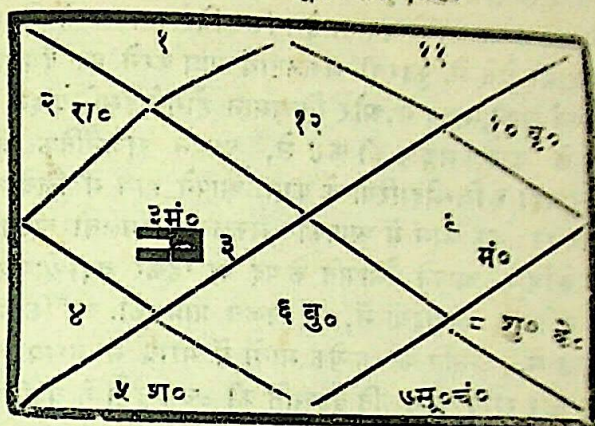
आपकी जन्म कुण्डली में, देहाधीश लग्नपति गुरु, राज्य स्थान कास्वामी होकर, लाभ स्थान में, नीच राशी का होकर बैठा हैं, इसलिये यह अपने प्रथम जीवन में एक साधारण सिपाई थे, और बहुत समय तक साधारण स्थिती में, ही काम करते थे, किन्तु राज्य स्थानपति, एवं लग्न पति बृहस्पति की पंचम स्थान पर यानी बुद्धी स्थान पर उच्च द्रष्टी पड़रही हैं, इसलिये, इनके दिमाग में, राजनैतिक विषय की उन्नति करने का ज्ञान बड़े प्रखर रूप में, सदैव जागृत रहता था, इस हेतु आपने राजनैतिक इन्त-जामी मामलों में, और राजनैतिक लड़ाइयों में, आपने अपनी बुद्धी की कुशलता का बड़ा भारी आदर्श परिचय दिया॥ इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, सबसे जबरदस्त सफलता की प्राप्ती का प्रमुख ग्रह, मङ्गल है, जोकि भाग्य स्थान का स्वामी होकर, एवं धनस्थान का स्वामी होकर राज्य स्थान में, मित्र क्षेत्री बैठा

है, प्रथम तो मङ्गल का राज्य स्थान में बैठना ही बड़ा प्रभावशाली होता है, जिसमें भी भाग्य स्थान का स्वामी होकर राज्य स्थान में,मङ्गल का बैठना,बडी भारी सफलता का सूचक है,क्योंकि मङ्गल स्वाभाव से तो राज्यधिकारी स्वयं ही है,जहाँ बैठता है,वहाँ अपना अधिकार प्रबल रूप से बनाता है। फिर विशेषता यह है कि भाग्य का स्वामी होने से, कुदरती सफलतायें प्राप्त करने का दैवयोगिक गुण एवं शक्ती,मङ्गल में,और विद्यमान होगई,इसलिये इन दोनों गुणों के कारण मङ्गल की कृपा से, आपने राजनैतिक क्षेत्र में ज्यों २ बड़ी २ जिम्मेदारियों के काम, आपने हाथ में लिये त्यों २ बराबर हर एक काम में आपको सफलतायें मिलती चली गई, आगे केईबार आपने सैनापति के पद पर रहकर बड़ी योग्यता के साथ कठिन २ लड़ाइयों में, भी विजय प्राप्त की, क्यूँकि मङ्गल की कृपा से, उन्नति के प्रत्येक मार्गों में भाग्य ने बराबर साथ दिया, और राज्य स्थान पति वृहस्पति की उच्च द्रष्टी ने बुद्धीस्थान, पर विशेष मार्ग प्रदर्शन, समय २ पर कराया, इसके अतरिक्त आप की कुण्डली में, लग्न से तीसरे पराक्रम स्थान पर मित्रक्षेत्री राहू बैठा है, और पराक्रम स्थान के स्वामी शुक्र की राहू पर पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, इसलिये यह दोनों राहू और शुक्र का योग भी आपके पराक्रम को सफल कराने में एवं पराक्रम की उन्नति ख्याती कराने में, बड़ा सुन्दर बलवान योग है, और शनी की भी दसवीं पूर्ण द्रष्टी, राहू के ऊपर पड़रही है, क्यूँकि अव्वल तो राहू या केतू का लग्न से तीसरे या छटे स्थान पर बैठना ही सफलता का सूचक है, दूसरे यदि राहू या केतू के संग कोई बलवान ग्रह बैठा हो या बलवान ग्रह राहू या केतू को देख रहा हो तो फिर यह राहू केतू बड़ी भारी सामर्थ्य शक्ती प्रदान करते हैं, इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, लाभेश, व्ययेश, शनी लग्न से छटे, शत्रू स्थान पर बैठा है अतः हम पहिलेही लिख आये हैं, कि लग्न से तीसरे छटे,या

ग्यारहवें स्थान पर क्रूर ग्रहों का बैठना बड़ी भारी शक्ती का दाता होता है, इसलिये आपका छटे स्थान पर शनी का बैठना, शत्रू नाशक, विजय प्रदायक है, किन्तु हम पहिले लिख चुके हैं कि, लाभेश या व्ययेश यदि छटे बैठा होगा तो, नौकरी या कुछ परतंत्रता के योग से, कार्य चलाना होता है, अतः आपके देहाधीश गुरु का, नीच होकर लाभ स्थान में बैठना, और लाभ स्थान के स्वामी, शनी का व्ययेश होकर छटे स्थान पर बैठना, तथा बुद्ध का नीच द्रष्टी से देह स्थान को देखना-और छटे स्थान पती सूर्य का, नीच राशी गत होकर आठवें स्थान पर बैठना, यह चारों ग्रहों का योग,नौकरी या परतंत्रता का खास सूचक है। किन्तु सोचने की बात यहहै,कि यदि नौकरी करने के ग्रहयोग पड़ जाते हैं, और २-४ वलवान ग्रह, राजयोगकारक विजयप्रदायक, शत्रुनाशक भी, यदि कुण्डली में बैठे होते हैं, तो वह मनुष्य नौकरी में भी, वड़ी २ तरक्की मिलते २, एक दिन वड़ी ऊँची शिखर पर पहुँच जाता है,अतः वही ग्रहयोग आपकी भी कुण्डली में है कि एक ओर; गुरू, शनी, सूर्य नौकरी का कारण पैदा करते हैं, तो दूसरी ओर मङ्गल, राहू, शुक्र, शनी, वुद्ध, राजयोग पैदा करते हैं और आपका वुद्ध भी चतुर्थेश, सप्तमेश होकर उच्चका, सप्तम स्थान में बैठा है, यह अकेला वुद्ध, वड़े भारी भोग-विलास और सुखप्राप्ति के योगों का सूचक है। और आपके शनी की लग्न से आठवें स्थान पर उच्च द्दष्टिपूर्ण तीसरी पड़ती है । यह आपके जीवन में, रौनक और प्रभाव पैदा करने वाली है, और भाग्येश मङ्गल की देह के स्थान पर चौथी पूर्ण द्दष्टी पड़ रही है, यह द्दष्टी भी देह में भाग्यवानी एवं धनवान होने का योग पैदा करती है, अतः आपकी कुण्डली में सवसे प्रवल तो मुख्यतया मङ्गल ही राजयोगकारक है । दूसरे राहू, शनी, शुक्र, वुद्ध वलवान है, और गुरू की पंचम पर, उच्च द्दष्टी, व सूर्य की धन पर

उच्च दृष्टि, व शनी की अष्टम पर उच्च दृष्टि पड़ रही है। यह सभी कारणों से आपको राजयोग बना और अन्त में राष्ट्रपति होने का सुअवसर प्राप्त हुआ, अतः जीवन में सभी ग्रह अपना-अपना कार्य अपनी २ गति के अनुसार निश्चयात्मक रूप से करते हैं। इन फलादेशों की चमत्कारिक चाल हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण के पेज नं० १६६ में राजयोग समय का ज्ञान पढ़िये।

माउथसेतुन्ग, चीन का राष्ट्रपति,

जन्म—ता० २६ दिसम्बर, सन् १८६३
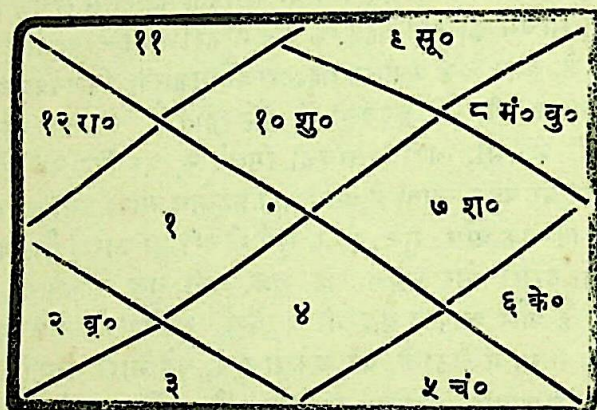
आपकी जन्म-कुण्डली के अन्दर सबसे प्रबल राजयोग-कारक ग्रहों में से, प्रथम गणना, शुक्र और शनी की है, क्योंकि राज्यस्थान के स्वामी शुक्र, बुद्धी स्थान का भी स्वामी होकर, देह के स्थान पर बैठा है, और देह के स्थान का व धन के स्थान का स्वामी शनी, राज्यस्थान पर बैठा है, अतः इन दोनों ग्रहों का स्थान सम्बन्ध हो गया, और यह दोनों ग्रह आपसमें परम मित्र हैं, इसलिये, राजयोगकारक और राष्ट्रपति के पद तक पहुंचाने वाले

मुख्यतया यही दो ग्रह हैं। इसके अतिरिक्त बात यह है कि आप का प्रथम जीवन सिपाहियाना था और बाद में आपने धीरे २ कम्यूनिस्ट पार्टियों में बड़ी भारी दिलचस्पी से काम किया, तथा उसके बाद आपने कई इलैक्शन भी लड़े, जिसमें आपकी विजय हुई, और आप चेयरमैन चुने गये, और आपने हर एक स्थान पर बड़ी भारी मुस्तैदी के साथ काम किया, और उत्तरोत्तर वृद्धी की ओर आप बढ़ते चले गये। प्रथम सवाल यह है कि आपका, प्रथम अवस्था में,इतना गरीबी का सिपाहीयाना-जीवन किस ग्रह के योग से बना था,अतः आपकी कुण्डली में, दोनों तेजस्वी ग्रह, सू० च० लग्न से आठवें, बारहवें बैठे हैं,इसलिए अष्टमेश सूर्यके बारहवें स्थान पर बैठने से, तो जीवन की दिनचर्या कमजोर बन गई, और सप्तमेश चन्द्र के आठवें स्थान पर बैठने से, रोजगार की लाइन कमजोर बनी, अतः इन्हीं दोनों ग्रहों की कमजोरियों के कारण, आपको प्रथम अवस्था में एक साधारण सिपाही के पद पर कार्य करना पड़ा, किन्तु ज्यों-ज्यों यह राजनैतिक क्षेत्र की ओर किसी भी मार्ग द्वारा आगे बढ़े, त्यों-त्यों आपको सफलतायें मिलती चली गईं। क्योंकि शुक्र, शनी के योग संबंध से, देहिक. बौद्धिक कर्म द्वारा, उन्नति के मार्ग में, बराबर आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता रहा, तथा आत्म बल और उत्साह सदैव राज-नैतिक क्षेत्र में, भीषण रूप से जागृत होता रहा, क्योंकि लग्नेश, और लग्न, दोनों हीं आत्मबल की शक्ती के सूचक होते हैं। इसलिये आपका लग्नेश शनीबलवान उच्चका होकर राज्यस्थानमें बैठाहै, और राज्येश पंचमेश,शुक्र,लग्नमें मित्रक्षेत्रीबैठाहै,अतः यह दोनों ग्रह बड़े बलवान हैं और उन्नति, हकूमत, ख्याति, मान-प्रतिष्ठा, गौरव, आत्मबल, सुन्दरता आदि के दाता हैं। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में, मंगल का, चतुर्थेश, लाभेश होकर, लाभस्थान में ही, स्वक्षेत्री होकर बैठना, बड़े भारी महान लाभ

और सुख का दाता है, और इसकी आठवीं दृष्टी, शत्रुस्थान पर पूर्ण पड़ रही है और शत्रुस्थान का स्वामी बुद्ध, भाग्येश होकर, मङ्गल के साथ लाभ स्थान में बैठा है, अतः यह मङ्गल और बुद्ध दोनों ग्रहों का योग, शत्रु स्थान पर विजय, और शत्रुपक्ष से लाभ शक्ती प्रदान करने का योग पैदा करते हैं, तथा प्रभाव की वृद्धी करते हैं, इसके अतिरिक्त, राहू का लग्न से तीसरे स्थान पर मीन राशि का बैठना, पराक्रम शक्ती को व हिम्मत को बहुत ऊँचा उठाता है, और बहादुर विजयी बनाता है, किन्तु यह ऐसा राहू बहन-भाई के लिए हानिकारक होता है । इसलिये यह सम्भव है कि आपके या तो बहन-भाई होंगे नहीं या उनसे आपको अलग रहना पड़ा होगा । इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में कन्या राशि का केतू नवम स्थान भाग्य पर बैठा है, इसका फल यह है कि भाग्य की प्रथम अवस्था कमजोर रहनी चाहिये, और भाग्य की अन्तिम अवस्था जोरदार रहनी चाहिये, क्योंकि हम पहिले ही लिख चुके हैं कि राहू या केतू यदि अकेले किसी स्थान पर बैठते हैं तो, पहिले उस स्थान पर परेशानियाँ पैदा करते हैं; और अन्त में उन्नति का ढंग बनाते हैं, यही ढंग, भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद की कुण्डली में है कि, कन्या राशि का राहू लग्न से दसम राज्यस्थान पर बैठा है, इसलिये उनकी भी उन्नति बहुत समय के बाद अन्त में बुढ़ापे की अवस्था में हुई, अतः इसी प्रकार सभी घरों में अपना २ फल यह करते हैं, किन्तु लग्न से, तीसरे, छटे, ग्यारहवें स्थान पर राहू केतू का फल ज्यादह जोरदार होता है, इसके अतिरिक्त, आपकी कुण्डली में, शुक्र और शनी की पूर्ण दृष्टि, लग्न से सप्तम स्थान में पड़ रही है, क्योंकि सातवीं दृष्टी से शुक्र और दसवीं द्रष्टी से शनी पूर्ण देख रहा है, अतः इन दोनों की सप्तम स्थान पर पूर्ण द्रष्टी होने से, ऊँचे दर्जे का रोजगार तथा भोग विलासता प्राप्त करने की शक्ति देते हैं और

प्रथम अवस्था में छोटी नौकरी करने का कारण यह भी है कि, बृहस्पति, पंचम स्थान में बैठकर, लग्न को, नवम, नीच दृष्टी से देख रहा है, और सूर्य, चन्द्र, तो लग्न से आठवें, बारहवें स्थान पर खोटे बैठे ही हैं, अतः इन तीनों कारणों से प्रथम जीवन साधारण रहा और शु०,श०,मं०,बुद्ध,राहू इन पाँचों बलवान ग्रहों के प्रताप से, अन्त में बहुत ऊँची उन्नति प्राप्त हुई और आप चीन के राष्ट्रपति बने, किन्तु जिस समय उच्च के शनी तुलाराशी पर गोचर में पुनः आये, उस समय आपकी करीबन ५० वर्ष की आयु थी। अतः तभी से उन्नति के मार्ग में अच्छी सफलतायें आपको मिलना शिरू हुईं, और चेयरमैन आदि पदवियाँ मिलीं, किन्तु इससे आगे चलकर पुनः जिससमय शनी मकर राशीपर गोचरमें आये—अर्थात लग्न का स्वामी शनी, जब लग्न में ही आया और राज्यस्थान पर जब पूर्ण उच्च दृष्टी शिरू हुई तब उसी समय में आप राष्ट्रपति बने, उस समय आपकी आयू ५० साल से ऊपर थी—इस गोचर प्रणाली का खुलासा हाल हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण १३६ पेज पर देखिये।

इसके अतिरिक्त समझने की बात यह है कि, किसी भी व्यक्ति की कुण्डली में, कुछ ग्रह बलवान बैठे हों, और कुछ ग्रह कमजोर बैठे हों, तो उस व्यक्ति को अपने समस्त जीवन के अन्दर, अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के ग्रहों का, दोनों ही प्रकारों में फल भोगना पड़ेगा, किन्तु यह बात अवश्य है कि, जिन व्यक्तियों को अपने जीवन में, पहिले अच्छे ग्रहों का फल मिलता रहता है, उनको बाद में बुरे ग्रहों का फल भोगना पड़ता है, और जिनको पहिले बुरे ग्रहों का फल मिलता है, उनको बाद में अच्छे ग्रहों का फल प्राप्त होता है, अतः यही बात आपकी कुण्डली पर भी लागू होती है।

———

रूस के राष्ट्रपति, स्टालिन,

जन्म ता० ३१ दिसम्बर सन् १८७८
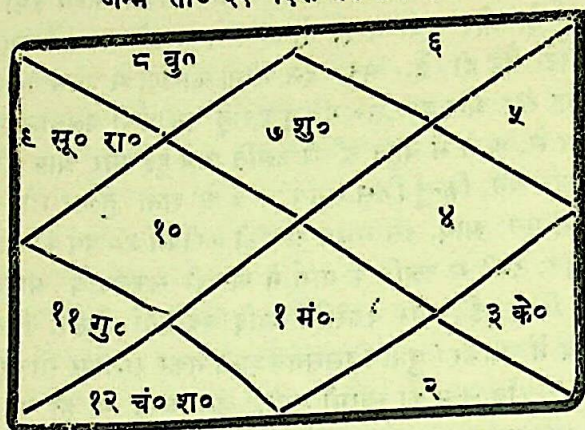
आपकी कुण्डली में राज्य स्थान का स्वामी चन्द्रमा लग्न से छटे शत्रू स्थान में, चतुर्थेश, पंचमेश, शनी के साथ बैठा है, और शनी तथा बृहस्पति का आपस में स्थान संबंध है, अर्थात बुद्धी स्थान का स्वामी शनी, शत्रू स्थान में, बैठा है, और शत्रू स्थान का स्वामी, बृहस्पति बुद्धी स्थान पर बैठा है, इसलिये आपकी बुद्धी में एक स्थाई लाइन यह बन गई, कि राजनैतिक क्षेत्र में, किस २ प्रकार से कार्यरचना की जाय जिससे प्रभाव और मान की उन्नति हो सके, अतः इन ग्रहों से प्रेरित होकर आपने अपने प्रथम तरुणाई की अवस्थामें ऐसी पार्टीयों में, शामिल होकर कार्य करना प्रारम्भ किया। जिन पार्टीयों का ध्येय पब्लिक की मांग को सफल करने में, राज से आंदोलन करना, और प्रजा के हितों का पूरा २ ख्याल रखकर आवश्यकता नुसार सत्याग्रह आदि अनेकों इन्तजाम करना था, और इसी प्रकर्ण में, कार्य करते २ आपने कैईवार जेल यात्रायें भी की, इसी प्रकार आप

बहुत समय तक, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों में, संलग्नता पूर्वक भागलेतेरहे, और कई संस्थाओं में, आपने प्रधान संचालक होकर बहुत समय तक कार्य किया। इसके अतरिक्त पराक्रम के स्थान पर लाभेश सूर्य का बैठना, तथा राहू का बैठना, और दसवीं द्रष्टी से, शनी का पराक्रम स्थान को पूर्ण देखना, इस प्रकार लग्न से तीसरे स्थान पर, इन तीन क्रूर ग्रहों की शक्ती का योग, इसबात का सूचक है, कि यह व्यक्ति, बड़ी भारी हिम्मत और पराक्रम शक्ती, से कार्य करने वाला होना चाहिए। अतः इस योग के प्रताप से, आप एक साधारण व्यक्ति, होकर के भी आपने असाधारण कार्य किया। इसके अतरिक्त आपकी कुण्डली में, लग्नेश-अष्टमेश, शुक्र, लग्न में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, और धनेप, सप्तमेश मङ्गल, सप्तम स्थान में, स्वक्षेत्री बैठा है, तथा अपने धन स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, और धन स्थान के अन्दर भाग्य स्थान का स्वामी बुद्ध बैठा है. अतः बुद्ध और मङ्गल के योग, से आप एक बहुत बड़ी धन राशी के स्वामी बने और शुक्र के योग से, आप एक महान राष्ट्रपति के पद पर पहुँच गये, क्योंकि शुक्र इस स्थान पर-महान ख्याती और मानप्रतिष्ठा आदि का विशेप ध्योतक है, और मङ्गल एवं बुद्ध, महान धनी होने के सूचक हैं, और राहू एवं सूर्य, तथा शनी की पूर्ण द्रष्टी तीसरे स्थान पर होने से, महान पराक्रमी होने के सूचक हैं, और गुरू एवं शनी का योग, शत्रू स्थान में, विजयी होने का योग, बनाते हैं, अतः इन सभी ग्रह योगों द्वारा, अन्त में, आप एक महान राष्ट्रपति के पद पर पहुँच गये. किन्तु भाग्य स्थान पर, नीच राशी गत केतू का बैठना यह सिद्ध करता है, कि आपके भाग्यो-न्नति के मार्ग में, बड़ी २ दिक्कतें, और परेशानियां उत्पन्न हुई होंगी, तथा इस नवम स्थान पर नीच के केतू होने से दूसरा असर यह और है, कि आप सच्चे धर्म का पालन करने में

सर्वथा असमर्थ ही रहे होंगे। और राज्य स्थान पर पूर्ण रूपेण मङ्गल की नीच द्रष्टी होने से तथा राज्येश, चन्द्रमा के छटे स्थान पर बैठने से, यह योग बना कि आपको सत्याग्रही जीवन के समय में, राज दंड के स्वरूप, अनेक कष्ट तथा जेल यात्रायें भी, सहन करनी पड़ी थी, इसके अतरिक्त आपका शनी, जिस समय पंचांग गोचर की गति से घूमता हुआ उच्च का होकर तुला राशी पर आया होगा। वहाँ करीवन आपकी आयू १७ साल की होगी, अतः आप उसी दौरान में, पब्लिक की जाग्रती में, आने लग गये, और चमक उठे, और यही शनी जव दुवारा लौटकर तुला राशी पर आया, उस समय आपकी उम्र करीवन ४५ साल की होगी अतः वहां से आपको और भी विशेष अधिकार प्राप्त होने शिरू होगये. और आगे चलकर जिस समय शनी, मकर राशी पर आये होगें। उस समय लग्न पर शनी, की पूर्ण उच्च द्रष्टी शुरू होगई। और शत्रु स्थान पर शनी की पूर्ण तीसरी दमन द्रष्टी शिरू होगई इसलिये, वहां सुख स्थान कास्वामी शनी, जव सुख स्थान पर आकर ठहरता है, और लग्न को उच्च द्रष्टी से देखता है, तो वहाँ से महान सुखी होने का योग शुरू होजाता हैं, अतः इस अवस्था तक आपकी आयू लगभग ५२ वर्ष से आगे हो चुकी होगी। और हरप्रकारउन्नति एवंमहान सुख का यहां से समय शुरू हुआ होगा। इस गोचर प्रकर्ण का विशेष स्पष्टी करण फलादेश, हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण में, देखिये

संसार में जो व्यक्ति छोटे स्थान में रहकर उन्नति करते हैं, उनका कोई न कोई पराक्रम स्थान, तथा अन्य नवम दसम स्थान के स्वामी अवश्य वलवान होते हैं अर्थात जिन २ स्थानों के स्वामी ग्रह वलवान बैठे होते हैं, उन २ स्थान की वृद्धी अवश्य होती है किन्तु वृद्धी उसी प्रकर्ण के द्वारा होती है जिस प्रकर्ण स्थानों से ग्रहों का उन्नति संबंध होता है

इंगलैंड का प्रसिद्ध लेखक

जार्ज वरनाड शाह

जन्म ता० २६ जुलाई सन् १८५६
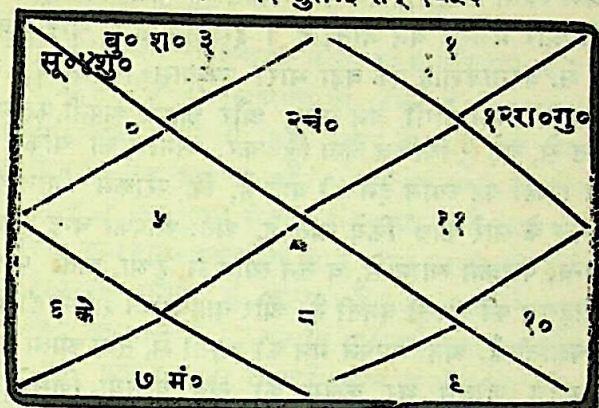
आपकी कुण्डली में केन्द्र के चारों स्थानों के अन्दर केवल अकेला चन्द्रमा उच्चका होकर लग्न में बैठा है, और यह चन्द्रमा लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी होकर–तन भाव में उच्चका बैठा है, इसलिये आपके पराक्रम स्थान की शक्ती, एवं मन की शक्ती, दोनों का स्वामी चन्द्रमा है, अतः चन्द्रमा के उच्च होने से,मनको महान शक्ती प्राप्त हुई, क्योंकि मन का अधिपतिहै, और पराक्रम शक्ती का स्वामी तो स्वयं है ही, इसलिये मन बलवान होना ही चाहिये। किन्तु इतने पर भी विशेषता यह है कि, वह उच्चका है, इसलिये मन और भी बलवान हो गया, किन्तु इससे भी विशेषता यह और है कि, मन का स्वामी चन्द्रमा बहुत ही बलवान होकर, तन स्थान में बैठा है, इसलिये मन का सम्बन्ध आत्मा से भी हो गया, तदुपरान्त फिर भी एक विशेषता यह और है कि, तन स्थान का स्वामी, शुक्र पराक्रम के स्थान पर

बैठा है, अतः शुक्र और चन्द्रमा का आपस में स्थान सम्बन्ध हो गया है, इसलिये तन, अर्थात आत्मा का सम्बन्ध मन से हो गया है, जब मन और आत्मा का सम्बन्ध हो जाता है, और वह भी पराक्रम स्थान के द्वारा, तब ऐसे व्यक्ति के मन की सूझ, बड़ी गहरी और मजबूत बन जाती है। इसलिये इस चन्द्र शुक्र के योग से, बरनाडशाह एक बड़ा भारी उपन्यासकार, लेखक, तथा बड़ा भारी मनोयोगी बन गया, और आपने अपनी कलम की शक्ति से, बड़े २ विचित्र लेख लिखकर, समाज को चकित कर दिया। यहाँ यह ध्यान देने की बात है, कि पराक्रम स्थान ही से बाहुबल के सारे कार्य किये जाते हैं, अतः आपका चन्द्र शुक्र का सम्बन्ध, पराक्रम स्थान से, व तन स्थान से हुआ, अतः पराक्रम से बाहुबल की शक्ती बनती है, और बाहुबलकी शक्ति ही,कलम को चलाती है, अतः आपने मन की शक्ती से, तथा आत्म शक्ती से, सदैव जीवन भर कलम को खूब चलाया, जिसके द्वारा आपका पराक्रम महान रूप में, संसार के सामने प्रकट हुआ, इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में धन और बुद्धी स्थान का स्वामी बुद्ध, धन स्थान में ही स्वक्षेत्री बैठा है, और उसके साथ में, भाग्येश, राज्येश, शनी, मित्र होकर बैठाहै, अर्थात धर्म कर्मका स्वामी शनी,बुद्धीस्थानके स्वामी के साथ बैठाहै, इसलिये आपको ईश्वर सम्बन्ध में, एवं तत्वज्ञान की खोज करने में, बड़ी भारी लगन थी, और आप अपने विवेक से तथा मन की शक्ती से, गम्भीर विषयों पर, बड़ा भारी गम्भीर विचार किया करते थे, इसीलिये आपने बड़ी २ लाजवाब पुस्तकें अनेकों लिख डालीं और जीवन में, कलम से सदैवही चिपटे रहते थे, और इसी बुद्ध और शनी के योग से, आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति भी प्राप्त की और जिस २ समय शनी, गोचर में घूमता हुआ, मकर, कुम्भ, मीन, बृषभ, तथा मिथुन, राशियों पर आता

था, तब २ आपकी उन्नति बराबर होती रहती थी, किन्तु जब तिबारा शनी, इन्हीं राशियां पर लौट कर, मकर पर शिरू हुआ, तबतक आपका सुयश संसारमें चारों ओर खूब फैलगया था और उस समय आपकी अवस्था ६७ वर्ष की थी। आपको खूब धन तथा मान-प्रतिष्ठा की बहुत प्राप्ती हुई, क्योंकि आपकी कुण्डली में, भाग्य स्थान और राज्यस्थान दोनों का स्वामी शनी है, और जब २ शनी मकर राशी पर आता था, तब२ से ही, भाग्य स्थान की वृद्धी शिरू हो जाती थी, और मकर से मीन तक ७॥ साल तक शनी उत्तम फल देता था, और फिर मेष पर कमजोर २॥ साल तक रहकर, फिर वृषभ से मिथुन तक, मान और धन की खूब वृद्धी करता था। इसके अतिरिक्त आयु स्थान का स्वामी वृहस्पति, लाभेश होकर लाभस्थान में स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये आपकी आयु बहुत बलवान रही, अर्थात ६४ वर्ष आप इस संसार में जीवित रहे, और लग्न से ग्यारहवें स्थान पर मीन का राहू और गुरू के एक साथ बैठने से यह योग बनता है कि, प्रथम तो लाभ के स्थान में कुछ दिक्कतें पैदा होती हैं, बाद में आमदनी के स्थान में बड़ी भारी उन्नति पैदा करते हैं, क्योंकि हम पहले ही पुस्तक में लिख चुके हैं, कि राहू या केतू यदि किसी बलवान ग्रह के साथ में बैठे होंगे, तो उस स्थान की बाद में बड़ी भारी तरक्की करते हैं, इसीलिये आपकी आमदनी युवा अवस्था के बाद से बहुत ही बढ़ती चली गई। इसके अलावा मङ्गल की पूर्ण द्रष्टी, देह के स्थान पर आठवीं पड़ रही है, और मङ्गल व्ययेश होकर तनभाव को देख रहा है, इसलिये आपको चेचक निकली थी, और यही मङ्गल, भाग्यस्थान को उच्च द्रष्टी से पूर्ण देख रहा है। इसलिये भाग्य को ऊँचा करने में, सप्तमेश मङ्गलने, रोजगार की परिश्रमी लाइन से भाग्य की उन्नति पैदा की, और लग्न पर मङ्गल की द्रष्टी होने से आपके मिजाज में गुस्सा भी थी, किन्तु वुद्धीस्थान

का स्वामी बुद्ध और धर्मस्थान का स्वामी शनी, दोनों मित्र मिलकर धनस्थान में बैठे हैं, इसलिये आप ऐसे मुल्क (इंग्लेंड) में रह कर के भी आपके विचार और आचरण बड़े धार्मिक थे और पंचम स्थान पर बैठे हुए केतू के ऊपर भी बृहस्पती की द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये बुद्धीस्थान में भी गहरी खोज करने के कारणों से, परेशानियों का अनुभव दिमाग में होता रहता था, और पराक्रम के स्थान पर लाभेश बृहस्पती की पूर्ण उच्च द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये आमदनी के योग से आपके पराक्रम की शक्ती का और भी अधिक उदय हुआ, अतः आपके प्रायः सभी ग्रह कुछ न कुछ जोरदार शक्ती को लेकर ही कुण्डली में बैठे हैं, सभी ग्रहोंकी गोचर गतिसे, फलादेश जाननेके लिये, आप हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण में ब्यौरेवार सरल रूप में पेज नं० १९ में पढ़िये। इसके अतिरिक्त जार्ज बरनाडशाह की कुण्डली में यद्यपि केन्द्र स्थानों में, अधिक ग्रह नहीं बैठे हैं, और अकेला चन्द्रमा ही उच्च का होकर बैठा है, इसलिये संसार के अन्दर, आपने केवल अपने मनोबल और कलमरूपी बाहुबल की शक्ति से ही, महान उन्नति प्राप्त की, अतः यह मानी हुई बात है कि, केन्द्र के अन्दर जो कोई ग्रह बलवान बैठा होगा, उसी ग्रह की शक्ति के आधार पर, वह मनुष्य संसार में उन्नति का मार्ग बनाता है, किन्तु इस बात का यह मतलब नहीं है कि और सभी अन्य ग्रहोंकी शक्ति बेकार होती जातीहै,क्योंकि जन्म-कुण्डली के अन्दर, हर एक ग्रह जो कोई भी जहाँ बैठा होता है, और जिस २ स्थानों का स्वामी होता है, और जहाँ-जहाँ दृष्टियाँ डालता है, उन २ सभी प्रकरणों का फल अवश्य ही प्रदान करता है, जिस प्रकार हमारी भृगुसंहिता पद्धति के अन्दर, समस्त ग्रहों को अलग २ राशि, और अलग २ स्थान स्थिति के अनुसार, हर एक ग्रह का फलादेश अलग २ भिन्न २ रूप में लिखा हुआ है।

ऐलैक्जन्डर उर्फ, शिकन्दर बादशाह

(ईसामसीह से ३५६ साल पहले का जन्म)

जन्म—ता० २० जुलाई ३५६ वर्ष
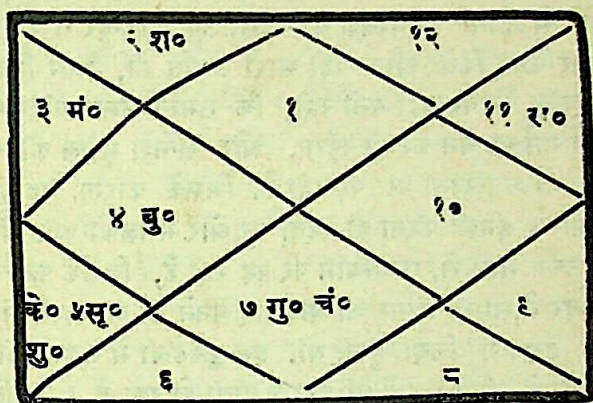
आपकी कुण्डली के अन्दर—लग्नपति देहाधीश, मङ्गल, लग्न से तीसरे पराक्रम के स्थान पर बैठा है, पाठक बहुत बार पढ़ चुके होंगे कि लग्न से तीसरे, छटे, ग्यारहवें, स्थान पर क्रूर ग्रहों का बैठना, शुभकारक उन्नतिदायक होता है, अतः देह के स्वामी मङ्गल क्रूर ग्रह का, तीसरे स्थान पुरुषार्थ पर बैठना, यह बतलाता है, कि यह व्यक्ति बड़ा भारी पुरुषार्थी एवं बड़ा भारी हिम्मत वाला, और उन्नति करने में निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाला होना चाहिये, और राज्यस्थान पति शनी, लाभेश होकर धनस्थान में, मित्रक्षेत्री बैठा है, और अपनी पूर्ण दसवीं दृष्टी से, अपने लाभ स्थान को देख रहा है, और लाभस्थान में मित्र राहू बैठा है, अतः लाभस्थान में क्रूर ग्रह राहू का बैठना; और लाभस्थान का स्वामी क्रूर ग्रह शनी का भी, लाभस्थान को, राहू सहित पूर्ण देखना, यह इस बात का सूचक है, कि धन या

आमदनी की वृद्धी चाहे कितनीही अधिक क्यों न बढ़ती चलीजाय, किन्तु धन की वृद्धी करने का प्रयत्न, उत्तरोत्तर उन्नति की ओर बढ़ता ही रहना चाहिये, अतः आपकी कुण्डली में लाभेश, शनी, राज्येश भी है, इसलिये धनोन्नति, राज्यस्थानों से, अथवा बड़े २ मार्गों से होना आवश्यक था, इसीलिए शिकन्दर ने कई मुल्क बराबर फतह किये और बड़ी भारी उन्नति की, मगर शिकन्दर की इच्छा बराबर यही बनी रही, कि समस्त संसार की सम्पत्ति का मैं मालिक बन कर ही रहूँगा, और लग्नेश मङ्गल की चौथी द्रष्टी जो शत्रुस्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण, वह हमेशां शत्रुओं पर हमला करता ही रहता था,और मंगलकी आठवीं पूर्ण द्रष्टी उच्च भाव से, राज्यस्थान पर पड़ रही है, जिसके फलस्वरूप सिकन्दर ने,समस्त संसार का बादशाह बनने का जबरदस्त संकल्प अपने हृदय में किया हुआ था, इस कुण्डली में मङ्गल; तीसरे, छटे, दसवें, तीनों स्थानों पर पूरा २ हावी हो रहा है। इसलिये, बाहुबल की शक्ती, शत्रुदमन की शक्ती, राज्यस्थानों पर विजय पाने की शक्ती, यह तीनों शक्तियाँ आपको प्राप्त थीं, किन्तु मङ्गल जो कि अष्टम स्थान का स्वामी होकर तीसरे स्थान पर बैठा है, इसलिये शिकन्दर ने अपने कई भाई और भतीजों को मार डाला था। और भाग्यस्थानका स्वामी वृहस्पति,केन्द्रमें भूमिपति चन्द्रमा के साथ, लग्न से सातवें स्थान पर बैठा है, और लग्नेश मङ्गल को, व लग्न को, बृहस्पति पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, अतः सिकन्दर का भाग्य इसीलिये बहुत बलवान था, और संसार में आज भी भाग्यवान पुरुषों को, शिकन्दर के भाग्य की नजीर देकर कहते हैं, कि आप तो भाग्य के बड़े सिकन्दर हैं। इसके अलावा शत्रुस्थान का स्वामी तथा पराक्रम स्थान का स्वामी, बुद्ध लग्न से चौथे स्थान पर बैठा है और राज्येश,लाभेश शनी की,बुद्ध पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, इसलिये शत्रु पत्त में बाहुबल की शक्ती

का प्रयोग, विवेक बल के द्वारा वुद्ध वनाते हैं, और शनी की कृपा से राजनैतिक चालों का ज्ञान भी, शत्रुपक्ष में विजयी होने का प्राप्त होता रहता था। और लग्न से पंचम स्थान पर सिंह राशी का स्वक्षेत्री सूर्य वैठा है और केतू साथ में वैठा है, इसलिये क्रूर ग्रह के साथ में क्रूर ग्रह का वैठना, वुद्धी की कठोरता का सूचक है कि, कठिन से कठिन कार्य को पूरा करने में, वुद्धी की शक्ती के द्वारा वरावर साहस के साथ हठपूर्वक कार्य आपका चलता रहा। और देहाधीश मङ्गल के ऊपर-भाग्यस्थान के स्वामी वृहस्पति की पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, यह भी भाग्यवानी का अच्छा लक्षण है, और वहुत से राज्यों को आपने वगैर लड़े हुए ही फतह कर लिये थे, इसका प्रमुख कारण यह है कि राज्यस्थान का स्वामी शनी लाभेश होकर धर्मस्थान में वैठा है, और लाभस्थान पर राहू वैठा है, और लाभस्थान पर शनी की पूर्ण दृष्टि भी पड़ रही है, और लाभस्थान पर भाग्येश वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि भी पड़ रही है। इसलिए, लाभ का स्थान वहुत प्रवल हो गया है, यही कारण था कि वहुत से राज्य, वगैर लड़ाई लड़े ही, लाभ की सूरतों में आपको मिलते चले गये, और राज्यस्थान पर मङ्गल की, तथा वुद्ध की पूर्ण दृष्टि वलवान पड़ रही है, तथा मङ्गल की शत्रुस्थान पर भी चौथी दृष्टि वलवान पूर्ण पड़ रही है; इसलिए इसकी धाक और प्रभाव इतने ऊँचे दर्जे पर पहुँच गया था कि इसकी पलटन और दुश्मन की पलटन, सभी सिकन्दर से घवड़ाते थे. और डरते रहते थे, इसी वजह से इसकी विजय होती चली जाती थी। यह ध्यान देने योग्य बात है कि शनी, जिस समय में धनराशि. मकरराशि. कुम्भराशि, वृषभ राशियों में, पंचांग की गोचर गती से आया था, उन समयों में इसकी वरावर विजय होती चली गई, और जव आगे चलकर शनी कर्क राशि में आया, तव शनी की देह के ऊपर

नीच दृष्टि पड़ी, और उसी दौरान में, सिकन्दर बुखार के कारण ३२ साल की उम्र में मर गया, इन गोचर ग्रहों का प्रत्यक्ष फलादेश हमारी अखंड भाग्योदय दर्पण के अन्दर देखिये।

श्री आदि शंकराचार्य
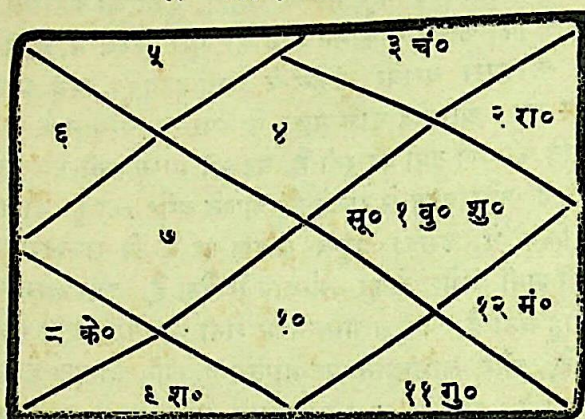
आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश, राज्येश, मङ्गल, लग्न से नवम स्थान पर मित्रक्षेत्री बैठा है, अर्थात बुद्धि स्थानपति, एवं कर्मस्थानपति मङ्गल, धर्मस्थान पर बैठा है, और देहाधिपति, चन्द्रमा को, चौथी दृष्टि से पूर्णरूपेण देख रहा है, अतः मङ्गल का सम्बन्ध, तन से, मन से, बुद्धि से, आत्मा से, कर्म से, धर्म से, इन सभी चीजों से पूर्ण हो गया है। इसलिये आपको, धर्म-कर्म का विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ, और आपने वेदोक्त दर्शनशास्त्र का संसार में महान उपदेश किया और मनुष्यों को चरित्र निर्माण करा २ कर, अधिक तादाद में आस्तिक बना दिया, और आपने अपना मनोबल, आत्मबल, बुद्धिबल, कर्मबल, धर्मबल, सभी शक्तियों का पूरा २ प्रयोग कर २ के समस्त संसार में दौड़ा कर-करके, लोगों में जागृति और धर्मपरायणता पैदा कर दी और

आपने अपनी इन्हीं शक्तियों के बल पर जगह २ शास्त्रार्थ किये और वाद-विवाद में विजय प्राप्त की, विजय प्राप्त करने के सम्बन्ध में आपके शनी का भी प्रमुख कारण है, जो कि लग्न से छटे शत्रु स्थान पर बैठे हैं, यह बृहस्पति का घर है, इसमें शनि के बैठने से यह गुण हो जाता है, कि एक तरफ तो आपके शत्रु विपक्षता के रूप में बहुत ही बढ़ते रहें, दूसरी तरफ शत्रुओं को परास्त भी होना पड़े, और आपको विजय प्राप्त होती रहे। शनी की तीसरी दृष्टि, धर्मेश बृहस्पतिपर पूर्ण पड़रही है, और शनी की दसवीं दृष्टि, पराक्रम स्थान पर पूर्ण पड़ रही है, तथा शनी की सातवीं दृष्टि देहाधीश चन्द्रमा पर पूर्ण पड़ रही है, और शनि के स्थान पर गुरु बैठे हैं, और गुरू के स्थान पर शनि बैठे हैं, अर्थात अष्टमेश, शनीं लग्न से छटे स्थान पर बैठे हैं, और षष्ठेश गुरू लग्न से आठवें स्थान पर बैठे हैं, अतः इस योग का फल यह है कि आपका समस्त जीवन, संघर्षों में तथा प्रभाव उन्नति में, एवं विजय प्राप्त करने में ही लगा रहे, और इसके परिणाम स्वरूप जीवन में, शान्ति और चैन की कमी भी प्राप्त होती रहै, इसके अतिरिक्त आपके विजयता होने का, और संसार में अधिक मान पाने का, दूसरा योग आपकी कुण्डली में यह है कि राज्यस्थान में उच्चका सूर्य, तथा लाभेश, सुखेश, शुक्र, तथा व्ययेश,पराक्रमेश, बुद्ध,यह तीन ग्रह बलवान बैठे हैं, और राज्येश मङ्गल भाग्यस्थान में बैठे हैं, यह योग भी, भाग्यबल, और कर्मबल से मनुष्य को विजयी बनाते हैं, और इस प्रकार मनुष्य पूजनीय हो जाता है, किन्तु आपकी कुण्डली में, बृहस्पति, धर्मस्थान का स्वामी होकर, मृत्युस्थान में बैठा है, इसलिये आपने, अन्यान्य धर्मावलम्बियों के खिलाफ काफी आन्दोलन किया, और बौद्ध तथा जैन धर्म का भी आपने विरोध किया। किन्तु संस्कृत का आपने बहुत प्रचार किया, और वैष्णव धर्म का महान पालन किया, तथा मङ्गल,

सूर्य, शुक्र, बुद्ध, इन चारों ग्रहों के कारणों से, आप बड़े भारी कर्मेष्ठी एवं कर्तव्यपरायण रहे, और सदैव ही आपने धार्मिक विषयों पर बराबर उपदेश दिया । अब सोचने की यह बात है कि यदि आपकी कुण्डली में धर्मेश गुरू अष्टम न होते, और व्ययेश बुद्ध दसम न होते, तथा पंचम स्थान में केतू न होते, तो आप एक धार्मिक महान व्यक्ति होने के नाते, अपने किसी भी धर्म का पालन अवश्य करते रहते। किन्तु संसार में दूसरे धर्मावलम्बियों को दबाने की चेष्टा नहीं करते, क्योंकि ऐसे कार्य की भावना पैदा होना, कि एक धर्म को पूर्णरूपेण उठाना चाहिये और दूसरे धर्म को दवाना चाहिये। यह उन साधु और भक्तों के हृदय में भावना कभी नहीं आ सकती है, जिनकी कुण्डली में, नवम स्थान में बलवान ग्रह बैठा हो, या नवम स्थान का स्वामी भी श्रेष्ठ स्थान पर बैठा हो, किन्तु यह भावना इनकी कुण्डली में पैदा होना अनिवार्य था, क्योंकि नवम स्थान में, बलवान मङ्गल बैठे हैं, और नवम स्थानपति गुरू अष्टम मृत्यु स्थान में बैठे हैं, इसलिये मङ्गल एक महान धर्म का पालन करना चाहता है, तो बृहस्पति एक अन्य धर्मों का महान विरोध करते हैं, अतः दूसरी तरफ एक महानता आपके ग्रहों की यह और है कि, देहाधीश, चन्द्रमा को धर्मपति गुरू, तथा कर्मपति मङ्गल, दोनों ही ग्रह, अपनी २ पूर्ण बलवान चौथी, पाँचवीं दृष्टि से देख रहे हैं, इसलिये आपके देह में, आत्मा में, व मन में, धर्म-कर्म के पालन करने की पूर्ण भावना निरन्तर विद्युत रहनी आवश्यकथी, अतः यही प्रमुख कारण था कि आप एक महान संलग्नता, स्फूर्ती, और उत्साह के साथ इस धार्मिक क्षेत्र में, सदैव निरन्तर प्रयास और उन्नति करने में तल्लीनरहे, अन्यथा इतना महान कार्य और महान परिश्रम, किसी भी व्यक्ति से प्रायः हो नहीं सकता है, नवमस्थान की शक्ति जिसे प्राप्त होती है, उस व्यक्ति को दैवीगुण और ईश्वरीय सहायतायें सदैव प्राप्त होती रहती हैं ।

टीपू सुलतान

ता० १ दिसम्बर सन् १७५१ ई०
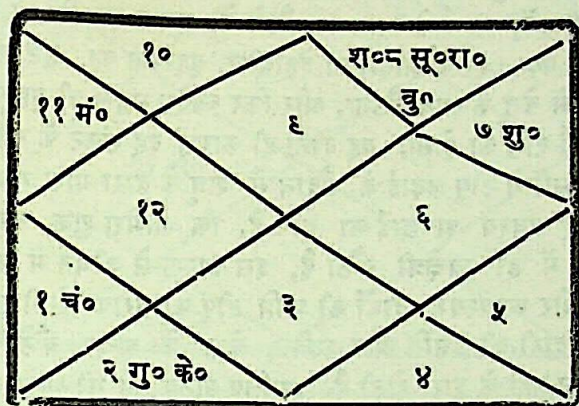
टीपू की कुण्डली के अन्दर केन्द्र के चारों स्थान खाली हैं, यह बरक्कत हीनता का योग है। इसके अतरिक्त आपकी कुन्डली में, राज्येश, सप्तमेश, बुद्ध, तथा भाग्येश, सूर्य, एवं धनेश, पराक्रमेश, शनी, यह तीनों मुख्य २ ग्रह लग्न से बारहवें स्थान में बैठ गये, और लग्नेश, सुखेश, वृहस्पति, छटे स्थान पर बैठे हैं, इसलिये यह केन्द्रों के स्वामी भी जब लग्न से छटे, बारहवें बैठ गये, तब तो यह यह योग और भी बुरा हो गया, क्योंकि केन्द्र भी खाली हैं, और केन्द्र के स्वामी भी खोटे स्थानों पर बैठे हैं, इसी कारण से आपकी शक्ती और राज्य नष्ट हो गया, और सम्पत्ति भी नष्ट हो गई, क्योंकि पुस्तक के प्रारम्भ में, हम पहिले ही लिख चुके हैं, कि लग्न से छटे, आठवें, बारहवें स्थानों का फल खोटा होता है, और इन घरों के स्वामी भी कुछ खोटा फल प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त अष्टमेश चन्द्रमा, बुद्धी स्थान पर बैठा है, और बुद्धी स्थान का स्वामी मङ्गल, बारहवें स्थान का

भी स्वामी है, इसलिये टीपू की बुद्धी चंचल और बेढंगी थी। इससे भी यह अपने राज्य को संभाल नहीं सका था, और इसे शुरू से ही मूर्ख समझा जाता था, और शनी, बुद्ध, दोनों ग्रहों के बारहवें, खर्च के स्थान पर बैठने से, समस्त सम्पत्ति को खो बैठना पड़ा। इसके अतिरिक्त देहाधीश वृहस्पति का, छटे शत्रु-स्थान में केतू के साथ बैठना, और फिर व्ययेश मङ्गल की वृहस्पति पर पूर्ण दृष्टि का होना, यह दोनों ही कारण देह संकट के सूचक हैं। इसलिये टीपू लड़ाई के मैदान में शत्रू के द्वारा मारा गया। हाँ, यह अवश्य अच्छाई का योग है, कि लाभेश शुक्र, लाभ-स्थान में ही स्वक्षेत्री बैठा है, इस कारण से जीवन में अन्न, वस्त्र और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति टीपू को बराबर होती रही, दुनियांदारी की उन्नति और शक्ति, केन्द्र के अन्दर बैठे हुए बलवान ग्रहों के द्वारा होती है, इसलिए पाठक यह भी ध्यान रखें कि केन्द्र के चारों स्थान ग्रहों से खाली होना शुभ नहीं है, चाहे वह व्यक्ति राजवंश का हो या गरीब घराने का। टीपू की कुण्डली में पिता की सम्पत्ति को नष्ट करने का, एक कारण और है कि पिता स्थान का स्वामी बुद्ध, लग्न से बारहवें, खर्च के स्थान पर बैठा है, और खर्चके स्थान का स्वामी मङ्गल, पिता स्थान को आठवीं दृष्टि से पूर्ण देख रहा है, इसी से विशेष हानि हुई। किंतु टीपू ने जितने समय तक राज भोगा, उसका प्रथम ग्रहयोग कारण तो यह है कि, देहाधीश वृतस्पति, चतुर्थेश होकर, राज्य-स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, और दूसरा कारण यह है कि, लाभेश शष्टेश शुक्र, लाभस्थान में ही स्वक्षेत्री बैठा है, और तीसरा कारण यह है कि, लग्नेश वृहस्पति ने, सू० बु० श०, इन तीन ग्रहों से दृष्टि सम्बन्ध कर लिया है, अर्थात राज्येश बुद्ध, भाग्येश सूर्य, धनेश शनी, इन तीनों से सम्बन्ध कर लिया है, इस लिये इतने बड़े भाग्यशाली होने का अवसर प्राप्त हुआ था।

मानसिंह डाँकू की कुण्डली
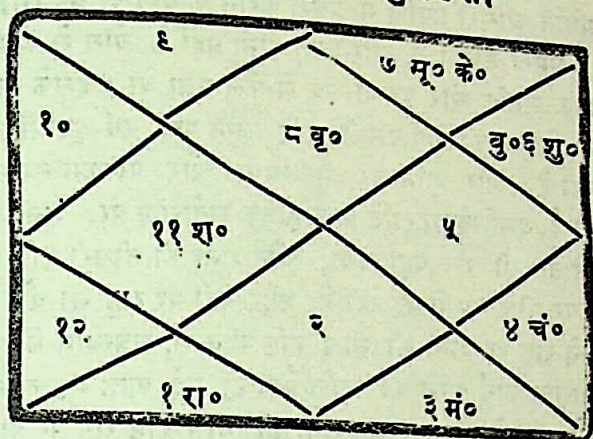
आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न के अन्दर, प्रथम स्थान में, बृहस्पति, धनेश, एवं पंचमेश होकर मित्रक्षेत्री बैठे हैं। इनका फल यह है कि, धन, जन, कुटुम्ब, सन्तान, विद्या आदि की विशेष शक्ति आपको प्राप्त रहनी चाहिए, और मान, प्रभाव, गौरव आदि भी प्राप्त रहना चाहिए, क्योंकि गुरु तन स्थान में बैठे हैं; और भाग्येश चन्द्र, भाग्यस्थान पर ही बैठे हैं; तथा बृहस्पति की चन्द्रमा पर, नवम पूर्ण दृष्टि उच्च भाव से पड़ रही है, तथा बृहस्पति की पंचम पूर्ण दृष्टि अपने पंचम बुद्धी व संतान स्थान पर पड़ रही है, इसलिये आपकी भाग्यवानी इतनी प्रबल रही, कि आपका गौरव और आतंक समस्त भारत में फैल गया था, आपके ग्रोह में हजारों आदमी थे, जिन पर आपका प्रभुत्व और हुकुम हासिल था, तथा देहाधिपति एवं शत्रुस्थानाधिपति मङ्गल का लग्न से अष्टम स्थान में बैठना, और लाभस्थान पर पूर्ण चौथी दृष्टि डालना, तथा पराक्रम के स्थान पर मङ्गल की आठवीं दृष्टि उच्च रूप से पूर्ण होना, और शत्रुस्थान पर राहू का

बैठना, यह सभी कारण आपके तामसी भयानक कार्यों के सूचक हैं अर्थात आसुरी प्रवृत्ति में प्रवेश कराने के यही दो ग्रह (मङ्गल, राहू) प्रमुख कारण हैं, और इन्हीं दोनों ग्रहों के योग से आपका भयानक आतंक और डर पब्लिक में फैल गया था। इसके अतिरिक्त शनिश्चर की पूर्ण दसवी दृष्टि लग्न पर, एवं वृहस्पति पर पड़ रही है, और शनिश्चर सुखस्थान और पराक्रम स्थान के स्वामी हैं, इसलिये वृहस्पति के प्राकृतिक सतोगुण पर, शनी की दृष्टि ने तामसी रंग चढ़ा दिया, और शनी की तीसरी दृष्टि शत्रु स्थान पर नीच रूप में पड़ रही है, और वहीं पर राहू भी बैठे हैं, इसलिये राहू पर शनी की नीच दृष्टि पड़ने से, शत्रुस्थान में, घोर नीचतायुक्त कार्य करने की प्रवृत्ति पैदा हो गई, अतः मङ्गल, राहू का छटे, आठवें बैठना, और शनी की नीच दृष्टि राहू पर होना, तथा कर्मेश सूर्य का नीच राशि में होकर, लग्न से बारहवें स्थान में केतू के साथ बैठना, यह सभी ग्रहों के कारण, डाकू प्रवृत्ति बनाने में सार्थक एवं सहायक हुए, और लाभस्थान में नीच का शुक्र बैठा है, तथा खर्चस्थान में नीच का सूर्य बैठा है, इसलिए खर्च और आमदनी के दोनों ही मार्ग कलुषित हो गये, अतः दोनों ही मार्गों में नीचतायुक्त प्रणाली का व्यवहार होना, एक डाकू के लिये अनिवार्य है, और लाभ के स्थान में उच्च राशि का बुद्ध बैठा है; जोकि मङ्गल की चौथी दृष्टि से युक्त है और नीच के शुक्र के साथ है, इसलिये वुद्ध के उच्च होने से आमदनी की अधिकता का योग तो बनाया, किन्तु डांकेजनी के मार्ग से बनाना पड़ा, और बुद्ध अष्टम स्थान के स्वामी होकर उच्च के बैठे हैं, इसलिये आपको आयु भी खूब प्राप्त हुई और जीवन की दिनचर्या में बड़ा प्रभाव रहा। इसके अतिरिक्त, शनिश्चर के सुखस्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठने से, आपको खानपान के, सुख के खूब अच्छे साधन थे, और नवम स्थान का स्वामी चन्द्रमा भी

अपने ही घर में स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये आप भाग्यवान भी थे, और किसी रूप में धर्मात्मा भी थे, क्योंकि आप गरीबों को नहीं सताते थे, बल्कि गरीबों की यथासाध्य मदद करते रहते थे, किन्तु दसमस्थानपति सूर्य के नीच होने से, तथा केतू के संग बैठने से, आपकी राज्य से भी नहीं बनती थी। वारन्ट आदि गिरफ्तारियाँ चालू रहती थीं, और पब्लिक भी इनको बुरा समझती थी। इसके अतिरिक्त आपके बुरे वक्त आने का प्रमुख कारण यह है, कि पंचांग की गोचर प्रणाली में जब से राहू, केतू सं० २०११ व २०१२ व २०१३ में, प्रथम तो नीच राशियों में आये, अर्थात राहू धनराशि पर आये, और केतू मिथुन राशि पर आये, उस समय आपकी लग्न से दूसरे स्थान पर राहू चले थे, और लग्न से आठवें आयूस्थान पर केतू चले थे, और इसके बाद राहू वृश्चिक राशि पर चले और केतू वृषभ राशि पर चले, जो कि राहू तनस्थान पर चले, और केतू गृहस्थ्य स्थान पर सप्तम में चले. अत: यह डेढ़ २ साल की दो चालें, राहू और केतू की इनके पतन और मृत्यु के लिये खास कारण बनी। इसके अतिरिक्त आपके बल, पौरुष व सुख शान्ति का स्वामी, जो शनी था, वह उस समय तुलाराशि पर, लग्न से बारहवें स्थान पर उच्चका होकर चला, इसलिए प्रथम तो लड़ाई और झगड़ों की अधिक वृद्धि हुई, और आपका आतंक अधिक फैला, और शान्तिमें बाधा पैदा हुई। आगे शनी के लग्न से बारहवें स्थान पर चलते रहने में पुरुषार्थ शक्तिको, पराजयका योग पैदा करदिया। इन सब ग्रहोंकी गोचर फल प्रणाली का प्रत्यक्ष सच्चा फलादेश, आपको अखंड भाग्योदयदर्पणमें बड़े सरल रूप से देखने व समझने को मिलेगा।

———

श्री रामकृष्ण परमहंस

ता० १८-२-१८३६
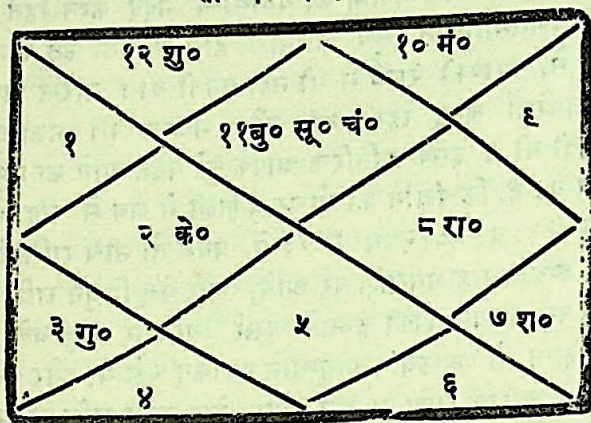
श्री रामकृष्ण परमहंस की कुण्डली के अन्दर, देहाधीश शनी उच्चका होकर भाग्य, धर्म के स्थान पर बैठा है, और धर्म स्थान का स्वामी शुक्र उच्चका होकर धनस्थान में बैठा है, इस लिये धार्मिक विषय का ज्ञान, एवं ईश्वरीय विषय का ज्ञान आपको महान रूप से प्राप्त हुआ, और इसी वस्तु की खोज एवं लालसा आपके अन्दर उत्तरोत्तर जागृत होती चली गई, और आप अटूट भावना के साथ अद्वैत साधना में लगे रहे। इसी दौरान के अन्तरगत आपको एक तोतापुरी साधू से भेंट हुई और उसके सतसंग से श्री रामकृष्ण के विचारों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। श्री रामकृष्ण के अन्दर आत्मिक शक्ति का बल बहुत बढ़ता चला गया, क्योंकि यह दैवी कृपा का विशेष अधिकारी हो गया था, युवा अवस्था के अन्दर आपकी २३ साल की उम्र में शादी हुई थी। उस समय मेष राशि पर वृहस्पति चल रहे थे, और सप्तमेश सूर्य भी उस समय कुम्भ राशि पर होने से,

सूर्य और वृहस्पति, दोनों ग्रह, स्त्रीस्थान को देख रहे थे। इस ग्रह गोचर प्रणाली का प्रत्यक्ष फलादेश, भिन्न २ रूप में, अखण्ड भाग्योदय दर्पण के अन्दर देखिये। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में तीन ग्रह, शु० श० मं० उच्च के बैठे हैं, जिसके अन्दर भाग्येश, सुखेश शुक्र, तथा राज्येश, पराक्रमेश मङ्गल, तथा लग्नेश व्ययेश शनी है, और वृहस्पति की लग्न पर व लग्नेश पर पूर्ण दृष्टि पड़ रही है, यह प्रवल भाग्यवानी का योग है, और लग्न में सू० चं० बु०, इन तीन ग्रहों का बैठना भी, मान प्रतिष्ठा प्रभाव और ख्याति आदि का सूचक है, तथा वृद्ध आयु की वृद्धि का सूचक है, क्योंकि अष्टमेश होकर लग्न में मित्रक्षेत्री बैठा है, तथा बारहवें स्थान का स्वामी शनी, उच्चका होकर भाग्य स्थान में बैठा है और राज्यस्थान का स्वामी मङ्गल बारहवें स्थान में उच्च का होकर बैठा है, इसलिये बाहरी स्थानों में महान आदर सत्कार एवं प्रभुत्व और मान्यता आपको प्राप्त हुई, आपके अन्दर परमात्मा के ध्यान की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई, और इसीलिये संन्यास योग के अन्दर आशक्ति पूर्ण सफल और दृढ़ होती चली गई। ईश्वरीय वल, हमेशा लग्न से नवम स्थान के द्वारा ही प्राप्त हुआ करता है, जो कि श्री रामकृष्ण की कुण्डली में प्रत्यक्ष शनि और शुक्र से स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में चोथे स्थान पर केतू और दसवें स्थान पर राहू बैठा है, इसके कारण आपको माता-पिताके स्थान में ठहरना, या माता पिता के स्थान की मोह, लालसा होना कतई नहीं था, वल्कि विरक्त भावनाथी, और प्रायः देश-विदेश आदि में वरावर घूमते रहकर ही आप अपने धर्म का प्रचार करने में लगे रहते थे, और धर्म का प्रचार करना ही आपका मूल मन्तव्य था।

सूर्यनारायण राव बेंगलौर

१२-२-१८५६
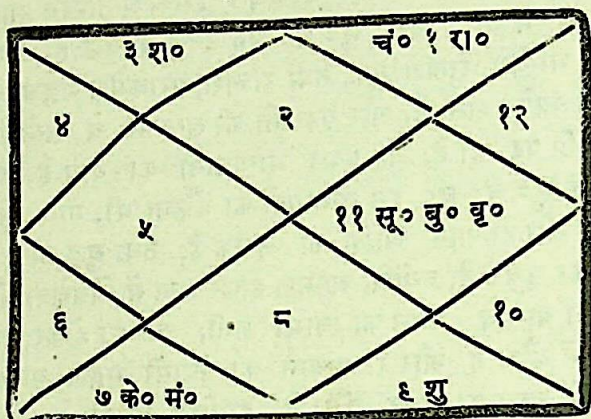
आप बेंगलौर की, रमन पब्लिकेशन एस्ट्रोलौजीकल मेगजीन के प्रसिद्ध मालिक हैं। आपकी कुण्डली के अन्दर सर्व श्रेष्ठ योग यह है कि, भाग्येश, राज्येश, शनी, धनस्थान में बैठा है, और धनेश पंचमेश बुद्ध राज्यस्थान में बैठा है; और दोनों ही ग्रह आपस में मित्र हैं, तथा दोनों ग्रहों का आपस में स्थान-सम्बन्ध है, इस प्रकार के सम्बन्ध से धन की उन्नति, तथा व्यापार की उन्नति होने का प्रधान कारण बनता है। इसके अन्दर वुद्धी और विवेक की, व धन की शक्ति का प्रयोग, बुद्ध ने, कर्म स्थान में बैठकर किया है, और भाग्य तथा कर्मस्थान की शक्तिका प्रयोग शनी ने धनस्थान में बैठ कर किया है, अतः वुद्धिबल, विवेकबल, कर्मबल, भाग्यबल, धनबल; यह सभी का मित्र भाव में कार्य करने से, उन्नति का होना स्वाभाविक ही है। इसीलिये आपने खूब धन कमाया, और खूब नाम पैदा किया, और इसी योग के कारण आप दूर २ तक व्याख्यान आदि देते रहते थे, तथा ज्योतिष

विद्या के अन्दर आपने बड़ी उन्नति प्राप्त की, और बड़ा मान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त राज्यस्थान में, बुद्ध के साथ सूर्य, और बृहस्पति, दो ग्रह और बलवान बैठे हैं, इसलिये इन तीन ग्रहों के योग से, आपकी मान प्रतिष्ठा, कारबार तथा प्रभाव आदि की शक्ति प्राप्त करने में आपको बड़ी सफलता मिली, और इसी कारण आपका शरीर भी बड़ा प्रभावशाली एवं आकर्षक था। और इस श० बु० सू० गु०, इन चार ग्रहों के योग से, राजयोग बना, और आपने बड़ा नाम प्राप्त किया, और दूर २ तक आपकी बड़ी शोहरत हुई। इसके अतिरिक्त आपका, के० मं० छटे स्थान पर बैठे हैं। यह भी दोनों ग्रह शत्रुनाशक एवं प्रभाव वृद्धी के दाता हैं, क्योंकि क्रूर ग्रहों का लग्न से छटे स्थान पर बैठना बड़ी सफलता का सूचक है, और बड़ी २ दिक्कतों पर व शत्रुओं पर विजय पाने का योग है। इनसे भी प्रभाव की बड़ी वृद्धि हुई, किन्तु स्त्री स्थान के स्वामी मङ्गल का छटे बैठने से, स्त्री से विरोध भावना उत्पन्न करता है, इसलिये आपको स्त्री की तरफ से खुशी हासिल नहीं थी। किन्तु मङ्गल अपनी चौथी पूर्ण दृष्टि से, भाग्य-स्थान को उच्चभाव से देख रहा है, इसलिये स्त्री व दैनिक रोजगार की कठिनाइयां तो जरूर सहनी पड़ी थीं, किन्तु भाग्य की उन्नति में सहायता खूब मिलती थी, और लग्नेश शुक्र के अष्टम स्थान में बैठने से व चन्द्र के साथ केतू होने से दिमाग को कुछ परेशानी रहती थी, और दूर २ तक दौड़ा करना पड़ता था। किन्तु राज्येश, भाग्येश, शनी की मित्र दृष्टि का सम्बन्ध, शुक्र से हो रहा है, इसलिये कठिनाइयों में भी सफलता खूब मिलती थी, इसके अतिरिक्त पराक्रमेश चन्द्रमा बारहवें स्थान पर राहू के साथ बैठा है, और अष्टमेष बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि धन स्थान पर, एवं शनी पर पड़ रही है, और धनेश बुद्ध के साथ खुद बृहस्पति बैठे हैं, इसलिए इस चन्द्रमा और बृहस्पति के कारणों से, आपने जो

कुछ धन कमाया था, वह सब खर्च कर दिया, बचाया नहीं। आप बड़े कर्मयोगी, तथा बड़े बुद्धिवान थे और हिन्दुस्तानी इतिहास के बड़े ज्ञाता रहे, क्योंकि पंचमेश बुद्ध ने बहुत प्रकार से बल प्राप्त कर रखा है, इसलिये आपकी उन्नति का मूल कारण केवल आपकी कर्मेष्ठी द्धि बुथी।

सर आशुतोष मुकर्जी

२६–६–१८६४
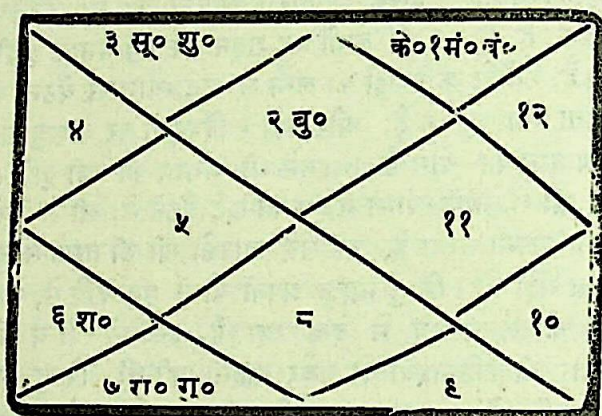
आपकी कुण्डली के अन्दर नवम, दसम स्थान का स्वामी शनी, भाग्य और राज्य की शक्ति को लेकर पंचम, बुद्धी स्थान पर मित्र के घर में वैठा है, इसलिये लौकिक और पारलौकिक ज्ञान का प्रमुख दाता शनी है। क्योंकि नवम स्थानपति होनेसे, धर्म-ज्ञान, और दैवी ईश्वरीय ज्ञान, सज्जनता, कर्तव्यपरायणता, सदाचार, उत्तम विद्या, आदि २ सभी सफलताओं के प्राप्त होने का योग प्रदान किया है, और दसम स्थानपति होने से, राज-भाषा, हकूमत, उत्तम पद, मान प्रतिष्ठा, व्यवहारिक ज्ञान, उत्तम

न्याय, आदि २ शक्तियाँ प्रदान की हैं। इसके अतिरिक्त पंचम स्थानपति बुद्ध, विद्या, वाणी, और विवेक एवं धनस्थान का स्वामी होकर, तन स्थान में, मित्रक्षेत्री बैठा है। इसलिये बुद्धी, विद्या, गणित, विवेक, वाणी, चातुर्य, शील, इज्जत, धन, जन, इत्यादि २ शक्तियाँ प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त भाग्येश, राज्येश, शनी, अपनी दसवीं पूर्ण दृष्टि से, अपने मित्र शुक्र को देख रहा है; और देह का एवं छटे शत्रुस्थान का स्वामी है, अतः भाग्येश, राज्येश की दृष्टि लग्नेश पर, मित्र भाव में पूर्ण होने से भाग्यवानी की प्रचल शक्ति प्राप्त करने का योग बनता है, अतः सर आशुतोष मुकर्जी ने प्रथम से ही विद्या ग्रहण करने के समय में तीव्र गति से सफलता प्राप्त की थी, और बचपन में छोटी क्लास के अन्दर रहते हुए भी, एक अँग्रेजी गणित के बड़े विद्वान की पुस्तक में से आपने गलती निकाली थी। इसके अतिरिक्त आपकी शिक्षा की मान्यता इतनी तीव्र गति से ऊँची उठी थी कि आप २४ सालकी उम्र में एम०ए० की परीक्षा के लिये परीक्षक बन गये। क्योंकि गोचर में उस समय शनी कर्क राशि पर आ गया था, जिससे भाग्येश शनी की पूर्ण दृष्टि भाग्य पर पड़ना शुरू हो गई थी, और शनीकी तीसरी दृष्टि बुद्धिस्थान पर पड़ने से, बुद्धिबल से, शक्ति मिलना प्रारम्भ होगया, और पुरुषार्थ की सफलता हुई। इसलिये इस विषय पर कलकत्ते में हलचल मच गई। इसके बाद कानूनी कार्यों का ज्ञान भी आपने बहुत ऊँचे दर्जे पर प्राप्त किया, और सन् १६०४ से लेकर सन् १६२३ तक आप हाईकोर्ट के जज रहे, और उन्होंने बड़े २ न्यायपूर्ण फैसले दे-देकर जनता में अपनी बड़ी भारी मान्यता प्राप्त की, आप बड़े स्पष्ट विचारवादी; बड़े योग्य, एवं कभी त्रुटी न रखने वाले, कट्टर सिद्धान्तवादी थे, और लग्न में बुद्ध के कारण आपके अन्दर हर एक अवस्थाओं में नम्रता बनी रहती थी, और पंचम

स्थान पर शनी, तथा लग्न के बैठे हुए बुद्ध, इन दोनों ग्रहों की जो महान ज्ञानप्रदायिनी शक्ति आपको प्राप्त थी, इसके कारण से एक तो भारत में अब तक जितने शिक्षा शास्त्री हुए हैं, उन सबों में आसुतोष का दर्जा ऊँचा माना जाता है। दूसरे गणित के बड़े ऊँचे विद्वान, और प्राचीन ज्ञान के लिये आपके हृदय में बड़ा भारी उत्साह था, और आप सदैव भारतीय पोशाक पहिनते थे। इसके अतिरिक्त आपके, छटे शत्रुस्थान पर राहू और बृहस्पति बैठे हैं, इस कारण से आपको सदैव शत्रुओं पर दानाई के साथ विजय प्राप्त होती रही, और धनेश बुद्ध लग्न में बैठा है, और लग्नेश शुक्र धन स्थान में बैठा है, इसलिये आपके शरीर की बनावट बड़ी प्रभावशाली थी, और शनी तथा बुद्ध के योग से आपको एक सन्तान बहुत उत्तम हुई, और इन्हीं दोनों ग्रहों के योग से, आपकी बुद्धी बड़ी सुन्दर, निर्दोष और प्रखर थी, इसके अतिरिक्त लग्नेश और धनेश; बुद्ध, शुक्र के, स्थान सम्बन्ध से, बचपन में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था, और मङ्गल का बारहवें स्थानपर स्वक्षेत्री बैठनेसे, और चंद्रमा का साथ होने से आपके खर्चे बहुत ऊँचे थे, तथा बाहरी स्थानों में आपका बड़ा मान और प्रभाव था। अतः आपके अन्दर विद्या का आदर्श विकास करने वाले, शनी और बुद्ध है।

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार आपके, लग्नेश और धनेश, बुद्ध शुक्र का, आपस में स्थान संबंध योग मित्र भाव में रहा है, इस प्रकार का योग, इस बात का सूचक है कि ऐसा व्यक्ति केवल अपनी देह के द्वारा ही, सदैव धन की महान वृद्धी, स्वाभाविक रूप से ही करता रहेगा, और समस्त जनता को, बड़ी भारी धानवान ही प्रतीत होता रहेगा।

हरबर्ट जौर्ज वेल्स

ता० २१-६-१८३६
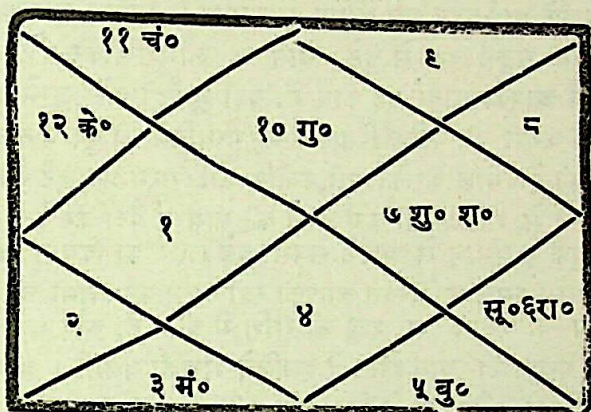
आपकी कुण्डली के अन्दर, तनस्थान में वृहस्पति बारहवें, और तीसरे पराक्रम स्थान का स्वामी होकर लग्न में नीच राशि का बैठा है, इसलिये यह व्यक्ति निरन्तर कठिन परिश्रम करता था। किन्तु देहाधीश शनी, धनस्थान का स्वामी होता हुआ, राज्यस्थान में उच्च का होकर, राज्येश शुक्र मित्र के साथ बैठा है, इसलिये आपने जो कुछ भी कर्म किये, वह अपने अभीष्ट को सिद्ध करने के लिये, तथा उन्नति के लिये ही किये। इसके अतिरिक्त आपका बुद्धीस्थान का स्वामी शुक्र, राज्यस्थान में, मित्र शनी के साथ स्वक्षेत्री बैठा है, अतः आपने कुछ प्रथम काल में साधारण पुस्तकों के बाद में, साहित्यिक और ऐतिहासिक बड़ी सुन्दर पुस्तकें लिखीं। देह के स्थान में नीच राशि का वृहस्पति बैठने से, आपकी एक टाँग टूटी हुई थी। स्वभाव तीखा और उदास था, सन्देह की आदत थी, और पंचमेश बुद्धी का स्वामी शुक्र राज्यस्थानमें स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये अपनी बात को सिद्ध

करने के सम्बन्ध में, प्रमाण देने की आपके अन्दर महान शक्ती थी। आपकी कुण्डली में, लग्न से तीसरे भाई-बहन के स्थान पर केतू के बैठने से, तथा तृत्तीयेश बृहस्पति का नीच राशि में बैठने से, आपके भाई-बहन सब समाप्त हो गये थे। आपका मातृस्थान का स्वामी मङ्गल लग्न से छटे स्थान पर लाभेश होकर बैठा है, इसलिये आपकी माता गृह कार्य में, बड़ी मुस्तैदी और जुम्मेदारी से कार्य करती थी, वल्कि पिताकी अनुपस्थितिमें भी,दुकान तक के कार्यों की देखभाल करलेती थी,क्योंकि कोई गरम ग्रह छटे स्थान पर बैठने से, शक्तिशाली कर्म करने की सामर्थ्य पैदा कर देता है, और शुक्र के प्रभाव से आपके सबसे बड़े लड़के का दिमाग बहुत उत्तम था। इसके अतिरिक्त आपका स्त्री स्थान का स्वामी चंद्रमा धनकोष के स्थान पर शत्रु की राशि में बैठा है, और धन का स्थान, बन्धन का स्थान होता है,इसलिये आपका वैवाहिक जीवन दुखपूर्ण रहा, और स्त्री से विरक्तता रही, तथा एक अन्य स्त्री से प्रेम स्थापित हो गया था, आपके लग्न में व्ययेश बृहस्पति नीच राशि का होकर तनस्थान में बैठा है, इसलिये आपको खून निकले, तथा अण्डकोष आदि की बीमारी भी आपको रही थी। आपका चन्द्रमा दैनिक रोजगार का स्वामी होकर, धनस्थान में बैठा है, और लाभस्थान का स्वामी मङ्गल क्रूर ग्रह, लग्न से छटे स्थान पर बैठा है, और लाभेश मङ्गल की आठवीं पूर्ण दृष्टि देह के स्थान पर उच्च रूप से पड़ रही है, इसलिये धन कमाने की शक्ती आपके अन्दर प्रबल थी, भाग्येश बुद्ध लग्न से अष्टम में बैठा है, तथा सुखेश मङ्गल छटे बैठा है, तथा लग्न में नीच का बृहस्पति है, इसलिये आपको सुख शान्ती ठीक तौर से प्राप्त नहीं होती थी, किन्तु शुक्र और शनी के कारण आपके विचार बहुत ऊँचे थे। किन्तु यह मानी हुई बात है कि जो कोई ग्रह, छटे, आठवें, बारहवें, स्थानों में कहीं भी बैठे होते हैं, वह परेशानी अवश्य करते हैं।

ड्यूक ऑफ विंडजर (जार्ज पंचम का लड़का)

१३-६-१८६४
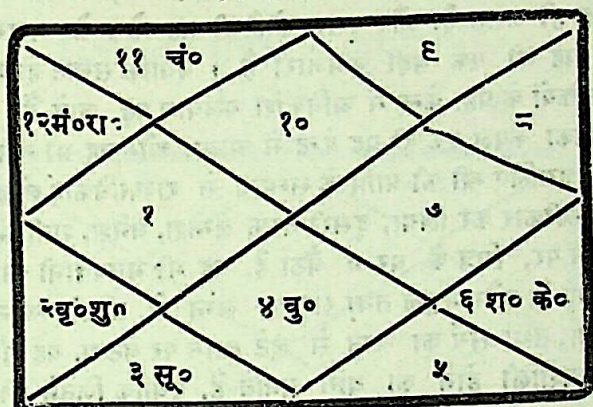
आपकी कुण्डली के अन्दर, राज्येश शुक्र, बुद्धी स्थान का स्वामी होता हुआ, बुद्धी स्थान पर ही स्वक्षेत्री बैठा है, इस कारण से शासन-संचालन की योग्यता, ज्ञान बुद्धी बहुत अच्छी थी, किन्तु पराक्रम स्थान का स्वामी तथा खर्चस्थान का स्वामी बृहस्पति, शुक्र के साथ शत्रुभाव में बैठा हुआ है, अतः छटे, आठवें, बारहवें स्थानों के स्वामी जिस प्रकार स्वतः खराबी करे बगैर नहीं मानते, उसी प्रकार राज्यस्थानपति शुक्र के साथ, बारहवें स्थान का स्वामी गुरू बैठा है, इसलिये बुद्धी में यह दोष उत्पन्न कर दिया कि हमारा पराक्रम अधिकार पूर्ण स्वतंत्र होना चाहिये, और दूसरी तरफ भाग्य स्थानपती बुद्ध, छटे स्थान का स्वामी होकर; स्त्री स्थान में बैठा है, इसलिये एक स्त्री के प्रेम में फँसकर आपने अपने भाग्य को हानि पहुँचाना सहर्ष स्वीकार कर लिया, अतः राज्येश, भाग्येश, दोनों ही ग्रहों के साथ में, दोष लगा हुआहै; इसलिये आपकी बादशाहतको नुकसान पहुंचा,

और लाभेश चतुर्थेश मङ्गल की आठवीं पूर्ण दृष्टि राज्यस्थान पर पड़ रही है, यह बहुत श्रेष्ठ है, इसलिये छोटे राज्यस्थान की शक्ति आपको प्राप्त रही। इसके अतिरिक्त केन्द्र के अन्दर केवल एक ग्रह बुद्ध ही आया है, और दूसरा कोई भी ग्रह केन्द्र के अन्दर नहीं है, यह भी एक बड़ी कमजोरी है। क्योंकि सम्राट होने वाले व्यक्तियों के ग्रह, केन्द्र में अधिकांश बलवान पड़ जाते हैं, अतः आपका केवल एक ही ग्रह केन्द्र में आया, और वह भी स्त्रीस्थान में। इसलिऐ स्त्री की प्राप्ति के सम्बन्ध से राज्याधिकार छोड़ देना भी स्वीकार कर लिया, दूसरी तरफ लग्नेश, धनेश, शनी, भाग्य-स्थान पर, मित्र के घर में बैठा है, यह भी भाग्यवानी का शुभ लक्षण है, और मङ्गल तथा राहू का लग्न से तीसरे स्थान पर बैठना, तथा सूर्य का लग्न से छटे स्थान पर बैठना, यह भी बड़े प्रभावशाली होने का योग बनाते हैं, क्योंकि जितने भी क्रूर गरम ग्रह हैं, उन सबका लग्न से तीसरे, छटे, ग्यारहवें, इन तीन स्थानों में बैठना अधिक प्रभावशाली होने का योग बनाते हैं; इसलिये आपकी प्रभाव बृद्धी का कारण राज्याधिकार परित्याग करने से बना, और समस्त संसार में आपका नाम होगया, इसके अलावा बारहवे स्थान के स्वामी वृहस्पति की पांचवीं पूर्ण द्रष्टी भाग्यस्थान पर बैठे हुये शनी केतू पर पड़ रही है अतः खर्च के स्वामी ने धन के स्वामी से संबंध कर लिया, इसलिये भी धन की शक्ति को हानि पहुंचने का योग बना, और छोटे राज्याधि-कार की शक्ती मिली, लाभेश और सुखेश मङ्गल अपनी चौथी पूर्ण दृष्टि से अष्टम स्थानपति सूर्य को देख रहे हैं, उसलिये भी आमदनी और भूमि अधिकार की कमी आ गई, किन्तु मङ्गल, राहू, और सूर्य, इन ग्रहों के तीसरे, छटे स्थान पर बैठने से आपके अन्दर इतनी बहादुरी का योग बन गया, कि आपने अपने को पारलियामेंट के अधिकार में रखना स्वीकार नहीं किया, वरन

अपने व्यक्तित्व और शान की रक्षा के लिये, राज्य छोड़ देना सहर्ष स्वीकार कर लिया, यह ग्रह आपकी बहादुरी के सूचक हैं।

इटली का प्रधान—मुसोलनी

२६-७-१८८३
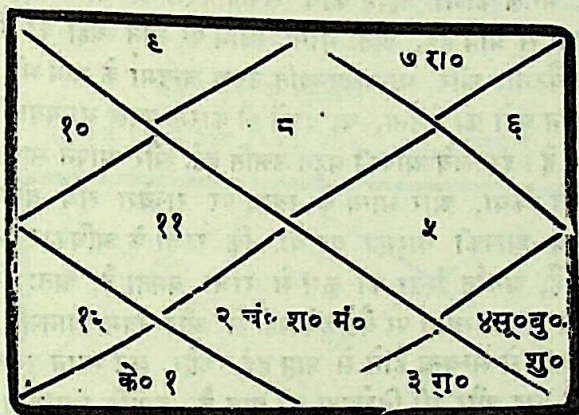
आपकी कुण्डली में, राज्येश सूर्य, भाग्य स्थान पर मित्र क्षेत्री होकर वैठा है, यह बहुत श्रेष्ठ है, इससे राजनैतिक क्षेत्र की उन्नति के प्रत्येक विषयों में, भाग्य की सहायतायें सदैव प्राप्त होती रहती हैं, अर्थात कुदरती तौरसे उन्नति के मार्ग में सफलतायें प्राप्त होती रहती हैं, जिसके कारण आपको भी वार २ सफलतायें मिलती रहीं, और बड़े भाग्यशाली समझे गये। इसके अतिरिक्त भूमि स्थान पति शनी, पराक्रम स्थान का स्वामी होकर, लग्न से सातवें स्थान पर मित्र क्षेत्री होकर वैठा है, और अपनी दसवीं पूर्ण द्रष्टी से, भूमि स्थान को देख रहा है, और साथ में भाग्य का स्वामी चन्द्रमा उच्च का होकर वैठा है तथा देहाधीश मंगल भी साथ में वैठा है और अपनी पूर्ण चौथी द्रष्टी से राज्यस्थान

को तथा सातवी पूर्ण द्रष्टी से अपने तन स्थान को देख रहा है, अतः इन तीनो ग्रहों के अन्तरगत शनी के योग से अधिकार शक्ती प्राप्त हुई, और मंगल के योग से आत्मवल, ख्याती, राज्य स्थान पर अधिकार, आदि शक्तीये प्राप्त हुई और चन्द्रमा के योग से, भाग्य की प्रवल सहायता, मनोवल द्वारा प्राप्त हुई और शनी तथा मंगल कोभी अपने कार्य सफल करने में भाग्य सहायता चन्द्रमा से प्राप्त हुई, अतः भाग्य स्थान पर तीन ग्रहों का मित्र क्षेत्री वैठना, और भाग्यस्थानपति उच्च चन्द्रमा के साथ भी, दो वलवान ग्रहो का वंठना, यह दोनों ही कारण प्रवल भाग्यवानी के सूचक है। इसलिये आपकी बहुत उन्नति हुई, और आपने साम्राज्य स्थापित किया, और भाग्य के स्थान पर राज्येश सूर्य वैठा है, इसलिये आपकी धारणा यह थी, कि राजा के अधिकार ईश्वर प्रदत्त हैं; अर्थात ईश्वर की कृपा से राजा बनता है, अतः ऐसी धारणा नवम स्थान पर वैठे हुये ग्रहों से, और नवम स्थानपति का अन्य ग्रहों से सम्वन्ध होने से प्राप्त हुई, और छटे स्थान पर केतू वैठा है, यह और भी विशेषता की बात है, क्योंकि शत्रुस्थान पर मङ्गल के घर में केतू के बैठने से, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये, और अपनी बहादुरी का लाभ पाने के लिये बहुत ही उत्तम योग है। यह मानी हुई बात है कि केतू लग्न से तीसरे या छटे स्थान पर बैठकर अधिक शक्ति प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त भूमि स्थानपति, पराक्रमेश शनी अपनी तीसरी पूर्ण दृष्टि से भाग्य स्थान पर बैठे हुए ग्रहों को देख रहा है, इससे भी उन तीनों ग्रहों के कार्यों में शक्ति का संचार होता है। इसके अतिरिक्त अष्टम स्थानपति बुद्ध लाभेश होकर भाग्य में वैठा है, और धनस्थानपति गुरू पंचमेश होकर अष्टम स्थान में बैठा है, इसलिये राहू और बुद्ध के योग से, पुरातत्व सम्पत्तियां का लाभ तथा, जीवन का आनंद और आयू की प्राप्ति, इन तीन वस्तुओं का लाभ प्राप्त हुआ

और आपकी लग्नके गोचरमें शनी,सिंहराशि और कन्याराशि पर आपकी युवा अवस्था में आया था, वहाँ से आपके राज्य की स्थापना शुरू हुई थी, और आगे जब २ शनी गोचर लाइन में ३-४-५-६-७-८-९-१०, इन राशियों पर आये थे, तब २ बराबर उन्नति प्राप्त होती चली गई। इन नवग्रहों की गोचर प्रणाली से किस २ प्रकरण में कब-कबउ न्नति प्राप्त होती है, इसका पूरा २ विस्तृत फलादेश अखंड भाग्योदय दर्पण में देखिये।

जे० एन० ऊनवाला

सम्वत १९०३ सन् १८४६ ता० ३ मई, शनिवार
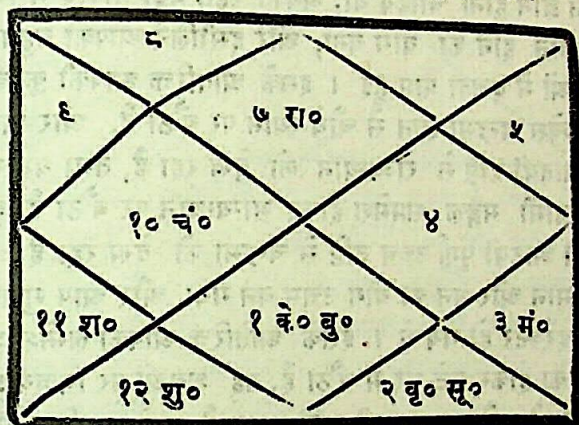
(ये पार्सी थे, अँग्रेजी के अद्वितीय विद्वान थे, गुजरात में डाइरेक्टर हो गये थे, यह संस्कृत, हिन्दी, पार्सी, तैलंग, द्रविड़, कर्नाटक, जापानी, जर्मन, फ्रेंच, इत्यादि भाषाओं के जानकार थे। १६ मई सन् १९१६ को काशी में मर गये।)

आपकी कुण्डली के अन्दर शनी, चतुर्थेश, पंचमेश होकर, विद्या बुद्धि के स्थान पर स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इस हेतु आप अँग्रेजी के अद्वितीय विद्वान थे, बल्कि अँग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत,

पार्सी, तैलंग, द्रविड़, कर्नाटक, जापानी, जर्मन, फ्रेंच, इत्यादि सभी भाषाओं के जानकार थे। यद्यपि शनी, पंचम स्थान पर बहुत बलवान होकर बैठा है, इसलिये विद्या की महान शक्ति प्राप्त होनी ही थी, किन्तु इसके अन्दर दूसरी विशेपता यह और होगई है, कि भाग्येश, व्ययेश बुद्ध को अपनी तीसरी पूर्ण दृष्टि से शनी, मित्रभाव से देख रहा है, इसलिये ही सरल रूप से अनेक प्रकारकी विद्याओंका ज्ञान आपको प्राप्त होगया था। इसके अतिरिक्त बात यह है कि शनी, चतुर्थस्थान का भी स्वामी है, इसलिये भूमिपति होने के कारण, शनी के द्वारा विद्या स्थान में महान ज्ञान होना चाहिये था, अर्थात बहुत बड़ी तादाद में विद्या का ज्ञान होने का योग बना, और इसीलिये आपको बहुत सी भाषाओं में दक्षता प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में राज्येश चन्द्रमा लग्न से चौथे स्थान पर बैठा है, और अपनी पूर्ण सातवीं दृष्टि से राज्यस्थान को देख रहा है, तथा धनस्थान का स्वामी मङ्गल सप्तमेश होकर भाग्यस्थान पर बैठा है, और अपनी आठवीं पूर्ण उच्च दृष्टि से चन्द्रमा को देख रहा है, इस लिये मान और धन का योग उत्तम बन गया, और आप गुजरात में डाइरेक्टर हो गये थे। इसके अतिरिक्त आपका लग्नेश शुक्र उच्च का होकर छटे घर में बैठा है, यह शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है और प्रभाव की वृध्दी करता है इसके अतरिक्त तीसरे व छटे स्थान का स्वामी बृहस्पति अष्टम स्थान में, लाभेश सूर्य के साथ बैठा है, इसलिये यह अधिक परिश्रम कराते हैं, और दूर दूर तक के स्थानों में सफलता और प्राप्ति के साधन पैदा करते हैं, तथा देह के स्थान में राहू, और सप्तम स्थान में केतू बैठा है, इसलिये देह के और स्त्री के सम्बन्धों में कुछ परेशानी का कारण पैदा करते हैं, और चिन्तायें होती रहती हैं।

एक राजा की कुण्डली

(यह गद्दी से उतार दिये गये थे)

जन्म–माघ कृष्णा एकादशी शनिवार, सम्वत १९३६
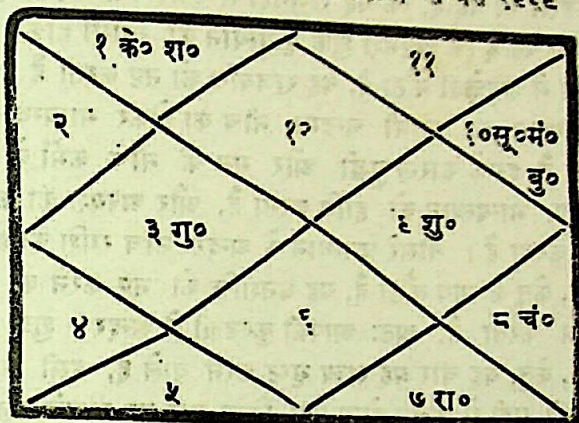
आपकी कुण्डली के अन्दर यद्यपि लाभ के स्थान में तीन ग्रह सू० बु० मं० बलवान होकर बैठे हैं, जो कि अधिक धन लाभ की प्राप्ति के सूचक हैं । क्योंकि चतुर्थेश भूमिस्थान का स्वामी, सप्तमेश होता हुआ बुद्ध लाभस्थान में बैठा है, और षष्ठेश सूर्य शत्रुस्थान का स्वामी होकर लाभस्थान बैठा है, और मङ्गल भाग्य और धन स्थान का स्वामी होकर लाभस्थान में बैठा है, अतः बुद्ध, भूमि की दैनिक आमदनी का लाभ करता है, और सूर्य, सैनाशक्तिके प्रताप और प्रभाव से विजय और धन लाभ करते हैं, तथा मङ्गल, भाग्य की शक्ति से संचित धन की शक्ति का लाभ करते हैं, और लाभस्थान का स्वामी शनी भी अपनी दसवीं दृष्टि से लाभस्थान को पूर्ण देख रहे हैं, यह चारों ग्रह धनलाभ की वृद्धि के सूचक हैं, अतः एक राजा होने के नाते पर्याप्त धन की आमदनी थी, और देहाधीश तथा राज्येश बृहस्पति

सुखस्थान में बैठा है, और अपनी सातवीं दृष्टि से राज्यस्थान को देख रहा है, इसलिए यह भी ग्रह राजयोग कारक है और इसी लिये आपने राजवंश में जन्म लिया। किन्तु मुख्य प्रश्न इस कुण्डली का यह है, कि यह राजगद्दी से उतारे क्यों गये ? इसका कारण यह है कि अष्टमेश शुक्र मृत्युस्थान का स्वामी होकर राज्य स्थान में शत्रुक्षेत्री बैठा है, यह राजयोग को नष्ट करता है। दूसरे बुद्धीस्थान का स्वामी चन्द्रमा, नीच का होकर भाग्यस्थान पर बैठा है, इसके कारण बुद्धी और मन के नीच कर्मों के फल-स्वरूप, भाग्यस्थान को हानि करता है, और अपयश का कारण पैदा करता है। तीसरे धनस्थान के अन्दर नीच राशि का होकर शनी, केतू के साथ बैठा है, यह धनशक्ति को नष्ट करने का योग उत्पन्न करता है, अतः आपकी कुण्डली के अन्दर - शुक्र चन्द्र शनी, केतु, यह चार ग्रह राज्य भृष्ट करने वाले है, इसी कारण आपको गद्दी से अलग होना पड़ा, किन्तु चार ग्रह आपके वलवान है, सू०बु० मं० वृ० इस कारण से आपको गद्दी से अलग होने पर भी, बडी मोटी आमदनी प्राप्त होती रही, और आपका राजसी खर्चा चलता रहा, किन्तु चन्द्रमा के भाग्य स्थान पर नीच होने के कारण से, मन को भाग्य की कमजोरी महसूस होने का दुख अनुभव अवश्य होता रहा, किन्तु धन की तरफ से आमदनी का आपको कतई दुख नहीं रहा, और आपके पास प्राईवेट नौकर चाकर आदि सभी मोजूदथे तथासभी सुख के साधन मौजूद थे। इस कुण्डली में यह ध्यान देने योग्य खास बात है, कि एक तरफ तो सू० मं० बु० और शनी की दसवीं दृष्टि, इन चारों ग्रहों के कारणों से, आपको धन की आमदनी तो राजाओं जैसी ही सदैव प्राप्त रही, किन्तु अष्टमेश शुक्र के, राज्यस्थान में बैठने से, तथा राज्येश वृहस्पति पर, व्ययेश शनी की पूर्ण दृष्टि होनेसे राज्यशक्ति छूटगई,और भाग्यपर नीच चंद्रमा होनेसे भाग्यने साथ नहीं दिया।

एक रानी की कुण्डली

(यह विवाहके आठवें दिन विधवा हो गईं थीं)

सं० १६३० फाल्गुण शुक्ला १० रवौ
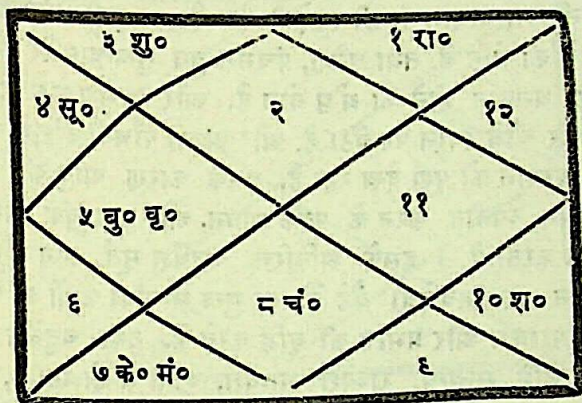
आपकी कुण्डली के अन्दर लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी चन्द्रमा, नीच का होकर पती के स्थान पर वैठा है, और पती के स्थान का स्वामी मङ्गल, व्ययेश होकर, शत्रुस्थान पर केतू के साथ वैठा है, तथा मङ्गल अपनी सातवीं दृष्टि से व्यय स्थान को देख रहे हैं, इन्हीं सब कारणों से पती विनाश का कारण शीघ्र तय्यार हो गया, क्योंकि प्रथम तो चन्द्रमा का नीच होकर सप्तम स्थान में वैठना खोटा है, दूसरे सप्तमेश मङ्गल का, छटे शत्रुस्थान पर वैठना पती स्थान के लिये खोटा है, तीसरे सप्तमेश मङ्गल का व्ययेश होना खोटा है, चौथे सप्तमेश मङ्गल का केतू के संग वैठना खोटा है। अतः यह चारों कारण पती स्थान के लिये खोटे हैं। परन्तु केतू और मङ्गल का छटे स्थान पर वैठना प्रभाव बृद्धि के लिये उत्तम होता है, इसलिये प्रभाव की वृद्धि का रूप इतना ऊँचा कटुतर रूप में उठाया कि, आपकी देह का स्वामी अधि-

कारी पतिदेव को भी नष्ट कर डाला, जिसके कारण पती की आज्ञाका बन्धन भी भंग होगया, और स्वतन्त्रता का पूर्णरूप बना दिया । इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में, राज्येश, भाग्येश, शनी, भाग्यस्थान पर ही स्वक्षेत्री बैठा है, यह बड़ी भाग्यशालिनी होने का योग है, तथा धनेश, पंचमेश बुध सुखस्थान पर बैठा है, यह धनवान होने का श्रेष्ठ योग है, और लाभेश गुरू अष्टमेश होकर चौथे स्थान पर बैठा है, और अपनी पाँचवीं दृष्टि से अष्टम आयुस्थान को पूर्ण देख रहा है, इसके कारण आयु की वृद्धि, जीवन व्यतीत करने के पक्के साधन, और सुखपूर्वक आमदनी प्राप्त करता है । इसके अतिरिक्त चतुर्थेश सूर्य, लग्न से तीसरे स्थान पर मित्रक्षेत्री बैठे हैं, यह सुख सम्बन्धी कार्यों की प्राप्ति, एवं पराक्रम और प्रभाव की वृद्धि करते हैं, तथा चतुर्थेश सूर्य का दृष्टि सम्बन्ध, राज्येश भाग्येश, शनी से हो रहा है, और धनेश बुद्ध चौथे भूमिस्थान पर बैठा है, इसलिये इन दोनों ग्रहों के प्रताप से भूमि का लाभ अधिकार प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त मङ्गल शत्रुस्थान पर बैठकर, भाग्यस्थान को पूर्ण उच्च दृष्टि से देख रहे हैं, और भाग्येश शनी भाग्यस्थान पर बैठकर शत्रुस्थान को पूर्ण उच्च दृष्टि से देख रहे हैं, इसलिये यह दोनों ग्रह योगों से, भाग्य और प्रभाव की महान वृद्धी पाने का योग बन गया है, अतः इसलिये आपकी कुण्डली में केवल पतीस्थान का योग अवश्य बुरा है, किन्तु भाग्य का योग प्रबल होने से आपको राजयोग प्राप्त हुआ । इसके अतिरिक्त देहाधीश शुक्र का, धन स्थान में, मित्र की राशी पर बैठना भी इस बात का सूचक है कि यह प्राणी धनवान होना चाहिये, आपकी कुण्डली में केवल पती स्थान की कमजोरी अवश्य है, किन्तु दूसरे और सभी प्रकर्णों में जोरदार है, इसलिये आप रानी बनी और अनेक प्रकारों के सुख साधन आपको प्राप्त थे ।

बाबू साधुजी

जन्म-सम्वत १९३७, पौष कृष्णा १२ भौमे
(इनके पाँच विवाह हुए और पाँचों से सन्तान मौजूद है)
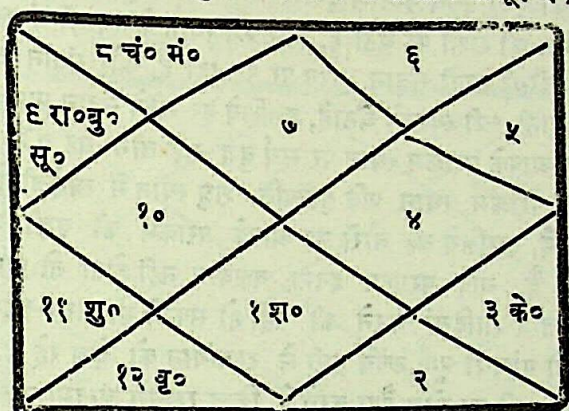
आपकी कुण्डली के अन्दर, स्त्रीस्थान का स्वामी मङ्गल धन भवन में स्वक्षेत्री बैठा है, और साथ में राज्येश चन्द्रमा नीच राशी का होकर बैठा है, तथा सुख और सन्तान स्थान का स्वामी शनी, नीच का होकर स्त्री स्थान में बैठा है, और अपनी दसवीं दृष्टि से सुखस्थान को पूर्ण देख रहा है, इसलिये स्त्री का सुख तो होना चाहिए, मगर नीचतायुक्त मार्ग से, और मङ्गल स्त्रीस्थान की शक्ति लेकर खजाने में अपने घर का बैठाहै, इसलिये धनस्थान में वन्धन भी होना चाहिये, और वृद्धी भी होनी चाहिये, नीचता युक्त राजभोग का योग स्त्री सतसंग से होना चाहिये, अतः शनी; मंगल और चन्द्रमा, इन तीनो के कारण, स्त्री पक्ष में अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों ही प्राप्त है, इसलिये आपकी बार २ स्त्रीयां मरीं, और बार २ शादियां भी हुई, इस प्रकार ग्रह योग स्त्री पक्ष में मारक और, कारक का रूप लेकर, वृहद रूप में बैठा है,

जिसकी वजह से आपकी ५ शादियाँ हुई। आपके संतान पक्ष में, बात यह है कि, संतान पक्ष का स्वामी शनी केन्द्र में बैठा है, और लग्नको पूर्ण उच्च द्रष्टीसे देख रहाहै, तथा,लग्नेश शुक्र संतान घर में मित्र की राशी पर बैठा है, और स्त्री स्थान के स्वामी मंगल की पूर्ण चौथी द्रष्टी संतान स्थान पर पड़ रही है, और संतान स्थान पति शनी, स्त्री स्थानमें बैठाहै, इसलिये हर स्त्रीसे संतान प्राप्त हुई। और आपके पराक्रम स्थान पर सूर्य बुद्ध राहू तीन ग्रह बैठे हैं। और पराक्रम स्थान पति वृहस्पति, शत्रु स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, इसलिये यह चारों ग्रह आपके पराक्रम की वृद्धी करने वाले हैं, यदि पराक्रम इतना बलवान नहीं होता तो आपकी हिम्मत ५ शादियां करने की नहीं हो सकती थी तथा वृहस्पति अपनी पांचवी पूर्ण उच्च द्रष्टी से राजस्थान को देख रहे हैं, यह भाग्य वृद्धी का योग पैदा करते है, किन्तु राज्येश चन्द्रमा नीच का है। और भाग्य स्थान पर नीचका केतू है, इसलिये भाग्य पर कुछ कमजोरी प्राप्त रही। आपकी कुण्डली में केन्द्र के अन्दर केवल शनी नीच का होकर स्त्री स्थान में बैठा है, और अपनी दशवीं पूर्ण द्रष्टी से, सुख भवन को देख रहा है, इसलिये स्त्री के सम्बन्धों में ही महान दुख और सुख का अनुभव आप करते रहें यही आपके जीवन की प्रधानता है।

श्री महामहोपाध्याय शिवकुमार मिश्र

जन्म सम्वत १९०४ फाल्गुन कृ० ११, बुधवार

(यह संस्कृत के अद्वतीय विद्वान थे, सब शास्त्रों को जानते थे। इनको लकवे की बीमारी हो गई थी।)
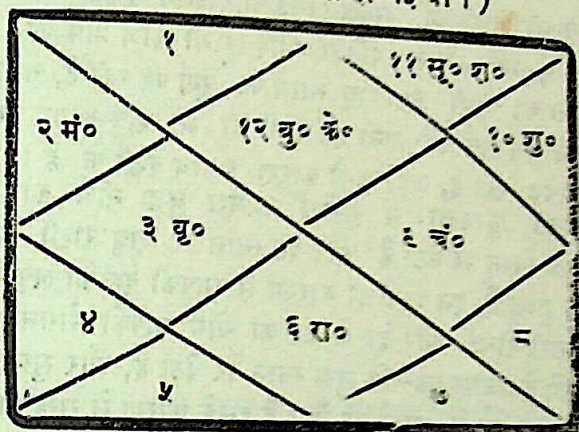
आपकी कुण्डली के अन्दर पंचमेश वृद्धीस्थान का स्वामी चन्द्रमा राजस्थानमें, मित्र क्षेत्री वृहस्पतिके घरमें बैठाहै। और सप्तमस्थान से वृहस्पति से परस्पर द्रष्टी संबंध कर रहा है। अर्थात वृहस्पति चंद्रमाको पूर्ण देख रहाहै और चंद्रमा वृहस्पतिको पूर्ण देख रहाहै, इस ग्रहयोगके कारणही आपको संस्कृत विद्याकी महान शक्ति प्राप्त हुई, और सभी शास्त्रों का उत्तम ज्ञान प्राप्त हुआ, और आप संस्कृत के माने हुये, अद्वतीय विद्वान थे। इनके अतिरिक्त आपका भाग्येश मंगल लग्न से तीसरे स्थान पर बैठा है, और इसकी पूर्ण सातवी द्रष्टी से अपने भाग्य स्थान को देखरहा है, तथा आठवी द्रष्टी से पूर्ण रूपेण चन्द्रमा को देख रहा है, इसलिये मंगल की इन द्रष्टियों के कारण से आपको भाग्यवानी और सुख्याति प्राप्त हुआ और, धर्मपालन की शक्ती,और ज्ञानकी प्राप्ति आपको हुआ

रूपमें प्राप्त हुई, आपकी कुण्डली के अन्दर चन्द्रमा मन और बुद्धी की शक्ती को लेकर कर्म स्थान में बैठा है, और कर्म स्थान पति वृहस्पति, जो कि प्राण और हृदय के भी स्वामी है। उनसे पूरा सम्बन्ध होगया, और धर्मेश मङ्गल से ईश्वरीय शक्ती का सहारा मिल गया अतः यह सभी कारणों के प्रभाव से, मनोयोग की शक्ती अति प्रवल होगई और उसने विद्या के स्थान से उन्नति, शक्ति, मान, प्रतिष्ठा आदि सभी चीजें प्राप्त की, और मङ्गल की चौथी द्रष्टी शत्रु स्थान पर पूर्ण पड़ रही है, तथा शत्रु स्थान पति सूर्य एवं शनी इन दोनों की भी शत्रु स्थान पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, यह सभी कारण प्रभाव वृद्धी के हैं। किन्तु आपकी कुण्डली में सुखेश सप्तमेश बुद्ध नीच का होकर देह के स्थान पर बैठा है और देह स्थान पर शत्रु राशी का केतू बैठा हुआ है, इन दोनों ही कारणों से आपकी देह को लकुवा की बीमारी होगई, और देह के कष्ट का योग आपको भोगना पड़ा। यद्यपि देहाधीश वृहस्पति सुख स्थान पर बैठा है, और सुख स्थान पति बुद्ध देह के स्थान पर बैठा है इसके कारण से सुख प्राप्ती के साधन और सुख की वस्तुऐं आपको प्राप्त थी, और आत्मा को शान्ती थी, किन्तु देह के सुख साधनों में बाधा उत्पन्न होगई और लाभेश व्ययेश शनी के बारहवें स्थान पर बैठने से तथा सूर्य के बारहवें स्थान पर बैठने से खर्च की अधिकता के कारण थे और शनी की तीसरी नीच द्रष्टी धन स्थान पर पूर्ण पड़ रही है इसके कारण से धन संग्रह करने का योग दोनों प्रकार से ही बिगड़ गया। किन्तु धन का स्वामी मङ्गल भाग्येश होकर पराक्रम स्थान पर बैठा है, और मङ्गल अपने भाग्य भवन को देख रहा है, इसलिये पुरुषार्थ शक्ती के योग से तथा भाग्य शक्ती के योग से, धन आपको बराबर प्राप्त होता रहा, इसके अतिरिक्त गुरू, चन्द्रमा, शुक्र, यह तीनों ग्रह भी बहुत बलवान बैठे हैं, इसलिये आपकी गणना एक अच्छे भाग्यवानों में ही थी।

राय बहादुर डिप्टी गंगासहाय

जन्म सम्वत १९१४ भाद्रपद कृष्णा ११ गुरु

(यह बड़े सच्चे और ईमानदार थे)
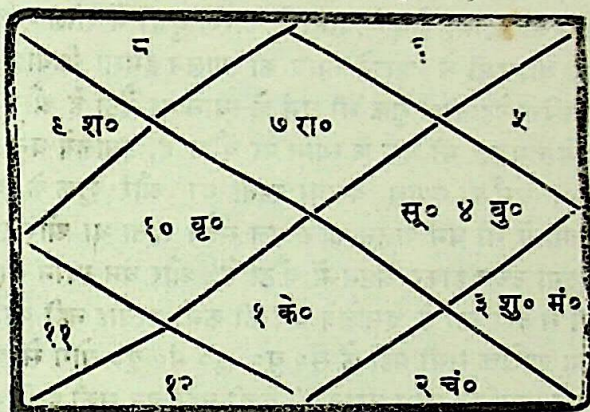
आपकी कुण्डली के अन्दर धर्म स्थान पती भाग्य का स्वामी, बुद्ध, राज्यस्थान पर बैठा हैं और लाभ स्थान का स्वामी सूर्य भी राज्यस्थान पर मित्र चेत्री बुद्ध के साथ बैठा है, यह दोनों ग्रहों का मिलकर राज्य स्थान में बैठना राजयोग कारक है और धर्मेश बुद्ध के दसम बैठने से, सचाई और ईमानदारी आपको खासतौर से प्राप्त थी, क्योंकि न्याय के सम्बन्ध समय में बुद्ध के कारण आपको धर्म का ख्याल रखकर कार्य करना पड़ता था इसके अतिरिक्त आपके तीसरे और छठे स्थान का स्वामी बृहस्पति परिश्रम और पुरुषार्थ का स्वामी होकर, चौथे स्थान पर नीच का बैठा है, और राज्य स्थान को तथा सूर्य बुद्ध को, उच्च द्रष्टी से देख, रहा है इसलिये अपने सुख शान्ती की प्राप्ती में, कमा और कष्ट सहन करना, हृदय को स्वीकार होता था, मगर न्याय को ऊँचा उठाना और सत्य का पालन करना जरूरी था, इसलिये

आपने अपने जीवन में न्याय और ईमानदारी को ही अपनाया दूसरे आपका शनी चतुर्थेश और पंचमेश होकर लग्न से तीसरे स्थान पर बैठा है, और अपनी तीसरी पूर्ण द्रष्टी से अपने बुद्धी स्थान को देख रहा है, इसलिये बुद्धी का बल विशेष था, और चौथे स्थान का स्वामी होने से, शनी के कारण बुद्धी में शील शांती का योग था, इसी से आपने न्याय का पालन हमेशा किया, इसके अतिरिक्त देहाधीश शुक्र भी धर्म के स्थान पर बैठा है और धनेश सप्तमेश मङ्गल भी धर्म के स्थान पर बैठा है, इसलिये धनोपार्जन में भी धर्म का ख्याल बराबर रहता था और शुक्र के कारण आत्मा में भी धर्म पालन का ख्याल सदैव रहता था और राज्येश चन्द्रमा उच्च होकर अष्टम में बैठा है, और धन स्थान को नीच द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये धन की कभी परवाह नही की, और प्रायः उपरोक्त सभी ग्रहों के सू० बु० शु० मं० वृ० योग से आपके अन्दर अनुचित लाभ उठाने की वृत्ती नहीं बन सकी इसी कारण से आपको ईमानदारी पर पूरा झुकाव था और तभी आपकी जनता में सच्चे और ईमानदार होने की भावना बनी हुई थी, लग्न का बैठा हुआ राहू, तथा सप्तम में बैठा हुआ केतू, यह देह और गृहस्थ के सम्बन्ध में कुछ परेशानियों के सूचक थे।

अतः आपकी कुण्डली में अधिकांश बलवान ग्रहों का झुकाव, धर्म और कर्म दोनों स्थानों की तरफ ही है, क्योंकि धर्म का स्वामी बुद्ध कर्म स्थान में बैठा है, और लाभ स्थान का स्वामी सूर्य धर्म स्थान में बैठा है, और धन स्थान का व दैनिक रोजगार के स्थान का स्वामी मङ्गल धर्म स्थान में बैठा है और देहाधीश आयू स्थान का स्वामी शुक्र भी धर्म स्थान में बैठा है बृहस्पति की कर्म स्थान पर उच्च द्रष्टी पड़ रही है, और बुद्धी घर के स्वामी शनी की भी, धर्म स्थान पर द्रष्टी पड़ रही है अतः यही सब कारणों से आपकी धार्मिक प्रवृत्ती बन गई थी।

श्री आदित्य नारायण ओझा

सम्वत् १८६३ फाल्गुन कृ० ६ रवौ

(यह बड़े दयालु, निर्भीक और उत्साही थे, इनके छः छोटे भाई इनके सामने ही मर गये)
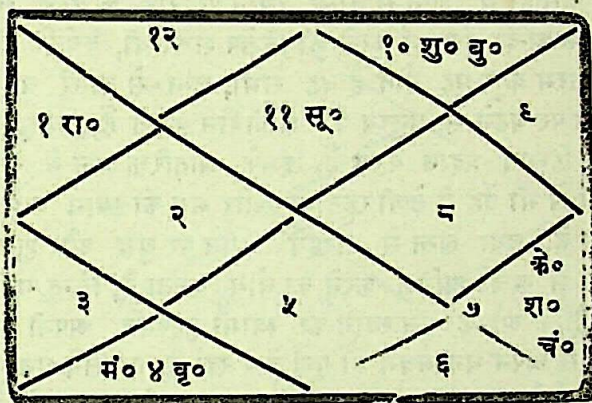
आपकी कुण्डली के अन्दर लग्न से तीसरे भाई के स्थान पर राहू बैठा है, और तीसरे स्थान का स्वामी मङ्गल, लग्न से छटे स्थान पर नीच का होकर बैठा है, इस हेतु आपके छै छोटे भाइयों की मृत्यु आपके सामने ही होगई, किन्तु आपका देहाधीश शनी, भाई के स्थान पति मङ्गल को पूरी द्रष्टी से देख रहा है और मङ्गल देहाधीश शनी को पूरी द्रष्टी से देख रहा है, यह योग भाइयों की वृद्धी चाहता है। इसी कारण भाइयों का बार २ जन्म हुआ, परन्तु राहू और मङ्गल के योग से बार २ भाइयों की मृत्यु होती चली गई। इसके अतिरिक्त आपका देहाधीश शनी धर्म स्थान पर उच्च का होकर बैठा है इसलिये आप बड़े दयालू थे यह दयालुता धर्म का एक विशेष अङ्ग है जिसका आप

खूब पालन करते थे, इसके अतिरिक्त, शत्रु स्थान पर उच्च का वृहस्पति होने से; एवं देहाधीश शनी की; शत्रु स्थान पर पूर्ण दसवीं द्रष्टी होने से, तथा शत्रु स्थान पती चन्द्रमा का देहाधीश के साथ बैठने से, और पराक्रमेश राज्येश मङ्गल का शत्रु स्थान पर बैठने से, आप बड़े निर्भीक थे और भय नहीं मानते थे, तथा बड़े उत्साही थे, लग्न से तीसरे स्थान पर राहू के बैठने से भी आपके अन्दर पुरुषार्थ करने की विशेष शक्ती थी, क्योंकि जितने भी गरम क्रूर ग्रह होते हैं वह सभी; लग्न से तीसरे या छठे स्थान पर बैठने से, मनुष्य को शक्तीवान बनाते हैं, एवं पुरुषार्थ और हिम्मत प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त लग्न में सूर्य के बैठने से भी देह में तेजी रहती है और भय को स्थान प्राप्त नहीं होता है, तथा लग्न से बारहवें स्थान पर बुद्ध और शुक्र के बैठने से खर्चा अधिक करने का योग वनता है, किन्तु गनीमत यह है कि आपके धन स्थान का स्वामी वृहस्पति, अपनी नवम द्रष्टी से अपने धन भवन को पूर्ण देख रहा है, इसलिये धन प्राप्ती होती रहने का भी कारण साथ में बना हुआ है अतः ऐसे योगों में मनुष्य के पास धन आता भी रहता है और खर्च भी होता रहता है परन्तु धन जुड़ने नही पाता है इसके अतिरिक्त बृहस्पति की पाँचवीं पूर्ण द्रष्टी राज्य स्थान पर पड़ रही है, इसके कारण मान प्रतिष्ठा इज्जत आवरू बनी रहने का योग है। आपके छै भाइयों की मृत्यु का कारण ही इस कुण्डली के छापने का प्रधान कारण है अतः इस प्रकर्ण में पुनः हम प्रकाश डालते हैं, कि प्रथम तो भाई के स्थान पर राहू निषेध बैठा है, दूसरे भाइयों के स्थान का स्वामी मङ्गल, नीच का भी है और छटे शत्रु स्थान पर भी बैठा है, इसके अतिरिक्त शनी की नीच द्रष्टी, भाइयों के स्थान पर पड़ रही है, और मृत्यु स्थान पती बुद्ध से भी भाइयों के स्थान पती मङ्गल का द्रष्टी सम्बन्ध है।

पं० बालगोविन्द ब्रह्मचारी

सम्वत् १८८७ आश्विन शु० २

(यह व्याकरण के विद्वान, बड़े क्रियानिष्ठ थे उन्होंने विवाह नहीं किया था)
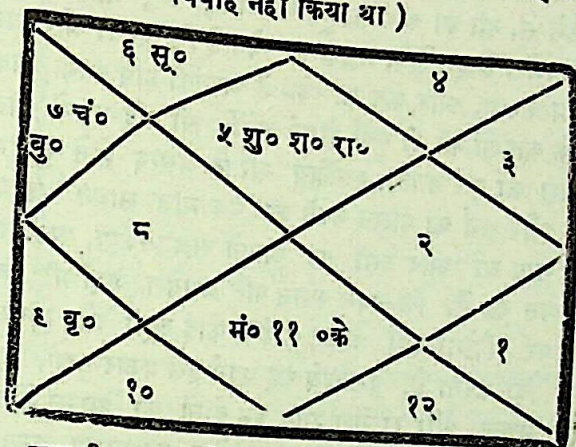
आपकी कुण्डली के अन्दर पंचम बुद्धी स्थान पर स्वक्षेत्री बृहस्पति बैठा है और अपनी पाँचवीं पूर्ण द्रष्टी से भाग्य स्थान को देख रहा है और नवम द्रष्टी से लग्न को पूर्ण देख रहा है अतः पंचम स्थान पर अपने घर में बृहस्पति के बैठने से संस्कृति आदि भाषाओं का ज्ञान हुआ, और व्याकरण के बड़े विद्वान हुए और धर्मेश मङ्गल सातवें स्थान पर बैठा है, तथा कर्मेश शुक्र तन स्थान पर बैठा है और दोनों का आपस में द्रष्टी सम्बन्ध हो रहा है तथा बुद्धी स्थान पति बृहस्पति की लग्न पर व शुक्र पर पूर्ण द्रष्टी पड़ रही है, अतः आप बड़े क्रिया निष्ठ थे, इसके अतिरिक्त सप्तम स्थान पर केतू के बैठने से स्त्री स्थान की हानि होती है किन्तु धर्मेश मङ्गल के सप्तम स्थान पर बैठने से, यह खूबी पैदा हुई कि स्त्री के अभाव को, शुभ रूप में परवर्तित कर दिया, और

इस हेतु आपने अपना विवाह ही नहीं किया और ब्रह्मचारी पद को प्राप्त किया, किसी भी दो क्रूर यानी गरम ग्रहों का एक स्थान पर बैठने से यह जरूर है कि इस स्थान में गड़बड़ हानि या परेशानी अवश्य होती है, इस हेतू मङ्गल और केतू के सप्तम स्थान में बैठने से, स्त्री का अभाव पूर्ण बन गया, किन्तु मङ्गल चतुर्थेश और नवमेश है इसलिये, मङ्गल का ध्येय है कि शांती और धर्म को प्राप्त करना, और केतू का ध्येय है अशांती प्राप्त करना, अतः दोनों के कारणों की ही पूर्ती होगई क्योंकि स्त्री यदि घर में होती तो क्लेश का रूप बनता, इसलिये स्त्री के अभाव होते हुए भी शान्ती और धर्म का पालन करने का एक मात्र साधन ब्रह्मचर्य ही रह गया था और उसी का आपने पालन किया, अतः यहाँ सिद्ध बात यह है, कि नवम स्थान पति भाग्येश जहाँ भी जिस स्थान पर बैठेगा वहाँ जरूर कोई न कोई खूबी और सुन्दरता अवश्य पैदा करता है, इसलिये यह कार्य इस प्रकार हुआ, दूसरे भाग्येश मङ्गल और राज्येश शुक्र इन दोनों का आपस में द्रष्टी सम्बन्ध हो रहा है यह भी एक राजयोग का कारण बनता है अतः ब्रह्मचर्य आश्रम में जो लोगों की सद्भावना और मान प्रतिष्ठा आपको प्राप्त हुई वही इनका राजयोग है और सद्बुद्धी का सहयोग गुरू के कारण बन गया जिसके कारण उच्च मार्ग का पालन आप कर सके। इसके अतिरिक्त शु० श० रा० अथवा शु० श० के० यह तीनों जिस किसी भी स्थान में मिलकर बैठ जाते हैं, उन स्थान में पहिले कुछ मुशीवतें आती हैं और बाद में उस स्थान में कोई न कोई उन्नति या विशेषता अवश्य पैदा होती हैं अतः आपके यही तीनां ग्रह तन स्थान में बैठे हुए हैं इसलिये ब्रह्मचर्य की प्रथम अवस्था में प्रथम तो स्वाभाविक ही मनुष्य को अपनी इन्द्रियों पर काबू करने में कष्ट शहन करना पड़ता है बाद में इन्हीं ग्रहां के प्रभाव से ब्रह्मचारी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

प्रसिद्ध दानशीला रानी वड़हर

जन्म सं० १९१० भाद्रपद शुक्ला ८ शनौ

(यह १८ वर्ष की अवस्था के करीब ही विधवा हो गई थी)
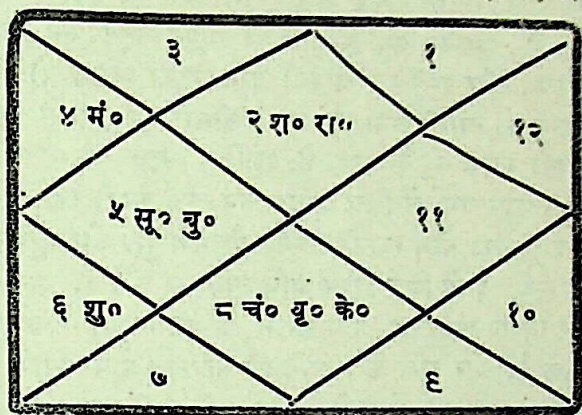
आपकी कुण्डली के अन्दर लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी चन्द्रमा नीच राशी का होकर पति भवन में बैठा है, और पति भवन का स्वामी मङ्गल व्ययेश होकर नीच राशी में तीसरे स्थान पर बैठा है, अतः पराक्रम स्थान का सम्बन्ध पति स्थान से परस्पर नीच राशी में हुआ है, और इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के साथ केतू के बैठने से चंद्र ग्रहण योग बन जाता है, अतः मङ्गल, चंद्र और केतू के योग से, पती विनाश का प्रबल योग बन गया। और आपको करीबन १८ वर्ष की अवस्था में ही वैधव्य प्राप्त हो गया, इसके अतिरिक्त आपका बृहस्पति भी पति के स्थान पर अष्टमेश और लाभेश होकर बैठा है, इसलिये अष्टमेश मृत्यु स्थान का स्वामी होने से यह भी पती स्थान को घातक है किन्तु लाभेश होकर लाभ स्थान को पूर्ण देख रहा है इसलिये पती स्थान से धन लाभ का सम्बन्ध बराबर रखता है, और भाग्येश, राज्येश

शनी, धर्म स्थान का स्वामी होकर देह के स्थान में बैठा है, और अपनी दसवी पूर्ण द्रष्टी से, राज्य और कर्म स्थान को देख रहा है इस हेतु आपकी राज शक्ती प्राप्त रही, और सप्तमेश व्यऐश मङ्गल खर्च स्थान का स्वामी होकर धर्म स्थान को उच्च द्रष्टी से पूर्ण देख रहा है, इसलिये धर्म के मार्ग में आपने बहुत धन हमेशा खर्च किया, और इसी हेतु आपकी दानशीलता प्रसिद्ध थी और धर्म स्थान का स्वामी शनी भी अपनी तीसरी पूर्ण द्रष्टी से खर्च स्थान पती मङ्गल को देख रहा है, इसलिये मङ्गल की शक्ती के कारण ही आप धर्म के लिये अधिक धन खर्च करती रही, इसके अतिरिक्त आपका चौथे स्थान,पर धनेश पंचमेश बुद्ध और भूमिपती स्वक्षेत्री सूर्य, दोनों मित्र होकर भूमि स्थान पर बैठे हैं, इसलिये भूमि पर विशेष अधिकार प्राप्त कराने का साधन भी राजशक्ती का सूचक है, और सुख के साधनों की महानता प्राप्त कराने का सूचक है, तथा बुद्ध के योग से अधिक धन शक्ती प्राप्त होने का कारण है तथा संतान के स्थान पर नीच राशी का शुक्र होने से संतान सम्बन्ध भी खराब कर दिया, किन्तु लाभ स्थान को शुक्र उच्च द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये लाभ की अधिकता आपको विशेष प्राप्त थी, अतः इस कुण्डली के अन्दर श० सू० बु० तीन ग्रह राजयोग कारक है, और बृहस्पति शुक्र लाभ योग के लिये श्रेष्ठ है, किन्तु दूसरी ओर कुछ निषेध हैं और मङ्गल. चन्द्र, केतू, यह तीनों पती स्थान के कष्ट के सूचक हैं, जिसका दुष्परिणाम समस्त जीवन भर भोगना पड़ा, और राहू शनी के साथ होने से शुभ हैं क्योंकि शनी राजकारक है, और शनी राहू आपस में मित्र हैं। इसलिये राजस्थान और भाग्यस्थान को, केवल शनी नेही उत्तम बना दिया, और सू० बु० दोनों ग्रहों का सिंह राशी पर बलवान होकर चौथे स्थान पर बैठने से भूमि का अधिकार और सुख शक्ती आपको प्राप्त हुई इसीसे आप रानी बनीं।

ला० श्यामसुन्दर जी अग्रवाल

एस० एस० बृजवासी एण्ड सन्स मथुरा
चित्रों के प्रसिद्ध व्यापारी
सम्वत १९५० फाल्गुन कृ० ३, गुरूवार
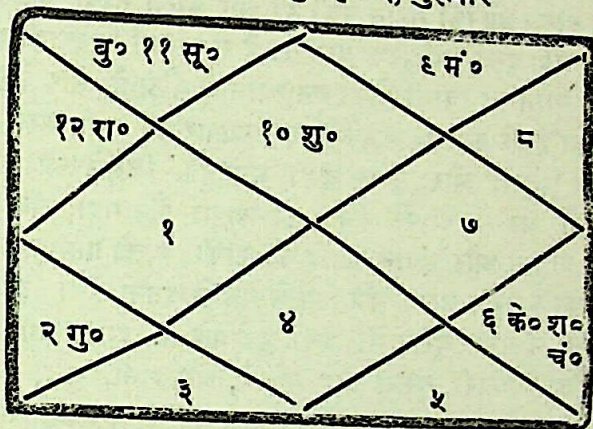
आपका मङ्गल, चतुर्थेश और लाभेश होकर बारहवें स्थान पर बैठा है, इसलिये प्रथम आपको आमदनी और सुख का बड़ा घाटा रहा और आपका जीवन प्रथम बहुत गरीबी का था अतः आमदनी की प्राप्ती के हेतु आपको अपना स्थान छोड़कर मथुरा से दूर, किराँची जाना पड़ा, यह सब कार्य मङ्गल की कृपा से हुआ; और बारहवें स्थान पर लाभेश के बैठने से, यह निश्चित है कि बाहरी दूसरे स्थानों पर ही आमदनी का साधन अच्छा बनता है। इसके अतिरिक्त आपका भाग्येश, व्यऐश बुद्ध धन स्थान में बैठा है, और धनेश, लग्नेश, शनी भाग्य स्थान पर बैठा है, अतः धन स्थान के स्वामी का, और भाग्य स्थान के स्वामी का, आपस में स्थान का सम्बन्ध हो गया है, इसलिये यह योग बड़े धनवान होने का बन गया है, और साथ में दैनिक रोजगार

का स्वामी चन्द्रमा भी भाग्य स्थान पर, लग्नेश धनेश के साथ बैठा है अतः भाग्य और धर्म के योग से दैनिक रोजगार की वृद्धी का योग बना जिसके कारण आपने धार्मिक चित्रों का व्यापार प्रारम्भ किया, और भाग्य ने बड़ा सहयोग दिया जिसके फल स्वरूप आपकी महान वृद्धी हुई और लाखों रुपया बढ़ता ही चला गया इसके अतिरिक्त बात यह है राजस्थान का स्वामी शुक्र, बुद्धी स्थान का स्वामी होकर तन स्थान में बैठा है, और केन्द्र में अकेला इसके कारण, आपके अन्दर व्यापार की उन्नति करने की महान चतुराई और कुशल बुद्धी प्राप्त हुई, जिसके फल स्वरूप दुनियाँ भर में आपके चित्रों का व्यापार फैल गया, और धन, मान प्रतिष्ठा और संतान आदि की काफी शक्ती प्राप्त हुई, तथा आपका व्यापार भाग्य और कर्म के बल से इतना ऊँचा उठा कि भारत में तथा यूरोप में, इनके मुकाबले में, इनका सा चित्र विक्रेता व्यापारी दूसरा कोई नहीं है, और शनी, बुद्ध, चन्द्र, शुक्र इन चार ग्रहों के कारणों से आप बड़े भाग्यशाली साबित हुए, और आपका राहू लग्न से तीसरे स्थान पर बैठा है, इसके कारण आपका पुरुषार्थ बहुत सफल हुआ और प्रभाव प्राप्त हुआ अष्टम स्थान पति सूर्य धन भवन में बैठा है और अपनी सातवीं द्रष्टी से अपने आयू स्थान को देख रहा है, जिसके कारण आपको आयू अच्छी प्राप्त हुई और जीवन की दिनचर्या बड़े अमीरी ढङ्ग से व्यतीत होरही है किन्तु इस सूर्य के कारण कभी २ आपको धन की हानि हो जाया करती है, बुद्धी स्थान पर बृहस्पति तीसरे और बारहवें स्थान के स्वामी होकर बैठे हैं, इसलिये बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से उन्नति प्राप्त करने की अच्छी सूक्ष्म शक्ती आपको प्राप्त रहती है, केतू के नवम स्थान पर बैठने से, कभी २ कुछ चितायें तथा अशांती के कारण भी बनते रहते हैं। और अन्य अधिकांश सभी ग्रह आपके उत्तम बैठे हैं।

बाबू मंगल जी

संमत् १६३५ पौष पूर्णमा बुध

यह एक बड़े जमींदार के पुत्र बड़े निर्बुद्धी थे।
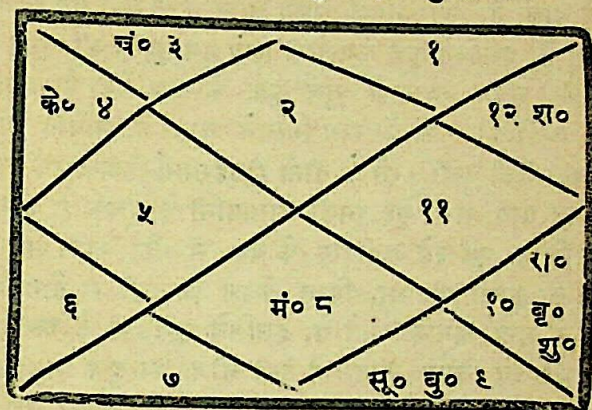
आपकी कुण्डली के अन्दर निर्बुद्धता का सबसे प्रमुख योग यह है, कि बुद्धी स्थान का स्वामी बुद्ध लग्न से आठवे मृत्यु स्थान पर बैठा है, और फिर सूर्य से अस्त हो गया है, और अंशवल भी नही है, अतः बुद्ध बुद्धी का स्वामी है, और विवेक का भी स्वामी है, इसलिये बुद्धी और विवेक का स्वामी जब मृत्यु स्थान में बैठकर सूर्य से अस्त हो गया और अंश वल भी नहीं हैं, तो बुद्धी और विवेक का सर्वथा नाश हो गया। इसलिये यह व्यक्ति एक बड़े जमीदार का लड़का होते हुये भी बड़े निर्बुद्धी थे। दूसरी तरफ आपकी कुण्डली में, भाग्य का और राज्य का स्वामी शनी, लाभ स्थान में बैठा है, तथा लाभ स्थान का और अष्टम स्थान का स्वामी बृहस्पति, भाग्य स्थान में नीच का होकर बैठा हैं, और लग्नेश शुक्र षस्टेश होकर भाग्य

स्थान में बैठा है, यह तीन ग्रहों का योग भाग्यवानी का सूचक है, और पराक्रमेश चन्द्रमा धन स्थान में बैठा है, यह धन की शक्ती प्रदान करने का द्योतक है, तीसरे स्थान पर केतु का बैठना भी प्रभाव शक्ती का दाता है तथा भाई बहिनों के सुख को नष्ट करने वाला है, और मंगल सप्तम स्थान में स्वक्षेत्री बैठे हैं, किन्तु व्यऐश हैं, इसलिये कुछ कमजोरी लिये हुये गृहस्थ की शक्ती प्राप्त थी, राहू नवम स्थान में गुरू शुक्र के साथ बैठा है, इसलिये राहू उन्हीं की राय में राय मिलाने वाला है, अर्थात आपकी भाग्यवानीकी वृद्धी करने के तीनों हीगृहसमर्थनहैअत:सूर्य बुद्धको छोड़कर प्रायः सभी गृह इनकी भाग्यवानी के सूचक हैं, इसलिये जन्म लिया एक बड़े जमींदार के घर में और खान पान रहन सहन का काफी सुख था, किन्तु केवल एक बुद्धी का योग बिगड़ जाने से मूर्ख समझे जाते थे, इसलिये कुण्डली के अन्दर जो कोई भी ग्रह बिगड़ जाता है उसी चीज का दुख मनुष्य को भोगना पड़ता है, और जो ग्रह बन जाता है, उसका सुख भी अवश्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सूर्य और बुद्ध का अष्टम स्थान में बैठना एक तरफ उपरोक्त कथानानुसार बड़ा दोषी है, तो दूसरी तरफ यही सूर्य बुद्ध अष्टम स्थान में बैठकर, आयू की वृद्धी करते हैं, और जीवन की दिन चर्या व्यतीत करने में, बड़ी भारी शक्ती और सुख प्रदान करते हैं, और चन्द्रमा तथा शनी, धन की शक्ती प्रदान करने में बड़े सहायक हैं, अतः वुद्धी को छोड़कर प्रायः सभी सुख आपको प्राप्त थे।

———

ला० बाँकेलाल बजाज मथुरा

जन्म संवत् १६६६ मार्ग शीर्ष कृष्णा १५ रविवार

आप गरीब परिवार के लड़के थे गोद जाने से धनाढ्य बन गये।
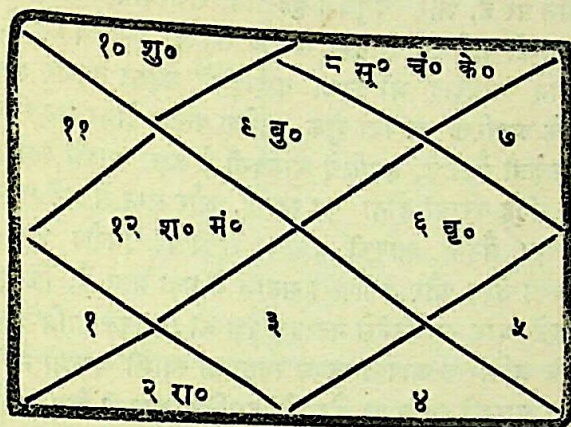
आपकी कुण्डली के अन्दर लग्न से चौथे मातृ स्थान पर शनी और मंगल का योग शत्रु भाव में है, जिसके अन्दर मंगल व्यऐश भी है, यद्यपि मङ्गल और शनी इन दो ग्रहों का किसी भी एक स्थान पर बैठना, उस स्थान की हानि का स्वभाविक ही सूचक है, किन्तु यदि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह यदि छटे आठवे, बारहवे, इन तीन स्थानों में से किसी का भी स्वामी होगा, तब तो निश्चय ही उस स्थान पर कोई न कोई संकट अवश्य आयगा, अतः इसी कारण से आपका मातृ स्थान छूटा और आप मथुरा शहर में एक सज्जन व्यक्ति की गोद आये, आपकी कुण्डली में, लग्नेश, चतुर्थेश, बृहस्पति, राजस्थान में बैठा है, और राज्येश सप्तमेश बुद्ध लग्न में बैठा है, यह सम्बन्ध

तन भाव से राज स्थान का परस्पर बन गया है इसीलिये यह राज योग माना जायगा, अतः आपके इस योग से कपड़े के व्यापार की महान तरक्की हुई, और आप शहर में सबसे बड़े छपे कपड़े के व्यापारी बन गये, आपके यहां काफी नौकर चाकर सवारी मान प्रतिष्ठा आदि सामिग्रियाँ मौजूद हैं, और धनेश शनी चौथे स्थान पर है, और चतुर्थेश बृहस्पति राजस्थान में बैठकर अपने स्थान को पूर्ण सातवीं द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये आपके पास मकान जायदाद भी काफी तादाद में बनकर तय्यार हो गये, इसके अतरिक्त आपका शुक्र लाभेश षस्टेश होकर धन स्थान में मित्रक्षेत्री बैठा है, इसलिये आमदनी के द्वारा आपके यहाँ काफी धन संगृह बराबर होता जा रहा है, और लग्न से छटे स्थान पर राहू का बैठना आपकी प्रभाव शक्ती का विशेष सूचक है, आपका वैश्य और व्यापारी समाज में बड़ा मान है, किन्तु राहू के छटे स्थान पर बैठनेसे ननसाल पक्ष की बिलकुल हानि होगई। इसके अतिरिक्त आपका अष्टम स्थान का स्वामी चन्द्रमा नीच का होकर बारहवे स्थान पर बैठा है, इसलिये आपकी दिन चर्या एवं रहन सहनबड़े ही साधारण ढंग की हैं, और भाग्येश सूर्य भी लग्नसे,बारहवे स्थान पर बैठा है,इसके कारण आपकेभाग्य का उदय दूसरे स्थान पर आकर हुआ, यदि सूर्य और चन्द्र बारहवे स्थान पर केतु के साथ न होते तो, इनका प्रथम जीवन महान गरीबी का न होता और न दूसरे स्थान पर गोद जाने के लिये बाध्य ही होना पड़ता, बल्कि स्वयं अपने ही स्थान पर अमीरी को प्राप्त करते, चन्द्रमा मन की गति का स्वामी होकर धर्मेश सूर्य केसाथ बैठा है, इसलिये मन में धर्मशाला बनवाने की इच्छा तो हो रही है, किन्तु बारहवे स्थान पर निर्बल हो जाने के कारण से धर्मशाला का प्रारम्भ कतई नहीं हो पाया है, किन्तु थोड़ा बहुत धर्मखाता तो प्रायः हमेशा ही आपका चलता रहता है।

प्रसिद्ध कथावाचक पं० राधेश्याम जी बरेली

जन्म संवत १६४७ चन्द्रवार कार्तिक शुक्ला १३

यह पहली कुण्डली गलत है————यह दूसरी सही है
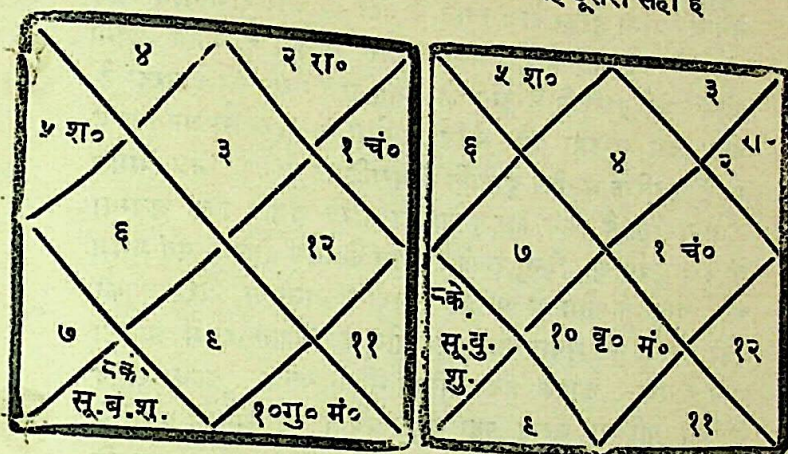
आपकी कुण्डली प्रथम तो मिथुन लग्न की बनी हुई थी, किन्तु यह गलत साबित हुई, क्योंकि ऐसे प्रसिद्ध और विद्वान व्यक्ति की कुण्डली के चारों केन्द्र और दोनों त्रिकोंण यह सभी ग्रहों से सून्य नहीं हो सकते हैं, कुण्डली के प्रमुख छैः घर हैं, जो कि सबके सब ग्रहों से सून्य है, ऐसी कुण्डली वाला व्यक्ति यदि सम्राट के घर में भी जन्म लेले तो भी पतन की ओर अवश्य जायगा, किन्तु उन्नति और सुयश कभी प्राप्त नहीं कर सकता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण इसी पुस्तक के अन्दर टीपू सुल्तान की कुण्डली में देखिये, बल्कि उसके त्रिकोंण में एक ग्रह चन्द्रमा फिर भी बैठा है, किन्तु आपकी में एक भी ग्रह नही है, अस्तु आपकी कुण्डली जन्म के समय में टाइम की ठीक व्यवस्था न होने की वजह से लग्न गलत बन गई थी, अतः आपकी वर्तमान

मिथुन लग्न के कुछ ही समय बाद कर्क लग्न आई, और ठीक उसी समय में आपका जन्म हुआ था, जिसके अन्दर केन्द्र और त्रिकोणों में ! सात ग्रह बैठे है, आपका चन्द्रमा देह का और मनका स्वामी होकर राज स्थान में बैठा है, और राजस्थान पति मंगल उच्च का होकर सप्तम स्थान में बैठा है, जोकि अपनी चौथी पूर्ण द्रष्टी से चन्द्रमा को तथा, राज स्थान को देखरहा है, अतः इस चन्द्रमा और मंगल के योग से, राजयोग बनगया है इसके अतरिक्त भाग्येश वृहस्पति नीचराशिगत होकर, मित्र मंगल के साथ बैठा है इसके कारण आपका भाग्य यद्यपि प्रथम अवस्था में बड़ा दुर्बल था, किन्तु राज्येश मंगल के साथ होने से एवं मंगल और चन्द्र के योग से आपका राजयोग बनगया और आपको बड़ी उन्नति, एवं सुयश प्राप्त हुआ और, देश देशान्तरों में आपका नाम होगया– आपके प्रथम जीवन में जो जगह २ कथा आदि के लिये परिश्रम करना पड़ा था, अथवा जो अनेको ग्रंथों के लिखने में जो आपको परिश्रम सहन करना पड़ा था, वह वृहस्पति के नीच होने का फल तथा वृहस्पति के छटे स्थान के स्वामी होने का फल था। किन्तु वृहस्पति तन भाव को उच्च द्रष्टी से देख रहे हैं, इसलिये जो कष्ट अथवा परिश्रम करना पड़ा था, उसका परिणाम उच्च का ही, सावित हुआ, इसके अतरिक्त प्रश्न यह है। कि आप काव्य की रचना की ओर ही क्यों झुके, इसका उत्तर यह है, कि आपके बुद्धी स्थान पर चार ग्रह बैठे हैं, और बुद्धी स्थान का स्वामी मंगल उच्च का होकर केन्द्र में बैठकर लग्नेश चन्द्रमा को पूर्ण देख रहा है, अतः तन का मन का स्वामी चन्द्रमा है और बुद्धी का स्वामी तथा कर्म का स्वामी मंगल है, और भाग्य का तथा परिश्रम का और हृदय का स्वामी वृहस्पति है इनका सबका संबंध होना एक तीक्ष्ण बुद्धवान और दूरदर्शी तथा तत्व ज्ञानी सुलेखक बनाता है। और चतुर्थेश लाभेश

शुक्र का वुद्धी स्थान पर वैठकर कविता और कंठ की शक्ती से लाभोन्नति प्रदान करने का योग वनाते है, तथा सूर्य धन स्थान के स्वामी होकर वुद्धी स्थान पर वैठकर विद्या और वांणी की शक्ती से धन की शक्ती प्राप्त करते हैं, और वुद्ध पराक्रम औरव्ययस्थान के स्वामी होकर वुद्धी स्थान पर वैठे हैं, यह विवेक और वाहुवल शक्ती के द्वारा- अर्थात लेखन शक्ती के द्वारा तथा, वाहरी स्थानो के संवंध की सहयोगिक शक्ती प्रदान करते हैं, तथा वुद्धी स्थान पर वैठे हुये, केतू भी वुद्धीकेआन्तरिक विचारों को तथा अन्य ग्रहों के द्वारा आई हुई भावनाओं को, द्रढ़ वनाने में सहयोगिक शक्ती प्रदान करते हैं, और सभी गृहों का वुद्धी पर प्रकाश और अधिक वजन पड़ने से जो अधिक काव्य रचना करने की शक्ती प्राप्त हुई उस शक्ती को केतु ने वुद्धी के कठिन परिश्रम और आन्तरिक धैर्य से सफल वनाने का सहयोग प्रदान किया इन सभी कारणों से आप एक महान कवि और महान कथा वाचक हुये, और भाग्येश, राज्येश, लग्नेश, पंचमेश, गुरु, मङ्गल, चन्द्र, इनके केन्द्र के अन्दर सहयोग होने से आपको वड़ी प्रसिद्धता, सफलता, मान, सुयश, कीर्ती, इत्यादि वस्तुयें प्राप्त हुई और आपके लाभ स्थान पर शुक्र, सूर्य, वुद्ध, शनी, वृहस्पति, इन पाँच गृहों की पूर्ण द्रष्टी होने से आपने महान धन राशि पैदा की अव तक आपके सवा करोड़ १२५०००००, रामायण के प्रकाशन और लगभग १२ नाटक प्रकाशन होकर सफल हो चुके हैं, और आयू स्थान का स्वामी शनी, धन भवन में वैठकर अपनी सातवीं पूर्ण द्रष्टी से, आयू स्थान को देख रहे हैं, इसलिये आयू भी आपकी वहुत सुन्दर प्राप्त हुई, और जीवन की दिनचर्या वड़ी अमीरी ढङ्ग से व्यतीत हुई, और शनी की तीसरी पूर्ण द्रष्टी लग्न से चौथे सुख स्थान पर, उच्च रूप से पड़ रही है, इसलिये आपके सुख के साधन तथा मकान जायदाद की शक्ती भी आपको खूव प्राप्त

रही, इसके अतरिक्त आपकी पहली कुण्डली में बुद्धी स्थान पति शुक्र छटे घर में तीन गृहों के साथ बैठा है, यह बुद्धी विद्या की हीनता का योग उत्पन्न करता है, और राज्येश सप्तमेश वृहस्पति नीच के होकर अष्टम स्थान में बैठे हैं, यह सर्वथा मान हीन और व्यापार हींनता का योग बनाते हैं, और लग्नेश सुखेश बुद्ध छटे स्थान पर बैठे हैं, यह दुर्बल देह और सुख हीन जोवन का योग बनाते हैं, क्योंकि देह आपका पतला नहीं है, बल्कि स्थूल है, और आप मूर्ख नहीं है, बल्कि महान पंडित हैं, और आपका जीवन अपमानित नहीं है, बल्कि महामान्य हैं, इसके अतरिक्त आपके चारों केन्द्र और दोनों त्रिकोण गृहों से सून्य होने के नाते संसार को आपकी जानकारी किंचित मात्र भी नहीं हो सकती थी, किन्तु आपको समस्त संसार भली प्रकार जान चुका है, इसलिये आपके जीवन की समस्त उत्तम घटनायें कर्क लग्न से ही मिलान खा रही है, इसलिये यही सही है। अतः इन सभी कारणों के आधार से आपका जन्म कर्क लग्न में होना सिद्ध होता है, मिथुन लग्न में नहीं,अतः पाठकों को चाहिये कि जन्म के समय में घड़ियों की गड़बड़ी से या स्त्रीयों की असावधानता से या सूर्य टाइम और लोकल टाइम की गड़बड़ी से या गर्भ से बच्चे के निकलने के समय से लेकर भूमि तक बच्चे के आने में जो देर लगती है उस समय की गड़बड़ी से इत्यादि २ समय की गड़बड़ियों से गलत बनी हुई कुण्डलियों को सही करने का सबसे उत्तम एक मात्र साधन यही है कि जीवन की घटनाओं से मिलान करके देख लिया जाय अतः यह हमारी भृगुसहिंता पद्धति के द्वाराबड़ी आसानी के साथ गलत बनी हुई कुण्डलियाँ ठीक की जा सकती हैं।

———

मथुरा के प्रसिध्द पहलवान मोहन,

(पुत्र चन्द्रसैन पहलवान)

जन्म संवत् १९८८ आसौज कृष्णा ११ बुद्धवार

प्रथम कुण्डली जो गलत है — दूसरी कुण्डली जो सही है
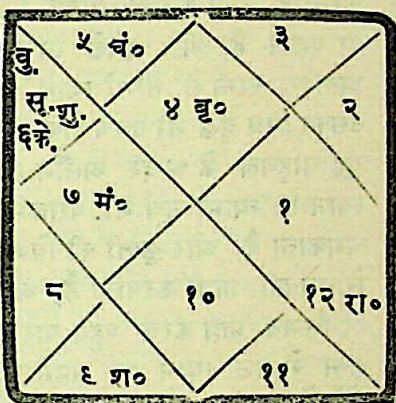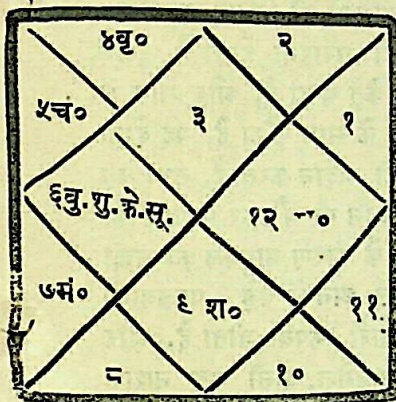
आपकी प्रथम गलत कुण्डली के अन्दर जो जैसे गृह बैठे हैं, उनके द्वारा आप इतने बड़े प्रसिद्ध पहलवान कदापि नहीं हो सकते थे, क्योंकि पहलवान और बहादुर तथा विजयताओं की कुण्डली में लग्न का पहिला स्थान, और तीसरा स्थान, तथा छटा स्थान, तीनों ही स्थान बलवान होते हैं, तथा तीसरे और छटे स्थान पर कोई न कोई क्रूर गृह बलवान होकर अवश्य बैठता है, क्योंकि पहिला स्थान (तन) तीसरा (पराक्रम) छटा (शत्रु) का हैं, अतः देह और पौरुप तथा शत्रु दमन की शक्ती, यह तीनों ही बल, जब विशेष होते हैं, तभी उस व्यक्ति को अनेकानेक स्थानों पर विजय प्राप्त होती रहती है। इसलिये मोहन पहलवान की पहिली मिथुन लग्न के अंदर यह तीनों ही घर बलवान नहीं है,

और न कोई क्रूर ग्रह तीसरे छटे स्थान पर ही बैठा है, अपितु दूसरी कर्क लग्न में, यह तीनों ही घर वलवान हैं, क्योंकि तन स्थान में तो भाग्य और शत्रु स्थान का स्वामी वृहस्पति उच्च का होकर बैठा है, और अपनी पूर्ण नवम द्रष्टी से भाग्य स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पक्ष से विजय कराकर भाग्योन्नति करता है, तथा हजारों लाखों आदमियों की निगाह इनकी देह पर पड़ती है, और इनके भाग्य की सराहना होती हैं, इसके अतरिक्त लग्न से तीसरे स्थान पर केतु बैठा है, और साथ में उसका मित्र वुद्ध भी उच्च होकर केतु के साथ बैठा है, यह दोनों गृह वाहुवल के अन्दर असीम शक्ती प्रदान करते हैं, तथा धन स्थान का स्वामी सूर्य भी; पराक्रम स्थान पर बैठकर पराक्रम को चमकाता है, और कुस्ती की विजय के कारण बाहुबल की शक्ती से धन की प्राप्ती करवाता है, आपने अनेकों बड़े २ पहलवानों पर विजय प्राप्त करके वहुत वार हजारों रुपया जीता है, और लग्न से छटे स्थान पर सप्तमेश, अष्टमेश, शनी शत्रु नाशक बैठे हैं, इसके कारण आपने वहुत समय तक ब्रह्मचर्य पालन करके पहलवानी की. और अपने संयम की शक्ती से जीवन की दिनचर्या पर काबू रखा, और शनी के इन सब कार्यों के कारणों से, शत्रु दमन करने की महान शक्ती आपको प्राप्त हुई, जिसके फल स्वरूप प्रायः हमेशा ही आपको शत्रु पर अर्थात विपक्षी (पहलवान) पर विजय प्राप्त होती रहेगी और जबसे आपने मैदानी कुश्ती लड़ना प्रारम्भ किया, तव से आप कभी भी परास्त नहीं हुये, शत्रु स्थान पर बैठा हुआ शनी अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से अपने अष्टम स्थान को देख रहा है, इसलिये शत्रु पर विजय पाकर जीवन को उल्लास मिलता है, और यही शनी की तीसरी द्रष्टी के कारण आयू की वृद्धीं होती है। तथा जीवन निर्वाह करने की शक्ती भी शत्रु स्थान से ही अर्थात दूसरे

पहलवानों को परास्त करने से ही प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त राज्येश मङ्गल चौथे मातृ स्थान पर बैठा है, और अपनी सातवीं पूर्ण द्रष्टी से राज स्थान को देख रहा है, अतः इस मङ्गल के कारण पिता स्थान की और नाम की अच्छी सहयोग शक्ती मिली तथा माता की भी विशेष शक्ती मिली, तथा घर का मकान अच्छा मिला, और मान प्रतिष्ठा राज समाज में काफी प्राप्त हुई, और मङ्गल की चौथी पूर्ण द्रष्टी स्त्री स्थान पर उच्च रूप से पड़ रही है, इसलिये स्त्री व ससुराल भी अच्छी प्राप्त हुई, तथा शुक्र तीसरे स्थान पर नीच के बैठे हैं, किन्तु भाग्य स्थान को उच्च द्रष्टी से देख रहे हैं, इसके कारण जब किसी भी पहलवान से कुश्ती होती है तो प्रथम स्वभाविक रूप से ही कुछ भय या कमजोरी सी महसूस होती है, लेकिन जब अन्य ग्रहों के कारणों से विजय प्राप्त हो जाती है, तब भाग्य पर आनन्द अनुभव होने लगता है, यह शुक्र का गुण है, इसके अतिरिक्त भाग्य स्थान पर राहू बैठा है इसलिये प्रथम तो भाग्य पर बड़ी मुसीबतें आई किन्तु भाग्य का स्वामी बृहस्पति भाग्य को तथा राहू को पूर्ण नवम द्रष्टी से देख रहा है,इसलिये फिर आप बड़े भारी भाग्यवान प्रसिद्ध हो गये, और सदैव ही हजारों आदमियों में जय २ कार, प्राप्त हो जाता है, तथा लग्नेश चन्द्र देह का स्वामी होकर तथा मन का भी स्वामी होकर धन स्थान में बैठा है, इसलिये तन से व मन से कुश्ती दाव पेच लगाकर जीतने से धन की प्राप्ती होती रहती है, लेकिन चन्द्रमा सून्यअंश का है, इसलिये धन जितनी तादाद में मिलता है, उतनी तादाद में ठहरता नही है, इसके अतिरिक्त जब सन १९५५ और १९५६ की सालों में बृहस्पति कर्क राशी पर आये, तब इस दौरान में आपने बड़ी २ दूर २ तक कुश्तियाँ मारी और बड़ा यश और नाम प्राप्त किया।

———

पं० दौलतराम जोशी, गधापाड़ा आगरा

इनके छै शादियां हुईं, जन्म संवत १९६८ जेठ वदी ११ बुद्धवार
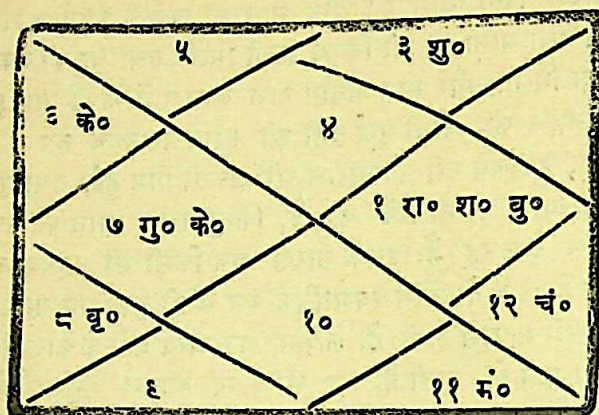
आपकी कुण्डली में सर्व प्रथम यह ध्यान देने योग्य बात है, कि आपकी छै शादियाँ हुई हैं, इसका मूल कारण है शनी, क्य कि शनी स्त्री स्थान का स्वामी है, तथा मृत्यु स्थान का स्वामी है. इसलिये प्रथम दोष तो यह है कि स्त्री स्थान का स्वामी अष्टम स्थान पति है, दूसरा दोष यह है कि शनी नीच राशि में बैठे हैं, तीसरा दोष यह है, कि बारहवे स्थान पति बुद्ध के साथ बैठे हैं, चौथा दोष यह है, कि शनी के साथ राहू है, शत्रु स्थान पति, वृहस्पति से भी द्रष्टी संबंध हो रहा है, इसलिये चार स्त्रीयां तो आपकी मर गईं, और एक स्त्री का परित्याग कर दिया था, और अब छटवीं स्त्री आपके यहां मौजूद है। अतः इतनी स्त्रीयों का विछोह तो हुआ इन पूर्व ग्रहों के योग से, किन्तु बार २ स्त्रियों की प्राप्ती किस कारण से हुई, इसका मुख्य कारण यह है कि स्त्री स्थान का स्वामी शनी, अपनी दसवीं पूर्ण द्रष्टी से अपने स्त्री

स्थान को देख रहा है, इसलिये स्त्री स्थान की पूर्ती बार २ करनी पड़ी, इसके अतरिक्त दूसरी बात यह है कि भाग्य स्थान पती वृहस्पति से शनी ने परस्पर द्रष्टी संबंध कर रखा है, इस कारण भी स्त्री प्राप्ती के संबंध में भाग्य का भी सहयोग बार २ प्राप्त होता रहा। और शनी के नीच होने से, तथा अष्टमेश होने से. तथा व्ययेश बुद्ध का संग करने से, स्त्री स्थान में बार २ हानियाँ प्राप्त हुई, इसके अतरिक्त आपके पिता स्थान का स्वामी मङ्गल, मृत्यु स्थान अष्टम में बैठा है, और अष्टम स्थान पती शनी, पिता स्थान में नीच का होकर बैठा है, और राहू भी पिता स्थान में बैठा है, इसलिये बचपन में ही आपके पिता की मृत्यु हो गई, और माताके स्थानका स्वामी शुक्र बारहवे स्थानमें बैठा है, और माता के स्थान में केतु तथा वृहस्पति बैठे हैं. वृहस्पति भाग्येश और रोगेश हैं, इसलिये माता का कुछ थोड़े समय तक सुख प्राप्त हुआ, इसके अतरिक्त आपका पंचम स्थान का स्वामी मङ्गल अष्टम स्थान में बैठा है, इसलिये संतान पक्ष में प्रथम तो बहुतसी हानियां हुई, किंतु गुरू पंचममें बैठा है अतः वृद्धा अवस्था में कोई लड़कियाँ हैं, तथा एक पुत्र की प्राप्ती हुई, यह मङ्गल संतान पक्ष से सुख ठीक तौर से बनने नहीं देता है, इसके अतरिक्त आपका धन स्थान का स्वामी सूर्य लाभ स्थान में बैठा है, और बुद्धी स्थान का स्वामी मङ्गल अपनी चौथी पूर्ण द्रष्टी से सूर्य को देख रहा है, इसलिए आपके यहाँ ज्योतिष के जरिये खूब पैदा होती है किन्तु विद्या स्थान का स्वामी अष्टम स्थान में बैठा है, इसलिये आपके यहाँ प्रायः चोरी के संबंध में ही जनता पूछताछ करने को अधिक आती है, आपकी आम पंडताई का मुख्य विषय नहीं है, और लाभ स्थान का स्वामी शुक्र बारहवें स्थान खर्च में बैठा है, इसलिये आप जो कुछ भी पैदा करते हैं वह सब खर्च कर देते हैं लग्नेश चन्द्र भाग्य स्थान पर बैठा है, इसलिये आप बड़ी

भाग्यवानी भोगते हैं, और, भाग्यवान समझे जाते हैं, तथा आपके शरीर का रंग भी, चन्द्रमा के कारण गौर है, किन्तु चन्द्रमा के साथ राहू वैठा है, इसलिये आपके मनको कुछ अशांती सी बनी रहती हैं, लेकिन लग्न से तीसरे स्थान पर केतू कन्या राशी पर वैठा है, इसलिये आपका पुरषार्थ खूब प्रवल रूप से कार्य करता है, बडी भारी हिम्मत वाले व्याक्ति है, आपकी कुण्डली में, नवम स्थानपती भाग्य का स्वामी बृहस्पति, अपनी पांचवी पूर्ण द्रष्टी से, बुद्धी स्थान पति, मंगल को देख रहे हैं, इसलिये आपको ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त हुआ किन्तु मंगल अष्टम होने से, चोरी के संवंध का विशेष ज्ञान आपको प्राप्त हुआ, और सप्तमेश शनी की पूर्ण दसवी द्रष्टी सप्तम स्थान पर पड़रही है, इसलिये आपको भोग की लालसा सदैव बनी रहती है, इसलिये बराबर आपकी शादियाँ होती चली गई, और यही सप्तमेश शनी, सुख स्थान को उच्च द्रष्टी से देख रहा है, तथा सुख स्थान पति शुक्र को भी तीसरी द्रष्टी से पूर्ण मित्र भाव में देख रहाहै, इसीलिये, आपको स्त्रीयों के द्वारा ही विशेष सुख की प्राप्ती होती रहती है। इसके अतरिक्त, सुख स्थान का स्वामी शुक्र, लग्न से वारहवें स्थान पर वैठा है इसलिये अधिक खर्च करने के कारणों से भी सुख की प्राप्ती होती रहती है, और शुक्र लाभेश होकर खर्च के स्थान पर वैठा है। इसलिये जो कुछ आता है, वह सब खर्च होजाता है, आपकी कुण्डली के अन्दर तन और मन का स्वामी चन्द्रमा है जो भाग्य पर वैठा है, और भाग्य स्थान पती गुरू की, चन्द्रमा पर पूरी द्रष्टी पड़रही है, इसलिये भाग्य की शक्ती, मनोवल की ताकत का सहारा लेकर, उन्नति का कार्य करती रहती है। और भाग्य का स्वामी वृहस्पति बुद्धी स्थान पर वैठा है; इसलिये आपका भाग्य, बुद्धी योग द्वारा ही विकसित हो रहा है; और आप, चन्द्रमा तथा बृहस्पति के योग से ही भाग्वानी भोग रहे हैं।

सुप्रसिध्द कवि विन्दुजी

वृन्दावन धाम
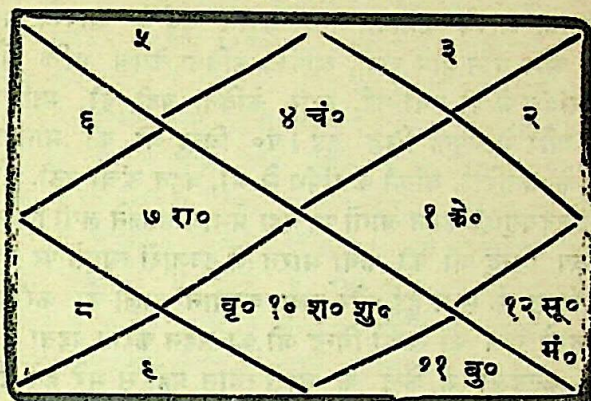
आपकी कुण्डली में, लग्न का स्वामी चन्द्रमा, लग्न में ही वैठा है-अर्थात देह का स्वामी और तनकी शक्ती का स्वामी चन्द्रमा, देह के स्थान में ही स्वक्षेत्री वैठा है इसलिये चंद्र के आदर्श भाव से युक्त हो जैसे आपको मनोवल की व आत्मवल की स्थिरता प्राप्त होगई, और भाग्यस्थान पत धर्मेश गुरू की उच्च द्रष्टी लग्न पर एवं चन्द्रमा पर पूर्ण पढ़रही है, और चन्द्रमा की द्रष्टी गुरू पर पूर्ण पड़ रही है, अतः इस योग के कारण विन्दुजी के हृदय और मन की गहन शक्ती का संबंध, धर्म से हुआ, और बुद्धी स्थान का स्वामी मंगल कर्मेश राज्येश होकर, धर्म स्थान पर, धनेश सूर्य के साथ, मित्र की राशी पर वैठा है, इसलिये बुद्धी में भी, धर्म का विशेप ज्ञान हुआ, अतः इन सब योगों की प्रधानता के कारणां से, आपको धर्म और भक्ति के संवंध में, बड़े ऊंचे २ भाव, हृदय में उतपन्न होने लगे, तथा मन निरोध होने लगा, इसलिये अपने अपनी उच्च भावनाओं को काव्य के रूप में लिखना प्रारम्भ कर

दिया, और लाभेश शुक्र का संबंध भी भाग्येश गुरू और चन्द्रमा से होगया है, तथा धनेश सूर्य, भाग्य स्थान पर बैठा है, इसलिये भाग्य शक्ती के योग से, आपकी कविता महान सफल हुई और लाखोंरुपया आपने कमाया, तथा भारत वर्ष में आपको बड़ी ख्याती, और मान प्राप्त हुआ, आपकी कविता केवल भक्ति और धर्म के संबंध में ही रची गई, मगर कविता बड़ी ही, मार्मिक, रोचक, और भावपूर्ण सिद्ध हुई। पं० विन्दु जी की मान्यता, कविता के अतरिक्त, वांणी के संबंध से भी, बहुत ऊंची उठी, और आपकी हृदयगृाही कहन लोगों पर बड़ा प्रभाव डालने लगी जिसके फलस्वरूप विन्दु जी की कथा भारत में हज्जारों स्थानों पर बड़ी भारी प्रतिष्ठा के साथ हुई और कथा, करवाने वालों को करीवन ३००) रुपये रोज का खर्चा विन्दु जी का सहन करना पड़ता है। आपकी कुण्डली में, केन्द्र के चारों स्थान ग्रहों से भरे हुये हैं। तथा छै ग्रह केन्द्र के अन्दर है, और दो, त्रिकोंण के, भाग्य स्थान पर बैठे हैं, केवल एक बुद्ध की, स्थान स्थती कमजोर है, अतः आठ ग्रहों की स्थान स्थती मजबूत होना भी, बड़ी भाग्यवानी के सूचक हैं, इसलिये आपभी बड़े भाग्यशाली पुरुप हैं, क्यों कि विद्या, सुयश, मान प्रतिष्ठा, धन, मकान जायदाद, प्रसिद्धता, ईश्वर भक्ति, यह सभी कुछ आपको प्राप्त हुआ। आपकी कुण्डली में। तीसरे और वारहवे स्थान का स्वामी बुद्ध, लग्न से आठवे स्थान पर मित्र क्षेत्री बैठा है, इसलिये वहिन भाइयों और खर्चा के संबंध से कठिनाई प्राप्त होती है, और बुद्ध का फल आपको पहिले शिरू के जीवन में, और भी कठिन भोगना पड़ा था, क्यों कि उस वख्त खर्चे की आपको बहुत तंगी सहन करनी पड़ी थी। और आपके चौथे स्थान पर राहू, तथा दसवे स्थान पर केतू बैठा है, इसलिये आपको माता पिता का नतो कोई खास सुख ही मिला, और न उनकी कुछ सम्पत्ती ही मिली, तथा इस राहु, केतू, बुद्ध के कारणों

से प्राय: आपको अपने स्थान से वाहर दूसरे स्थानों में ही भ्रमण करना पड़ता है, और चौथे स्थान पर बैठे हुये राहू पर भी, शनी और मगल की पूर्ण द्रष्टी पड़रही है, इसलिये, यह राहू, शनी और मंगल कासा कार्य कर रहा है, अत: आपके मकान जायदाद व सुख प्राप्ती के साधन अच्छी तादाद में आपको खूब प्राप्त है। इसके अतरिक्त, स्त्री स्थान में, वृहस्पति नीच का होकर वैठा है और शनी अष्टमेश होकर सप्तम में स्व क्षेत्री वैठा है, अत: इन दोनो कारणों से, आपको स्त्री की ओर से कुछ कष्ट सहन करना पड़ा था। इसके अतरिक्त, आपके राज्येश मंगल की पूर्ण चौथी द्रष्टी, लग्न से वारहवे स्थान पर पड़रही है, इसलिये, वाहरी स्थानों में आपको खूब मान और सफलता प्राप्त होती है, तथा खर्च भी आपका खूब राजसी ठाट का होता है आपके सभी ग्रह अधिकांश अच्छे वैठे है, इसलिये आपकी सुन्दर कविता के कारण योग से चिरकाल के लिये आपका नाम अमर होगया

आपकी कुण्डली के अन्दर लग्न का स्वामी चन्द्रमा, देह और मन की शक्ती का अधिकारी होकर देह के स्थान में ही स्व-क्षेत्री वैठा है तथा वृ० श० बु० इन तीन ग्रहों से पूर्णद्रष्टी संबंध कर रहा है, इसलिये आपके मन के अन्दर, एवं आत्मा के अन्दर, वड़ीं २ ऊँची भावनायें और उत्तम तरंगे उठती रहीं, और उन भावनाओं को आपने काव्य रूप में परिणित करना प्रारम्भ कर दिया, क्यों कि आपको अपनी भावनाओं में जो चन्द्रमा के द्वारा, अलौक और उत्तम आनन्द अनुभव होता था, उस आनन्द को समाज के सनमुख पहुचाने का एक मात्र रास्ता यहीं था कि उसे लिख २ करके पुस्तक के रूप में परिणित कर दिया जाय, और इस प्रकार कार्य करते २ आपकी पुस्तकें खूब विकने लगी, और जनता आपके हृदय की उच्चतम भावनाओं से वड़ी द्रवीं भूत हुई, जिसके फल स्वरूप आपको खूब धन और यश प्राप्त हुआ,

श्री गुरू नानक देव जी

ता० ८ नवम्बर सन १४७० का जन्म
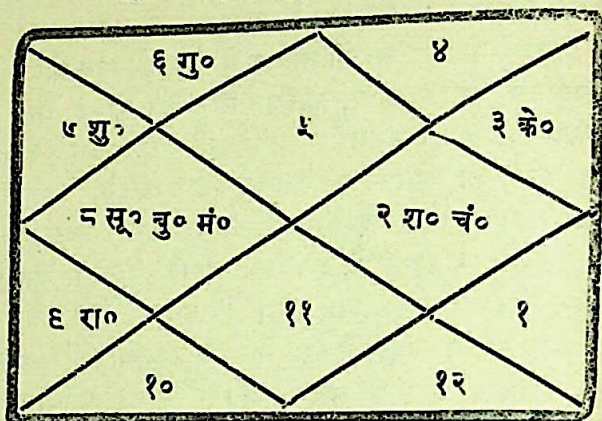
आपकी जन्म कुण्डली में सबसे उत्तम-भक्ति और शांति पाने का योग, मंगल, सूर्य, बुद्ध के द्वारा बना है-अतः धर्म पति, ईश्वर भक्ति प्रदायक, मंगल, चतुर्थेश, शाँती स्थान का स्वामी होकर अपने ही स्वक्षेत्र में, चौथे स्थान पर बैठा है-और देहाधिपति; सूर्य, भी चतुर्थ स्थान में, अपने मित्र, धर्मेश मंगल के साथ, एवं धनेश, लाभेश बुद्ध के साथ, शांती के स्थान में बैठा है। इसलिये-इस चौथे स्थान में, मंगल की प्रधानता है, क्यों कि वह अपने स्थान पर स्वक्षेत्री है और मंगल के अन्दर दो प्रकार के गुणों की प्रधानता है, एकतो, ईश्वर भक्ति रूपी धर्म की, दूसरे महान सुख शांती की, अतः इस प्रकार की शक्ती वाले मंगल के साथ में, देहाधिपति, सूर्य, मित्र होकर बैठे हैं। इस हेतू-देहाधिपती सूर्य को, केवल शांती और ईश्वर भक्ति का ही पूर्ण साधन प्राप्त हुआ-ईश्वर भक्ति के अन्दर भी, चौथे स्थान पर, चतुर्थेश के साथ बैठने से, सूर्य के द्वारा, देह और आत्मा को अलौकिक

अखंड आनन्द का अनुभव, सदैव प्राप्त होता रहा, और धनेश लाभेश बुद्ध के साथ बैठने से, शांती और भक्ति रूपी, महान धन लाभ का संचित सुख प्राप्त हुआ, और उस महान भक्ति धन की संचित शक्ती के कारण, आज तक भी उस महा धनी भक्त का नाम अमर है, इसके अतरिक्त सोचने की वात यह है कि जिस व्यक्ति के तीन ग्रह उपरोक्त कथनानुसार चौथे स्थान पर वलवान पड़ते हैं, तो वह महान सुख भोगने का अधिकारी होता है, और महान सुख, संसारी वस्तुओं के अन्दर नही मिलता है, इसलिए अखंड धारा प्रवाह सुख, केवल ईश्वर भक्ति के अन्दर ही है, और वही सुख गुरू नानक देव को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त राज्येश कर्म स्थान का स्वामी शुक्र, तीसरे स्थान पर तुला राशी में स्वक्षेत्री बैठा है, इसलिये, आपके अखंड कर्म रूपी पुरषार्थ की प्रशंसा, आज तक संसार में जीवित है, और सप्तमेश, षष्ठेश, शनी, दसम भवन, कर्म स्थान में बैठा है और व्ययेश चन्द्रमाभी उच्च का होकर, कर्म स्थान में शनी के साथ बैठा है, इसलिये, दैनिक कर्म और मानसिक कर्म योग का पालन आपका नित्य प्रति चलता रहता था, चन्द्रमा का उच्च का होने से, मन सदैव प्रसन्न रहता था, और राहू पंचम स्थान में नीच का बैठा है, इसलिये वुद्धी में आपके उत्तेजना नहीं थी, वल्कि शील था, और केतू एकादश स्थान में नीच का वैठा है, इसलिये लाभ प्राप्ती के लिये कोई खास साधन नही था, और वृहस्पति पंचमेश अष्टमेश होकर धन स्थान में वैठा है और कर्म स्थान को पूर्ण नवम द्रष्टी से देख रहा है, व अपने आयू स्थान को सातवीं द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये, आयू की वृद्धी के साथ २ प्रसिद्धता भी प्राप्त हुई और और कर्म स्थान पर द्रष्टी होने से, हृदय की ज्ञान शक्ती को भी, कर्म उन्नति में ही आपने लगा रखा था आपके ग्रहों में, सूर्य और मंगल का योग ही भक्ति का प्रधान कारण है।

स्वामी विवेका नन्द

ता० १२ जनवरी सन १८६३
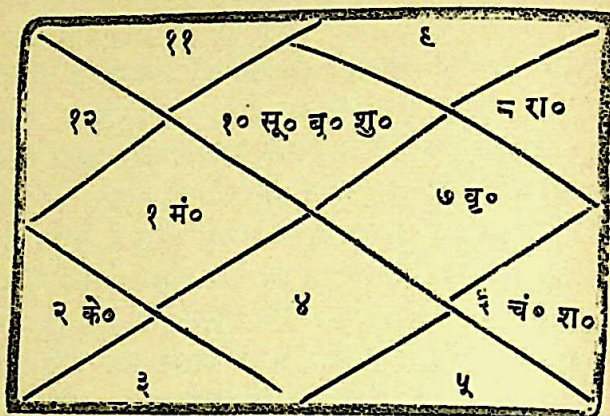
आपकी कुण्डली में-देहाधीश शनी, धर्म स्थान पर मित्र क्षेत्री बैठा है, और धर्म स्थान का स्वामी बुद्ध, देह के स्थान पर मित्र क्षेत्री बैठा है, और साथ में बुद्धी स्थान पति व कर्म स्थान पति राज्येशशुक्र भी देह के स्थान में, धर्मेश बुद्ध, मित्र के साथ बैठा है अतः इस प्रकार से, देह का संवंध, परिस्पर धर्म से हुआ और वुद्धी का संवंध, धर्म और देह दोनों से हुआ अतः ऐसी सूरत में आपके देह और बुद्धी के अन्दर, धर्म और ईश्वरीय ज्ञान की गहराई, महान गहरे रूप में ओत प्रोत थी, जिसके फल स्वरूप आप, ईश्वरीय और धर्म के विवेचन करने में, बड़े साम-र्थ्यवान सिद्ध हुये, और संसार भर में आपके बुद्धी और विवेक की महान प्रशंसा हुई, तथा राज्येश पंचमेश शुक्र और भाग्येश बुद्ध के लग्न में प्रवल संवंध करने के कारण, बुद्धी वल के योग से तथा वांणी वल के योग से, तथा बुद्ध, के शष्ठेश होकर संवंध करने के कारण, परिश्रम व देशाटन के योग से, आपकी ख्याती

और सुयश चारों ओर फैल गया तथा इसी, शनी और बुद्ध व शुक्र के योग से आपको ईश्वर की शक्ती और ज्ञान में अटूट विश्वास और श्रद्धा थी तथा लग्न से चौथे स्थान पर मंगल का लाभेश चतुर्थेश होकर, अपने क्षेत्र शांती वाले भूमि स्थान पर बैठकर, राहू से युक्त अपने लाभ स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखना-इस बात को सिद्ध करता है,कि आपको हर जगह पर व हर समय पर, हर एक आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती; अवश्य होती रहनी चाहिये बगैर परिश्रम किये बिना, इसलिये सुख शांती की वृद्धी का योग प्रबल होने के कारण, हृदय में सदैव शांती निवास करती थी, अतः जिस मनुष्य को भगवानपर द्रढ़ विश्वास हो और शांती सदैव विराजमान रहती हो, और विवेक बुद्धी तत्व दर्शी हो भला संसार में ऐसे प्रांणी को अखंड आनन्द और कीर्ती ख्याती, क्यो कर प्राप्त न हो, तथा अष्टमेश सूर्य का लग्न में बैठने से तथा व्ययेस गुरू का राज्य स्थान में, पराक्रमेश होकर बैठने से, बाहरी स्थानों में भ्रमण तथा मान प्राप्ती का सूचक है, और व्ययेश का दसम बैठने से पिता के सुख में कमी करने का योग है तथा स्त्री स्थान पर मंगल की नीच द्रष्टी होने से स्त्री के सुख में कमी पैदा का योग है, अतः आपकी कुण्डली में सभी ग्रहबड़े भारी सतोगुणी शक्ती को लेकर बैठे है, इसलिये ईश्वर की कृपा से आपकी भाग्यवांनी का उदय, इस प्रकार से हुआ, जिसके फलस्वरूप, लोक परलोक दोनों का सुधार हुआ और आत्मा को सदैव आनन्द प्राप्त रहा संसार को ज्ञान मार्ग प्राप्त हुआ और दूसरी प्रकार से यह आपका राजयोग था, कि हर समय प्रभाव और मान प्राप्ती आपको होती रहती थी। आपकी कुण्डली में, सबसे प्रबल उत्तम ग्रह योग यह है कि देहाधीश शनी धर्म के स्थान पर बैठा है और धर्म स्थान पति बुद्ध देह के स्थान पर बैठा है, इसी ग्रह योग के कारण आप, समदर्शी, तत्व दर्शी तथा ईश्वर के अनन्य ज्ञानी भक्त थे

एक चतुर्वेदी महाशय
सेल्स टैक्स ऑफीसर की कुण्डली
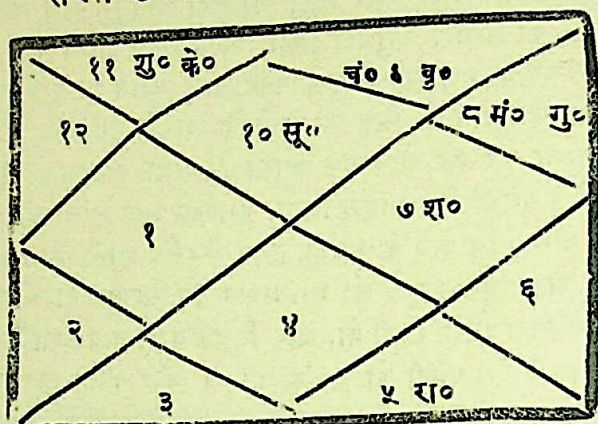
आपकी जन्म कुण्डली में सर्व प्रथम, सेल्स टैक्स ऑफीसर होने का प्रत्यक्ष एवं प्रमुख ग्रह योग यह है कि, धन स्थान का स्वामी शनीश्चर, देह स्थान का भी स्वामी है और राज्य स्थान में उच्च का होकर, तुला पर बैठा है, और राज्य स्थान का स्वामी शुक्र, बुद्धी स्थान का भी स्वामी होकर धन स्थान में बैठा है अतः इन दोनों गाढे मित्रों ने आपस में स्थान संबंध पूर्ण रूपेण कर लिया है, इसलिये यह दोनो ग्रह केवल देह कर्म एवं बुद्धी कर्म के योग से सिवाय धन खेचने का कार्य. राज्य शक्ती के द्वारा करते है, और देहाधीश भी वही शनी है जो धन का स्वामी होकर राज्य स्थान पर उच्च का बैठा है, इसलिये राज्य स्थान में केवल धन के पक्ष का ही ऑफीसर बनना, पूर्ण निश्चित एवं सिद्ध होगया इसीलिये आप सेल्स टैक्स ऑफीसर बनाये गये। अब धन स्थान में, राज्येश पंचमेश शुक्र के साथ, बैठे हुये केतू का असर यह है कि एक तरफ तो राज संबंधो टैक्स, धन वसूल करने में, दुकान-

दारों से, रोजाना की घिस २ बाजी और माथा पच्ची खूब करनी पड़ती है और दूसरी तरफ अपने निज के कोप के स्थान में, धन संग्रह करने में कुछ दिक्कतों और झंझटों का सामना करना पड़ता है, देह के स्थान पर अष्टम पति सूर्य के बैठने से, शरीर आपका दुर्बल रहा, किन्तु लग्न मैं सूर्य होने से, प्रभाव की प्राप्ती अवश्य होती है, इसके अतरिक्त अष्टम में, राहू के शत्रू राशी पर बैठने से आपके कुछ उदर का अन्दरूनी विकार है और मंगल ग्यारहवे स्थान पर स्वक्षेत्री बैठे हैं इसलिये बँधी हुई निश्चित आमदनी तो हर महीने में प्राप्त हो ही जाया करती है, और दैनिक रोजगार का स्वामी चन्द्रमा, जो मन की शक्ती का अधिकारी है, बारहवे स्थान पर बैठा है, इसलिये बाहरी वातावरण में, दुकानदारों से अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा, मनोबल से काम लैना पड़ता है, और उसी बारहवें स्थान पर बुद्ध देव भी बैठे हैं जो कि, शत्रू और भाग्य स्थान के स्वामी हैं और अपने छटे स्थान को पूर्ण देख रहें हैं तथा विवेक शक्ती के अधिकारी हैं इसलिये आप उन रोजाना के बाहरी दुकानदारों के झगड़ों को, विवेक शक्ती और भाग्य शक्ती की सहायता से, सदैव पार उतारा करते हैं किन्तु क्यूं कि बुद्ध वैश्य जाती का ग्रह है यानी नरम ग्रह है, इसलिये, नरम गरम तरीकों से ही एक सेल्स टैक्स ऑफीसर को जैसे काम लैना चाहिये, वैसे आप लेते हैं, और क्यूं कि बुद्ध धर्मेश भी हैं इसलिये उन रात दिन के झगड़े टण्टे मुकदमों में आपको न्याय का भी सदैव पालन और ध्यान रखना परम आवश्यकीय है। और आपके बृहस्पति, बारहवे स्थान के एवं पराक्रम स्थान के स्वामी होकर लाभ स्थान में बैठे हैं और हृदय की शक्ती के भी अधिकारी हैं इसलिये आपने, बाहरी वातावरण में हृदय और बाहुबल की, यानी कलम की ताकत से, धन खेंचने में सहारा प्राप्त किया और तीसरे स्थान का स्वामी गुरु अपनी पाचवीं पूर्ण

द्रष्टी से अपने स्थान पराक्रम को जब देख रहे हैं, तो यही कलम की शक्ती का धारा प्रवाह संचार पैदा करते है, और अपनी नवम उच्च द्रष्टी से दैनिक रोजगार को व स्त्री स्थान को पूर्ण देख रहे है इसलिये, इन दोनो ही चीजों में आपका हृदयबल अधिक कार्य करता है और बारहवे स्थान पर चन्द्र और बुद्ध दोनों के द्वारा, जो मन और विवेक की शक्ती का योग बना हुआ है, वहाँ उन दोनों पर शनी की तीसरी पूर्ण द्रष्टी पड़ जाने से, आत्मबल का संबंध और स्थापित हो गया क्यू कि शनी देहाधीश है इसलिये, छटे स्थान का स्वामी बुद्ध जो कुछ झगड़ों का निबटेरा करते हैं उन में विवेक बल, मनोबल, न्यायबल, आत्मबल, सभी सामूहिक रूप से कार्य करते हैं, इसलिये आप एक अच्छे न्यायकारी सेल्स टेक्स ऑफीसर माने गये हैं तथा बुद्धीबल और देहबल का योग, शनी और शुक्र के द्वारा, जो बहुत ही उत्तम राजस्थान में बना हुआ है उसका वर्णन तो हम प्रथम में ही कर चुके हैं और शनी की चौथे स्थान पर नीच द्रष्टी का पड़ना यह बतलाता है कि राज काज के कारणों से, सुख शांती में बाधा उत्पन्न होती ही रहनी चाहिये

आपकी कुण्डली के अन्दर यह बात बिल्कुल स्पष्ट है, कि राजस्थान का स्वामी शुक्र धन स्थान में मित्र क्षेत्री बैठा है, और धन स्थान का स्वामी शनी, राजस्थान में मित्र क्षेत्री उच्च का बैठा है, इसलिये आप राजकीय सरकारी नौकरी के अन्दर केवल धनोपार्जन के पद पर ही नियुक्त किये जांय, अतः आप इसी कारण सेल्स टैक्स ऑफीसर बने। और गवरमेन्ट के सबन्ध से अपने धन की भी उन्नति की, और गवरमेन्ट के धन की भी उन्नति की। जब से शनी, पंचांग गोचर गति से, कन्या राशी व तुला राशी एवं वृश्चिक राशी पर आये, तब से आपकी बराबर पदोन्नति होती रही है, क्योंकि, यह गत संवत २००८ के करीब से आये, जो कि आपके भाग्य स्थान, राजस्थान, लाभस्थान, पर चले हैं

मथुरा की प्रसिध्द सुख संचारक कं० के मालिक स्वर्गवासी पं० चेत्रपाल शर्मा
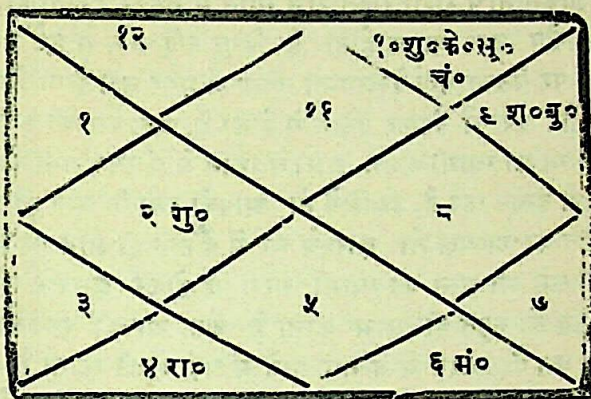
आप अपने वाल्य जीवन में एक महान गरीब आदमी थे और बाद में आप एक बहुत बड़े व्यापारी बने जिनका व्योपार समस्त भारत एवं विलायतो में भी खूब प्रसिद्ध था, अतः आपकी कुण्डली में, गरीबी की देन करने वाले चार ग्रह तो यह हैं शु० सू० चं० के० और एक ग्रह है मंगल. जेसा कि हम पुस्तक के प्रथम में ही लिख आये हैं कि छटे आठवे वारहवे घरों में जो ग्रह बैठते हैं वह परेशानी के सूचक होते हैं, किन्तु छटे धर में क्रूर यानी गरम ग्रहों को दोष पूरा लागू नही होता है, क्यूं कि हम यह भी पहिले ही लिख आये है कि तीसरे, छटे, ग्यारहवें घरों में यदि गरम क्रूर ग्रह बैठे हों। तो उन्नति दायक होते हैं इसलिये आपकी कुण्डली में छटे घर में राहू है, और ग्यारहवे घर में शनी हैं और तीसरे घर पर मंगल की पूर्ण द्रष्टी है, अतः यह योग आपके ऊपर भी पूर्ण लागू होता है, अब हम आपकी कुण्डली में

विशेष धन पैदा करने का योग, एवं ख्याती पाने, का योग बतलाते हैं, हम पहिले ही लिख आये हैं कि जिस मनुष्य की लग्न का स्वामी लग्न में ही वेठा हो; या लग्न को पूर्ण द्रटी से देखता हो, लेकिन नीच राशी रहित शुभ स्थान में बैठकर देखता हो, तब ही विशेष फल दायक होता है किन्तु यदि लग्न से छटे सातवे स्थान पर बैठकर पूर्ण देखेगा तो उतना श्रेष्ठकर नही होगा जितना कि और घरों में वैठकर देखने से होता है, अतः आपकी कुण्डली में, लग्न का स्वामी शनी, ग्यारहवे स्थान में बैठकर लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है, इसलिये तो आपको ख्याती प्राप्त हुई और लग्नेश का अव्वल तो ग्यारहवे घर में बैठना ही लाभ प्रद होता है, जिसमें भी लग्न का स्वामी गरम ग्रह होकर ग्यारहवे घर में वैठे तव तो वहुत ही लाभ करता है अतः आपकी कुण्डली में, शनी, धन पैदा करने में व नाम पाने में बड़ी शक्ती रखता है और आपकी वुद्धी स्थान का स्वामी बुद्ध भी, अष्टम का मालिक होता हुआ शनी के साथ है, अतः देह का स्वामी शनी और बुद्धी का स्वामी वुद्ध, दोनों मित्र, लाभ के स्थान में बैठकर अधिक लाभ करने में समर्थ हैं और फिर भी दोनों ग्रह अपने २ स्थानों को भी पूर्ण द्रष्टी से देख रहे हैं इसलियै और भी अधिक वलवान हैं और यही कारण था कि आपका वुद्धीवल व देहवल, धन कमाने में बड़ा प्रशंसनीय सावित हुआ था क्यू कि आप एक महान गरीब आदमी थे और केवल अपने वुद्धीवल व आत्मबल से ही वरावर उन्नति करते ही चले गये, दूसरा कारण आपके धनी होने का यह है, कि धन स्थान का स्वामी एव' लाभ स्थान का स्वामी गुरु, केन्द्र के अन्दर सुख स्थान में बैठा है और साथ ही अपनी पूर्ण द्रष्टी से राज्येश मंगल को व भाग्येश शुक्र इत्यादि चारों ग्रहो को जो वारहवे स्थान में बैठे हैं देख रहा हैं अतः धन भवन का स्वामी सुख स्थान में वैठकर, राज्येश भाग्पेश से संवंध, करले तो

यह धनवान होने का योग है, किन्तु धन भवन में कोई नीच का या नेष्ठ ग्रह नही होना चाहिये। इसके अलावा आपकी कुण्डली में, राज्य स्थान के स्वामी मंगल का संबंध देह के स्वामी शनी से पूर्ण रूपेण हो रहा है क्यूँ कि मंगल अपनी पूर्ण चौथी द्रष्टी से शनी को देख रहा है और शनी अपनी पूर्ण दसवी द्रष्टी से मंगल को देख रहा है, और साथ में अष्टम पति बुद्ध का लाभ स्थान में बैठकर मंगल और शनी से भी संबंध हो गया है अतः व्यापार व इज्जत के स्वामी मंगल ने आठवे स्थान पर बैठकर शनी से व अष्टमपति बुद्ध से संबंध पैदा किया है इसलिये, अष्टम स्थान का प्रमुख कार्य है जीवन मरण, अतः आपने एक पेटेन्ट दवाई निकाली (सुधासिन्धु) जो कि जीवन को हर एक जरा जरा सा दिक्कतों व बीमारियों से बचाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई और इसी दवाई की बदौलत आप धनवान बने थे साथ हीं, मंगल के ऊपर धन व लाभ के स्वामी गुरु कीं पंचम द्रष्टीं पूर्ण पड़ रही है और मंगल अपनी आठवीं पूर्ण द्रष्टी से अपने पुरषार्थ स्थान को देख रहे हैं, अतः मंगल की शक्ती कितना बल पागई है यह ध्यान दैने योग्य बात है आपकी कुण्डली में ग्रहों का द्रष्टी संबंध बहुत सराहनीय है क्यूं कि देह का स्वामी शनी अपनी पूर्ण तीसरी द्रष्टी से देह को देख रहे हैं और बुद्धी स्थान का स्वामी बुद्ध अपनी पूर्ण सातवीं द्रष्टी से, बुद्धी स्थान को देख रहे हैं और पराक्रम का स्वामी मंगल अपनी आठवी पूर्ण द्रष्टी से पराक्रम को देख रहे है अतः इसीलिये आपकी बल, बुद्धी का कार्य तत्परता हिम्मत आत्मबलके साथ लाभोन्नति करने में सदां तल्लीन रहता था और वह अपनी कंपनी में हर एक मुलाजिम के मुकाबले में भी, अधिक से अधिक समय देकर कार्य किया करते थे, इसके अलावा आपकी कुण्डली में चार ग्रह, भाग्येश शुक्र आदि तो बारहवे स्थान में बैठे हैं, और राज्येश मंगल आठवे स्थान में, तो

इन स्थानों में बैठे हुये ग्रह हमेशा वाहरी दूसरे स्थानों के द्वारा ही उन्नति प्राप्त कराया करते हैं, और अपने स्थान में प्रथम हानि किया करते हैं, इसलिये आप अपनी प्रथम स्थती में बड़े गरीब रहे और फिर विज्ञापन शक्ती के द्वारा ही वाहरी दूसरे स्थानों के योग से, आपने लाखों रुपै पैदा किये और नाम पाया, किन्तु दसम स्थान पर तो गुरू की पूर्ण द्रष्टी होने से, आपकी प्रतिष्ठा में और भी उन्नति रही, लेकिन नवम स्थान के स्वामी शुक्र के वारहवें स्थान बैठने से व नवम स्थान पर किसी भी श्रेष्ठ गृह की पूर्ण द्रष्टी न होने के कारण आपने धर्म संबंधी मामलों में कुछ कमजोरी प्राप्त की, इसके अलावा लग्न से चौथे स्थान पर धनेश व लाभेश, गुरू के बैठने से आपके पास लाखों रुपयों की मकान व जायदादें थी जिनकी किराये भाड़े की भी बड़ी आमदनी थी इसके अलावा आपकी कुण्डली में, मन की शक्ती का स्वामी चन्द्रमा लग्न से वारह वे स्थान पर होने से, एवं छठे घर का स्वामी होनेसे तथा केतू के संग बैठने से दुर्वल था इसलिये आपके मन को वड़ी अशांती रहती थी, किन्तु छटे घर पर राहू होने से एवं सू० चं० शु० तीनों ग्रहों की पूर्ण द्रष्टी छटे घर पर होने से आप शत्रू स्थान में व अनेक विपत्तियों के स्थान में बड़े साहस से काम लेने वाले व्यक्ति थे तथा बढ़े मुंतजिम दिमाग थे आपके मंगल शुक्र के आठवे वारहवे बैठने से माता पिता का सुख आपको थोड़ी उम्र में ही समाप्त हो गया था और पंचमेश लाभ में होने से और पंचम स्थान को पूर्ण द्रष्टी से देखने के कारण आप को कैई पुत्र प्राप्त थे आपका जीवन व्यापारिक लाइन में बहुत ही सराहनीय सिद्ध हुआ किन्तु भाग्येश राज्येश के आठवे वारहवे बैठने से आप बहुत ही सादे लिवास में रहने वाले सज्जन व्यक्ति थे, इसी योग के कारण आपकी मृत्यु होने के वाद, आपके यहां की बरककत समाप्त होगई, और पच्चीस लाख की सम्पत्ति तथा इतने बड़े व्यापार का ढांचा विखर गया।

ला० रमनलाल आढ़तिया मथुरा

गरीब से अमीर होने वाला एक चांदी के सट्टे का धनाढ्य व्यापारी
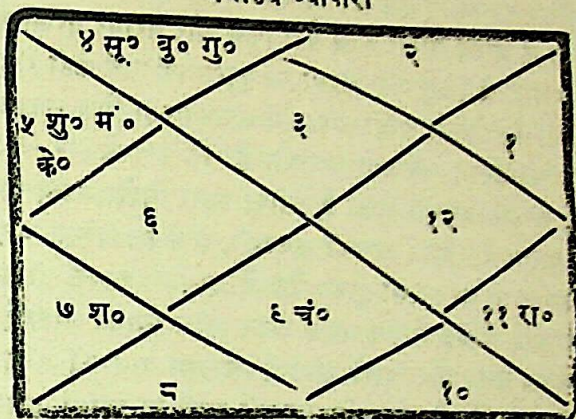
आप मथुरा शहर के अन्दर चांदी के सट्टे के व आढ़त के एक अच्छे धनीमानी व्यापारी थे आप अपने पूर्व जीवन किशोर और युवा अवस्था में एक छोटे से परचूनिया थे जो कि अपने बाहुवल की कठिन महनत से गुजर कर पाते थे, आपकी कुण्डली में. सम्पूर्ण केन्द्र के चारों घरों के अन्दर केवल धन स्थानपति चन्द्रमा अकेला सप्तम भवन में बैठा है जो कि चन्द्रमा चांदी के व्यापार का प्रधान द्योतक है और सप्तम स्थान पति गुरू, दसमेश होता हुआ, धन स्थान में उच्च का बैठा है अतः रोजगार व्यापार के मालिक गुरू ने, धन स्थान के स्वामी चन्द्रमा से परिस्पर स्थान सम्बन्ध बनाया हुआ है, यानी चन्द्रमा गुरू के घर में है, और गुरू चंद्रमा के घर में उच्च के हैं, इस कारण इस योग के द्वारा प्रथम तो यह बात तय हुई कि रोजगार की लाइन से धन की खूब बृद्धी होनी चाहिये, वही हुई भी, दूसरी बात यह है कि चंद्रमा मनकी शक्ती का अधिकारी है और गुरू हृदय की शक्ती का

अधिकारी है और चन्द्रमा खासतौर से चाँदी की धातु का अधिकारी है और उच्च का बृहस्पति भी चन्द्रमा का सा ही कार्य कर डालता है इसलिये आपने चाँदी कीही लाइन मेंसट्टे व आढ़त के जरिये लाखों रुपये पैदा किये और बराबर तरक्की करते चले जारहे थे किंतु यदि चंद्रमा या बृहस्पतिके साथ कहीं राहू या केतू भी बैठे होतेतो चाँदी के कार्यमें सफलतानहीं मिल सकती थी इसके अतिरिक्त एक बात यह और है कि केन्द्र के (१-४-७-१०) अंदर जो ग्रह बलवान होता है उसीका असर विशेष महत्व दायक हुआ करता है, अतः आपकी कुण्डली में केवल अकेला चन्द्रमा ही धन स्थान का स्वामी होकर बैठा है इसलिए आपके जीवन में अगर कोई अधिक विशेप महत्व दायक चीज समझी जाती है तो वह केवल धन, और इसके अलावा चन्द्रमा मन की शक्ती का स्वामी होता है और बृहस्पति, हृदयकी शक्ती का स्वामी, इसलिए आपने अपने मन और हृदय की शक्ती के बलसे ही चाँदी के व्योपार सट्टे की लाइन में सफलता प्राप्त की, अब हम इसी गुरु चन्द्रमा के स्थान सम्बन्ध पर स्त्री का प्रसंग लाते हैं क्योंकि सप्तम स्थान स्त्री का भी होता है और लग्न से दूसरा स्थान का स्वामी, मारकेश का भी काम करता है अतः आपकी तीन शादियां हुई सातवें स्थान का व दूसरे घर का पूरा २ सम्बन्ध, स्त्री स्थान में होगया है और दूसरा कारण यह है कि, चन्द्रमा, स्त्री स्थान पर केमन्द्रुम योग में बैठा हुआ है अर्थात बरक्कत से रहित बैठा हुआ है, यानी चन्द्रमा के साथ में या आस पास में कोई भी दूसरा ग्रह नहीं है, और तीसरा कारण यह है कि स्त्री स्थान पर शनी की पूर्ण दृष्टि शत्रु भाव से पड़ रही है और कारण यहभी है कि स्त्री स्थानका स्वामी गुरु जब उच्चका होकर दूसरे स्थानमें बैठा है;तो स्त्री स्थान की अधिकता का योग पैदा करता है अतः स्त्रीके बार २ मरते रहने परभी पुनः२ स्त्री प्राप्त होती रही आखिर मार-

केश योगने व केमद्रुम योग ने व शनी की दृष्टि ने अपना काम पूरा कर दिया, स्त्री मर गई, इसके अलावा हम अनेकों आर्थिक उन्नतशील व्यक्तियों की कुण्डली में यह बताते चले आते हैं कि तीसरे, छटे, ग्यारहवें स्थानों में क्रूर ग्रह बैठे हों या क्रूर ग्रह इन तीनों घरों को पूर्ण दृष्टिसे देख रहे हों तो बड़ी उन्नति करते हैं. अतः आपकी कुण्डली में लग्न से तीसरे घर में मंगल और केतु बैठे हैं और छटे घर पर मंगल की पूर्ण दृष्टी शत्रु स्थान पर पड़ रही है और ग्यारहवे स्थान पर शनी की दृष्टी पड़ रही है इसके अलावा आपकी इज्जत व मान प्रतिष्ठा व कारबार आदि की उन्नति करने का एक मुख्य राजयोग अर्थात् बृहस्पति के कारण बना हुआ है क्योंकि राज्य स्थान का स्वामी, दशमेश बृहस्पति, उच्च का होकर धन स्थान में बैठा है और अपनी नवम पूर्ण दृष्टी से अपने राज्यस्थान को पूर्ण देख रहा है और इसी बृहस्पति की महादशा में आपकी बराबर उन्नति होती चली गई और आपने लाखों रुपये पैदा किये और बुद्ध के अन्तर में आपने एक विशाल भवन अपने रहने के लिए तय्यार करवाया था, क्योंकि आपकी कुण्डली में बुद्ध लग्नेश व चतुर्थेश है अर्थात् देह का व मकान जायदाद, व सुख स्थान का स्वामी है इसलिये देह को आराम पहुँचाने का साधन व मकान जायदाद आदि, दोनों की कामनायें पूर्ती हो गई, इसके अतिरिक्त, बहन भाई के स्थान में मंगल, शुक्र, केतू तीन ग्रह हैं अतः मंगल छटे का स्वामी होने से, शुक्र बारहवें का स्वामी होने से, केतू शत्रु राशी का होने से, तथा तीसरे घर का स्वामी सूर्य के धन स्थान (मारक स्थान) में बैठने से, इन सभी कारणों से आपको बहन भाई का सुख प्राप्त नहीं हो सका. लाभेश षष्ठेश मंगल की चौथी व आठवीं दृष्टी का फल इस प्रकार समझिये कि लग्न से छटे स्थान पर यानी शत्रु स्थान पर, जो कि मंगल का ही घर है, पूर्ण दृष्टी पड़ रही है, इसलिये आपके

अपने जीवन में बड़ा नाम और प्रभाव प्राप्त किया और लाभ एवं प्रभाव की वृद्धी के लिए आपने बहुत प्रयत्न शक्ती से काम किया है और मङ्गल की इसी चौथी दृष्टी के कारण ही आपको बचपन में अपनी ननसाल पक्ष में परवरिश प्राप्त हुई थी क्योंकि लग्न से छटा स्थान ननसाल पक्ष का भी होता है किन्तु आपकी माता की मृत्यु होने के कारण से ही नानी के हाथों परवरिश प्राप्त हुई थी अब यह सवाल पैदा होता है कि माता की मृत्यु क्यों हुई इसका प्रधान कारण यही है कि आपका चतुर्थेश, यानी माता स्थान का स्वामी बुद्ध, द्वतीय मारक स्थान में बैठा है इसके अलावा अष्टमेश, नवमेश, शनी की बुद्ध के ऊपर पूर्ण द्रष्टी और पड़रही है अतः इन्हीं दोनों कारणों से माता की मृत्यु होगई यद्यपि पिता स्थान का स्वामी भी द्वतीय स्थान में बैठा है परन्तु बृहस्पति की पूर्ण द्रष्टी पिता स्थान में पड़ रही है इसलिये कुछ समय तक पिता स्थान का सुख प्राप्त हुआ था, अब हम यह भी बतलाना चाहते हैं कि देह का स्वामी बुद्ध भी तो द्वतीय स्थान में बैठा हुआ है तब देहको क्या मारक का कार्य किया, इसका उत्तर यहहै कि जब आपके आयु स्थान का स्वामी शनी भाग्येश होकर उच्च का त्रिकोण में बैठा है तो उसने आयू स्थान की बृद्धी करने का योग बना दिया। इस लिए यह सिद्ध बात है कि किसी कुण्डली में आयू स्थान बलवान हो तो उसको कोई भी मारक ग्रह मार नहीं सकता है, किन्तु फिर भी हम यह बतलाना जरूरी समझते हैं कि जिस आदमी का देह स्थान का स्वामी, द्वतीय भवन यानी धन स्थान में बैठा होता है वह मनुष्य हमेशा धनोपार्जन के हेतु, धन के बन्धन में ही संलग्नता पूर्वक लगा रहता है इसी प्रकार आपभी रोजाना हर समय टेलीफौन ही पर बैठे रहते थे सुबह से रात तक इनको बराबर इसी प्रकार धन के बन्धन में रहना पड़ता था किन्तु धनवान होने के नाते, आपका जीवन बड़ी भाग्यवानी से गुजरा।

स्थान पर पूर्ण पड़ रही है इसलिए आपके यहां एक गल्ले की आढ़त का भी काम चल रहा है और चांदी का व्यापार तो आपका और भी कैई जगह चल रहा है, अब हम पुनः एक वार केमन्द्रुम योग पर कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं कि जब किसी मनुष्य की कुण्डली में केमन्द्रुम योग होता है यानी चन्द्रमा सिर्फ अकेला होता है और चन्द्रमा के आसपास भी कोई ग्रह नहीं होता है तो, या तो धन हीन होता है, या धन को खर्च करने की पूर्ण क्षमता नही होती है यानी धन का पूरा लाभ अपनी जान के लिये नहीं उठा सकता है यही एक बात आपमें भी थी, यानी आप रहीस मिजाज नहीं थे, अब हम आपके संतान पक्षपर द्रष्टी डालते हैं संतान स्थान का स्वामी शुक्र है जो व्यभवन का स्वामी होकर लग्न से तीसरे स्थान में बैठा हैं और संतान स्थान में शनी, अष्टम नवम के स्वामी होकर उच्च राशि में बैठे हैं इसलिये सन्तान सम्बन्ध में, यह दोनों ग्रह ही बलवान है किन्तु शुक्र में व्यऐश होने की त्रुटी है और शनीमें अष्टमेश होने की त्रुटी, इसलिये इन दोनों ग्रहों की थोड़ी २ त्रुटि होने से कुछ सन्तान कष्ट भी थोड़ा भोगना पड़ा और अधिकांश सुख प्राप्त था; जिसमें एक लड़के को अधिक माता निकलने के कारण सुन्दरता में कुछ कमी आगई बाकी सब ठीक है यह ध्यान रखने की बात है कि नवम स्थान का स्वामी जहां जिस स्थान में बैठता है, वहां उस स्थान में सफलता अवश्य करता है अतः पंचम स्थान पर उच्चराशिगत, भाग्येश शनी के होने से, संतान सुख भी आपको पूर्ण प्राप्त था और बुद्धी के योग से ही आपने सट्टे की लाइन में तरक्की प्राप्त की थी और भाग्य के मालिक शनी की पूर्ण द्रष्टि, धन स्थान के स्वामी चन्द्रमा पर व धन स्थान पर, व राज्येश गुरुपर, व लग्नेश बुद्ध पर, व परा-क्रमेश सूर्य पर, पड़ रही है अतः भाग्य की शक्ति का संबंध जितना ज्यादा ग्रहों से व अधिक स्थानों से होगा. उतना ही ज्यादा अच्छा

लाभदायक सफलता युक्त समझा जाता है अब हम यह भी और स्पष्ट कर देना उचित समझते हैं कि यदि नवम स्थान का स्वामी पंचम स्थान में बैठा हो और दोषी किसी भी प्रकार नहो तो, वह मनुष्य बड़ा भारी धर्मज्ञ सत्यवादी समझा जाता है, किंतु आपकी कुण्डली में धर्मेश, अष्टमेश होकर, शनी पंचम स्थान में बैठा है इसलिये आप अपनी बुद्धी के द्वारा कुछ भगवत चिंतन व सज्जनता का व्यौहार रखते थे अब हमें नवम स्थान पर बैठे हुये राहू के सम्बन्ध में और कहना रह गया है अतः राहू या केतू जहां भी बैठते हैं वहाँ पहिले एक बार या अनेक बार अशांति और मुसीबतें अवश्य पैदा करते हैं इसलिये आपकी कुण्डली में राहू भाग्यस्थान में बैठे हैं अतः आपके प्रथम जीवन में भाग्य की इतनीदुर्बलता थी. कि परचूनट की दुकान पर अपने हाथों से सौदा पीस २ कर दाल आटा वगैरह बेचा करते थे, और अन्त में और सभी ग्रहों के प्रताप से उन्नति प्राप्त की और राहू का दूसरा असर यह और है कि धार्मिक लाइन के अन्दर, ज्यादा ऊँचा अग्रसर नहीं होने दिया क्यूंकि धन की तुलना एवं धन के सन्मुख धर्म की पालन शक्ति उतनी पर्याप्त नहीं थी, आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शनी, यह सभी ग्रह लाभदायक व उन्नति कारक है, और शुक्र, खर्चीले ग्रह है, क्यूंकि शुक्र, व्ययेश हैं, राहू केतु सामान्य हैं, राहू भाग्य स्थान पर बैठे हैं, केतू शत्रूराशि पर बैठे हैं।

आपकी कुण्डली में अधिकांश ग्रह अच्छे बैठे हैं, इसलिये आपने अपना अधिकांश जीवन बड़ी भाग्यवानी के साथ व्यतीत किया, इसके अतिरिक्त आपका मृत्युस्थान पती शनी, धर्म स्थान का भी स्वामी है, इसलिये मृत्यु के दिन, आप अच्छी भली हालत में, श्री ठाकुर द्वारकाधीश जीं महाराजके, वड़े भारी उत्सव योजना के सम्पादन में बड़े उत्साह से लगे हुये थे, किन्तु यकायक आप का हार्टफेल होने से स्वर्गवास होगया।

भगवान श्री रामचन्द्र जी

त्रेतायुग अवतार
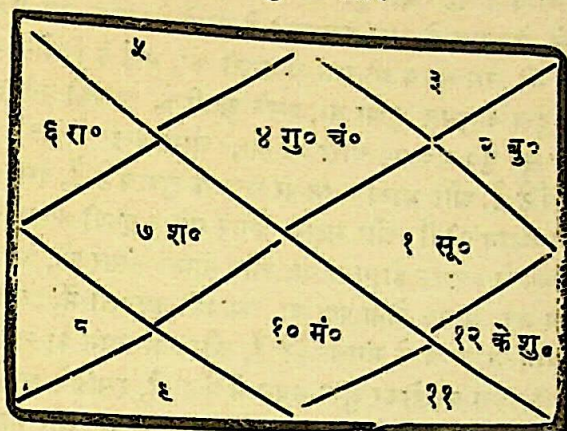
आपकी कुण्डली में, भाग्य और धर्म का स्वामी बृहस्पति, शत्रु स्थान का स्वामी, होकर, तन स्थान में उच्च का होकर बैठा है, और तन स्थान का स्वामी चन्द्रमा भी, अपने ही घर में, गुरू के साथ बैठा है, अतः आपने अपनी देह के द्वारा ही, धर्म का महान पालन किया, और अधर्मी जीवों को तथा महान राक्षसों को, शत्रु रूप से, संहार कर डाला, तथा इस गुरू चन्द्र योग के कारण, तथा पराक्रम स्थान पर, बलवान राहू के कारण, आपने इतनी बड़ी महान राक्षस सैना का नाश करके, धर्म की रक्षा की; और महान सुयश प्राप्त किया; तथा इसी गुरू चन्द्र योग के द्वारा ही आपका शरीर महान सुन्दर सुडौल, और महान पराक्रमी था। इसके अतरिक्त' आपके लग्न से तीसरे स्थान का स्वामी बुद्ध व्यऐश होकर लाभ स्थान में बैठा है, और तीसरे स्थान पर राहू बैठा है, इसलिये पहिले तो एक भाई लक्ष्मण साथ

साथ बन में रहा, और दो भाई भरत शत्रुहन १४ वर्ष तक अलग रहे, किन्तु इतने पर भी लग्न से तीसरे स्थान पर राहू के बैठने से, खास बात यह और हुई कि लछमण को जिस वक्त संग्राम भूमि में, मेघनाथ के द्वारा बृह्मशक्ती के लगने से, मृतक वत् मूर्छा आ गई थी, उस समय श्री राम चन्द्र जी को, भाई के वियोग का अथाह दुख अनुभव हुआ था, इसके अतरिक्त, आपकी कुण्डली में, मं० सू० बृ० श० यह चारों ग्रह जो, चारों केन्द्रो में उच्च के होकर बैठे हैं, और भाग्य स्थान पर उच्च के शुक्र बैठे हैं, इसलिये आपकी महान कीर्ती और महान प्रताप समस्त पृथ्वी मंडल में, महान रूप से व्यापक हो गया था, और समस्त संसार को, आपके सनमुख नत मस्तक होना पड़ा था, आपकी कुण्डली में, यद्यपि स्त्री स्थान पर उच्च के मंगल बैठे हैं, और स्त्री स्थान का स्वामी शनी भी उच्च का होकर सुख भवन में बैठा है, इसलिये आपको श्री जगदम्बा सीता जी, स्त्री रूप में, महान सुन्दर और महान पति भक्ता प्राप्त हुई थी, किन्तु भाग्येश बृहस्पति की नीच द्रष्टी स्त्री स्थान पर पड़ रही है, और स्त्री स्थान का स्वामी शनी, अष्टम स्थान का भी स्वामी है, अतः इन दौनो कारणों से ही, श्री सीता जी का रावण के द्वारा हरण होने से' श्री रामचन्द्र जी को स्त्री संबंध में महान कष्ट अनुभव करना पड़ा था। क्यों कि मनुष्य देह में तो भगवान को भी, मनुष्य लीला का सा दुख सुख भोगना पड़ता है. आपकी कुण्डली के अन्दर चारों केन्द्र, पांच बलवान गृहों से भरे हुये हैं, और भाग्य स्थान पर उच्च का शुक्र मित्र केतु के साथ बैठा है, इसलिये यह दो ग्रह त्रिकोण में बलवान बैठे हैं, और पाँच ग्रह केन्द्र में बलवान बैठे हैं, तथा लग्न से तीसरे स्थान पर राहू, कन्या राशी का बलवान बैठा है, और लग्न से तीसरे बारहवे स्थान का स्वामी बुद्ध, लाभ स्थान में बलवान बैठा है, अतः आपकी कुण्डली में प्रायः सभी गृह अति

बलवान बैठे हैं, इसलिये आपने जो २ कार्य इस संसार में किये वैसे कार्य आज तक कोई भी मनुष्य नहीं कर सका था, इसीलिये आपको ईश्वर माना जाता है, इसके अतरिक्त आपके लग्न से पंचम स्थान की शक्ती का स्वरूप समझिये, आपका मंगल लग्न से पांचवे दसवे स्थान का स्वामी होकर सप्तम स्थान में उच्च का बैठा है, और भाग्येश गुरु तथा लग्नेश चन्द्र, दोनों ग्रहों से, मंगल का द्रष्टी सम्बंध हो रहा है, तथा मगल अपनी पूर्ण चौथी द्रष्टी से, अपने राज स्थान को, तथा धनेश सूर्य को, देख रहा है इसीलिये आपकी बुद्धी में और आपके न्याय में बहुत भारी महानता थी, और इसलिये आपके दो पुत्र, लव और कुश बड़े भारी वीर और महान ययश्वी एवं प्रतापी हुये थे, और इसीलिये आपके शब्दों में, इतनी भारी, सत्यता, सज्जनता शीलता संतोष साहस सदाचार शाँती न्याय और परमार्थ आदि दिव्य विभूतियाँ प्रत्यक्ष मौजूद थी।

आपकी कुण्डली की महान विशेषता यह है, कि पांच ग्रह सू० मं० गु० श० शु० उच्च के हैं और चंद्रमा स्वक्षेत्री बैठा है, बुद्ध ग्यारहवे स्थानपर मित्र क्षेत्री बैठा है, राहू लग्न से तीसरे स्थान पर बलवान बैठा है, केतू, (उच्च राशी गत शुक्र के साथ) भाग्य स्थान पर बैठा है, और चारों केन्द्र स्थान ग्रहों से भरे हुये हैं तथा कोई भी ग्रह लग्न से छटे आठवे बारहवे स्थानों में नही बैठा है और कोई भी ग्रह नीच राशी का नही बैठा है अर्थात सभी नव ग्रह पूर्ण बलवान होकर आपकी कुण्डली में बैठे है, इस प्रकार के गृह, किसी भी अन्य मनुष्य की कुण्डली में कभी नही पड़ पाते हैं, इसीलिये आप ईश्वर सिद्ध हुये. क्यो कि जो कार्य मनुष्यों से कदापि नही हो पाते हैं वही सब अलौकिक कार्य आपने किये यही आपकी महानता थी, और आज तक समस्त भारतवासी: राम का नाम हर वक्त लेते है

लेखक—भगवानदास मीतल मथुरा

जन्म सम्वत् १६७० श्रावण सुदी ६ रविवार

१२ रा०
१०
१
११
६ गु०
२ श० मं०
८ चं०
३ शु०
५
७
४ बु० सू०
६ के०
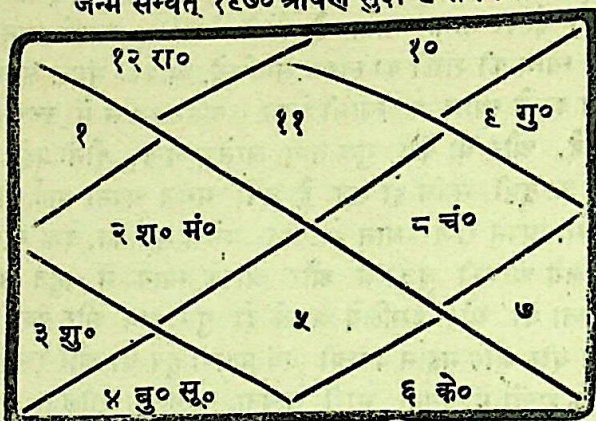
मैं अपनी कुण्डली के ग्रहों का परिचय देना आवश्यक जानकर ही लिख रहा हूँ अन्यथा लिखना नहीं चाहता था। इस कुण्डली में लग्न का स्वामी शनी यानी देहाधीश, लग्न के चौथे सुख स्थान पर बैठकर लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देख रहा है और राज्येश, मंगल के साथ बैठा है तथा राज्येश मंगल भी, अपने राज्य स्थान को पूर्ण देख रहा है अतः देहाधीश का सुख भवन में राज्येश के साथ बैठकर, अपने तन भवन को देखना, और राज्येश का भी सुख भवन में बैठ कर, राज्य स्थान को देखना, अतः यह लग्नेश राज्येश का सम्बन्ध घर बैठे अपने स्थान से, ख्याती प्राप्त करने का योग बनाता है और दूसरे इस योग के द्वारा, स्वाभिमानी, शांतिप्रिय कर्तव्य परायण, माननीय होना, स्वाभाविक है इसके अतिरिक्त जिस मनुष्य का भी लग्नेश, केन्द्रस्थ होकर लग्न को पूर्ण द्रष्टी से देखता है तो वह दूरदर्शी होता है, किन्तु यदि लग्नेश केन्द्र के अतिरिक्त बैठकर भी यदि बलवान हो, और पंचमेश का सम्बन्ध करता होय, या पंचमेश या पंचम स्थान भी

बलवान होय, तब भी वह मनुष्य दूरदर्शी होता है अतः इस कुण्डली में, लग्नेश, शनी अपनी पूर्ण दृष्टि तीसरी से, बुद्ध को देख रहे है, यानी देह के स्वामी ने बुद्धी के स्वामी से भी संबंध कर लिया है, इसके अतिरिक्त, और भी विशेष बात यह है कि, भाग्येश,शुक्र जो कि ईश्वरीय शक्ति के स्वामी हैं वह सुखेश होते हुये बुद्धी स्थान पर मित्र क्षेत्री बैठे हैं,और सब ग्रहों के अन्तर्गत एक प्राकृतिक संजीवन विद्याके स्वामी,कलाधारी ग्रह केवल शुक्र ही हैं अतः जब कलाधारी ग्रह ईश्वरीयबलको और प्राप्तकरले, तो फिर सौनेमें सुगंध का काम करता है अतः इस कुण्डलीमें ज्योतिष शास्त्र की रचनाका कार्य प्रमुख रूपसे शुक्रके द्वारा ही हुआ है और इस पर भी यह विशेपता और है कि देवगुरु बृहस्पति की दृष्टी शुक्रके ऊपर पंचम भवन पर और पड़ जाने से: तथा पंचमस्थ शुक्र और बृहस्पति का आपस में द्रष्टी सम्बन्ध और हो जाने से, तथा लग्नेश का पंचमेश को देखने से, ज्योतिप की लाइन में विशेप ज्ञान प्राप्त करनेकी शक्ति महान सुभिधा व सरलता से पैदा हुई, अर्थात मुझे ज्योतिष पुस्तकों का अध्ययन नहीं करना पड़ा,और न कहीं ज्योतिप सीखनेही जाना पड़ा, बल्कि एकईश्वर प्रदत्त ज्योतिप ज्ञानकी लाइन इस प्रकार प्राप्त हुई, जोकि पूर्ण रूपेण नवीन और सर्वसिद्ध रूपमें थी और जिसकी वजह से मैंने जन समुदाय के लोगों की कुण्डलियों का मुफ्त में फलादेश बतलाना शुरू कर दिया था क्यूं कि मेरे पूर्वजों के समय से मेरे पास एक कपड़े की दुकान थी जिस पर मैं अकेला बैठा २ लोगों की कुण्डलियों के फलादेश बतलाया करता था । और इस प्रकार जब हजारों की तादाद में लोगों को फलादेश बतला दिये और प्रायः सभी लोग अपनी २ सन्तुष्टता जाहिर कर कर के मेरे पास से जाते थे जब मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया कि मेरी फलादेश की लाइन सर्वमान्य सिद्ध रूप हो गई है, तब अपनी अनुभव सिद्ध

ज्योतिष फलादेश की लाइन को आम जनता के समक्ष लाने के लिये, जब मेरे अन्दर बड़ी भारी व्यग्रता पैदा होगई, तब आखिर मैं इस निश्कर्ष पर पहुंचा कि पुस्तक लिखकर ही मैं अपने समस्त भावों को जनता के सनमुख प्रकट कर सकता हूँ और दूसरी कोई सूरत नहीं है, तब मैंने लिखना शिरू कर दिया और पुस्तक को पूरा लिख २ करके भी तीन चारवार उसे बदल २ कर दूसरे २ रूप में लिखना पड़ा क्यूंकि, पंचमेश अष्टमेश बुद्ध, लग्न से छटे स्थान पर बैठा है, इस कारण विद्या बुद्धी की उन्नति युक्त लाइन में परेशानियाँ पैदा करता है, और इस प्रकार बार २ निराशाओं से टकरा २ कर करीबन १० साल के कठिन परिश्रम के योग से पुस्तक, भृगुसहिंता पद्यति के नाम से, प्रथम बनारस में प्रकाशित हुई थी और इसके बाद अखंड भाग्योदय दर्पण-शरीर सर्वाङ्ग लक्षण—अखंडत्रिकालज्ञज्योतिष—विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियां, इत्यादि पुस्तकें लिखी, यह पुस्तकें केवल, ज्योतिष फलादेश के, संबंधित ही हैं, गणित के सम्बन्धित नहीं है, इसका मूल कारण यह है, कि इस कुण्डली में भाग्यका स्वामी शुक्र ही पंचम, बुद्धी स्थानपर बैठा हैं, इसलिये किसके भाग्य में क्या है, केवल इसी विषय पर लेखनी चली किन्तु गणित की तरफ क्यों नहीं चली, इसका मुख्य कारण यह है कि, पंचम स्थान का स्वामी बुद्ध, लग्न से छटे स्थान पर बैठा है, यह हम पहिले ही लिख चुके हैं कि, लग्न से छटे, आठ[illegible] [illegible]-हवें स्थानों में कमजोरी और खिलाफत का योग रहता है इ[illegible] ये इस बुद्ध के छटे स्थान पर बैठने से, जो कि विद्या और [illegible] का स्वामी है, सन्तान पक्ष की भी, बहुत हानियाँ हुई तथा [illegible] अध्ययन भी बहुत ही अल्प स्थति में प्राप्त हुआ [illegible]र ज्या[illegible] के गणित विषय में तो शून्य के बराबर ही है, इसके अ[illegible] क्योंकि बुद्ध अष्टमेश भी है इसलिये लग्न से आठवे घर के [illegible]

को भी इन्होंने वार २ हानि पहुँचाई, अर्थात पुरातत्व शक्ति के अन्तर्गत जो कुछ भी थोड़ा बहुत धन माल, मकान, जेवर मिला था वह नष्ट होगया, और जीवन निर्वाहक शक्ति, के अनेक वार लाले पड़ गये, और जीवन की दिनचर्या में चिन्ताओं ने वार २ घेरे डाल दिये, इसके अलावा इस अष्टमेश वुद्धदेव के छटे वैठने से, व अष्टम स्थान पर केतू के वैठने से, जीवन जिन्दगी पर कैई कैई बार ऐसे आघात आये कि जहां जीवन समाप्त होने की पूरी २ सम्भावनायें वन गई, और छटे स्थान पर वुद्ध के साथ सूर्य के वैठने से, वड़ी शक्ती वढ़ गई, अन्यथा शत्रू पक्ष में यदि केवल, वुद्ध होता तो सिवाय डरपोक व दब्बू होने के, कुछ और दैन प्रदान नहीं कर सकता था, किंतु सूर्य के साथ वुद्ध का होना वड़ा श्रेष्ठ योग माना जाता है अतः शत्रू स्थान पर सूर्य, वुद्ध के वैठने से, प्रभावशाली योग वनता है और नरम गरम, दूरदर्शता की नीती शक्ती से हमेशा काम निकालते हैं, अब इसके अलावा, सप्तमेश सूर्य के छटे स्थान पर वैठने से, इन्द्रिय संयम दूरदर्शता प्रभाव वृद्धी, शत्रू पर विजय, प्रथम रोजगार की कुछ दिक्कतें इत्यादि योग पैदा करते हैं, और सूर्य वुद्ध के छटे स्थान में एक साथ वैठने से, पाप एवं रोग दौनों पर वड़ी सर्तकता से हर समय अपना कठिन अधिकार जमाये रखते हैं, कि जिस से वह कभी अधिक वढ़ने न पावें, और छटे स्थान पर जो शनी की पूर्ण रूप से तीसरी द्रष्टी पड़ रही है उसका भी कार्य करीवन इसी प्रकार का है, जो कि सूर्य वुद्ध के एक साथ छटे स्थान पर वैठने से हुआ है अर्थात रोग, एवं शत्रू व पाप का नाश, शत्रू पर विजय, प्रभाव की वृद्धी पैदा करते हैं और प्रकाश देने वाले रोजगार की लाइन को पकड़ते हैं तथा चौथे स्थान पर शनी मंगल के योग से, बचपन में ही छै वर्ष की आयु में माता का स्वर्गवास हो गया, क्योंकि प्रथम

तो दो क्रूर ग्रह एक साथ मिल कर, माता के स्थान पर खोटे बैठे हैं, दूसरे, छै वर्ष की आयू में, केतू भी गोचर में घूमते हुए वृषभ राशि पर आगये जो कि इस लग्न से चौथे, माता का के ही स्थान पर चल रहे थे, इस प्रकार करीबन छै साल की उम्र में माता का देहांत होना, दो कारणों के द्वारा बना, कि एक तो व्ययेश शनी जो चौथे स्थान पर बैठे हैं उनकीदशा होने से, और दूसरा हमारी नवीन पुस्तक की शैली-भाग्योदय दर्पण के आधारपर चौथे स्थान पर केतू के गोचर पंचाग गति के अनुसार होने से, इसके अलावा छटे स्थान के स्वामी दसम स्थान में चंद्रमा, जो नीच राशी पर बैठे हैं उनका प्रभाव है कि, पिता से वैमनस्यता एवं नीरसता और अलहदगी का योग पैदा किया। तथा व्यापार आदिउन्नति के मार्गमें बड़ी २ हानियाँ व निराशायें, कमजोरी और असफलतायें प्रदान की तथा कैई बार राज के झगड़े मुकदमे भी लगे और अपनी इज्जत आवरू को बचाना मुश्किल हो गया। किन्तु दसम स्थान के स्वामी मंगल जो कि लग्न मे चौथे स्थान पर बैठ कर, अपनी पूर्ण द्रष्टी से दसम स्थान को देख रहे हैं इस कारण, पिता स्थान से भी सहायता मिली, एवं राज स्थान मुकदमे आदि से भी कभी हार नही हुई, चाहे राजीनामे से ही जीत हुई, हो और व्यौपार आदि की लाइन में व समाज के व्यवहारिक संवंध में भी हमेशा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ती रही और उन्नति के मार्ग पर सदैव अग्रसर होने के कारण भी प्राप्त होते रहे, इसके अलावा मन का स्वामी कर्म स्थान में चन्द्रमा जो नीच राशि में स्थित है, उसकी चौथे स्थान पर उच्च द्रष्टी पूर्ण रूप से पड़ रही है इसका असर यह है कि मनोयोग के कठिन परिश्रम कर्म के द्वारा, जो दसियों वर्ष में ज्योतिष शास्त्र लिख कर तय्यार किया गया, उसकी आमदनी के फलस्वरूप, चौथे स्थान की उच्च द्रष्टी के कारण सुख प्राप्ती के अच्छे मजवूत साधन पैदा कर दिये, किन्तु पैत्रिक कपड़े का व्य-

वसाय था उसे प्राय: पूर्ण रूप से समाप्त ही कर दिया अब हमें राहू और बृहस्पतिपर लिखना है अत: यह मीनके राहू का धन स्थान में बैठने से, इन्होंने बार २ धन की स्थती का नाश और हानी के योग पैदा किये, किन्तु धन स्थान के स्वामी गुरू, लाभ स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठने से, यह कारण पैदा किया, कि प्रथम तो जब २ रुपये की टूट पड़ी, तब २ हमेशां किसी न किसी नाते रिश्तेदार से रुपये ब्याज पर मिलते रहे और काम चलता ही रहा और राहू के प्रभाव से जो धन भी ब्याज पर मिला वह खतम होता चला गया और ब्याज का रुपया देते रहना पड़ता गया इससे और भी चिंता बढी, किन्तु आखिर आहिस्ते २ धन के स्वामी बृहस्पति ने, अपना असर लाभ स्थान में स्वक्षेत्री होकर बैठने का प्रारंभ कर दिया, जिसके फलस्वरूप पुस्तकों की रौयल्टी का रुपया आमदनी की शकल में प्राप्त होने लगा, इस बृहस्पति ने अपने कार्य को बड़ी देरी से व दिक्कतों से इसलिये उठाया कि यह अपने ग्यारहवें स्थान में, वक्री होकर स्वक्षेत्र में बैठे हैं, लेकिन क्यूंकि लाभ और धन के अधिकारी, देवगुरू बृहस्पति हैं इसलिये बड़े मान सनमान के द्वारा पुस्तकों की आमदनी का जरिया रौयल्टी के रूप में बनाया और बृहस्पति धन के मालिक होकर अपनी पूर्ण द्रष्टियां से, लग्न के तीसरे, पाँचवे, सातवे स्थानों को देख रहे हैं, इसलिये तीसरे पराक्रम स्थान यानी बाहुबल की लेखनी के द्वारा लाभ का योग बनाया और पांचवे स्थान यानी बुद्धी स्थान से फायदे का योग बनाया, और सप्तम स्थान, यानी स्त्री, व रोजगार के स्थान और ससुराल से फायदा कराया, और दैनिक रोजगार से फायदा कराया, अब हमें यह बताना है कि जब से शुक्र की महा दशा लगी जो पंचम स्थान पर बैठे हैं, तभी से ज्योतिप के ग्रन्थों का लिखना शिरू हो गया और जिस समय शुक्र की महादशा में राज्येश मंगल का अन्तर था उस समय

प्रथम पुस्तक भृगुसहिंता पद्यति छपकर पब्लिक में प्रकाशित हो गई, जिससे मान सनमान खूब बढ़ गया और जब राहू का अन्तर आया तब पैसे की कठिनाइयाँ और भी बढ़ गई, किन्तु जब कुम्भ लग्न का स्वामी शनी, गोचर में कन्या में से, यानी अष्टमस्थान मे घूमता हुआ भाग्यस्थान तुलाराशि पर उच्च का होकर आया है तब से पुनः सुख शांती प्राप्त होना शिरु हुआ है और इस दौरान में दो पुस्तकों का और भी प्रकाशन हुआ, अब हमारा मूल मंतव्य यह है कि इस कुण्डली में धन की प्राप्ती का सर्व श्रेष्ठ योग जो बनता है वह शुक्र की महा दशा में, बृहस्पति के अन्तर में बनता है क्यूंकि धनं पति बृहस्पति का पूरा २ सम्वन्ध केवल शुक्र से ही हुआ है क्योंकि अपनी सातवी द्रष्टीसे शुक्र, बृहस्पति को पूर्ण देख रहे हैं और बृहस्पति, शुक्रको पूर्ण देख रहे हैं, अतः इस अन्तर में धन प्राप्ती का श्रेष्ठ योग है और जब शनी का अन्तर आवेगा जो कि लग्नेश पूर्ण द्रष्टी से लग्न को भी देख रहे हैं व शत्रू स्थान को भी, एवं मित्र शुक्र के घर में बैठे हैं और उसी के अंतर रूप से आवेंगे, उस समय इस कुण्डली में पूर्ण रुपेण ख्याति और प्रसिद्धता पाने का योग एवं शाँती पाने का योग बनाता है अतः यह शुक्र की महा दशा में गुरु और शनी के दोनों अंतर ही पूर्ण भाग्योदय कारक समझे जांयगे, इस कुण्डली में तीसरे दसवे घर का स्वामी जो मंगल है वही बाहुबल के पूर्ण रुपेण कार्य करने का अधिकारी है और यह मंगल अपनी आठवीं पूर्ण द्रष्टी से धनेश बृहस्पति को व लाभ स्थान को देख रहे हैं, इसलिये बाहुबल के द्वारा किये गये कर्म की शक्ती से, धन की प्राप्ती करने का बड़ा अच्छा योग बनगया, है इसके अलावा हमारी भाग्योदय दर्पण के आधार पर जिस समय शनी धन राशि पर आयेंगे जो कि लग्न से ग्यारहवे, लाभ स्थानमें आकर, अपने तन स्थान लग्न को, तीसरी पूर्ण द्रष्टीसे देखेंगे उस समय में, प्रसिद्धता और धन प्राप्ती का सबसे उत्तम समय समझा जायगा।

मेष लग्न वाले

लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का फलादेश

जिस लड़के या लड़की के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे तो, वह एक दूसरेके प्रति, नेष्ठ, श्रेष्ठ, या सामान्य समझे जांयगे।

सूर्य—तुलाराशी पर या मेष राशी पर हो,—शुक्र—कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मीन राशी पर या वृषभ राशी पर हो, मंगल—मेष राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर या मीन राशी पर हो, राहू या केतू-कोई भी, मेष राशी पर या तुला राशी पर हो, तो यह सब ग्रहों में से, जो कोइ भी ग्रह उपरोक्त राशी में होगा, वह कष्टदायक समझा जायगा। और वुद्ध यदि मेष राशी पर या तुला राशी पर होगा तो सामान्यतम रहेगा अर्थात कुछ झगड़ा और कुछ शक्ती प्रदान करेगा, और वृहस्पति यदि मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर कही भी होगा तो, कुछ अच्छा और कुछ वुरा फल प्रदान करेगा अर्थात सामान्य रहेगा। और चन्द्रमा यदि मेष राशी पर या तुला राशी पर होगा तो श्रेष्ट सुख दायक रहेंगा। और शनी यदि मेष राशी पर या सिंहराशी पर वा तुला राशी पर या मकर राशी पर कहीं भी होगा तो शुभ और उन्नति प्रदान करेगा। 'और शुक्र यदि मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकरराशी पर या कुम्भ राशी पर कहीं भी होगा तो श्रेष्ठ रहेगा, और सिंह राशी पर शुक्र सामान्य रहेगा। नोट—जो कोई भी श्रेष्ठ ग्रह, या शुक्र, या मंगल, सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा, तो उस ग्रह का फल, बहुत ही न्यून और निषेध होगा।

बृषभ लग्न वाले

बृषभ लग्न वाले, लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का फलादेश

जिस लड़के या लड़की के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे वह एक दूसरे के प्रति नेष्ठ, श्रेष्ठ, या सामान्य समझे जांयगे।

चन्द्रमा—यदि वृषभ राशी में या बृश्चिक राशी में हो, और वृहस्पति यदि—वृश्चिक राशी में या मीन राशी में अथवा कर्क राशी में या बृषभ राशी में हो, और मंगल यदि, मेष राशी में या मिथुन राशी में या कर्क राशी में अथवा कन्या राशी में या तुला राशी में या धन राशी में हो, और राहू या केतु दोनों में से कोई भी, यदि वृषभ या बृश्चिक राशी पर हो, तो इन उपरोक्त ग्रहों का प्रभाव बुरा समझा जायगा। और शुक्र यदि वृषभ या वृश्चिक राशी पर कहीं भी होंगे तो आत्मीयता और झगड़ा दोनों ही रहेंगे, और सूर्य यदि वृषभ या बृश्चिक पर कहीं भी होगे तो उत्तम सुख प्रदान करेंगे और यदि शनी, बृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर होंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे, और बुद्ध यदि बृषभ राशि पर या बृश्चिक राशि पर होंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे।

नोट—जो कोई श्रेष्ठ ग्रह सूर्य से अस्त होगा, या सून्य अंश होगा, तो उस ग्रह का फल वहुत ही न्यून और निषेध होता है। और यदि मंगल या वृहस्पति, इन दोनों ग्रहों में से कोई भी सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा या मङ्गल लग्न से—छटे या आठवे या बारहवे स्थानमें होगा तो, इनका फल खासतौर से निषेध होगा।

मिथुन लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ विचार

जिस लड़के या लड़की के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे तो वह एक दूसरे के प्रति नेष्ठ, श्रेष्ठ, या सामान्य समझे जांयगे। बृहस्पति—यदि मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर या वृश्चिक राशी पर हो, और मङ्गल, यदि वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या धन राशी पर, हो, और शुक्र यदि धन राशी पर, या मिथुन राशी पर हो, और राहू यदि धन राशी पर हो, और चन्द्रमा यदि धनराशि पर हो और शनी यदि, धन राशि पर, या तुला राशि पर हो, तो इन उपरोक्त ग्रहों का प्रभाव एक दूसरे के लिए अहित कर एवं अशांति दायक होगा—और यदि बृहस्पति, मिथुन राशि या सिंह राशी या कन्या राशी था तुला राशी या धन राशी या मीन राशी या मेष राशी में कहीं भी हो, और सूर्य यदि धन राशी या मिथुन राशी में हो अथवा बुद्ध मिथुन राशी में हो अथवा बुद्ध मिथुन राशी या धन राशी पर हो, तो श्रेष्ठ और शुभ फल प्रदान होगा। बृहस्पति का कुम्भ राशि पर सामान्यतम फल अच्छा रहेगा।

नोट—जो कोई श्रेष्ठ ग्रह, या बृहस्पति, या शनी, सूर्य से अस्त होगा, या सून्य अंश होगा, तो उस ग्रह का फल, बहुत ही न्यून और निषेध प्राप्त होगा। क्योंकि पती पत्नी का आपसी—सम्बन्ध, और आयु का सम्बन्ध इन्हीं दोनों ग्रहों के हाथ में है।

कर्क लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह सम्बन्ध का शुभ अशुभ फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे, तो वह एक दूसरे के प्रति, नेष्ठ, श्रेष्ठ, या सामान्य समझे जांयगे बृहस्पति, यदि मकर राशी पर या कन्या राशी पर या कर्क राशी पर या बृषभ राशी पर हो, और बुद्ध या सूर्य कोई भी मकर राशी पर या कर्क राशी पर हो, और शनी धनराशी पर या कुम्भ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर हों, और राहू या केतू कोईभी मकर राशीपर या कर्क राशीपर हो, तो इनका फल अशुभ और कष्टदायक होता है और यदि चन्द्रमा या शुक्र कोई भी मकर राशी पर या कर्क राशी पर हों, और मङ्गल कर्क राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशी पर या मिथुन राशी पर हों, और शनी मकर या कर्क या तुला या बृषभ या बृश्चिक या कन्या इन राशियों पर कहींभी हों तो इन ग्रहों का फल सुखदायक लाभकारीं होता है। इसके अतिरिक्त, इस कर्क लग्न में जन्म लेने वाकों को, दाम्पत्य सुख के सम्बन्ध में कुछ न कुछ कमी तो अवम्य ही रहती है।

नोट—जो कोई भी श्रेष्ठ ग्रह, अथवा शनी, यदि सूर्य से अस्त होगा, या सून्य अंश होगा, तो उस ग्रह का फल बहुत ही न्यून और निषेध प्राप्त होता है। क्योंकि पती पत्नी के आपसी सम्बन्ध की शक्ती का स्वामी शनी है, और आयु का स्वामी भी शनी है।

सिंह लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे तो वहएक दूसरेके लिएश्रेष्ठ,नेष्ठ, या सामान्य,फल प्रदान करते हैं। बृहस्पति, यदि, कुम्भ राशी पर, या मिथुन राशी पर, या सिंह राशी पर, या तुला राशी पर हो—और राहू या केतू, कोई भी यदि कुम्भ राशी पर व सिंह राशी पर हो, और शनी यदि मीन राशि पर, या मेषराशी पर, या कर्क राशी, या कन्याराशी पर, या मकर राशी पर हों, तो इन ग्रहों का प्रभाव कष्टदायक और अशुभ होता है। और यदि शुक्र, बुद्ध, सूर्य, इन तीनों ग्रहों में से कोई भी, कुम्भ राशी पर, या सिंह राशी पर हो, और मंगल यदि, सिंह राशी पर, या बृश्चिक राशी पर, या कुम्भ राशी पर, और शनी यदि कुम्भ राशी पर, या वृषभ राशी पर, या मिथुन राशी पर या सिंह राशीपर, या तुला राशीपर, या बृश्चिकराशी पर, इनमें कहीं भी हों, तो इन सब ग्रहों का फल श्रेष्ठ और लाभ कारी रहेगा।

नोट—जो कोई श्रेष्ठ ग्रह; या शनी, या गुरू, सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा, तो वह ग्रह बहुत ही न्यून और नेष्ठ फल प्रदान करेगा, क्योंकि इस लग्न वालों का पती पत्नी के स्थान का स्वामी शनी है, और आय् का स्वामी गुरू है,

कन्या लग्न वाले
लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का
शुभ अशुभ विचार

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे तो वह अपनी २ स्थति के अनुसार एक दूसरे के लिए श्रेष्ठ, नेष्ट या सामान्य फल प्रदान करते हैं। सूर्य यदि मीन राशी पर या कन्या राशी पर हो, और मङ्गल यदि, सिंह राशी. या कन्या राशी या धन राशी या मीन राशी पर या मिथुन राशी पर, या कन्या राशी पर, या मकर राशी पर, कहीं भी हो, और राहू या केतू कोई भी मीन राशी पर या कन्या राशी पर हो और बृहस्पति मेष राशी पर, या सिंह राशी पर, या तुला राशी पर, या मकर राशी पर; या कुम्भ राशी पर कही भी हो, तो इन सब ग्रहों का प्रभाव नेष्ठ और कष्टदायक रहेगा और यदि बृहस्पति, मीन राशी पर या बृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर, या कन्या राशी पर या बृश्चिक राशी पर या धन राशी पर कहीं भी हों और चन्द्रमा या शुक्र, इन दो ग्रहों में से कोई भी यदि मीन राशी पर, या कन्या राशी पर हो, तो इन सब ग्रहों का फल श्रेष्ठ सुख दायक रहेगा। नोट—यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह निर्वल माना माना जायगा तथा उसका फल बहुत सूक्ष्म और न्युन होता है और यदि बृहस्पति या मङ्गल कोई भी सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो बहुत नेष्ठ एवं अशुभ फल दाता समझा जायगा। क्योंकि पती पत्नी के आपसी संबंध का स्वामी बृहस्पति है और आयू का स्वामी मङ्गल है।

तुला लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ विचार

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होंगे, तो वह अपनी २ स्थिति के अनुसार एक दूसरे के लिये श्रेष्ठ, नेष्ठ यां सामान्य फल प्रदान करते हैं। शनी–यदि मेष राशी पर, या कर्क राशी पर, या कुम्भ राशि पर हों, और बृहस्पति, मेष राशी या तुला राशी, या धन राशी, या सिंह राशी पर हों, और शुक्र, मेष राशी पर या तुला राशी पर हो, तो इन ग्रहों में से कोई भी यदि उपरोक्त राशी पर होगा, तो कुछ कष्टदायक झगड़ेतलब रहेगा और यदि राहू केतु कोई भी मेष राशी व तुला राशी पर होगा और मङ्गल यदि, वृषभ राशी पर, या कर्क राशी पर, या कन्या राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या मीन राशी पर होगा तो इन ग्रहों के प्रभाव से अधिक कष्ट अनुभव होगा, और यदि बुद्ध मेष राशी पर, या तुला राशी पर होगा तो कुछ हानि और कुछ वृद्धी का फल प्रदान करेगा और यदि सूर्य या चन्द्र कोई भी मेष राशी पर या तुला राशी पर होगा, और मङ्गल यदि, मेष राशी पर या सिंह राशी पर, तुला राशी पर या मकर राशी पर कहीं भी होगा तो इन ग्रहों का फल श्रेष्ठ और शुभ प्रदायक रहेंगे।

नोट—जो कोई भी श्रेष्ठ ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल और अशुभ माना जाता है किन्तु यदि मङ्गल या शुक्र कोई भी सूर्य से अस्त हुआ या सून्य अंश हुआ तो बहुत बुरा समझा जायेगा। क्योंकि पती पत्नी के स्थान संबंध का स्वामी मङ्गल है, और आयु स्थान का स्वामी शुक्र है।

ब्रश्चिक लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होते हैं तो वह अपनी २ स्थति के अनुसार एक दूसरे के लिये श्रेष्ठ, नेष्ठ, या सामान्य, फल देने वाले होते हैं।

चंद्रमा—यदि वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर हो अथवा सूर्य,बृषभ राशी पर या बृश्चिक राशी पर हो अथवा बृहस्पति, बृश्चिक राशी पर, या कन्या राशी पर, या मकर राशी पर या बृषभ राशी पर हो,अथवा शनी बृषभ राशी पर,या सिंह राशी पर, या बृश्चिक राशी पर, या मीन राशी पर हो, अथवा शुक्र, बृश्चिक राशी में हों, या मकर राशी में हो,या कुम्भ राशी में हो या मीन राशी में हो, या बृषभ राशी में हो, या कर्क राशी में हो या सिह राशी में हो, तो इन उपरोक्त ग्रहों का फल श्रेष्ठ रहेगा किन्तु इसके विपरीत यदि, शुक्र, मिथुन राशी पर,या कन्या राशो पर,या तुला राशीपर,या धन राशीपर या मेष राशीपर हो, अथवा मङ्गल, बृषभ राशी पर, या तुला राशी पर, या बृश्चिक राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, अथवा बुद्ध बृषभ राशो पर हो या बृश्चिक राशी पर हो, अथवा राहू या केतू कोई भी, बृश्चिक राशी पर या बृषभ राशी पर हो, तो इन ग्रहों का फल कष्टदायक रहेगा।

नोट—जो कोई श्रेष्ठ ग्रह, सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा, तो उसका फल सामान्य और न्यून प्राप्त होगा, किंतु यदि शुक्र या वुद्ध, सूर्य से अस्त होगा, या सून्य अंश होगा तो उसका फल बहुत खराब होगा, क्योंकि पती पत्नी के आपसी सम्बन्ध का मालिक शुक्र है, और आयू का मालिक वुद्ध है।

धन लग्न वाले
लड़के लड़कियों के विवाह संबन्ध का
शुभ अशुभ फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होते हैं तो वह अपनी २ स्थति के अनुसार पती पत्नी के संबन्ध में नेष्ठ, श्रेष्ट, या सामान्य फल प्रदान करते हैं।

बुद्ध—यदि धन राशी पर, या मिथुन राशी पर, या सिंह राशी पर, या कन्या राशी पर, या तुला राशी पर हो, अथवा ब्रहस्पति, धन राशी पर, या कुम्भ राशी पर, या मिथुन राशी पर, या तुला राशी पर हो, अथवा सू०—मिथुन राशी पर या धन राशी पर हो—अथवा राहू मिथुन राशो पर हो, तो यह उपरोप ग्रह श्रेष्ठ फल प्रदान करेंगे, और यदि शुक्र मिथुन राशी या धन राशी पर हो, अथवा शनी मिथुन राशी पर,या कन्या राशी पर, या धन राशी पर, या मेष राशीपर हों तो इन ग्रहों का फल कुछ लाभ प्रद तथा कुछ परेशानी युक्त प्राप्त होगा, किन्तु यदि—चन्द्रमा मिथुन राशो पर, या धन राशी पर, हो अथवा मङ्गल वृश्चिक राशी पर हो अथवा बुद्ध कर्क राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या मीन राशी पर, या वृषभ राशी पर. हो अथवा केतू मिथुन राशी पर हो तो इन ग्रहों का प्रभाव बुरा और कष्ट दायक रहेगा।

नोट—यदि कोई भी श्रेष्ठ ग्रह, सूर्य से अस्त होगा, या सून्य अंश होगा, तो वह निवल होने के कारण वहुत न्यून फल प्रदान करता है,किन्तु यदि बुद्ध या चन्द्रमा अस्त हुआ, या सून्य अंश हुआ, तो वहुत खराव फल प्रदान करता है, क्योंकि पती पत्नी के स्थान संबंध का स्वामी बुद्ध है, और आयु का स्वामी चन्द्रमा है।

मकर लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होते हैं तो यह अपनी २ स्थित के अनुसार पती पत्नी के संबंध में श्रेष्ठ नेष्ठ, या सामान्य फल प्रदान करते हैं।

चंद्रमा—यदि कर्क राशी पर, या कन्या राशी पर, या तुला राशी पर, या मकर राशी पर, या मीन राशी पर, या मेष राशी पर हो, तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा अथवा शुक्र, कर्क राशी पर या मकर राशी पर हो, तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा तथा बुद्ध यदि कर्क राशी पर या मकर राशी पर हो, अथवा शनी कर्क राशी पर, या तुला राशी पर या मकर राशी पर या वृषभ राशी पर हो, अथवा वृहस्पति, कर्क राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर या मीन राशी पर हो, तो इन तीनों ग्रहों का फल अधिकांश अच्छा होता है, किन्तु कुछ २ बुरा फल भी होता है। और सूर्य यदि कर्क राशी पर या मकर राशी पर, अथवा मङ्गल, कर्क राशी पर, या धन राशी पर, मेष राशी पर हो, अथवा राहू या केतू कोई भी कर्क राशी पर या मकर राशी पर हो, अथवा चंद्रमा सिंह राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या धनराशी पर, या कुम्भ राशी पर, या मिथुन राशी पर हो, तो इन ग्रहों के फल अशुभ और कष्ट दायक प्राप्त होते हैं।

नोट—कोई भी श्रेष्ठ ग्रह, यदि सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा, तो उसका फल न्यून और वहुत कमजोर प्राप्त होता है, किन्तु यदि चन्द्रमा, सून्य अंश होगा तो इसका फल वहुत बुरा होता है।

कुम्भ लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ फलादेश

जिस लड़के या लड़की के ग्रह निम्नांकित प्रकार के होते हैं तो वह अपनी २ स्थिती के अनुसार, पति, पत्नी, के सम्बन्ध में, श्रेष्ठ, नेष्ठ, या सामान्य फल प्रदान करते हैं।

सूर्य—यदि सिंह राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या धन राशी पर या, कुम्भ राशी पर, या मेष राशी पर, या वृषभ राशी पर, या मिथुन राशी पर हो, अथवा शुक्र—सिंह राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, अथवा मङ्गल—वृषभ राशी पर, या सिंह राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, अथवा बृहस्पति—धन धन राशी पर, या मेष राशी पर, या सिंह राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, तो श्रेष्ठ फल मिलेगा, और यदि चन्द्रमा–सिंह राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, अथवा बुद्ध—सिंह राशी पर, या कुम्भ राशी पर हो, अथवा शनी, सिंह राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या कुम्भ राशी पर, या मिथुन राशी पर हो, तो इन ग्रहों का प्रभाव फल अधिकांश कष्टदायक और बुरा होता है। इसके अतिरिक्त यदि राहू या केतू कोई भी सिंह राशी पर, व कुम्भ राशी पर हो, अथवा सूर्य–कन्या राशी पर, या तुला राशी पर या मकर राशी पर, या मीन राशी पर हो, तो इन ग्रहों का प्रभाव बहुत बुरा होता है. और यदि सूर्य कर्क राशी पर होगा तो उसका फल सामान्य होगा अर्थात कुछ झगड़ा और कुछ प्रभाव देगा, नोट–कोई भी श्रेष्ठ ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा, या शून्य अंश होगा, तो उस ग्रह का फल बहुत न्यून प्राप्त होगा, किन्तु यदि सूर्य शून्य अंश हुआ तो बहुत खराब फल करेगा।

मीन लग्न वाले लड़के लड़कियों के विवाह संबंध का शुभ अशुभ फलादेश

जिन लड़के लड़कियों के ग्रह, निम्नांकित प्रकार के होंगे तो वह ग्रह अपनी २ स्थती के अनुसार पती पत्नी के संबंध में श्रेष्ठ, नेष्ठ, या सामान्य फल प्रदान करते हैं।

वृहस्पति–यदि कन्या राशी पर, या मकर राशी पर या मीन राशी पर, या बृषभ राशी पर हो, अथवा मंगल कन्या राशी पर या कुम्भ राशी पर, या मीन राशी पर, या मिथुन राशी पर हो अथवा चन्द्रमा कन्या राशी, या मीन राशी, पर हो–अथवा बुद्ध, कन्या राशी पर, या वृश्चिक राशी पर, या धनराशी पर, या मकर राशी पर, या मीन राशी पर, या मिथुन राशी पर हो, तो इन ग्रहों का फल उत्तम और लाभ दायक प्राप्त होगा—और यदि, शुक्र, कन्या राशी पर, या मीन राशी पर, हो अथवा सूर्य, कन्या राशी पर, या मीन राशी पर हो, अथवा राहू या केतू कोई भी कन्या राशी, पर या मीन राशी पर हो, अथवा बुद्ध, तुला राशीपर, या कुम्भ राशीपर, या मेष राशीपर, या सिह राशी पर हो, तो इन ग्रहों का फल अशुभ और कष्टदायक प्राप्त होगा। नोट–यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह ग्रह बहुत निर्वल माना जायगा, और न्यून फल करेगा और यदि, बुद्ध या शुक्र अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो अधिक निर्वल फल प्रदान करेगा, क्यों कि पती पत्नी के स्थान का स्वामी बुद्ध है, और आयू का स्वामी शुक्र है, इसलिए खासतौर से, बुद्ध, और शुक्र का किसी भी प्रकार से निर्वल होना उचित नहीं है।

मेष लग्न वालों को, कौन २ ग्रह क्या २ फल देते हैं

सू०—विद्या, बुद्धी, विवेक, वाँणी, संतान, तेज
चं०—सुख शांती, मनोवल, माता, भूमि मकान जायदाद, स्नेहीबंधु
मं०—देह, भय स्वरूप, आयू, दिनचर्या, आत्मवल, ख्याती, पुरातत्व, उदर
बु०—बहिन-भाई, पराक्रम,प्रभाव, शत्रु,रोग, पाप,परिश्रम,ननसाल, हिम्मत
गु०—भाग्य, धर्म, यश खर्च, दूसरे स्थानों का सुन्दर सम्बन्ध,हृदय वल
शु०—धनकोश, कुटुम्ब, स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, घिराव
श०—पिता, व्यापार, राज, कर्म मान, प्रतिष्ठा, आमद, वैभव, हकूमत
रा०—पौलसी, छिपाव, अधिक लाभ की सूझ, चिंता
के०—आंतरिक शक्ती, जाहिर की कुछ कमी, कष्ट, धैर्य, विजय।

नोट—हरएक ग्रह की, स्थान स्थिति के भेद, और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह, कितने २ प्रकार से न्यूनाधिक रूप में, क्या २ फल करते हैं, इसका पूर्ण रूपेण स्पष्टीकरण, भृगु संहिता पद्धति के अन्दर कुण्डली न० १ से लेकर कुण्डली नं०१०८ तक में पढ़िये।

वृषभ लग्न वालों को, कौन २ ग्रह, क्या २ फल देते हैं

सू०—माता-भूमि मकान जायदाद, सुख, शांती, तेज, स्नेही बंधु
चं०—बहन-भाई, पराक्रम, शक्ती, महनत, हिम्मत, मनोमल
मं०—स्त्री, हानि, दैनिक रोजगार, भोग, गृहस्थ्य, खर्च,
बु०—विद्या, बुद्धी,विवेक, वांणी, धन कोप, कुटुम्ब, संतान, घिराव
गु०—आयू, पुरातत्व, दिनचर्या, आमदनी, उदर, विदेश, हृदयवल
शु०—देह, स्वरूप, ख्याती, आत्मवल, शत्रू, रोग पाप झगड़े ननसाल
श०—भाग्य, धर्म, यश, पिता, राज, वैभव व्यापार उन्नति,बरक्कत, मान
रा०—गुप्त चतुराई, अधिक लाभ की प्राप्ती, चिंता, कष्ट, छिपाव
के०—आन्तरिक धैर्य,गुप्त चिन्ता,गुप्त शक्ती,विजय, दुर्लभ वस्तुकी प्राप्ती

नोट—हर एक ग्रह के स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह, किस २ प्रकार से अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं, इसका पूर्ण रूपेण स्पष्टी करण भृगुसंहिता पद्धति के अन्दर कुण्डली नं० १०६ से लेकर नं २१६ तक में मालुम करिये।

मिथुन लग्न वालों को, कौन २ ग्रह क्या फल देते हैं

सू०—भाई बहिन, बाहुबल, तेज, हिम्मत, शक्ती, महनत
चं०—धनकोष, कुटुम्ब, मनोबल, घिराव
मं०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, रोग, शत्रू, झगड़े झंझट, परिश्रम, ननसाल
बु०—देह, स्वरूप, आत्मबल, माता, भूमि, मकानादि, ख्याति सुख, विवेक
गु०—स्त्री, दैनिक, रोजगार, राज, कर्म, व्यापार, मान प्रतिष्ठा, पिता, हृदयबल
शु०—विद्या, वाणी, संतान, बुद्धी, खर्च, दूसरे स्थानका संबंध, चतुराई
श०—आयू, भय, पुरातत्व, दिनचर्या, भाग्य, धर्म, दैवीलाभ, विदेश, उदर
रा०—गुप्त चतुराई, अधिक लाभकी प्राप्ती के साधन, चिंता, छिपाव
के०—आंतरिक धैर्य, गुप्त शक्ती, कुछ कमी, कष्ट, विजय, दुर्लभ वस्तुकी प्राप्ती

नोट—हर एक ग्रह के स्थानन्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह किस २ प्रकार से अच्छा और बुरा फल प्रदान करते हैं, इसका पूर्ण रूपेण स्पष्टी करण, हमारी भृगुसहिंता पद्धति के अन्दर, कुण्डली नं० २१७ से लेकर नं० ३२४ तक में पढ़कर मालूम करिये।

कर्क लग्न वालों को, कौन २ ग्रह क्या २ फल देते हैं

सू०—धन, कोष, कुटुम्ब, तेज, घिराव
चं०—देह, स्वरूप, आत्मबल, मनोबल, ख्याती
मं०—विद्या, संतान, बुद्धी, वाणी, पिता, राजसमाज, कर्म, मान, व्यापार
बु०—बहिन, भाई, हानि, पराक्रम, खर्च, दूसरे स्थानों का संबंध, विवेक
गु०—शत्रू, झगड़े, झंझट, ननसाल, भाग्य, धर्म, हृदय बल, पाप, भक्ति
शु०—माता, भूमि, मकानादि, सुख, शांति, स्नेही बन्धु, धन लाभ, चतुराई
श०—स्त्री, भय, दैनिक रोजगार, आयु, पुरातत्व, दिनचर्या, भोग; उदर
रा०—गुप्त लाभ, गुप्त चिंता, छिपाव कुछ कमी कुछ कष्ट अधिक लाभ
के०—आन्तरिक धैर्य, गुप्त चिंता, कुछ कमी कष्ट, विजय, गम्भीर लाभ,

नोट—हर एक ग्रह के स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह किस२ प्रकार से अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं, इसका पूर्ण रूपेण स्पष्टीकरण हमारी भृगुसहिंता पद्धति के अन्दर, कुण्डली नं० ३२५ से लेकर नं० ४३२ तक के अन्दर देखिये।

सिंह लग्न वालों को, कौन २ ग्रह क्या २ फल देते हैं

सू०—देह, स्वरुप, आत्मबल, ख्याती, तेज
चं०—खर्च, मनोवल, दूसरे स्थानों का संबंध हानि
मं०—माता, भूमि मकानादि, सुख, भाग्य, धर्म, शांती, यश, स्नेहीबन्धु
बु०—धनकोष, कुटुम्ब, आमदनी, विवेक, आवश्यक लाभ, घिराव
गु०—विद्या, संतान, वुद्धी, वांणी, आयू पुरातत्व, उदर, दिनचर्या, हृदयवल
शु०—भाई वहिन, पुरपार्थ, पिता, राज, समाज, मान, प्रभाव, व्यापार
श०—शत्रू, दैनिक, रोजगार, स्त्री, रोग, ननसाल, झगड़े, झंझट, परिश्रम, पाप
रा०—चिंता, छिपाव, गुप्त, शक्ती का लाभ, कुछ कमी, कष्ट, टैक्ट
के०—गुप्त धैर्य, कष्ट, कमी, विजय, स्थिर, शक्ती की प्राप्ती

नोट—हर एक ग्रह के स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह किस २ प्रकार का अच्छा या वुरा फल प्रदान करते है, इसका पूर्ण स्पष्टीकरण भृगुसहिंता पद्धति में, कुण्डली नं० ४३३ से ५४० के अन्दर देखिये

कन्या लग्न वालों को कौन २ ग्रह क्या २ फल देते हैं

सू०—खर्च, दूसरे स्थानों का संबंध, तेज, हानि
चं०—आमदनी, आवश्यक पदार्थ, मनोवल
मं०—भाई वहन, भय, पराक्रम, आयू, पुरातत्व, विदेश, दिनचर्या, उदर
बु०—देह, स्वरूप, आत्मवल, विवेक, व्यापार, राज, समाज, पिता, ख्याती
गु०—मातामूमि, मकानादि, सुखशांति, दैनिक रोजगार, स्त्री, हृदयवल
शु०—धनकोष, कुटुम्ब, भाग्य, धर्म, दैवी, सहायता, यश, घिराव
श०—विद्या, संतान, वुद्धी, वांणी, शत्रू, रोग, पाप, ननसाल, झगड़े, परिश्रम
रा०—छिपाव, पौलसी, चिंता, कुछ कमी, अधिक लाभ की गुप्तयुक्ती
के०—गुप्त, धैर्य, गुप्त शक्ती, कष्ट, कमी, विजय, विशेष लाभ की प्राप्ती

नोट—हरएक ग्रह के स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से यह ग्रह, किस २ प्रकार का न्यूनाधिक, अच्छा और वुरा फल प्रदान करते हैं, इसका पूर्ण स्पष्टीकरण, भृगु सहिंता पद्धति में, कुण्डली नं० ५४१ से ६४८ में देखिये

कुम्भ लग्न वालों को, कौन २ ग्रह, क्या २ फल देते हैं।

सू०—स्त्री, दैनिक रोजगार, तेज ससुराल, भोग
चं०—शत्रू, रोग, पाप, मनोवल, झगड़े, ननसाल, परिश्रम
मं०—पिता, वहिन, भाई, राज, समाज, कार्य, व्यौपार, मान
बु०—आयू, सन्तान, विद्या, विवेक, पुरातत्व, उदर, दिनचर्या
गु०—धनलाभ, कोष, आवश्यक पदार्थ, हृदयबल, कुटुम्ब
शु०—धर्म, भाग्य, सुख, माता, भूमि, मकानादि, भक्ति
श०—देह, स्वरूप, आत्मबल, ख्याती, खर्च, दूसरे स्थानों का संबंध
रा०—चिंता, छिपाव, कुछ कष्ट, गुप्त युक्तीवल
के०—कष्ट, गुप्त धैर्य, गुप्त शक्ती, कुछ कमी

नोट—हर एक ग्रह स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से, किस २ प्रकार का अच्छा और बुरा फल प्रदान करते हैं, इसका पूर्ण स्पष्टीकरण भृगुसहिता पद्धति के अन्दर पेज नं १०८१ से लेकर ११८८ तक में देखिये।

मीन लग्न वालों को, कौन २ ग्रह, क्या २ फल देते हैं

सू०—शत्रू, रोग, पाप, परिश्रम, ननसाल, प्रभाव, तेज
चं०—विद्या, वुद्धी, वाणी, मनोवल, सन्तान
मं०—धनकोष, कुटुम्ब, भाग्य, धर्म, भक्ति, चिराव
वु०—माता, स्त्री, सुख, मकानादि, दैनिक, रोजगार, विवेक
ग०—देह, स्वरूप, ख्याति, पिता, राज, व्यापार, मान हृदयबल
शु०—बहिन, भाई, पराक्रम, आयू, पुरातत्व, उदर, दिनचर्या
श०—धनलाभ, आमदनी, खर्च, दूसरे स्थानों का सम्बन्ध
रा०—चिंता, कुछ कमी, कष्ट, गुप्त युक्ती, लाभ
के०—गुप्त, चिंता गुप्तशक्ती, आन्तरिक कमी, कष्ट, विजय

नोट—हरएक ग्रह स्थानान्तर और द्रष्टी भेद के कारणों से, किस किस प्रकार का अच्छा और बुरा फल करते हैं, इसका पूर्ण स्पष्टीकरण भृगसहिता पद्धति के अन्दर पेज नं० ११८९ से लेकर १२९६ तक में देखिये।

प्रशंसापत्र-जैन ज्योतिष कार्यालय मैनपुरी द्वारा—

भृगुसंहिता पद्धति, सम्पादक–श्रीयुत भगवानदास मीतल, ज्योतिषी नया बाजार, मथुरा यू० पी०

लेखक महोदय ने इस युग में, जन्मपत्री विषयक, ऐसे ग्रन्थ की रचना की है, कि जिसकी आशा भी न थी, उनका प्रयत्न सराहनीय ही नहीं, अपितु अवर्णनीय है, क्योंकि १२ घर, और नौ मुहरे (नवग्रह) हरएक लग्न में, स्थान बदल २ कर, १०८ कुण्डली तैयार करके, अद्भुत फलादेश लिखकर, दैवी शक्ति प्रदत्त विद्वता का परिचय दिया है, ऐसे ही १२ लग्नों की १२९६ कुण्डली बनाकर ७७६ पृष्ठों की अपूर्व पुस्तक प्रस्तुत करके, गागर में सागर ही भर दिया है। सुन्दर जिल्द, उत्तम कागज, नयनाभिराम छपाई मूल्य फिर भी दस रुपया ही है, जोकि पुस्तक के विषय देखते बहुत ही कम है विद्वत समाज इस प्रथम संस्करण को शीघ्र ही समाप्त कर देगा ऐसी आशा है, अतः ज्योतिष विद्यानुरागियों को शीघ्र ही तत्काल मगा लेना चाहिये।

अध्यक्ष—

जैन ज्योतिष कार्यालय, मैनपुरी (यू० पी०)

श्रीमान् मीतलजी जयहिन्द,

अभी कुछ दिन हुये मैने आपकी प्रसिद्ध रचना-भृगुसंहिता पद्धति मँगाई थी, पुस्तक वास्तव में बहुत लाभकारी है। कृपया अब अखण्ड भाग्योदय दर्पण वी० पी० द्वारा, मेरे नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें। वी० पी० आते ही छुड़ाली जायगी।

भवदीय—

एलाहाबाद — **जगदीश नन्दन प्रसाद**

१७–४–५७ — ६, लाउदर रोड, साउथ मलाका, इलाहाबाद।

—:शरीर सर्वांग लक्षण:—

इस पुस्तक के अन्दर चोटी से लेकर एड़ी तक के मनुष्य शरीर के समस्त अङ्ग, प्रत्यङ्ग, गुप्ताङ्ग, हस्तरेखा, रङ्ग, रूप, कद, स्वभाव, आकृती, प्रकृति चाल, ढाल, मस्से, तिल, वाल, शकुन इत्यादि २ सभी विषयों पर बड़ा विस्तृत अनुभव सिद्ध फलादेश लिखा है। इसके द्वारा, केवल चेहरे को देखकर ही, मनुष्य के भाग्य का चमत्कारिक ज्ञान, तुरन्त मालुम हो जाता है।

मू० १॥) डा. ख. ।॥) अन्य पुस्तकों के साथ मँगाने पर डा. ख. माफ

श्री मान्यवर मीतलजी, जयहिंद !

—:० प्रशंसा पत्र ०:—

आपकी भृगुसंहिता पद्धति देखकर हृदय आनन्द से गद् गद् हो गया मेरे पूज्य वयोवृद्ध पिताजी की, तथा मेरी इस वस्तु की तीव्र लालसा थी, क्योंकि इससे ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये द्वार खुलता है, आपने दैवी वरदान से जो कुछ लिखा है, वह वास्तव में फलित ज्योतिष का ही सार है। क्योंकि तदनुसार ही इसका फलादेश है, ऐसी मेरी कल्पना को, महिला पुस्तकालयाध्यक्ष जानते थे, पूर्व सूचना के विना ही पुस्तक को पाकर चकित रह गया, आप धन्य हैं, आपका प्रयास भूरि २ प्रशंसास्पद है।

भवदीय—

चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री

प्राशिक्षिक राजकीय बुनियादी शिक्षक

प्राशिक्षक केन्द्र—नौहन

पाठकों को सूचना

इस पुस्तक के अन्दर, कुण्डलियों के संग्रह करने में, हमको जो कुछ सहायता रमन पब्लिकेशन बेंगलौर की, नोट एवल होरसकोप से मिली है, उसके लिये हम उनको धन्यवाद देते हैं, और सूर्यनारायण राव बैंगलौर की कुण्डली के, फलादेश में, यह बात भूल से गलत लिख गई है, कि वह रमन पब्लिकेशन बैंगलौर के मालिक हैं

—भगवानदास मीतल